UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182433

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—707—25-4-81—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 V12S Accession No G·H·3052

Author वजही

Title सबरस 1955

This book should be returned on or before the date last marked below

मुल्ला वजही

स ब र स

सम्पादक

श्रीराम शर्मा

दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद

प्रकाशक
विमला वाघ्रे एम् ए
मन्त्री दक्खिनी प्रकाशन समिति
बशीरबाग़ रोड, हैदराबाद (दक्षिण.)

प्रथम संस्करण १०००, अक्तूबर १९५५

मूल्य ६-०-० रुपए

मुद्रक : हिन्दी प्रेस
हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, हैदराबाद (दक्षिण)

प्रिय साथी गोपालराव अपसिंगीकर को

जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसकी साहित्य वृद्धि के लिए पिछले १५ वर्षों से मेरे अभिन्न साथी हैं और जिन्होंने हिन्दी-सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया है।

विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्तूबर १९५३ को हुई। समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

(१) डाक्टर बी. रामकृष्णराव
(मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष

(२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस.
(शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष

(३) डा० एस. एम. क़ादरी ज़ोर एम ए. पी. एच. डी.
(मन्त्री इदारे अदबियाते उर्दू) उपाध्यक्ष

(४) श्रीमती विमल वाघे एम-ए. मन्त्री

(५) श्री श्रीराम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा)
(लेक्चरार गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) सदस्य

(६) श्री गोपालराव अपसिंगीकर
(लेक्चरार लॉ कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(७) श्री वंशीधर जी विद्यालङ्कार
(अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए.
(लेक्चरार निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघे बी-ए. एल एल. बी.
(एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) ,,

(१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी ,,

(११) प्रोफेसर अब्दुल क़ादर सरवरी एम-ए. एल-एल. बी.
(अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीक़ी एम-ए. एल-एल. बी.
(प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१३) प्रोफेसर हुसेन अली खाँ
(भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१४) श्री हमीदुद्दीन शाहिद एम-ए.
(लेक्चरार चादरघाट कॉलेज) ,,

(१५) फजलुर्रहमान एम ए.
(भूतपूर्व शिक्षा सचालक, हैदराबाद) ,,

इस समिति ने निश्चय किया है :—

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपी उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है। हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त कराने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में ३००० रु० दिए हैं और इदारे अदबियाते उर्दू ने ७५० रु.। श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठकों का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं। प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुझाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

विमला वाघ्रे, मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

दो शब्द

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास मे हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नही कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट है--सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमो और दूसरी बहुत सी बातो मे दोनो अभिन्न है --इन दोनो भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास मे बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह ज़रूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनो का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी को वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली मे जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद मे दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा मे उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफिया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इदारे अदबियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयो मे दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग बहादुर के संरक्षण मे प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद मे प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि "दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति" नाम से हैदराबाद मे एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों मे उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वांगीण पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य मे हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते दूं का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनो सस्थाओ के प्रतिनिधियो मे हुआ है। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि मे प्रकाशित नहीं हुए है उन्हे इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनो भाषाओ की शब्दावली मे भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नही है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की है, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तके अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियो के लिए बहु मूल्य सिद्ध होगी, वहाँ उन से विशेषज्ञो और साहित्य प्रेमियो का मनोरंजन भी होगा।

मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४ ११-'५४

डाक्टर वी० रामकृष्णराव
अध्यक्ष
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

प्रस्तावना

वजही के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का अभाव।

इतिहासज्ञों ने गोलकुण्डा के सम्बन्ध में बहुत-सी प्रामाणिक सामग्री पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर दी है। फ़ारसी में ऐसी पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें कुतुबशाही शासन के समय राजकीय अधिकारियो तथा राज्याश्रित विद्वानो ने समकालीन स्थिति का दिग्दर्शन कराया है। जो सामग्री अप्रकाशित अवस्था में पुस्तकालयों में सुरक्षित है, उसकी मात्रा भी कम नहीं है। मुद्राओं, शासन-सम्बन्धी अभिलेखों और पत्रावलियों, यात्रियो के वर्णनों आदि से कुतुबशाही काल पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस काल की प्रायः सभी महत्वपूर्ण घटनाओं और व्यक्तियो के बारे में प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध हो चुके हैं। यह आश्चर्य की बात है कि गोलकुण्डा के श्रेष्ठतम लेखकों में गिने जाने पर भी वजही के सम्बन्ध में प्रकाशित तथा अप्रकाशित ऐतिहासिक सामग्री से विशेष सहायता नहीं मिलती।

वजही के समकालीन अनेक लेखक हिन्दी की दक्खिनी शैली में अपना नाम अमर कर गये हैं। वजही के आश्रयदाता गोलकुण्डा नरेश भी फ़ारसी तथा हिन्दी के यशस्वी लेखक थे। वजही के बाद गोलकुण्डा और बीजापुर मे जो कवि और लेखक हुए उनमें से कुछ लेखकों को साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त है। यह उचित नहीं जान पड़ता कि वजही की दीर्घकालीन साहित्य-साधना और आकर्षक व्यक्तित्व का प्रभाव इन लोगो पर नहीं पड़ा होगा, किन्तु इन साहित्यकारो ने भी वजही के सम्बन्ध में उन तथ्यो की ओर संकेत नही किया जिनके आधार पर हम उसके रहस्यमय जीवन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कर सकें।

वजही की तीन रचनाएँ और जीवनी के लिए उनका उपयोग

वजही के जीवन चरित्र के बारे में जो कुछ जानकारी मिलती है, उसका आधार वजही की अपनी रचनाएँ हैं। गोलकुण्डा सम्बन्धी इतिवृत्तों से केवल उसके अस्तित्व का पत चलता है। वजही की अपनी रचनाओं से भी हमे उसके जन्म स्थान आदि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। उनसे केवल यही ज्ञात होता है कि वजही ने गोलकुण्डा के किस शासक के समय कौन-सी पुस्तक लिखी। यह सामग्री ही वजही के काल-निर्णय में बहुत सहायक सिद्ध हुई है।

इस समय तक वजही की केवल तीन रचनाएँ—कुतुबमुश्तरी, ताजुल-हक़ायक़ और सबरस-उपलब्ध हैं। निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इस लेखक ने केवल इन तीन ग्रन्थों की ही रचना की। कुतुबमुश्तरी में गोलकुण्डा के इब्राहीम कुली कुतुबशाह के पुत्र मुहम्मद कुली कुतुबशाह की युवावस्था का वर्णन

किया गया है। मुहम्मद कुली कुतुबशाह का हृदय मुश्तरी नामक युवती की ओर अनायास ही आकर्षित हुआ। मुश्तरी बंगाल की रहनेवाली थी। वह भी मुहम्मद कुली कुतुब की ओर आकर्षित थी। इन दोनों का स्नेह किसी अदृष्ट आकर्षण के कारण ही सम्भव हुआ था। एक चित्रकार के कारण दोनों का मिलन सम्भव हो सका। कुछ विद्वानों ने मुश्तरी को मुहम्मद कुली कुतुब की प्रेयसी भागामती बताया है। उन लोगों के विचार से वजही ने भागामती और मुहम्मद कुली कुतुबशाह की प्रणय लीला को ही इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

स्वयं मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने अपने कविता-संग्रह में हैदरमहल (भागामती और मुश्तरी के बारे में अलग अलग कविता लिखी है। इससे ज्ञात होता है मुश्तरी और भागामती दो अलग अलग स्त्रियाँ हैं। ताजुल हक़ायक़ में आचार-सम्बन्धी कुछ तथ्यों का उल्लेख गद्य में हुआ है। इस पुस्तक से सूफ़ी आचार-विचार की जानकारी पाठक को मिल सकती है। साहित्य-प्रेमियों के लिए इस पुस्तक का महत्व इतना ही है कि इसका उपयोग 'सबरस' की तरह हिन्दी-गद्य के विकास को समझने में किया जा सकता है।

'सबरस' वजही का अन्तिम ग्रन्थ है, जो मुख्यरूप से गद्य में लिखा गया है। इस पुस्तक की कथा वस्तु के सम्बन्ध में आगे चल कर विस्तार से लिखा जाएगा।

कुतुबमुश्तरी और उसका लेखन-काल

'कुतुबमुश्तरी' का नायक ऐतिहासिक व्यक्ति है। उसके काल के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते। इस पुस्तक के कारण कुछ और बातें भी विचारार्थ उपस्थित की जा सकती हैं।

कुछ विद्वानों का कथन है वजही ने 'कुतुबमुश्तरी' उस समय प्रारम्भ की जब गोलकुण्डा के सिंहासन पर इब्राहीम कुतुबशाह राज्य करता था। पुस्तक के मंगलाचरण में ईश्वर और हज़रत मुहम्मद की स्तुति के बाद अन्य लेखकों की तरह वजही ने अपने समकालीन शासक की प्रशंसा इस प्रकार की है—

इब्राहीम कुतुबशाह राजाधिराज
शहंशाह है शाहशाहाँ में आज
अदल, बख्शिश होर दाद उसते अछे
सदा ख़ल्क़ सब शाद उसते अछे
जिते पादशाहाँ हैं संसार के
भिकारी हैं सब उसके दरबार के

(कुतुब मुश्तरी—हिन्दी संस्करण पृ. ३५)

इस प्रशंसा में वर्त्तमानकालिक क्रियापदों का उपयोग किया गया है। "संसार के जितने बादशाह हैं, वे सब उसके दरबार के भिखारी हैं" इस बात से स्पष्ट होता है कि इब्राहीम कुतुबशाह वजही का आश्रयदाता भी रहा होगा। इस एक पद के आधार पर वजही का कार्यकाल इब्राहीम कुतुबशाह से प्रारंभ किया जाता है। इब्राहीम

१५५० से १५८० तक गोलकुण्डा का शासक था।

कुतुब मुश्तरी की समाप्ति के बारे में वजही ने स्वयं लिखा है—

कुतुबमुश्तरी में जो बोल्या किताब
सो हुई जग में रोशन के ज्यूँ आफ़ताब

तमाम इस किया दीस बारा मने
सन यक हज़ार होर अठारह मने

(कुतुब मुश्तरी—हिन्दी संस्करण पृ. १९५)

"मैंने कुतुबमुश्तरी नामक जो पुस्तक कही है वह संसार में सूर्य की तरह प्रकाशमान हुई।...इसे मैंने सन् १०१८ हि० (१६१० ई०) में केवल बारह दिन में समाप्त किया।"

वजही की यह बात बहुत प्रामाणिक जान पड़ती है। उसने केवल बारह दिन में इस ग्रन्थ की रचना की। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कुतुब मुश्तरी की समाप्ति इब्राहीम कुतुबशाह के मरने के ३० वर्ष बाद हुई। यदि लेखक की बात ठीक है तो सन् १६१० ई० में इस पुस्तक का प्रारम्भ हुआ होगा। उसने इस पुस्तक को बारह दिन में समाप्त किया, इस बात पर सन्देह का कोई कारण दिखाई नहीं देता। यदि हम इस पुस्तक का प्रारम्भ इब्राहीम कुतुबशाह के समय में मान लें तो वह कम-से कम चालीस वर्षों में लिखी जानी चाहिए।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि लेखक ने अपने ग्रन्थ में मृत बादशाह की प्रशंसा वर्त्तमानकालिक क्रियापदों के साथ क्यों की है? यदि हम इस प्रशंसा वाले पूरे प्रसंग को पढ़ जाएँ तो इस प्रश्न का उत्तर स्वयमेव मिल जाएगा। फ़ारसी में समकालीन शासकों की प्रशंसा ईश्वर-स्तुति और हज़रत मुहम्मद के गुण-वर्णन की तरह पृथक रूप से दी जाती है। उसका पुस्तक के मूल कथानक से कोई सम्बन्ध नहीं होता। किन्तु वजही ने 'सबरस' में भी शासक की प्रशंसा इस प्रकार से नहीं की जिसे 'मदह' कहा जा सके। यदि 'सबरस' के मंगलाचरण को पढ़ा जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी। 'कुतुब मुश्तरी' में इस अंश को 'मदह' का नाम दिया गया है किन्तु वह स्पष्ट रूप से 'मदह' न हो कर कथानक का अंश है। लेखक अपनी कथा का प्रारंभ नायक के पिता की इस प्रशंसा के साथ शुरू कर रहा है। यहाँ इब्राहीम का उल्लेख शासक के नाते होते हुए भी नायक के पिता के रूप में हुआ है। इब्राहीम के सम्बन्ध में लिखते हुए कवि ने उस वर्णन को मूल कथानक के साथ इस प्रकार जोड़ा है—

सो भोतेक उम्मीद होर आस ते
मैंग्या एक फ़र्ज़न्द खुदा पास ते
के फ़र्ज़न्द ते नावँ अछता अहै
अपै गये तो भी नावँ अछता अहै

यही बात फिर-फिर के कहता अछे
इसी ध्यान में नित वो रहता अछे
जो एक दीस उस शह को फ़र्ज़न्द हुआ
वो फ़र्ज़न्द उसका सो दिलबन्द हुआ

(कुतुब मुश्तरी–हिन्दी सस्करण पृ. ३६)

यदि हम इब्राहीम कुतुबशाह की प्रशंसा को देख कर यह मान लें कि इस पुस्तक का प्रारम्भ इब्राहीम के समय हुआ तो मुहम्मद कुली कुतुबशाह के बचपन का वर्णन पढ़ते समय यह भी कहना पडेगा कि उन पदों की रचना उस समय हुई जब मुहम्मद कुली कुतुबशाह का जन्म हुआ अथवा वह बचपन में खेला करता था।

वास्तव में पूरा कथानक बहुत ही प्रवाह के साथ लिखा गया है। फिर इसका भी कोई कारण नहीं है कि पिता के आश्रय में रहते हुए कोई कवि उसके पुत्र की प्रणय-गाथा लिखे।

पुस्तक की समाप्ति में जो तिथि दी गई है, उस पर अविश्वास करने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। मुहम्मद कुली कुतुबशाह का देहान्त सन् १६१२ ई. में हुआ। कुतुबमुश्तरी मुहम्मद कुली कुतुबशाह की मृत्यु से केवल दो वर्ष पहले लिखी गई। वजही का कार्यकाल मुहम्मद कुली कुतुबशाह के अन्तिम दिनों से प्रारम्भ हुआ, इस विचार के लिए 'कुतुब मुश्तरी' की समाप्ति-तिथि पर्याप्त प्रमाण मानी जा सकती है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह का उत्तराधिकारी सुलतान मुहम्मद कुतुबशाह (१६१२-१६२६ ई.) था। सुलतान मुहम्मद कुतुबशाह, मुहम्मद कुली कुतुबशाह की पुत्री हयातबख़्शी बेगम का पति था। गोलकुण्डा के शासकों में सुलतान मुहम्मद कुतुबशाह धार्मिक वृत्ति के लिए प्रसिद्ध रहा। इन दिनों वजही क्या लिखता रहा पता नहीं। हो सकता है 'ताजुल हकायक़' इसी काल की रचना हो।

सुलतान मुहम्मद कुतुबशाह का पुत्र अब्दुल्ला कुतुबशाह जब गद्दी पर बैठा तो वजही उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचता है। अब्दुल्ला कुतुबशाह से उसे जितना मान प्राप्त हुआ उतना संभवतः किसी अन्य शासक से नहीं मिला। 'हदीक़-ए-कुतुब शाही' कुतुबशाही काल की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है। इस पुस्तक के अनुसार अब्दुल्ला कुतुबशाह को जब पुत्र हुआ तो वजही ने उसकी तारीख़ कही थी। फ़ारसी में किसी महत्वपूर्ण घटना तिथि को पद्य के एक चरण में सांकेतिक रूप से कहने की प्रथा है। इसे तारीख निकालना या कहना कहते हैं। इस तरह हदीक़-ए कुतुबशाही से प्रमाणित होता है वजही अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय विद्यमान था।

'सबरस' के प्रारम्भ में वजही ने उल्लेख किया है—"सुलतान अब्दुल्लाह जिल्लिल्लाह सूरत में यूसुफ़ थे अगले, आदम बेहोश होवे फ़तर पिघले। हिकमत में अफ़लातून शागिर्द-सखावत में हातिम का खोले बुर्द। शुजाअत में रुस्तम गर्द।

आली हिम्मत...सुबा के वक्त-बैठे तख़्त। ..वजही नादिर मन कूँ, दरियादिल गौहर-सुखन कूँ हुजूर बुलाये। पान दिये, भोत मान दिये। होर फ़रमाये के इन्सान वजूद बिच में कुछ इश्क़ का बयान करना, अपना नावँ अयाँ करना, कुछ निशान धरना। वजही बहुगुनी, गुन भर्या, तसलीम कर कर सर पर हात धर्या।" पृ. ७

इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है, अब्दुल्ला कुतुबशाह ने उसे प्रातःकाल बुला कर 'सबरस' लिखने की प्रेरणा दी। वजही को प्रातःकाल घर बुलाया गया और स्वयं बादशाह ने पान दिया, इससे यह स्पष्ट होता है कि वजही केवल दरबारी कवि ही नहीं था, अब्दुल्ला कुतुबशाह के घनिष्ठ व्यक्तियों में से एक था। उस समय तक वजही की आयु भी काफ़ी बड़ी होनी चाहिए। अब्दुल्ला कुतुबशाह की आयु भी कम नहीं रही होगी। यदि वजही कवि मात्र होता और अब्दुल्ला कुतुबशाह भी सामान्य शासकों की तरह कवियों का आश्रयदाता रहता तो वजही से किसी शृंगारपूर्ण काव्य लिखने का अनुरोध करता।

वजही ने 'सबरस' की समाप्ति की तिथि इस प्रकार दी है—"बारे, जिस वक्त था एक हज़ार व चहल व पंज, उस वक्त ज़हूर पकड्या यू गंज।"

सन् १०४५ हि. (१६३६ ई.) में 'सबरस' समाप्त हुआ। अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन का यह दसवाँ वर्ष था।

कुतुबमुश्तरी सन् १६१० ई. और सबरस सन् १६३६ ई. में लिखा गया। इन दोनों पुस्तकों में २६ वर्ष का अन्तर है। 'कुतुब मुश्तरी' के बाद वजही जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति ने कुछ नहीं लिखा होगा, इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। किन्तु इस अवधि में वजही ने कुछ लिखा है, इसका प्रमाण भी अब तक उपलब्ध नहीं हुआ। वजही ने इस बीच कोई महत्वपूर्ण रचना नहीं लिखी अथवा उसकी कोई रचना प्राप्त नहीं है, इसके दो ही कारण हो सकते हैं। मुहम्मद कुली-कुतुबशाह की मृत्यु के पश्चात् वजही गोलकुण्डा में न रहा हो और अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय उसे फिर बुलाया गया हो अथवा कुतुब मुश्तरी लिखने के बाद लेखक उस प्रकार के काव्यों के लिखने से विरत हो गया हो। उसने अपना समय अध्ययन और सूफ़ी सन्तों की सेवा में व्यतीत किया हो। सुलतान मुहम्मद कुतुबशाह जैसे धार्मिक नरेश से वजही को इस दिशा में प्रेरणा मिली हो, यह भी बहुत संभव दिखाई देता है। वजही ने इस अध्ययन और सत्संग से जो ज्ञान प्राप्त किया उसीके परिणाम स्वरूप सभवतः सबरस' जैसी प्रौढ़ रचना लिखने में उसे सफलता मिली।

इतना स्पष्ट है कि 'कुतुबमुश्तरी' और 'सबरस' के बीच जो २६ वर्ष का अन्तर है, वह वजही के जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। यदि 'कुतुबमुश्तरी' लिखते समय वजही २५ से ३५ वर्ष का रहा होगा तो सबरस लिखते समय उसकी आयु चालीस और पचास के बीच रही होगी। इस आयु में कमी की कोई सम्भावना नहीं है, अधिक की सभावना अवश्य है। 'सबरस' लिखने के पश्चात् कुछ

काल तक वजही जीवित रहा होगा।

वजही का पूरा नाम क्या था, ज्ञात नहीं है। उसने कुतुब-मुश्तरी में अपना 'वजीही' नाम दिया है और 'सबरस' में वजही। वजही की रचनाओं का अध्ययन करनेवाले सभी विद्वानों का मत है कि वजही और वजीही एक ही व्यक्ति हैं।

वजही अथवा वजीही

वजही की प्रशंसा में चाहे किसी अन्य व्यक्ति ने कुछ न लिखा हो किन्तु वह अपने प्रति बहुत सजग है। जहा कही अवसर मिलता है यह बताने की चेष्टा करता है कि वह जो कुछ कहता है सर्वथा मौलिक है और उसकी रचना रहती दुनिया तक रहेगी। कई स्थानों पर वह अपने विद्वान् और बहुश्रुत होने का दावा करता है। वजही ने अपनी विद्वत्ता तथा प्रतिभा के बारे में जो बात कही है, वह वास्तविकता से शून्य नहीं है, किन्तु स्वयं कवि के द्वारा कहे जाने के कारण वह गर्वोक्ति का रूप धारण कर लेती है। वजही ने अपने बारे में लिखा है—

कवि की गर्वोक्ति

यो बलवन्त बचन इसमें बल भोत है
समज थोड़ी लोगाँ में छल भोत है
जिते अक़्ल दौड़ाये अंदाज़ सूँ
किया नईं किने बात इस नाज़ सूँ

न कईं देख कर किसते पाया हूँ मैं
यो ताजा तरह दिल ते ल्याया हूँ मैं
न मुँज जोड, ना थाँव असमान कूँ
अजब कुच पहुँच है मेरे ज्ञान कूँ

कुतुब मुश्तरी (हिन्दी संस्करण पृ. ३३-३४)

सबरस में अनेक स्थलों पर उसने अपने ज्ञान के बारे में लिखा है। ऊपर जो उद्धरण दिया गया है, उसमें उसने अपने लिए "वजही नादिर मन कूँ, दरिया दिल गौहर-सुखन कूँ...वजही बहुगुनी, गुन भर्या" लिखा है। आगे चल कर वह लिखता है—"दरिया होकर मोतियाँ रोल्या हूँ, मोतियों की मौजों का मैं दरिया हूँ, तमाम मोतियाँ सूँ भरिया हूँ।" (पृ. १०) 'सबरस' की प्रशंसा करते हुए जैसे वजही स्वयं अपनी प्रशंसा कर रहा है—"लायक़ क़ाबिल मुस्तैद हर बाब, अपने वक़्त का लुक़मान, अफ़लातून। अपने वक़्त का ख़ुसरो, फ़रहाद, मजनू, अपने वक़्त का खाक़ानी, अनवरी, सादी; अपने वक़्त का ज़हीर, कमाल, सुलेमान। अपने वक़्त का हरेक बात का हादी। कलाम का साहब, फ़ाम का साहब, इलहाम का साहब, हरेक काम का साहब। रोशन ज़मीर-साहब तदबीर। हर फ़न में माहर...ख़ुदा का वासिल, साहब दिल। आशिक़ाँ का रहनुमा ..मजलिस का सिंगार...बहुत उसमें अक़्ल बहुत

उसमें फ़ाम" (पृ. २०४)। इस तरह वजही एक ही साँस में फ़ारसी के प्रसिद्ध कवियों और विद्वानों-अनवरी, सादी तथा सुलेमान आदि से अपनी तुलना कर गया है।

सबरस की कथावस्तु

'सबरस' की कथा-वस्तु बहुत ही अद्भुत है। उसमें प्रेम-सम्बन्धी कहानी है। अन्य प्रेम-कथाओं की तरह उसका भी एक नायक है, नायक की प्रेयसी है। प्रेमिका के विरह में नायक दुःखी है और प्रेमी के विरह से प्रेयसी का शरीर क्षीण होता जा रहा है। प्रेमी तथा प्रेमिका के मिलन में अनेक बाधाएँ उपस्थित होती हैं। 'सबरस' का नायक एक विलक्षण नायक है। उसकी प्रेयसी के साथ संसार के किसी प्रेम-काव्य की प्रेयसी की तुलना नहीं की जा सकती। वजही ने अपनी प्रेम-कथा के लिए मानवीय भावों को चुना है। मानवीय भाव ही शरीर धारण कर कथानक को आगे बढ़ाते हैं। इस अद्भुत कहानी का साराश निम्न प्रकार है—

सीस्तान नामक नगर था। उस शहर के शासक का नाम अक्ल था। उस शासक के कारण ही दीन-दुनिया का काम चलता था। उसके आदेश के बिना पत्ता भी नहीं हिलता था, अक्ल ही प्रकाश है, अक्ल ही आदमी कहलाता है। उस अक्ल के एक पुत्र था जिसका जोड़ा संसार में नहीं था। उस पुत्र का नाम था दिल। दिल के समान ससार मे कोई भी बुद्धिमान, धनुर्धारी, सुन्दर और साहसी नहीं था। अक्ल बादशाह ने अपने पुत्र दिल को तन नामक देश का राज्य सौंप रखा था। एक रात दिल बादशाह ने दो चार प्याले शराब के पिये। शराब सभा में पी गई थी। उस सभा में राज्य की शासन-समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे। मजलिस मे तरह तरह की चर्चा हो रही थी। पुरानी कथाओं के कहते कहते किसी ने आबेहयात अथवा अमृत की बात चलाई। यह बताया गया कि जो व्यक्ति इस अमृत का पान करेगा वह खज़र की तरह अमर हो जाएगा। जितने भी ईश्वर के सन्देशवाहक और सिद्ध हुए हैं वे सब इस अमृत के इच्छुक थे।

दिल बादशाह ने अमृत की विशेषताएँ सुनीं तो वह उसे प्राप्त करने के लिए बहुत उत्सुक हो गया। उसकी व्यग्रता बढ़ती ही गई। उसे अपने राज-काज की चिन्ता भी नहीं रही। अमृत में कुछ विशेषताएँ थीं, इसीलिए तो दिल जैसे बुद्धिमान के हृदय में उसकी लालसा उत्पन्न हुई।

दिल बादशाह के पास नज़र नामक जासूस था। नज़र सभी जगह जा सकता था। एक क्षण में राज्य की खबरें अपने स्वामी के पास पहुँचाता था। नज़र ने उठ कर दिल से निवेदन किया—आप जिस वस्तु की लालसा रखते हैं उसका नाम अमृत है। मैं इस अमृत की प्राप्ति के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा।

नज़र से साहसपूर्ण और आशाभरी बात सुनी तो दिल आश्वस्त हुआ। उसने नज़र को उसके साहस पर बधाई दी। उसने शुभकामना प्रकट की कि तुम अमृत का पता लगा कर शीघ्र ही राजधानी में लौटोगे।

जिस तरह पतंगा दीपक की जोत पर बलिदान हो जाता है, नज़र ने भी अमृत की खोज लगाने के लिए अपने आपको सौंप दिया। चलते चलते वह एक नगर में पहुँचा। उस नगर के आस-पास उद्यान था। नगर-निवासी बहुत सभ्य दिखाई दिये, वे आगंतुकों का बहुत सम्मान करते थे। जब नगर-निवासियों से नज़र ने उस नगर के बारे में जानकारी प्राप्त की तो उन्होंने बताया—"इस नगर का नाम आक़फ़ियत है। नामूस (प्रतिष्ठा) यहाँ शासन करता है।"

नज़र सीधा नामूस के पास पहुँचा। उसने अपने आगमन का उद्देश्य बताते हुए प्रकट किया कि वह अमृत का पता चलाये बिना शहर तन को नहीं लौटेगा। जितनी विनय प्रदर्शित की जा सकती थी उसने प्रदर्शित की। नज़र की व्यग्रता और विनम्रता के कारण नामूस का दिल पसीज गया। नामूस ने कहा—"वह अमृत पुरुष के मुँह का पानी है। इस पानी के लिए बहुत-से लोग तरसते चले गये, सिकन्दर को भी उसकी एक घूँट नहीं मिली। धन और शक्ति से इस जल की प्राप्ति नहीं हो सकती। जिसे इस जल की प्राप्ति हो, उसका जीवन धन्य है। इस जल का महत्व वही जानता है, जिसने इसका पान किया है।" नज़र ने नामूस के मुंह से अमृत की विशेषताएँ सुनी; किन्तु नामूस भी अमृत का पता-ठिकाना नहीं बता सका। नज़र उसे प्रणाम करके अपनी यात्रा पर चल दिया।

नज़र चलता चला गया। उसे इस बात का बहुत सन्ताप हो रहा था कि अब तक अमृत का कहीं पता नहीं चला। रास्ते में एक विशाल पर्वत दिखाई दिया। उसकी ऊँचाई तक दृष्टि नहीं पहुँचती थी। आस-पास के लोगों ने बताया इस पर्वत पर रिज़्क (रोज़ी) नामक बूढ़ा रहता है। उसने भगवान को प्रसन्न कर लिया है। नज़र ने रिज़्क के पास जा कर अपना उद्देश्य बताया। रिज़्क ने उत्तर दिया—"इस अमृत का स्रोत स्वर्ग में है, और तुम उसे पृथ्वी-तल पर ढूंढ रहे हो? यदि तुम इस अमृत का पता चलाना चाहते हो तो उसके चिह्न प्रेमियों के आँसुओं में देखो।" नज़र ने उत्तर में केवल इतना ही कहा—"तुम ठीक कहते हो, किन्तु मेरा उद्देश्य तो बिल्कुल अलग है।"

नज़र वहाँ से चला तो उसने अनेक जंगल छान डाले। एक बियाबान जंगल में उसे क़िला दिखाई दिया। उस क़िले की प्रतिच्छाया आकाश पर पड़ रही थी। सारी पृथ्वी उस दुर्ग के एक कोने में पड़ी थी। लोगों से पता चला—इस दुर्ग का नाम हिदायत (उपदेश) है। दुर्गपति का नाम हिम्मत है। नज़र ने कुछ समय हिम्मत की सेवा में व्यतीत किया। एक दिन अवसर पाकर उसने अमृत की बात चलाई। हिम्मत अमृत का नाम सुनते ही हँसा, किन्तु उसकी हँसी में वेदना झलक रही थी। उसने कहा—"अमृत की बात बताने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। अमृत की खोज मत करो। यदि कोई दूसरा व्यक्ति भी अमृत की लालसा रखता है तो उसे समझा बुझा कर शान्त कर दो। मजनू, जुलेखा, यूसुफ़ आदि ने इस अमृत के

पीछे बड़े-बड़े कष्ट सहे हैं। इस बात का पीछा छोड दो। मैं हिम्मत हूँ, किन्तु मैं भी इसका पता नहीं चला सका। दूसरा व्यक्ति उसका पता कैसे चला सकेगा ?" हिम्मत की इन बातों से नज़र निरुत्साह नहीं हुआ। उसने इतना ही कहा—"आप मुझे हिम्मत दीजिये, मैं इस अमृत की खोज लगा कर ही रहूँगा। आप मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं ? कौन सा काम है, जिसे आप नही कर सकते। मुझे अमृत का पता बता दीजिये।"

नज़र की दृढता से हिम्मत भी प्रसन्न हो गया। उसने कहा—"पश्चिम में एक देश है। इश्क़ नामक बादशाह वहाँ का शासक है। वह शासक प्रत्येक हृदय में रहता है। वह भगवान् की प्राप्ति करा सकता है। उस इश्क़ बादशाह की हुस्न नामक पुत्री है। नाज़, गम्ज़ा इशवा, अदा, दिलरुबाई, खुशनुमाई, लताफ़त जैसी चन्द्रमुखी सहेलियाँ हुस्न के साथ रहती हैं। हुस्न दीदार (मुख) नामक नगर मे रहती हैं। वहाँ एक रुख़्सार नामक उद्यान है। इस उद्यान में धन नामक स्रोत है। इसी स्रोत में आबेहयात अथवा अमृत है। इसी स्रोत पर आकर हुस्न प्रतिदिन अमृत पीती है।" हिम्मत के इस वर्णन को सुन कर नज़र चुपचाप बैठा रहा। हिम्मत ने बात आगे बढ़ाई—

"दीदार नगर तक जाना बहुत कठिन है। मार्ग में बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। यहाँ से चलोगे तो तुम्हें सुबुकसार (कोमल) नामक नगर मिलेगा। उस नगर मे रक़ीब नामक राक्षस रहता है। रक़ीब इश्क़ बादशाह के आदेशों का पालन करता है। वह इश्क़ के नगर का रक्षक है। वह उस नगर के पास किसी को फटकने नहीं देता। यदि तुम किसी तरह सुबुकसार शहर को पार कर लो तो तुम्हें कामत (क़द) नामक मेरा माजाया भाई मिलेगा। वह बहुत ही दृढ और गम्भीर है। दीदार शहर में ही उसका निवास-स्थान है। मैं तुम्हारी सिफ़ारिश किये देता हूँ। तुम मेरा पत्र उसे दे देना। वह वहाँ का रंग-ढंग तुम्हें समझा देगा।"

हिम्मत से अमृत-स्रोत का पता पाकर नज़र पश्चिम की ओर चल पड़ा। जब वह सुबुकसार नगर की सीमा में प्रविष्ट हुआ, उसे नवागत समझ कुछ लोग पकड़ कर अभागे रक़ीब के पास ले गये। रक़ीब ने पता-ठिकाना पूछा। यहाँ नज़र ने बुद्धिमानी से काम लिया। वज्र को भी समय पर मोम से नरम बन जाना चाहिए। नज़र ने कहा—"मैं हकीम हूँ, सिर से पाँव तक ज्ञान से भरा हूँ। निष्प्राण में प्राणों का सञ्चार कर सकता हूँ। मिट्टी को हाथ लगाऊँ तो सोना बना दूँ।" रक़ीब तो सोने के चक्कर में पहले से पड़ा हुआ था। वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"मेरे लिए बहुत-सा सोना बना दो।" नज़र ने सोना बनाने के लिए कुछ औषधियों की आवश्यकता बताई। उसने कहा—"ये औषधियां दीदार शहर के रुख़्सार नामक उद्यान में ही मिल सकती हैं।" रक़ीब ने कहा—"दीदार नगर और रुख़्सार उद्यान बहुत निकट हैं। मैं सारी औषधियाँ एकत्रित कर दूँगा। तुम मेरे साथ चले चलो और

अभीष्ट औषधियाँ प्राप्त कर लो।"

अभागा रक़ीब नज़र को साथ ले दीदार-नगरी की ओर चला। जब दोनों नगर में प्रविष्ट हुए हिम्मत के भाई क़ामत (क़द) ने नज़र को रक़ीब के साथ देख कर बहुत आश्चर्य किया। कारण पूछने पर नज़र ने सारी घटना बता दी। उसने क़ामत को वह पत्र भी चुपचाप दे दिया जो हिम्मत ने उसके नाम लिखा था। क़ामत ने पत्र पढ़ा तो उसे नज़र पर भरोसा हो गया। उसने अपने नौकर सीमसाक़ (जिसकी पिंडलियाँ चाँदी की हों) को बुला कर आदेश दिया कि वह रक़ीब को बिना बताये नज़र को कहीं छिपा दे। सीमसाक़ ने नज़र को फ़र्शफ़रहबख़्श (आनन्ददायक फर्श) के पीछे छिपा दिया।

नज़र के अकस्मात अदृष्ट होने पर रक़ीब बहुत आश्चर्य में पड़ा। उसने चारों तरफ़ खोज लगाई किन्तु नज़र का पता नहीं चला।

रक़ीब जब चला गया, नज़र ने अपनी यात्रा का उद्देश्य क़ामत को बताया। क़ामत नज़र के साहस से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने आश्वासन दिया, बताया—अमृत की प्राप्ति हो सकेगी। जब नज़र दीदार नगर देखने निकला, उसकी आँखें चौंधिया गईं। उसे प्रतीत हुआ जैसे भगवान् ने एक नया स्वर्ग बनाया है। प्रत्येक पेड़, पेड़ की प्रत्येक डाली फूल-फल से लदी है। प्रत्येक वस्तु अपूर्व और अलौकिक है।

नज़र क़ामत के साथ दीदार नगर की सैर कर रहा था, इसी बीच उन दोनों को राजकुमारी हुस्न दिखाई दी। राजकुमारी की एक सहेली थी, रंग उसका साँवला, नाम था लट। लट ने नज़र को देखा तो तपाक से पूछा—"क्यों जी, तुम कौन हो? इस तरह घबराये-घबराये क्यों घूम रहे हो? किसी की चोरी की है?" जब नज़र ने अपनी यात्रा और व्यग्रता का कारण बताया तो लट प्रसन्न हो गई। उसने कहा—"घबराओ मत। भगवान् भला करेंगे। मेरे चार बाल अपने पास रखो। समय पड़ने पर इन बालों को आग पर जलाना, मैं तुम्हारी सहायता के लिए हाज़िर रहूँगी।"

नज़र ने राजकुमारी हुस्न पर दृष्टि डाली। उसके साथ बहुत-सी सहेलियाँ थीं, बहुत से परिचारक थे। उन परिचारकों में ग़म्जा नामक सेवक भी था। ग़म्ज़ा नज़र का भाई था। बचपन में दोनों भाई एक दूसरे से बिछड़ गये थे। नज़र ने उसे पहचाना नहीं। जिस समय नज़र हुस्न और उसकी सहेलियों को देख रहा था ग़म्ज़ा नर्गिस पुष्पों की वाटिका में घूम रहा था। उसने ज्यों ही पराये आदमी को देखा वह ज़ोर से झपटा। नज़र के पास जाकर ग़म्ज़े ने तलवार उठाई। तलवार नज़र का काम तमाम करनेवाली ही थी कि ग़म्ज़े की दृष्टि नज़र की भुजा पर बँधे हुए लाल पर पड़ी। जिस समय दोनों भाई छोटे-छोटे थे, उनकी माँ ने दोनों की भुजाओं पर एक ही रंग के लाल बाँध दिये थे। ग़म्ज़ा ने लाल पहचान लिया। फिर क्या था? वह अपने भाई से रो रो कर गले मिला। उसे अपने घर लाया। राज-

कुमारी हुस्न को भी पता चल गया कि ग़म्ज़े का बिछुड़ा हुआ भाई बहुत दिनों बाद आया है। उसने ग़म्ज़े को बुला कर नज़र के बारे में जानकारी चाही। ग़म्ज़े ने कहा—"मेरा भाई जौहरी है। जवाहरात का दुनिया में एक ही पारखी है।"

हुस्न के पास एक अनमोल हीरा था। उसने ग़म्ज़ा से कहा तुम अपने भाई को मेरे पास लाओ, मैं अपने हीरे की परख कराना चाहती हूं। जब दूसरे दिन ग़म्ज़ा अपने भाई के साथ पहुँचा, नज़र ने हीरे के बारे में ऐसी-ऐसी बातें बताईं कि राजकुमारी हुस्न मुग्ध हो गई। उस हीरे में एक चित्र था। अब तक किसी को ज्ञात नहीं था कि आख़िर यह चित्र है किसका। नज़र ने बताया यह दिल बादशाह का चित्र है। दिल संसार में सब से सुन्दर है। दिल के बारे में जानकारी पाते ही हुस्न दिल पर मुग्ध हो गई। वह मन ही मन दिल से प्रेम करने लगी। उसने नज़र को एकान्त में बुला कर अपने प्रेम की बात बताई। उसने विकलता से कहा—"तुम मुझे दिल से मिलाओ। इस मिलन के लिए जो भी उपाय करने पड़ें, करो।"

नज़र ने कहा—"दिल को यहाँ तक बुला लाना सरल नहीं है। दिल के पिता अक्ल बादशाह ने दिल को तन के दुर्ग में बन्दी बना दिया है। वह उसे तन के बाहर जाने नहीं देता। उसकी प्राप्ति का उपाय तुम्हारे हाथ में है। दिल इस समय अमृत प्राप्त करना चाहता है। अमृत का पता बता दो तो दिल उसे प्राप्त करने के लिए अवश्य आएगा।"

राजकुमारी हुस्न के पास ख़याल नामक ग़ुलाम था। ख़याल बहुत शीघ्र चल सकता था। ख़याल की चतुराई वर्णन नहीं की जा सकती। वह हुस्न का आज्ञाकारी सेवक था। हुस्न ने अपने इस सेवक को नज़र के साथ कर दिया। चलते समय उसने अपनी अँगूठी भी दी। हुस्न ने विश्वास दिलाया कि यदि दिल यहाँ आ जाए तो वह उसे अमृत के स्रोत तक पहुँचा देगी।

ख़याल और दिल तन के नगर की ओर चल दिये। चलते-चलते बहुत दिन हो गये। जब वे दोनों दिल के पास पहुँचे तो नज़र ने अपनी यात्रा का पूरा वृत्तान्त सुनाया। इस वृत्तान्त को सुन कर दिल बहुत प्रसन्न हुआ। दिल ने अपनी प्रेमिका हुस्न के सम्बन्ध में बार-बार पूछा। उसने नज़र और ख़याल की बहुत आवभगत की। उसने जब ख़याल के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो ख़याल ने बताया "मैं चित्रकार हूँ। चित्र खींचना मेरा काम है।" दिल ने राजकुमारी हुस्न का चित्र खींचने के लिए आदेश दिया। जब चित्र पूरा हो गया तो हुस्न की सुन्दरता पर दिल मुग्ध हो गया। दिल की व्याकुलता का ठिकाना नहीं था। उसके ज़िगर में ख़ून तो क्या पानी की बूँद भी नहीं बची। उसने नज़र से सलाह करके तन से बाहर चलने का निश्चय किया।

दिल यात्रा की तैयारी कर रहा था और उधर उसके पिता महाराज अक्ल के

वज़ीर वहम (सन्देह) ने सोचा राजकुमार ख़याल और नज़र के कहे में चलेगा तो मेरा महत्व कम हो जाएगा। उसने महाराज अक्ल के पास दिल बादशाह की चुगली खाई --"नज़र दिल को कहीं ले जा रहा है। नज़र के साथ एक विचित्र व्यक्ति आया है। मुझे वह जादूगर मालूम होता है। ऐसा न हो ये दोनों दिल को ले जाकर कहीं विपत्ति में फँसा दें। इश्क़ बादशाह बहुत बलवान है। बलवान से लड़ना सहज काम नहीं। आप अच्छे लोगों को जमा कीजिये। काम के आदमी कठिनाई से मिलते हैं। यदि आप में कुछ शक्ति होगी तो इश्क़ बादशाह को विवश हो कर समझौता करना पड़ेगा। यदि आप में शक्ति न हो तो इश्क़ आप पर अत्याचार करेगा। इश्क़ बादशाह मस्त और ज़बर्दस्त है। उसका क्या भरोसा? यदि वह बिगड़ गया तो उसे मनानेवाला जगत् में कौन है? मैंने आपका नमक खाया है। इसी लिए मुझे इतना सब कहना पड़ा। जो शत्रु होता है, वही समय पड़ने पर चुप रहता है।"

अपने वज़ीर वहम की स्वामिभक्ति से ओतप्रोत बातें सुन कर महाराज अक्ल बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वहम को गले लगाया। वहम की प्रशंसा करते हुए महाराज ने कहा -"तुम्हारी ईमानदारी को देख कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। दिल तुम्हारी क़द्र नहीं कर सका। तुम्हारे गुणों से वह अपरिचित ही रहा। तुम ने बहुत अच्छा किया। सेना भेज कर दिल और नज़र को क़ैद कर लो।"

जिस समय नजर राजकुमारी हुस्न से विदा हो रहा था, राजकुमारी ने विशेष उद्देश्य से अपनी अंगूठी दी थी! सुनारों ने उस अँगूठी को ऐसे समय में घड़ा था कि कोई भी व्यक्ति उसे मुँह में रख कर अदृश्य हो सकता था। उस अँगूठी की दूसरी विशेषता यह थी कि वह जिस व्यक्ति के पास रहती उसे क्षण भर में अमृत का स्रोत दिखाई देने लगता। नज़र ने उस अँगूठी को मुँह में रखा और हँसता-खेलता अक्ल की जेल से बाहर चला आया। वह बाहर निकल कर शहर दीदार की ओर चल दिया। दीदार नगर में पहुँच कर उसने एक उद्यान में अमृत का स्रोत देखा। नज़र के मन में अमृत की एक घूँट पीने की लालसा हुई। उसकी यह लालसा अनुचित थी अतः उसे दण्ड मिला। उसने ज्यों ही अमृत पीने के लिए मुँह खोला, अँगूठी अमृत के स्रोत में गिर गई। अमृत-स्रोत आँखों से ओझल हो गया। उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकल सकी। वह पछताने लगा।

अँगूठी गिरते ही नज़र सब को दिखाई देने लगा। रक़ीब उसकी खोज कर ही रहा था। उसने नज़र को देखा तो वह उसे पकड़ कर अपने नगर सुबुकसार में ले आया। उसने नज़र को कारागार में बन्द कर दिया। जब जेल के दरवाज़े बन्द हो गये, नज़र को बालों की याद आई। उसने उन्हें आग पर जलाया। लट उपस्थित हुई। लट ने नज़र को धीरज बँधाया और उसे किसी तरह जेल से बाहर कर दिया। जब रक़ीब ने जेलखाने में नज़र को नहीं देखा तो वह बहुत दुखी हुआ। लट ने नज़र को शहर दीदार का रास्ता बताया। उसने दीदार नगर में पहुँच कर

राजकुमारी हुस्न को अपनी राम-कहानी सुनाई।

इस वृत्तान्त से राजकुमारी को बहुत दुःख हुआ। उसने कहा—"मैं यहाँ दिल बादशाह से मिलने के लिए दिन गिन रही थी और वहाँ दिल जेल में क़ैद कर दिया गया। मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं था कि हमारे मिलन में यह बाधा उपस्थित होगी। मेरे मन कछु और है, विधिना के कछु और।"

राजकुमारी ने ग़म्ज़ा को बुलाया। उसे अपने प्रेम की बात समझाई। उसने नज़र से कहा—"तुम ग़म्ज़े के साथ तत्काल तन चले जाओ। किसी तरह शीघ्र से शीघ्र दिल बादशाह को मेरे पास लाओ, जिससे मेरी विरह-व्यथा शान्त हो।"

जिस समय नज़र जेल से भागा था अक्ल ने समझ लिया था वह ज़रूर कोई शरारत करेगा। नज़र की करतूतों से बचने के लिए अक्ल ने उसी दिन किले का पहरा सख़्त कर दिया। अपने सैनिकों को आदेश दे दिया कि नज़र जहा दिखाई दे, उसे बन्दी बना लिया जाए। सीमा पर रखवाली करनेवाले सैनिकों को विशेष रूप से चेतावनी दी गई। कुछ सैनिक केवल इस काम के लिए छोड़े गये कि अक्ल बादशाह की सीमा में पाँव रखते ही वे नज़र को बन्दी बना लें।

अक्ल के सामन्त जोहद (वैराग्य) ने अपने पुत्र तोबा को भी नज़र पर नज़र रखने का आदेश दिया था। सब सैनिक अपनी अपनी जगह सावधान थे। ग़म्ज़ा और नज़र चलते चलते थक गये थे। वे जोहद के निवास-स्थान पर पहुँचे। वहाँ एक फुलवारी थी, दोनों उसमें ठहर गये। दोनों नींद के मारे परेशान थे, जरा आँख लग गई। सूरज निकल आया किन्तु उनकी नींद नहीं टूटी। दिन के प्रकाश में दुर्ग के रखवाले ने दोनों को देख लिया। उसने तत्काल तोबा को सूचना दी। तोबा के क्रोध और उत्साह का ठिकाना नहीं था। उसने अपने सैनिक इकट्ठे किए और नज़र तथा ग़म्ज़ा को जा घेरा। जब चारों ओर सैनिक आ गये तब नज़र और ग़म्ज़ा हड़बड़ा कर उठे। वे दोनों बहुत शक्तिशाली थे। दोनों ने सब सैनिकों को मार भगाया। तोबा बारा बाट हो गया। तोबा का क़िला उन दोनों ने लूट लिया।

नज़र और ग़म्ज़ा ने निश्चय किया कि अब वहाँ अधिक देर ठहरना उचित नहीं है। दोनों चल दिये, दोनों ने वेश बदल लिया। कलन्दर बने हुए वे आफ़ियत शहर के बादशाह नामूस के पास पहुँचे। नामूस ने ग़म्ज़े के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। अब वे दोनों विजेता तन नगर की तरफ़ जा रहे थे। जब वह नगर निकट आ गया तो उन लोगों ने एक बार फिर वेश बदला। ग़म्ज़ा ने शराब पीकर अपने सैनिकों पर मन्त्र पढ़ा। सारी सेना मृग-यूथ में बदल गई।

तोबा पराजित हो चुका था किन्तु अपने स्वामी की सेवा से विरत नहीं हुआ। वह सीधा अक्ल बादशाह के पास गया। उसने अपने क़िले की सारी घटना सुनाई। बोला—"ग़म्ज़ा बहुत बहादुर है। उससे पार बसाना मामूली बात नहीं है।" ग़म्ज़ा की बहादुरी सुन कर अक्ल की अक्ल ठिकाने नहीं रही। वह बहुत घबराया।

उसने अपने पुत्र दिल को कारागार से बुलवाया। उसके सभी बन्धन खोल दिए गये। पिता ने पुत्र से कहा—"राजकुमारी हुस्न की सेना बहुत बड़ी है। उसके सैनिकों से पार पाना तुम्हारे बस की बात नहीं। यदि तुम उसके नगर की तरफ़ क़दम रखोगे तो परेशान हो जाओगे। अच्छा यही है कि उस राजकुमारी की चर्चा छोड़ दो। ग़म्ज़ा और दूसरे सरदार बड़े धूर्त हैं। तुम्हें कहीं ले जा कर परेशानी में डाल देंगे। मेरी यह बात तुम्हें पसन्द नहीं तो तुम जा सकते हो, किन्तु अकेले मत जाना। मैं अपनी सेना तुम्हारे साथ कर दूँगा। यदि तुम हुस्न राजकुमारी को पाना ही चाहते हो तो उसके दीदार शहर को चारों तरफ़ से घेर लो।"

पिता की अन्तिम बात दिल को पसन्द आई। उसने सेना के साथ राजकुमारी हुस्न के पिता इश्क़ की राजधानी पर आक्रमण करने का निश्चय किया।

अक्ल का सेनापति सब्र (सन्तोष) नामक व्यक्ति था। सब्र बहुत बहादुर था। सब्र-सबूरी से ही यह दुनिया चलती है, सबूरी से धर्म का पालन हो सकता है। जब सब्र के सेनापतित्व में अक्ल की सेना इश्क की राजधानी की ओर कूच करने लगी तो पिता ने पुत्र को उपदेश दिया। पिता का उपदेश समाप्त भी नही हुआ था कि दूतों ने आकर सन्देश दिया—"हमारे नगर के बाहर मोटी-दुबली कई तरह की हिरनें खेत चर रही हैं। देखने से लगता है उन हिरनों में काफ़ी समझ-बूझ है। दिल ने यह समाचार सुना तो उसने इन हिरनों का शिकार करना चाहा। पिता की आज्ञा ले उसने हिरनों के पीछे घोड़ा दौड़ाया। हिरनें वास्तव में हिरनें नहीं थीं, ग़म्ज़ा के सैनिकों ने मन्त्र के बल से हिरनों का रूप धारण कर रखा था। उन हिरनों ने छल-कपट से दिल और उसके सैनिकों को घने जंगल में पहुँचा दिया। जब अक्ल ने देखा कि उसके पुत्र के साथ किसीने धोखा किया है तो वह भी अपनी सेना लेकर हिरनों के पीछे चला। उस समय पिता-पुत्र दोनों जंगल में थे। नज़र और ग़म्ज़ा दिल को लाने के लिए जा रहे थे। उन्होंने देखा दिल उन्हींकी तरफ़ आ रहा है। उस समय बादशाह का दिल राजकुमारी हुस्न के विरह में व्याकुल था। ग़म्ज़ा और नज़र ने सलाह की —हम लोगों ने तोबा को हराया, नामूस को लूटा। पता नहीं अक्ल बादशाह इसके लिए हमें क्या दण्ड दे। हम लोगों को अक़्ल और दिल के पास नहीं चलना चाहिए। इससे बनता काम बिगड़ जाएगा। हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि वे दोनों हमें न देखें और दीदार नगर तक चले जाएँ। फिर जो कुछ होगा सो देखा जाएगा।

ग़म्ज़ा और नज़र की योजना सफ़ल हुई। हिरनों का पीछा करते करते दिल, अक्ल और उनके सैनिक दीदार नगर के निकट पहुँच गये। अब नज़र और ग़म्ज़े को कुछ सुझाई नहीं दे रहा था। वे दोनों हुस्न के पास पहुँचे और उसे पूरी स्थिति से अवगत कराया। हुस्न ने दोनों को गले लगाया। तीनों ने निश्चय किया अक्ल की शक्ति कम नहीं है। वह सेना ले कर यहाँ आया है, न जाने कौन-सी आफ़त

खड़ी करे। यह उचित होगा कि हुस्न अपने पिता इश्क को पहले से सावधान कर दे। राजकुमारी ने अपने पिता को पत्र लिखा—"मेरा एक गुलाम खयाल बहुत ही आज्ञाकारी है। अक्ल बादशाह ने उसे बन्दी बना लिया है। जेल में उससे बुरा बर्त्ताव किया जा रहा है। न खाने को रोटी दी जाती है और न पीने को पानी। अपने गुलाम को छोड़ने के लिए मैंने अक्ल बादशाह को पत्र लिखा, उसने मेरे गुलाम को छोड़ना तो दूर रहा, उल्टे सेना ले कर चढ़ आया है।" इस पत्र से हुस्न ने अपने पिता को भाँसा दिया। इश्क बादशाह ने बेटी की चिट्ठी पढ़ी तो उसके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। उसने दाँत पीस कर कहा—"ओह, अक्ल की इतनी हिम्मत! मैं भी उससे किसी बात में कम नहीं हूँ।'

इश्क ने अपने सेनापति महर (दया) को बुलाया। सेनापति बहुत मधुरभाषी और निडर था। इश्क ने आदेश दिया कि सेनापति ज़फ़ा, मशक्कत, दर्द आदि मन्त्रियों को साथ लेकर इश्क से युद्ध करे। ऐसी शूरता दिखाई जाए कि अक्ल तो क्या किसी दूसरे को भी इश्क के नगर पर आक्रमण करने की हिम्मत न हो। जब सेनापति महर ने अक्ल का सामना किया तो अक्ल परेशान हो गया। महर के पास अपार सेना थी। वह मन ही मन पछताया। इश्क बादशाह की ओर से पहले दिन ग़म्ज़ा लड़ा, दूसरे दिन क़ामत और तीसरे दिन ज़ुल्फ़।

इस युद्ध के कारण दिल की परेशानी भी कम नहीं थी। उसे प्रतीत होने लगा जैसे वह हुस्न को प्राप्त नहीं कर सकेगा। उसी समय उसके पास एक सुबास नामक स्त्री पहुँची। उसने दिल को ढाढस बँधाया। कहा—"भागने से काम नहीं बनेगा। घबराओ मत, मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।" उसने इश्क के पास जाकर उसे बहुत परेशान किया।

चौथे दिन भी युद्ध होता रहा। दोनों में कोई एक दल हार नहीं मानता था। हुस्न मन ही मन सोचने लगी अब क्या किया जाए। उसने अपने खाल (मस्सा) नामक सेवक को बुला कर सलाह की। खाल ने कहा—"कोह काफ़ (काफ़ नामक पर्वत) में तुम्हारी एक बहन रहती है। वह बहुत बहादुर है। बुद्धि में मर्द भी उसके आगे कतराते हैं। वह यदि किसी तरह यहाँ आ जाए तो बात बन जाएगी। उसका नाम भी हुस्न है। वह भी प्रेमियों पर अत्याचार करती है। तुम दोनों बहनें अनुपम हो। दोनों परियों, परी, हूर, चाँद और सूरज। तुम दोनों मिल जाओ तो अक्ल को परास्त कर सकती हो। दिल तुम से प्यार करता है, किन्तु बाप के आगे उसका बस नहीं चलता है।'

उसने उत्तर दिया "यहाँ तो प्राण संकट में पड़े हैं। पता नहीं मेरी बहन कब आएगी!" खाल ने उत्तर दिया "घबराओ मत। मेरे पास अम्बर का एक पुराना दाना है। उसे ज्यों ही आग पर रखूँगा, तुम्हारी बहन उपस्थित हो जाएगी।"

हुस्न की बहन जब वहाँ प्रकट हुई तो दोनों बहनों में प्यार से बातें होने लगीं।

हुस्न ने अपनी राम-कहानी कही। उसने स्पष्ट बता दिया कि दिल को वह प्राणों से अधिक चाहती है। दिल का पिता अक्ल मार्ग में बाधक है। बहन ने धीरज बँधाया। "चिन्ता मत कर बहन। मेरे पास एक बहादुर हाजिब (द्वारपाल) है। वह तीर चलाने में एक ही है। वह हमारी सहायता करेगा। उसका नाम हलाक है।"

जब हलाक को बुला कर आदेश दिया गया तो उसने महर सेनापति से मिल कर युद्ध की योजना बनाई। इस योजना के कारण इश्क़ की सेना बहुत बलशाली हो गई। हलाक सैनिकों के साथ अक्ल की सेना में घुसा। उसे बहुत से घाव लगे किन्तु वह पीछे नहीं हटा। हलाक से गल्ती यह हुई कि उसने दिल पर ही तीर चलाया और जब दिल तीर लगने से जमीन पर पड़ गया तो उसे खींच कर मैदान से बाहर ले आया। अक्ल ने जब अपने पुत्र को तीर खा कर घोड़े से नीचे गिरते देखा तो वह बहुत घबरागया। अक्ल की सेना तितर-बितर हो गई। एक आदमी मैदान में नहीं डटा। बेचारा अक्ल इस तरह पराजित होकर घने जंगल में भाग गया। हलाक और उसके साथियों ने बहुतेरा खोजा लेकिन अक्ल का पता नहीं चला। कोई कहता था वह अपने शहर तन को चला गया, कोई कहता था लज्जा के मारे पानी में डूब मरा। दिल हुस्न के हाथ आया। हुस्न की विजय हुई।

जब दिल को होश आया तो तीर का घाव कसक रहा था। पिता की चिन्ता अलग थी। दिल की यह वेदना देख हुस्न के मुँह से चीख निकली। उसने अपने सेवकों को बहुत डाँटा-फटकारा। बोली—"मैंने कब आदेश दिया था कि तुम लोग दिल को इतना परेशान करना।'

हुस्न की नाज नामक दाई थी। नाज बहुत चतुर थी। हुस्न ने दिल के बारे में दाई को सच सच बात बता दिया। उसने दाई से पूछा मै दिल के साथ किस तरह विवाह कर सकती हूँ? दाई ने कहा—"सेनापति महर को इश्क़ बादशाह के पास भेजा जाए। वह अक्ल के पराजय की बात इश्क़ से कहे। दिल के बारे में भी बात-चीत करके हमें इश्क़ के विचारों से अवगत करे। बड़ों की बात बड़े ही जानते हैं। बड़ों से बात नही छिपानी चाहिए। समय पड़ने पर उनसे सलाह लेनी चाहिए। मैं तुम्हारे लिए यश-अपयश सब कुछ सहूँगी। तुम्हारी सहायता करने में पीछे नहीं रहूँगी।"

नाज और हुस्न ने महर को इश्क़ के पास भेजा। उसने बादशाह का अभि-नन्दन करके सूचना दी कि अक्ल हार कर भाग गया, उसका पुत्र दिल पकड लिया गया। इश्क़ अक्ल पर बहुत हँसा। बोला—"मूर्ख अक्ल जो काम नहीं हो सकता था उसे करने चला था। अपनी करनी का फल पा गया। दिल के गले में तौक़ डालो। जंजीरों से जकड़ कर उसे जेल में डाल दो। अक्ल जहाँ कही हो पकड़ कर मँगाओ। नाज़, ग़म्जा, शेवा, इश्वा, छुन्द, चाला आदि से कहो वे अक्ल और दिल की निगरानी करें। अक्ल बहुत चालाक और धूर्त है। यदि अक्ल और इश्क़

में मेल हो जाय तो अच्छा नहीं तो अक्ल पर बला आई।"

महर हुस्न के पास लौटा। इश्क़ ने जो कुछ कहा था अक्षरशः कह सुनाया। हुस्न ने सोचा अब बुद्धि से काम लेना चाहिए। उसने नाज को बुलाया। दाई ने कहा धैर्य रक्खो, सब कुछ ठीक हो जाएगा। पहले दिल को कहीं छुपा दो। फिर इश्क़ जो कुछ कहेगा उस पर विचार किया जाएगा। तब तक के लिए रुख़सार की फुलवारी में जो चाहजकन (ठोड़ी का कुआ) है उसमें दिल को क़ैद कर दिया जाए। अभी तेरा प्रेम किसी के आगे प्रकट नहीं होना चाहिए, अन्यथा बनती बात बिगड़ जाएगी।

हुस्न और नाज़ ने मिल कर दिल को चाहजकन में डाल दिया। उसी कुए में अमृत का स्रोत था। दिल कुए में पड़ा पड़ा सोचता था—क्या मुझे कभी हुस्न याद करेगी। इधर हुस्न के तन, मन और प्राण विकल हो गये।

महर सेनापति की एक बेटी क नाथ हुस्न की गाढ़ी मित्रता थी। वह जादू टोना भी जानती थी। हुस्न ने कहा—"शहर दीदार के बगीचे में अमृत स्रोत से कुछ दूर बीचों-बीच एक छज्जा है। तुम किसी तरह दिल को उस छज्जे पर ले आओ।" महर की पुत्री ने विश्वास दिलाया कि वह दिल को उस छज्जे पर अवश्य लाएगी। केवल दिल का पता मालूम हो जाए।

हुस्न ने अपनी सहेली जुल्फ़ को बुला कर कहा—"तुम दिल को कुए से निकाल कर दिलकश (चित्ताकर्षक) बाग़ में छोड़ देना। आगे जो कुछ होगा देखा जाएगा। जुल्फ़ ने दिल को कुए से निकाला तो वफ़ा भी पहुँच गई। उसने दिल को समझाया—"हुस्न ने विवश हो कर तुम्हें कुए में छिपाया था। पिता का लिहाज़ भी रखना था। यदि वह तुम्हें न छुपाती तो इश्क़ तुम्हें न छोड़ता। हुस्न ने तुम्हें वरण किया है। तुम उसे प्राणों से भी प्रिय लगते हो।" वफ़ा ने इन बातों से दिल के मन की सारी ग्लानि समाप्त कर दी। वफ़ा और जुल्फ़ ने दिल को दिलकश बाग़ में ला कर छोड़ दिया।

कुए से निकल कर दिल ने बाग़ देखा तो वहाँ के फूलों पर मुग्ध हो गया। वह बहुत दिनों का थका हुआ था, एक फूल पर बैठा तो उसे नींद आ गई। वफ़ा ने हुस्न को खुशखबरी दी। समाचार सुन कर हुस्न बहुत प्रसन्न हुई। प्रसन्नता के मारे पाँव ज़मीन पर नहीं टिके। उस समय हुस्न के मन की विकलता देखने लायक़ थी। दिल गहरी नींद में सोया हुआ था। हुस्न की आँख से आंसू टपका तो दिल के मुँह पर पड़ा। दिल हड़बड़ा कर उठा। दोनों एक दूसरे के गले लग गये। दिल ने कहा—'मैं तुम्हारा प्रेमी हूँ। प्रेमी का रोना उचित है। तुम प्रेमिका हो। प्रेमिका का रोना उचित नहीं है।"

हुस्न ने दिल के पास खयाल, नज़र और तवस्सुम को छोड़ा। वह स्वयं सायंकाल तक छज्जे पर रही। हुस्न बेचैन थी। वफ़ा को बुला कर बोली—"खयाल और तवस्सुम से कह कर दिल का दिल बहलाओ। उसे बेहोश करने की दवा

पिलाओ।" हुस्न ने जुल्फ़ से कहा—"तुम चुपचाप दिल को इस छज्जे पर ले आओ, काम इस तरह हो कि दिल को भी पता न चले। दिल को दवा पिला कर बेहोश कर दिया था। "वह छज्जे पर लाया गया तो समझ रहा था अभी वन में ही भटक रहा है। हुस्न ने उसके सामने अपने कष्टों का वर्णन करके कहा—"मेरे कारण तुम्हें भी दुःख सहना पड़ा।"

हुस्न ने दिल को बेहोश करके विसाल के छज्जे पर रखा। वह दिल को रोज़ाना मेंड़ी पर लाती और ले जाती। इन सब बातों की किसी को कानोंकान ख़बर नहीं थी।

हुस्न के साथ अभागे रक़ीब की ग़ैर नामक बेटी रहती थी। वह प्रायः हुस्न के साथ रहा करती थी। कोई काम ऐसा नहीं होता जिसमें ग़ैर हुस्न का साथ न देती हो। ग़ैर का स्वभाव अच्छा नहीं था। जहाँ जाती दो में झगड़ा लगाती। मिलों का बिछोह कराती। वह बहुत बेईमान थी। हुस्न विसाल के छज्जे पर आते समय ग़ैर को साथ नहीं लाती थी। दो-चार दिन बाद ग़ैर का ध्यान इस ओर गया कि हुस्न निश्चित समय पर कहीं चली जाती है। वह उससे कुछ छिपा रही है। हो न हो दाल में कुछ काला है। एक दिन ग़ैर चोरी से हुस्न के पीछे-पीछे गई। उसने हुस्न और दिल का मिलना देखा, उनकी प्रेम-पूर्ण बातें सुनी। अब उसकी समझ में आया कि हुस्न उससे क्यों कतराती थी। दिल की सुन्दरता पर वह मुग्ध हो गई। उसने मन-ही मन सोचा मैं हुस्न से किस बात में कम हूँ। सुन्दरता में हुस्न से दो तिल बढ़ कर हूँ।

एक रात हुस्न शहर चली गई और समय पर नहीं लौटी। ग़ैर धीरे-धीरे विसाल के छज्जे पर आई। वह जादू-टोना जानती थी। उसने हुस्न जैसा रंग-रूप बनाया और हुस्न के लहजे में ही खयाल, वफ़ा, तबस्सुम आदि परिचारकों को आदेश दिया। दिल को बेहोश करने की दवा पिलाई। हुस्न की तरह दिल को छज्जे पर लाई। जब दिल के बाहुपाश में ग़ैर सुध-बुध खो कर सो रही थी, नीचे खयाल जागा। उसने देखा दिल अपनी जगह पर नहीं है। वह ढूंढने लगा। उसने विसाल के छज्जे पर आकर देखा तो दिल की गोद में ग़ैर मस्त पड़ी है। खयाल ने शहर दीदार में जा कर हुस्न को पूरा समाचार दिया। हुस्न की परेशानी का ठिकाना नहीं रहा।

हुस्न ने अपने सारे आभूषण तोड़ कर फेंक दिये। बाल नोचने लगी। दहाड़ें मार-मार कर रोई। उसने छज्जे पर जा कर अपनी आँखों ग़ैर को दिल के आलिंगन में देखा। उसने मन ही मन कहा—"क्या इसे शरारत के लिए मेरा ही घर मिला था। मेरा बस चले तो इसकी बोटी बोटी नुचवाऊँ।" उसने ग़ैर को बुला कर बहुत कुछ बुरा-भला कहा। ग़ैर सारी बातें चुप चाप सुनती रही। ग़ैर ने सोचा अब यहाँ रहना ठीक नहीं। वह जादू जानती थी। उसने भेस बदला और हुस्न की नज़रों से

ओझल हो गई।

जब ग़ैर चली गई तो हुस्न को दिल पर भी बहुत क्रोध आया। उसने ख़याल और अन्य अनुचरों को आदेश दिया—"दिल को मेरे बाग़ से बाहर निकाल दो। सिर पर कालिख का टीका लगाओ। मैंने सोचा था इसका प्रेम दृढ़ होगा।" हुस्न कुछ देर चुप रही। उसने फिर कहा—"उसे बाग़ से बाहर निकालने से कोई लाभ नहीं होगा। उसे ग़ज़ब के बन्दी-गृह में डालो और तुम लोग उस पर दृष्टि रखो।" फिर उसने मन में सोचना शुरू किया—ग़ैर औरत थी। वह नीचता कर सकती थी, किन्तु दिल तो पुरुष था। उसे यह बात शोभा देती थी? मैं उसके लिए सारी दुनिया में बदनाम हुई और उसने यह बर्त्ताव किया?

ग़ैर ने घर जा कर पूरी बातें अपने पिता रक़ीब को कह सुनाईं। रक़ीब क्रोध के मारे लाल हो गया। वह ढूँढ़ता-ढूँढ़ता ग़ज़ब के बन्दीखाने में आया। उसने ख़याल, तवस्सुम और नज़र पर मन्त्र पढ़ कर दाने डाले। वे बेसुध हो गये। वह अपने साथ दिल को ले गया। शहर सुबुकसार में एक क़िला था। नाम था हिज़ाँ। उसने उस क़िले में दिल को बन्द कर दिया

अब दिल पछताने लगा। उसने सोचा—मैंने अपने पिता का कहा नहीं माना, इसी लिए यह सारी आफ़त उठानी पड़ी। आख़िर हुस्न मुझपर इतनी अप्रसन्न क्यों हो गई? मैंने कोई अपराध तो किया नहीं। मुझे स्पष्टीकरण तो माँगना चाहिए था। उसका वह स्नेह सहसा कहाँ चला गया?

दिल को चैन नहीं थी। खाना-पीना सब छूट गया। दिन-रात तड़फता था। ग़ैर ने दिल की यह हालत देखी तो अपनी करतूत पर शरमाई। उससे दिल की यह व्यथा देखी नहीं गई। उसने तुरन्त हुस्न के पास पत्र भेज कर स्पष्ट कर दिया कि सारा दोष मेरा ही है। दिल पवित्र और निर्दोष है। मेरा अपराध क्षम करो।

हुस्न ने ग़ैर का पत्र पढ़ा। उसे भी अपने बर्त्ताव पर खेद हुआ। उसने दिल के बारे में व्यर्थ ही बुरी धारणा बनाई थी। वह रोने लगी। उसने सोचा—मेरे कारण ही दिल दूर चला गया। मैं उसकी दासी बन कर साथ रहूँगी। उसने दिल को क्षमा-याचना करते हुए पत्र लिखा। हुस्न का पत्र पढ़ कर दिल को सारी बात मालूम हो गई। उसने भी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए उत्तर भिजवा दिया।

अक़्ल हार कर शहर बदन को लौट आया था। अक़्ल का सेनापति सब्र था। वह परास्त हो कर शहर हिदायत में आया। हिम्मत नामक एक सैनिक था। उसने सोचा—न जाने दिल और अक़्ल का क्या हुआ? हिम्मत ने निश्चय किया कि उसे अपने स्वामी के लिए फिर युद्ध करना चाहिए। हिम्मत ने फिर सेना सजाई। उसने अपनी सेना ले कर शहर दीदार की तरफ प्रस्थान किया। कुछ दिनों में क़ामत के उद्यान में पहुँचा। भाई क़ामत से अक़्ल और दिल का हाल पूछा। क़ामत ने बताया दिल हिज़ाँ के दुर्ग में साल भर से क़ैद है और अक़्ल शहर तन को लौट गया है।

इश्क़ बहुत बलवान है। उससे तुम पार नहीं बसा सकते। सुलह-समझौते से काम लोगे तो बात बन जाएगी। इश्क़ के साथ इश्क़ करो। वह यदि प्रसन्न हो गया तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी। क़ामत की बात हिम्मत को भा गई। वह अपनी सारी सेना क़ामत के पास छोड़ कर अकेला इश्क़ से मिला। इश्क़ ने भी हिम्मत का आदर-सत्कार किया। रहने के लिए अच्छी जगह दी।

एक दिन रात के समय इश्क़ ने हिम्मत को एकान्त में बुलाया। हिम्मत ने बहुत-सी कथाएँ सुनाईं। कई विषयों पर बातचीत की। उसने अवसर देख कर अक्ल और दिल की बात भी कही। इश्क़ इन बातों से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने निश्चय किया कि वह अक्ल को मन्त्री बनाएगा। इश्क़ जैसे राजा के पास अक्ल जैसा मंत्री होना ही चाहिए। हिम्मत ने कहा—"वहम ने अक्ल को भटकाया, अन्यथा यह अप्रिय घटना कभी घटित न होती।

इश्क़ ने मेहर से कहा—"तुम शीघ्र ही तन नगर को जाओ। अक्ल को मेरी ओर से आश्वासन देना। किसी तरह उसे यहाँ लिवा लाना। मैं और वह भाई-भाई हैं।" जब मेहर ने अक्ल को इश्क़ का संदेश सुनाया तो अक्ल ने सोचा—क्या किया जाए। मैं बुरी तरह हारा हूँ। इश्क़ के आगे मेरी एक नहीं चल सकती। इश्क से मिलने में ही लाभ है, वह मेहर के साथ इश्क़ के पास चला आया। इश्क़ ने उसका बहुत आदर-सत्कार किया।

हुस्न और दिल का शीघ्र ही विवाह हो गया। दिल ने जितना कष्ट उठाया उतना ही अब सुखी था। हुस्न के साथ उसके दिन सुख से कटने लगे। किसी तरह की कमी नहीं थी।

एक दिन नज़र, हिम्मत और दिल ने शराब पी। तीनों शराब के नशे में मस्त उद्यान में आये। वहाँ उन्हें अमृत का स्रोत दिखाई दिया। स्रोत के निकट एक पीर दृष्टिगोचर हुआ। उस पीर के चारों ओर उसका तेज फैल रहा था। हिम्मत ने दिल से कहा—"इस पीर के चरण छुओ। ये खिज़र पैग़म्बर हैं।"

दिल ने दौड़ कर हज़रत खिज़र के चरण चूमे। खिज़र ने आशीर्वाद दिया। दिल और पीर में आँखों ही आँखों बात हुई। दिल को संतोष हुआ।

दिल ने अपना काम शुरू किया। शीघ्र ही उसका रोज़गार चल निकला। बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए। वह आनन्दपूर्वक जीवन-यापन करने लगा।

सबरस के कथानक का आधार

ऊपर जो कथा दी गई है, उसका आधार क्या है? वजही ने अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख नहीं किया है कि उसने यह कथा कहाँ से ग्रहण की। 'सबरस' में कई स्थानों पर उसने यह प्रकट करने का प्रयत्न किया है कि पुस्तक का अक्षर अक्षर मौलिक है। इस प्रकार की कहानी और कहानी कहने की शैली भी सर्वथा मौलिक है। किन्तु यह ज्ञात हुआ है, वजही ने अपनी कथा फ़ारसी के एक प्रसिद्ध ग्रन्थ से ली है।

मौलवी अब्दुल हक़ ने उर्दू में 'सबरस' का सम्पादन किया है। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका में इस बात पर प्रकाश डाला है कि वजही ने अपनी कहानी फ़ारसी कवि याहिया इब्न सीवक फ़त्ताही नैशापुरी की एक रचना से ली। इस सम्बन्ध में मौलवी अब्दुल हक़ ने जो लिखा है, उसके आधार पर सम्बन्धित जानकारी दी जा रही है—

मुहम्मद याहिया इब्न सीवक फ़त्ताही ख़ुरासान के नैशापुर नामक ग्राम के रहनेवाले थे। इन्होंने कविता के लिए 'फ़त्ताही' नाम स्वीकार किया था, अतः ये फ़त्ताही नैशापुरी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन दिनों वहां तैमूरलंग का पुत्र शाहरुख मिर्ज़ा राज्य करता था। फ़त्ताही का देहान्त ८५२ हि. (१४४६ ई.) में हुआ। फ़त्ताही अपने समय का लोकप्रिय विद्वान् और कवि था। उसने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उसकी फुटकर कविताओं का सकलन भी उपलब्ध हुआ है। फ़त्ताही कभी किसी दरबार में नहीं गया। उसने किसी राजा का सहारा नहीं लिया और न ही सामन्तों की गुणावली गाई। उसकी रचनाओं में 'दस्तूरे इश्क़' नामक प्रेमाख्यान है जिसमें हुस्न और दिल की कहानी दी गई है। इस प्रेमाख्यान में पाँच हज़ार शेर हैं। फ़त्ताही ने इस प्रेमाख्यान की व्याख्या 'हुस्न व दिल' नामक पुस्तक में की है। 'हुस्न व दिल' गद्य में लिखी गई है और उसमें 'दस्तूरे इश्क़' की कथा को विस्तार के साथ देने का प्रयत्न किया गया है। यह पुस्तक यूरोप में भी सम्मानित हुई। इसके तीन संस्करण यूरोप में छपे। सबसे पहले ऑर्थर ब्राउन (डबलिन) ने सन १८०१ में इसे अंग्रेज़ी में अनुवादित करके प्रकाशित किया। दूसरा अंग्रेज़ी अनुवाद विलियम प्राइस ने १८२८ में छपवाया। इस पुस्तक का जर्मन अनुवाद जर्मनी के डाक्टर रोडाल्फ़ दोराक ने किया। जर्मन अनुवाद १८८६ में वीयेना अकादमी की ओर से प्रकाशित हुआ है। डाक्टर रोडाल्फ़ दोराक ने इस पुस्तक की विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है। 'हुस्न व दिल' नामक फत्ताई की रचना का अनुवाद तुर्की के एक लेखक लामई ने १५३१ ई. में किया था। डाक्टर रोडाल्फ़ दोराक ने अपनी अनुवादित पुस्तक की कहानी में तुर्की अनुवाद के कथानक को मिलाया था। डाक्टर रोडाल्फ़ दोराक ने भूमिका में लिखा है कि इस पुस्तक को तुर्की के तीन अन्य लेखकों ने भी अनुवादित किया था। इन अनुवादकों का काल इस प्रकार है—आही (१५१७ ई.), वाली (सोलहवीं शती का अन्तिम भाग) और सिदक़ी। आही पूरी पुस्तक का अनुवाद नहीं कर सका। सिदक़ी ने अक्षरशः अनुवाद किया है जब कि दूसरे अनुवादकों ने अपनी ओर से भी बहुत सी बातें मिला दी हैं।

दस्तूर इश्क़ को मूल रूप में आर. एस. ग्रीन शील्ड्स आई. सी. एस. ने १९२६ में प्रकाशित किया। ग्रीन शील्ड्स ने इस पुस्तक की भूमिका में जर्मन डाक्टर रोडाल्फ़ दोराक की भूमिका से सामग्री ली है। मौलवी अब्दुलहक़ ने फ़त्ताई नैशा-

पुरी और वजही के सबरस की मौलिकता अथवा अनुकरणशीलता पर जो कुछ लिखा है उसका आधार आर. एस्. ग्रीनशील्ड्स द्वारा प्रकाशित 'दस्तूरे इश्क़' का फ़ारसी संस्करण तथा उसकी भूमिका है।

मौलवी अब्दुलहक़ ने ग्रीनशील्ड्स की भूमिका और 'दस्तूरे इश्क़' के आधार पर लिखा है—"गो मुल्ला वजही ने क़िस्से की असल की तरफ़ कहीं इशारा नहीं किया मगर दोनों किताबों के पढ़ने से साफ़ मालूम होता है के वजही ने क़िस्से की वारदात हर्फ़ बहर्फ़ फ़त्ताही से ली है। अपनी तरफ़ से कोई इज़ाफ़ा किया है तो ये के जा बजा मौक़े बेमौक़े पन्द व मुआजत का दफ्तर खोल दिया है।"

'सबरस' (प्रकाशक अंजुमन तरक्क़ी-ए-उर्दू) पृ. ११

मौलवी अब्दुलहक़ ने अपनी भूमिका में यह भी दिखाने का प्रयत्न किया है कि फ़त्ताही की कहानी और वजही की कहानी में कहाँ कहाँ अन्तर है। इस अन्तर को प्रदर्शित करके मौलवी अब्दुलहक़ ने यह बताने की चेष्टा की है कि इस अन्तर के कारण वजही फ़त्ताही से बहुत पीछे रह गया है। यदि वह इस प्रकार कथानक में परिवर्तन न करता तो फ़त्ताही के कथानक की तरह ही उसका कथानक अधिक आकर्षक होता। मौलवी अब्दुलहक़ लिखते हैं—"वजही ने अगरचे पूरा क़िस्सा फ़त्ताही से लिया है, लेकिन जहाँ कहीं क़िस्से की वारदात में इख़्तलाफ़ किया है, वहीं उससे ग़ल्ती हुई है।" सबरस-प्रकाशक अंजुमन तरक्क़ी-ए-उर्दू पृ. ३७

मौलवी अब्दुल हक़ ने बहुत से विरोधों और परिवर्तनों का उल्लेख किया है। परिवर्तनों को दिखाते समय वे लिखते हैं—"एक दूसरा इख़्तलाफ़ वहाँ पाया जाता है जब हिम्मत अक़्ल की ख़ैरख़ाही और दिलसोज़ी में...जाता है और बादशाह इश्क़ में मिलता है..." सबरस-उपर्युक्त संस्करण पृ. ३८)। बड़े बड़े परिवर्तनों को दिखाने के बाद मौलवी अब्दुलहक़ ने लिखा है—"बाज़ बहुत ख़फ़ीफ़ से इख़्तलाफ़ात और भी हैं।" सबरस-उपर्युक्त संस्करण पृ ४०

मौलवी अब्दुलहक़ का विचार है वजही ने फ़त्ताही नैशापुरी की 'हुस्न व दिल' पुस्तक पढ़ी होगी किन्तु 'दस्तूरे इश्क़' उसने नहीं पढ़ी। 'सबरस' में बहुत-सी घटनाएँ नहीं हैं, जो 'दस्तूरे इश्क़' में हैं। 'सबरस' के पात्र अस्पष्ट से रह जाते हैं। 'सबरस' का लेखक पाठक से यह आशा रखता है कि वह प्रत्येक पात्र को अपनी ओर से समझने का प्रयत्न करे। दस्तूरे इश्क़ को समाप्त करते हुए फ़त्ताही ने ख़िज़्र के मुँह से कहलाया है कि कथानक के प्रत्येक पात्र की वास्तविक स्थिति क्या है। सांसारिक प्रेम को वहाँ अलौकिक रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है, किन्तु 'सबरस' का पाठक हुस्न और दिल को साधारण प्रेमी तथा प्रेमिका समझने का भ्रम कर सकता है। 'सबरस का प्रारम्भ 'अमृत' की खोज से हुआ, किन्तु इस अमृत को लेखक रहस्यमय बनाये रखता है, जब कि फ़त्ताही ने स्पष्ट रूप से मुख में निवास करनेवाली वाणी को ही अमृत बताया है।

इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मौलवी अब्दुलहक़ का यह कथन उचित नहीं है कि वजही ने "क़िस्से की वारदात हर्फ़ बहर्फ़ फ़त्ताही से ली है।" फ़त्ताही और वजही के कथानक में समानता होते हुए भी स्थान स्थान पर अन्तर दिखाई देता है। परिवर्तन के कारण वजही के कथानक में शिथिलता आई है, यह आक्षेप किया जा सकता है किन्तु यह स्पष्ट है कि वजही ने पूरी तरह अनुकरण करके इस दोष से बचने का प्रयत्न नहीं किया।

जहाँ तक कथानक का सम्बन्ध है वजही ने यह कथानक फ़त्ताही से लिया है, किन्तु केवल कथानक लेने से ही सबरस की मौलिकता नष्ट नहीं होती। मन, बुद्धि तथा मानवीय भावों को ले कर प्राचीन साहित्य में अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। उन कहानियों के रचयिताओं का नाम तक प्राप्त नहीं। उपनिषद् में वर्णित दस इन्द्रियों और प्राण से सम्बन्धित कहानी सर्वविदित है। इस कहानी में प्राण की महत्ता प्रतिपादित की गई है। हो सकता है अरब और ईरान में भी मानवीय भावों को ले कर इस प्रकार की कोई कहानी प्रचलित हो और फ़त्ताही ने उसे मौलिकता के साथ अपनी पुस्तक में अंकित किया हो। इस प्रकार की आध्यात्मिक और लोक-कथाओं के बारे में केवल कथा-वस्तु को ले कर ही मौलिकता का निर्णय करना उचित नहीं है।

फिर हमें इस बात का विचार भी करना है कि क्या वजही के सम्मुख केवल कहानी ही 'सब कुछ' है, अथवा उसके सामने जो 'सब कुछ' रहा है, उसे व्यक्त करने के लिए कहानी केवल साधन-मात्र है? 'सबरस' पढ़ लेने के बाद ऐसा ज्ञात होता है, लेखक कहानी की अपेक्षा अपने सदेश को विशेष महत्व देता है। लेखक ने 'सबरस' की विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है—

सबरस के संबन्ध में लेखक का विचार

"इस किताब का नाँव सबरस, सब कूँ आवे हवस, बोल-बोल कूँ चढ़े उमस, यादगार हो अछेगा दुनिया मे लाक बरस। मोती च लजीज़, आशिक़ाँ के गले का ताबीज़। या किताब सब किताबों का सरताज, सब बातों का राज...जिसमें है कुछ इश्क़ का दर्द, इस किताब कूँ सीने पर ले हिलासी ना, इस किताब बगैर कोई अपना वक्त भुलासी ना...अगर दीन होर दुनिया का उम्मीद पाने मँगता है तो यो किताब देख... मुसलमाना में पीर मुर्शद होएगा, हिन्दवाँ मे जंगम सद होएगा...(पृ. ६)...यो अजब नज़्म होर नसर है, जानो बहिश्त मे का क़सर है। सतर सतर पर नूर, हरेक बोल में है यक हूर।" (पृ. १२)

सुलतान अब्दुल्ला कुतुबशाह ने भी उसे मानवीय प्रेम से ईश्वर के अस्तित्व के वर्णन का आदेश दिया था।

वजही सूफ़ी साधना का क़ायल है। उसने 'सबरस' में कई प्रकार से सूफ़ी-साधना का समर्थन किया है। जैसे पुस्तक एक रहस्यमय कथा से प्रारंभ हुई है, पुस्तक

की समाप्ति इस रहस्यपूर्ण कथा की समाप्ति के साथ होती है। किन्तु वजही अपने सिद्धान्तों को यथास्थान बहुत अच्छे ढङ्ग से रखता है, कई स्थानों पर पृष्ठ के पृष्ठ मुख्य कथानक से बिल्कुल पृथक् दिखाई देते हैं। ऐसे स्थलों को यदि पृथक्-पृथक् अध्यायों में विभाजित करके छाप दिया जाए तब भी लेखक की विशेषता नष्ट नहीं होती।

वजही ने सांसारिक मानवीय प्रेम में वास्तविक प्रेम को प्रकट करने की चेष्टा की है। उसके सामने ईश्वर की स्पष्ट और सुगम व्याख्या है। उस ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग भी उसने देख लिया है। वह मार्ग सामान्य व्यक्ति के लिए भी सुगम है। सर्वप्रथम वजही की ईश्वर सम्बन्धी मान्यता का दिग्दर्शन कराना उचित प्रतीत होता है। वजही लिखता है—

ईश्वर के सम्बन्ध में वजही की धारणा

"अव्वल जो सब जागा खुदा च था होर कई कुछ न था, तो यू सब कों ते आया। जानहारा जानता है, जाँ ते आया। पानी ते मोती बख्या, मोती बी पानी च है; वले सूरत में फ़र्क़ पइया। यू मोती को पानी कहवाया। इस पानी होर इस मोती कूं जिने समज्या सो ग्यानी कहवाया।" (पृ २१)

वजही ईश्वर को अनादि और अनन्त मानता है। दृश्यमान जगत ईश्वर के कारण अस्तित्व में आया है। यह अस्तित्व केवल भ्रम के कारण प्रतीत होता है। ध्यानपूर्वक देखा जाए तो इस जगत् का कोई पृथक् अस्तित्व नहीं है।

ईश्वर कैसा है?

"सुनता है होर कान नईं, बोलता है (?) होर ज़बान नईं। ज कुछ वो कता है वो हमी करते। अगर मर कता तो मरते। . वले कही हमारी बात बी सुनता है, हमारा बी सुनता है, हमारा बी दिल हात लेता है।...भोत पाक, भोत लतीफ़ मूरत है। इतनी नाजुक है जो दिखलाई नईं जाती; जेता कहे बी कहने में नईं आती।...बीज में जाकर झाड़ कूं कौन देख्या है—कंकर में घुस कर पहाड़ कूं कौन देख्या है? तारे में आसमान क्यूँ समाना?" (पृ. ८६)

ईश्वर के विराट् स्वरूप का पूरा पूरा ज्ञान कर लेना किसी के लिए भी संभव नहीं है। उसका कोई रंग रूप भी नहीं है। वह अपनी सामर्थ्य से बिना किसी की सहायता के जगत का सचालन कर रहा है।

ईश्वर की प्राप्ति में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि उसके बारे में मनुष्य को सदैव भ्रम होता है। वजही इस भ्रम को स्पष्ट करते हुए लिखता है—

"इन्सान कू सूरत है तीन। तहक़ीक़ जानना एक अपै रब्बुल आलमीन यू ज़ाहिर की सूरत, दूसरी खाब में की सूरत हर किसे दिस आती है। तिसरा सूरत उस खाब की सूरत है, वो सूरत किसते देखी नहीं जाती है। आरिफ़ाँ इनो जूँ कते हैं इस ठार, वले उस सूरत को नहीं देख सके दीदार।...यहाँ महज़ खुदा का प्यार,

कुछ हुए तो हुए। जो कोई इस सूरत कूँ देख्या सो तहक़ीक़ खुदा कूँ देख्या कते हैं।...खुदा कूँ देखने की यू च ठावँ है। मेराज इसी च का नावँ है।...यू विसाल होने की जागा है।" (पृ. १२७

यहाँ वजही भारतीय चिन्तन के अधिक निकट आ जाता है। जागृति और स्वप्न से हट कर वह सुषुप्ति को ईश्वर के साक्षात्कार की उचित अवस्था प्रतिपादित करता है, जाग्रत अवस्था में जीव भासमान जगत् की वास्तविकता को नही जानता। स्वप्न में भी स्थूल जगत् की प्रतिच्छाया आत्मा को आवृत्त कर लेती है, किन्तु स्वप्न से मुक्त होने के बाद जो अवस्था प्राप्त होती है, उसमें वास्तविकता दिखाई देने लगती है। किन्तु इस अवस्था की प्राप्ति सामान्य लोगो को नही हो सकती। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए मनीषियो ने अनेक साधना का निरूपण किया है। वजही इस अवस्था तक पहुँचने के लिए एक मात्र प्रेम को ही परम साधन मानता है।

प्रेम का महत्व और उसके दो भेद

ईश्वर की प्राप्ति में इश्क़ अथवा प्रेम सहायक हो सकता है, किन्तु जगत् की नश्वरता तथा निःसारता के कारण यह प्रेम दो प्रकार का है—

"इस आलम में दो आलम दिस आता है। यू आलम पीर व मुर्शद बशीर कौन किसे दिखलाता? ज़ाहर का इश्क़ अगर किस अछे तो यू अछना के बातिल में ते बी उसे वो ध्यान अछे, ता खुलना उस पर खुले।...इश्क़ हक़ीक़ी अछो या मजाज़ी, इश्क़बाज़ाँ ने यूँ च खेलते इश्क़बाज़ी। (पृ. १६६ ...इश्क़ मजाज़ी जो अँपड्या कमाल तो ऐन होता है हक़ीक़ी विसाल। गर तूँ आशिक़ है, दाना-दीवाना है तो मजाज़ी ते हक़ीक़त पर आना।...हक़ीक़त की सीढ़ी है मजाज़। सीढ़ी पर जावेंगे तो पावेंगे हक़ीक़त का राज़।" (पृ. १७०)

सूफ़ी साधना में प्रेम का बहुत महत्व है। प्रेम ही साधक को ईश्वर तक पहुँचा देता है। यह प्रेम मजाज़ी और हक़ीक़ी होने के कारण दो प्रकार का है। सांसारिक नाशमान पदार्थों पर जो स्नेह है वह इश्क़-मजाज़ी है। जो प्रेम अविनश्वर और चिरन्तन शक्ति पर होता है, जहाँ किसी प्रकार की विषय वासना और पार्थिव इच्छाओं के लिए स्थान नही है, जहाँ आत्मा दिव्यता से प्रेरित हो अंश भाव से अंशी की ओर अग्रसर होती है, वह इश्क़ हक़ीक़ी अथवा वास्तविक प्रेम है। यद्यपि अवास्तविक प्रेम अयथार्थ है किन्तु उसकी उपादेयता वजही अथवा अन्य सूफ़ी साधक अस्वीकार नहीं करते। पार्थिव प्रेम ही चिरन्तन प्रेम की आधार-शिला है। वह वहाँ तक पहुँचाने में सीढ़ी का काम करता है।

पार्थिव प्रेम का स्वरूप

अवास्तविक अथवा पार्थिव प्रेम वजही की दृष्टि में तीन प्रकार का है—

"इश्क़ मजाज़ी ग़ाज़ी तीन सूरत, आशिक़ कूँ इस सूरता का बयान करना ज़रूरत। एक फूल ते एते बास के डोरे छुटे। एक झाड कूँ एते फाँटे फुटे, अव्वल

इश्क़ सलामती, दुय्यम इश्क़ हलाकती, सुय्यम इश्क़ मलामती। अमा इश्क़ सलामती कते सो अपना घर कते हैं के अपना घर ख़ुशी भाये सो कर।...दायम नज़र तले महबूब, बहुत ख़ूब। एताल इश्क़ हलाक़ती किसी की बहू-बेटी, यू अपने घर में तलमलती वो अपने घर में लेटी।...अताल इश्क़ मलामती कलावन्ती, बाज़ारी। यहाँ तो बहुती च ख़ारी। बहुती च दुश्वारी।"

पार्थिव प्रेम जहाँ तक दाम्पत्य प्रेम की सीमा में रहता है वजही उसे श्रेयस्कर मानता है; किन्तु आगे बढ़ने पर वह मलामती बन जाता है। उसका उपयोग चिरन्तन प्रेम की प्राप्ति में नहीं किया जा सकता। उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेम का महत्व होते हुए भी, पार्थिव-प्रेम की विशेषताओं को स्वीकार करते हुए भी सूफ़ी सन्त सामाजिक मर्यादाओं के पक्षपाती थे। इसी लिए वजही पार्थिव-प्रेम की असामाजिक स्थिति की निन्दा स्पष्ट रूप से करता है—

"इश्क़ का धात जुदा कुछ है, आशिक़ी की बात जुदा कुछ है। हरेक किसी कूँ देखा बेआराम हुआ तो क्या आशिक़ हुआ? चार लोकाँ में बदनाम हुआ तो क्या आशिक़ हुआ?...आशिक कूँ माशूक़ के गालबाल पर बहुत दिल...एते च में हिलग जाता...वले जो कंई इस ख़ाक़ में नाज़ ग़म्ज़े करता उसकी ख़बर नहीं धरता। उसे आशिक़ी करना आया च नहीं; उने इश्क़ की माया पाया च नहीं। जो कोई इस ख़ाक़ के भीतर है, इस सूँ जीव लावेगा तो आशिक़ होवेगा।...ख़ाक़ सूँ जीव लावेगा वो खातिर एता तलमलता था, उस वेग घर में सू ले जाव कता, माटी में माटी मिलाव कता ..बस यहाँ समझ कर आज लगन तूँ आशिक़ होर किस का था?...बुर्के सूँ जीव लाया, घूँघट में दग़ा खाया।...यू हलता-चलता सो कौन है कर फ़िक्र करना। जो आशिक़ इस ध्यानी च में किया घर, अजब क्या है जो देखना भी होय मयस्सर।" (पृ. १६३)

पार्थिव प्रेम का महत्व इसमें नहीं है कि प्रेमी घूँघट अथवा बुर्के पर ही प्यार करे। वह अपने आराध्य के निकट तक पहुँचने का प्रयत्न करे। वह आराध्य, प्रेमी की वास्तविक प्रेमिका, बाहरी जगत में नहीं है। वह अन्तरात्मा में समाई हुई है। वहीं उससे प्यार किया जा सकता है—

आत्मा का साक्षात्कार
आराध्य का साक्षात्कार

"अपै सब नज़र, अपै सब दिल, अपस कूँ अपै देखा जाए, वले अपस कूँ अपै समजना बहुत मुश्किल। किसी बुजुर्ग कूँ किने पूछ्या के—'ख़ुदा कूँ पाए?" कहिए—"पाए।'...जिधाँ ते दुनिया होर आदम हो आया, ढूँडते च उम्र गई सब की; वले तहक़ीक़ ज्यूँ है त्यूँ कोई नहीं पाया। यू अपार ग़र्क़ाब दरिया उसे नहीं पार।...आशिक़ माशूक़ के हुस्न की निहायत देखने जाता। माशूक़ के हुस्न कूँ निहाते च नहीं सो निहायत क्यूँ पाता?...जो कोई ख़ुदा के कारख़ाने में जाते...उनों कूँ यू च लग्या है ज़ोक, अपना-अपना शौक़। उनके सर पर पड़ा पहाड़, जेता ढूँडें तेता पाए।...ख़ुदा सूँ हज़ार गुफ़्तगू धरते हैं वही च जानते

जो कुछ वो करते हैं। रब ने उनो कूँ यू दिया मन्सब आज़ाद आशिक़ यू छोड़ दिया सब। (पृ. १६१)...फ़क़ीर न अपने नफ़्स का मुहताज़ न ख़ुदा का मुहताज़। मुहताज़ क्यूँ होवे के उसमें रह्या च नहीं ख़ुदा बाज़" (पृ. १५८)

आडम्बर और दिखावा ईश्वर मार्ग में बाधक

ईश्वर की प्राप्ति के लिए, वास्तविक प्रेम की उपलब्धि के लिए सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि प्रेमी सब प्रकार के आडम्बरों से दूर रहे। जो कुछ मन में है, उसे ही प्रकट करे। किसी प्रकार का दिखावा न करे। दिखावे और वास्तविक प्रेम में भयानक विरोध है। वास्तविक प्रेम के लिए ज्ञान की आवश्यकता भी स्वीकार की गई। प्रेम-मार्ग का ज्ञान से विरोध नहीं है। ज्ञान वास्तविक प्रेम की उत्पत्ति में सहायता देता है—

"जिने रीज को जलाया, उनों ख़ुदा पाया। इन्सान याने ग्यान, जिसमें कुछ ग्यान नईं, वो हैवान। (पृ. १२)...मूँ पो मस्जिद, दिल मे बुतख़ाना, ख़ुदा तो समजता है वो माना...आदमी के हुज़ूर छिपाया, ख़ुदा के हुज़ूर क्यूँ छिपाना? बाज़े अजब लोगाँ हैं अधरम, उनो कूँ ख़ुदा की बी नईं शरम। मुसलमानों में आते जाते, मुसलमान कहवाते; अगर यो है मुसलमानी तो क़ाफ़िराँ की क्या है निशानी?" (पृ. १३)

जो व्यक्ति आडम्बर रहित हो वास्तविक प्रेम से अपनी प्रेमिका अथवा आराध्य को रिझाता है, वह अपनी प्रेमिका को प्राप्त कर लेता है। उसके लिए ईश्वर प्राप्ति कठिन नहीं रहती। उसके मार्ग की सभी विषमताएँ समाप्त हो जाती हैं—

ईश्वर और जीव की एकता

"मन्सूर जो इस बात में आया, मुहब्बत की राज़ सूँ ख़ुदा कहवाया।...मुहब्बत के आलम में कोई कहे के मैं ई च ख़ुदा हूँ, ख़ुदापरस्त लोकाँ मुहब्बत के आलम में ख़ुदा कहवाय तो कह्या जाये। क़ादरियत के आलम में कुछ क़ुदरत नईं जो ख़ुदा कहवाय। (पृ. १७) ख़ुदा बेख़ुद हुए तो ख़ुदा कूँ पाये। ख़ुदी दूर करे तो ख़ुदाई दिस आवे। जिते आक़िलाँ ने अक़ल दौड़ाये आख़िर इश्क़ की बेआरामी में आकर आराम पाये। इश्क़ में जा, तूँ अक़्ल में क्या आता?" (पृ. १८)

ईश्वर प्राप्ति में साधकों की संगति पथ-प्रदर्शन करती है—"ख़ुदा का होने मँगता है तो कुछ ख़ुदा का काम कर। ज कोई ख़ुदा कूँ अपड़े हैं उनो की बात क़ाम कर।...हमना ख़ुदा कूँ एक जानना होर उसका मुहब्बत फ़ज़ूल, ख़ुदा के कामों सूँ हमना क्या गर्ज़? (पृ. १८)... यू बी क्या ख़ाला का घर है? काँट्याँ कूँ अलग जान्या तो बाग़ में फूल पाना। ज कोई दरिया में जावे सो मोतियाँ लावे।" (पृ १६)

उपर्युक्त उद्धरण में वजही कबीर के इस दोहे से कितनी समानता रखता है—"यह तो घर है प्रेम का, ख़ाला का घर नाँहि। सीस उतारे भुँई धरे तब पैठे घर माँहि।" वजही ने अपनी बात को अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा है—"अगर दिल ते

तलब तमाम जावे तो जाँ नज़र सटे वाँ खुदा च दिस आवे।...जिस दिल में आया यार, उस दिल में अपस कूँ बी नईं ठार। जाँ अपै नईं माता वाँ दुसराँ क्यों समाता ?" (पृ. ३०)

वास्तविक प्रेम की शक्ति

जिस व्यक्ति के मन में वास्तविक प्रेम उत्पन्न हो गया, उसके लिए संसार में कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रह जाता। उसका जीवन धन्य हो जाता है। वह संसार के समस्त पदार्थों से निरपेक्ष हो जीवन-यापन करता है। उस अवस्था में प्रेम की शक्ति अपरिमेय होती है। वजही ने इस शक्ति को अनुभव किया है—

"इश्क़ कूँ न पीछे की फ़िक्र, न अंग का अँदेशा। इश्क़ सरमस्त, बेपरवा उसका रेशा-रेशा। इश्क़ किसते ना डरे, इश्क़ खुशी भावे सो करे। इश्क़ आग है। जाँ जाए वहाँ जाले। इश्क़ की आग कूँ कौन संभाले ? इश्क़ का जीव हुस्न, इस जीव में लाख लाख गुन। इश्क़ झाड़ है, हुस्न पानी; हुस्न ते क़ायम इसकी ज़िन्दगानी।" (पृ. ४३)

प्रेमी को अपनी प्रेमिका के लिए दिन रात आँसू बहाने पड़ते हैं। प्रेम-मार्ग में केवल मुस्कान ही नहीं है, आसू भी हैं। इन आँसुओं के कारण प्रेमी की वेदना हलकी हो जाती है। वह अपनी प्रेमिका को अधिक निकट पाता है। इन आँसुओं का आनन्द सच्चा प्रेमी ही उठा सकता है। जो इन आँसुओं से घबराया, विरहाग्नि की तपन से घबरा कर भाग खड़ा हुआ। वह प्रेम की परिणति से वञ्चित रह जाता है। अमृत प्रेमियों के आँसुओं में निवास करता है।

"किस किस लज़्ज़त भरे दर्दी सूँ अंखियाँ में ते पड़ता है बुंद एक एक, अगर तूँ आशिक़ है तो बुँद-बुंद का लज़्ज़त देख। इस ग़म से क्यूँ खुश आई, इस कड़वाई में कौन रखे मिठाई। काँट्याँ ते फूल की कौन लियाँ बास ? आग में पानी है वो पानी कौन पिया है ? वो भौंरा काँ है जो यू बास लेवे ?" (पृ. ४३)

रिज़्क ने नज़र से उपर्युक्त प्रश्न किया था। नज़र ने इस प्रश्न का जो उत्तर दिया उससे बात स्पष्ट हो जाती है "यू पानी अगर मौज उचावे, तिल में आलम कूँ गुलिस्ताँ कर दिखलावे। फूल कूँ फूलवाड़ी करे, बाड़ कूँ बाड़ी करे, पात को झाड़ करे, कंकर कूँ पहाड़ करे, ज़र्रे कूँ आफ़ताब करे, आतिश कूँ आबकरे, गदा कूँ पादशाह करे, सितारे कूँ माह करे।" (पृ ४४)

प्रेम का लक्षण

प्रेम की उपर्युक्त सामर्थ्य को दृष्टि में रख कर वजही ने 'सबरस' की रचना की है। उसे प्रेम की शक्ति के सम्बन्ध में रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। उसने वास्तविक और विशुद्ध प्रेम का रेखा-चित्र इस प्रकार खींचा है—

"इश्क़ आज़िज़, इश्क़ तवाना, इश्क़ दाना, इश्क़ दीवाना। इश्क़ अपने रंग में आप घुलता।...इश्क़ के चाले कौन संभाले ? इश्क़ चन्दर, इश्क़ कमान, इश्क़ तीन,

इश्क़ ईमान, इश्क़ आशिक़, इश्क़ सुलतान। इश्क़ ते रोशन ज़मीन, इश्क़ ते रोशन आसमान, इश्क ते आशिक़ मग़रूर, इश्क़ ते माशूक़ ने पकड़ी ज़हूर।... आशिक हो माशूक के मन का माया सो इश्क़। इन दोनों को धुँदलाय सो इश्क़। क्या पुरुस क्या नार, इश्क म्याने म्याँ आया पीछे कोका क़रार?...इश्क़ में जितना दुक, आशिक़ कूँ उतना सुक। जॉ दो जीव होते हैं राज़ी, वॉ दिल की खिलती है बाज़ी।...माशूक नॉवें है, वले माशूक में बी तमाम आशिक की सिफ़त है। आशिक़ नॉवें है, वले आशिक़ में बी तमाम माशूक़ की गत है। आशिक़ माशूक़ दो नाम, वले दोनो का एक काम। सब कूँ एक बज़ा सूँ घड़, वले नॉवें जुदा पड़े। इश्क एकीच है, जो दोनों जागा जल्वा दिया है। कई नाज़ की सूरत पकड्या, कई नियाज़ किया है।...इश्क़ निरहंकार, मुनज्ज़ा, पाक।...इश्क़ आलमगीर, अपै पादशाह, कधीं साहब कधीं गुलाम।" (पृ. ७८)

द्वैत की समाप्ति और अद्वैत की उपलब्धि

जब जीव और परमेश्वर, प्रेमी और प्रेम का द्वैत विद्यमान है तब तक साधना सफल नहीं हो सकती। जीव के अहं का निर्गलन ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक है। द्वैत भाव की समाप्ति ज्ञान से नहीं प्रेम से संभव है। एक उद्धरण से यह बता दिया गया है कि ज्ञान की आवश्यकता कहा तक होती है। द्वैत भाव को तिरोहित करने के लिए प्रेम ही समर्थ है—"वले मैं होर खुदा यू दो हुए। इस निहायत यकानगी सूँ यू बी दुई का मुकाम है। दुई तो वॉ लाज़िम नईं आती जॉ इश्क़ तमाम है। दुई दूर करना यू तो इश्क़ का ऐन काम है।...यहा अपना अपै च यार है।... यहॉ अपना इश्क़ अपस सूँ धरता। यहाँ अपनी परस्तिश अपै करता। यहाँ अपै च सब जागा भरपूर है। ..हद ते गुज़र्या बेहद हुआ। जो कोई अपना इश्क़ अपस सूँ धरता वो दुसरे की नमाज़ क्यूँ करता? उसे अपनी इबादत ते फुरसत नईं एक तिल, अपस सूँ अपै गया मिला।" (पृ. ६०)

एक स्थान पर वजही ने इस प्रेम के सम्बन्ध में कितनी सरलता से एक महत्वपूर्ण तथ्य उपस्थित किया है—"कते हैं, केतक तालिबॉ अपने मुर्शद कूँ पूछे, अपने खुद कूँ पूछे के ज़ाहिर की सूरत तुम्हारी देकते हैं, अपने बातिन की सूरत हमना कूँ दिग्वलाव, वो मुरशद कामिल था...बोल्या के तुम जॉ आशिक़ होते हैं, वहॉ दोनों में जो इश्क़ होर मुहब्बत है, जो नाज़ व नयाज़ है, जो लज्ज़त होर राहत और मशक्कत है, वो मैं हूँ।' (पृ. ६४)

साधना अथवा प्रेम के मार्ग में आनेवाले विघ्न और उनका निराकरण

ईश्वर प्राप्ति के इस मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। इन कठिनाइयों से साधक को प्रतिक्षण सावधान रहना पड़ता है। ये विघ्न बाह्य न हो कर आन्तरिक हैं। हमारे अन्तःकरण में ही इन विघ्नों का उदय होता है, इसी लिए उनसे अपनी साधना की रक्षा करना सरल नहीं है। हमारी दुर्वृत्तियाँ,

हमारे चित्त की चंचलता तथा पार्थिव वासनाएँ पद-पद पर हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं। वजही इन बाधाओं को भी जानता है और उनके निराकरण का उपाय भी उसकी दृष्टि से ओझल नहीं है—

"नफ्सानी खतरे कूँ सर भार काड़ने ना देना। इस खतर्यो कूँ मोत क़ैद सूँ रखना। जागा नाजुक है, पर्दा फाड़ने न देना। अगर यू नफ्सानी खतरे भार निकले, नडरी पर पाँव दे गला कुचले।...तेरे रहज़न सो यू च है, तेरे दुश्मन सो यू च हैं। दुश्मन कूँ पतयाना खूब नईं। इनों में मिल जाना खूब नईं। पच बिचार के वक्त बला तुझ पर भावेगे।" (पृ. ६०) प्रेम के लिए व्यक्ति में उत्कट इच्छा होनी चाहिए, अन्यथा उसकी दिव्यता से हृदय आलोकित नहीं हो सकता—"जिस तालिब का तलब कमाल है वो खाली नईं! अगर पत्थर सौ बरस पानी में अछेगा, फोड़े च तो पत्थर सूखा। कूड़ आदमी ऊपर चिकना दिसता, दरूनी में सब रूखा। जिने रीझ्या वो भीतर भीज्या। जिस तालिब कूँ तलब का ज़ोर है, उसे पीर-मुर्शद का सुहबत असर करता है। जिस तालिब कूँ तलब का ज़ोर नईं पीर-मुर्शद के ताबी कहो क्या फ़ायदा?" (पृ. ६०)

इस्लाम और सूफ़ी साधक

मुसलमान सूफ़ी साधकों में दो प्रकार के सन्त हुए हैं। कुछ लोग दिल्ली के सरमद के समान इस्लाम के विधि-निषेधों पर अविश्वास व्यक्त करते हुए अपनी स्वतन्त्र साधना में लगे रहे। इस श्रेणी के भक्तों को जीवन में तरह तरह के कष्ट उठाने पड़े। दूसरी श्रेणी में वे सन्त आते हैं, जिन्होंने स्वतन्त्र साधना-प्रणाली से ईश्वर-भक्ति में मन लगाया किन्तु इस्लाम के विधि-निषेधों के बारे में अपनी अनास्था प्रकट नहीं की। इसी श्रेणी में अधिक सन्त हुए हैं। वजही की गिनती भी दूसरी श्रेणी में की जा सकती है। वह प्रेम का महत्व प्रतिपादित करता है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं, उन से स्पष्ट हो जाता है कि वजही ईश्वर-जीव की पृथकता नहीं मानता। ईश्वर-प्राप्ति के लिए प्रेम को ही सर्वोच्च साधन मानता है, किन्तु वह इस्लामी क्रिया कलापों, विधि-निषेधों को भी उचित स्थान देता है। वह ईश्वर प्राप्ति के लिए नमाज़ तथा अन्य धार्मिक क्रियाओं का महत्व स्वीकार करता है। उसने लिखा है—"बहस्बे ज़ाहिरी पाँच वक्त नमाज़ करने का जो शर्त है, त्यूँ बी नमाज़ के पीछे बी हज़ार जिन्स का इबादत है। यू इबादत किये तो खुदा का दीदार, रसूल की शफ़ाअत है, लाख लाख इनायत है। जो लगन नमाज़ करते हैं, तो लगन खुदा च याद आना।...नमाज़ में ज कुछ पड़ता है सो जानो, खुदा सूँ बाताँ करना है। यू अदब की जागा है।...ज कुछ पड़े सो उसका मान। समज कर पड़े तो मोत हासिल होता है। (पृ. ८३)...नईं तो भूमीं पर सर रखना और आयत पढ़ना यू एक रस्म आम है, याने नमाज़ करना है नईं।" (पृ. ८४)

वजही नमाज़ पर विश्वास करता है, किन्तु वह इतना चाहता है कि नमाज़

को समझ-बूझ कर पूरा किया जाय। नमाज़ के अतिरिक्त भी वह ईश-स्तुति की आवश्यकता अनुभव करता है। यह स्तुति सूफ़ी साधना से मेल खाती है—"इस पाँच वक्त ज़ाहिरी नमाज़ के ख़ारिज जो इबादत है, सो सुग़ल होर ज़िक्र यू भोत दूरन्देशी, यू बड़ी फ़िक्र, यू मर्दों का काम है।...इनों का आता-जाता दम अपै होर अपना ख़ुदा; बाक़ी दिल ते सब किये जुदा, इनो का हमराज़ इनो का महरम अल्ला। चढ़ता दम 'ला इला', उतरता दम 'इल्लिल्लाह।' ..पीछे चढ़ता दम उतरता बी अल्ला अल्ला कहता आता है। बन्दा ख़ुदा सूँ यार होता है, बन्दा ख़ुदा कूँ भाता है। शराब की मस्ती चढ़ती त्यूँ मुहब्बत की मस्ती चढ़ती। ज कोई इस ठार मुहब्बत का बीज बोता है, रहते रहते उस भिनगे होर उस कीड़े का क़िस्सा होता है।" (पृ. ७६)

उपर्युक्त उद्धरण में वजही ने भिनगे और कीड़े की उपमा भारतीय ग्रन्थों से ली है। इस उद्धरण में जो पद्धति बताई गई है, वह भारतीय साधना से पूरी तरह मेल खाती है।

सौन्दर्य

प्रेम के लिए अन्य सूफ़ी साधकों की तरह वजही भी सौन्दर्य तथा सुरा का महत्व स्वीकार करता है। सौन्दर्य के बिना प्रेम साकार नहीं हो सकता। प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए सौन्दर्य अनिवार्य है। वजही ने इस सम्बन्ध में लिखा है—"हुस्न आफ़ताब है, परदे में ते उजाला पाड़े। हुस्न का हुक्म लाजवाब है। दिल में ते इश्क़ कूँ मैदान में काढ़े। अगर हुस्न पर पर्दा ना करते तो एक आशिक़ ना जीवता। सब लड़लड़ मरते। जाँ अपै होर गैर हुआ, वहाँ हुस्न पर पर्दा हुआ, सो भोत खैर हुआ। जिसका हुस्न इस्म है, भोत बड़ा तिलस्म है। इस तिलस्म ते कोई छूट नहीं सक्या, ज कोई जुड़ा सो टूट नईं सक्या। इश्क़ के दरिया का तूफ़ान सो हुस्न, आशिक़ का दीन होर ईमान सो हुस्न।" (पृ ६७)

शराब

शराब की प्रशंसा वजही ने स्थान-स्थान पर की है। उसने यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है कि शराब प्रेम-पन्थ पर चलने वाले साधक के लिए सहायक का काम करती है। अन्य सूफ़ी साधकों ने भी शराब की महिमा बताई है। प्रश्न यह है कि लेखक ने पार्थिव शराब की प्रशंसा की है अथवा शराब के रूप में किसी लोकोत्तर पदार्थ की? शराब का वर्णन करते हुए उसने दोनों प्रकारों की ओर सकेत किया है—"जे कोई इस शराब का भेद नईं पाया सो उस शराब कूँ क्या पछाने? शराब कूँ अपै पीना ना यूँ अछना के शराब अपस कूँ पीवे।...घाँस आग खाने जाये तो जलना, मछली खुश्की पर पड़े तो तलमलना! चिमटी हत्ती का भार उछा सकती है? टिटरी बहरी का ज़ोर ल्या सकती है? कंकर डूंगर की बराबरी करेगा? तारा चंद सूँ दम भरेगा?...शराब पर हर कोई दम नईं भाता, शराब पीना सब किसे नईं आता? शराब हुस्न का ज़रीना है, मैखाना इश्क़ का मदीना है। आशिक़ की इबादत हुस्न

देखना, राग सुनना, शराब पीना है।" (पृ. २६)

सूफ़ियों की साधना-प्रणाली को समझने के लिए 'सबरस' सहायता देता है। वजही ने इस साधना के गम्भीर तथ्यों को भी सरल भाषा में स्पष्ट रूप से लिखा है। साधारण व्यक्ति भी इसके अध्ययन से इस साधना-प्रणाली को हृदयंगम कर सकता है।

सामाजिक स्थिति और 'सबरस'

वजही का 'सबरस' केवल आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिपादन नहीं करता। वजही स्वयं एक बड़े राज्य के शासकों की छत्र-छाया में अपना ग्रन्थ लिख रहा था। 'सबरस' लिखते समय उसे शासन, राज्य-परिवार, सामन्त वर्ग और सामान्य जीवन का लगभग तीस वर्ष का अनुभव था। पता नहीं स्वयं उसके जीवन में कौन-कौन-सी घटनाएँ घटित हुई थीं। वजही ने सामाजिक समस्याओं के बारे में जो दृष्टिकोण अपनाया था उस पर सामयिक परिस्थितियों का बहुत कुछ प्रभाव पड़ा होगा। 'सबरस' के अध्ययन से हम तत्कालीन परिस्थितियों का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के अध्ययन से हम वजही के उन विचारों से अवगत हो सकते हैं, जो पार्थिव जीवन से सम्बन्धित हैं।

बादशाह निर्दोष होता है

सर्वप्रथम यहाँ यह बताने का प्रयत्न किया जाएगा कि वजही का शासकों के बारे में क्या रुख था। इस रुख का कारण केवल यह नहीं था कि उसे बादशाह का आश्रय प्राप्त था। उस समय सर्व साधारण में शासकों के बारे में जो विचार काम करते थे, वजही ने उन सबको लिखित रूप से प्रस्तुत किया है। 'सबरस' से ज्ञात होता है, वह बादशाह की बहुत प्रतिष्ठा करता है। बादशाह किस प्रकार की गल्ती कर सकता है, इसकी कल्पना करना वजही के लिए संभव नहीं है। वह लिखता है—"बादशाह का दिल जागा जोत है, सब ठार जीवता है। पादशाहाँ के दिल पर ज कुछ गुज़रता है सो होता है। पादशाहाँ का दिल ख़ुदा के रहने की ठार, यहाँ शक़ ल्याना तोबा अस्तग़फ़ार। ख़ुदा यहाँ बैठ कर अपना काम चलाता। जाँ पादशाह का दिल जा सकता है, वाँ ते किस का दिल ख़बर ल्या सकता है?...बादशाहाँ भोत बड़े हैं। भोत बड़ी जागा खड़े हैं। उनाँ सूँ बदनीयती करना मरदूद की निशानी है।" (पृ. ५) "बादशाहाँ रोशन दिल हैं, ख़ुदा के ख़लीफ़े ख़ुदा सूँ मिल हैं।" (पृ. ११७)

वजही बादशाहों के गुण-वर्णन करते समय किसी भी सामन्त अथवा राज्याश्रित कवि की समता कर सकता है, किन्तु वह बादशाहों के दुर्गुणों से भी भली भाँति अवगत है। यह सत्य है कि वह इन दुर्गुणों के बारे में स्पष्ट रूप से अपना विरोध व्यक्त नहीं करता किन्तु परोक्ष रूप से यह प्रदर्शित करता है कि शासक को अन्याय नहीं करना चाहिए। उसे न्यायशील और पक्षपात रहित होना चाहिए। उसमें किसी प्रकार की संकीर्णता नहीं रहनी चाहिए। वजही ने अपने इस विचार

को कितने अच्छे ढंग से व्यक्त किया है—"बादशाह का घर बादशाह के जैसा दिसना। शम्स का परतो क़मर जैसा दिसना। बादशाह के घर कोई आये तो यूँ अछना जानो मेज़बानी कूँ आया है, ग़म कूँ बिसर जावे जानो शादमानी कूँ आया है। दुनिया की बहिश्त है पादशाह का घर; ना के पादशाह के घर में आये थी दर्द सर। ..ख़लीफ़ा याने ख़ुदा की जागा बैठनहार, हरेक बात कूँ हक़ से करना पूछ-बिचार।" बादशाह की शुद्ध-हृदयता तथा अन्य गुणों पर बल देते हुए वजही ने लिखा है—"पाक नीयत पादशाहाँ का क़ाबा। अदल इन्साफ़ पादशाहाँ का रोज़ा-नमाज़। सख़ावत पादशाहाँ के हज़ समझ दुआ ए ख़ल्क पादशाहाँ का उम्रदराज। पाकनीयत, अदल-इन्साफ़ होर सख़ावत यू पादशाहाँ की इबादत। पादशाहाँ कूँ अगर अदल होर इन्साफ़ होर सख़ावत पर ना अछे दिल तो हात मे धोकर चार सिजदे करने ते क्या हासिल।" (पृ. १०१)

बादशाहों में जो चंचलता रहती है उसे भी वजही अच्छी तरह जानता है। प्यार जैसी पवित्र वस्तु के प्रति भी वे अपने मन को स्थिर नहीं कर सकते! वजही ने इसी बात को लक्ष्य में रख कर लिखा है—"ज्यूँ शराब का असर त्यूँ पादशाह का प्यार, ऐसे प्यार कूँ क्या एतबार? तिल में उतरे, तिल में चढ़े, ऐसी जागा हुश्यार।" (पृ. १०३)...जोगवर का प्यार, घड़ी में फिराते नई बार। बादशाहाँ इस दुनिया ख़ातिर अपने बाप होर भाई ते नई गुज़रते; अताल दुसमा का उनों कूँ क्या मुलाहज़ा है।" (पृ. १०४)

बादशाह को युद्ध करके प्रदेश जीतना चाहिए

वजही 'सबरस' में आध्यात्मिक तथ्यों का निरूपण करता है, किन्तु बीच बीच में सामयिक आवश्यकताओं और समस्याओं के बारे में अपने विचार प्रकट करने से नहीं चूकता। उसने अपने विचारों को किसी पात्र के मुँह से व्यक्त नहीं किया है।

वजही ने इस बात पर जोर दिया है कि बादशाहों को चुने हुए व्यक्ति सेना में रखने चाहिएँ। सैनिकों को सदैव सुसज्जित रखने से विपत्ति नहीं आती। राजा को लड़ाई से यश मिलता है, जो समस्या किसी प्रकार हल नहीं हो सकती उसे शस्त्र के बल पर हल किया जा सकता है। वह इस बात पर विश्वास करता है कि "तदबीर ना फहे तो लड़ कर लेना, झगड़ कर लेना। साल में एक गज़ ज़मीन तो भी फ़िक्र करना, जो हात आवे कुछ भी लेना ता साल ख्याली ना जावे। जिने चर नहन्याँ कूँ समेटा वो बड़ा हुआ।...गर कोट लेना, मुल्क लेना, एकम का मुल्क एक कूँ देना यू बादशाहाँ का च काम है, इस ख़ुशी की लज़्ज़त दुसमाँ पर हराम है।" (पृ. १११)

गोलकुण्डा शासक शान्ति-प्रिय थे। बहुत कम अवसरों पर उन लोगों ने तलवार उठाई। ऐसे शासकों के आश्रय में रहते हुए भी वजही ने इस बात पर जोर दिया है कि बादशाह को चार छोटों को समाप्त करके स्वयं बड़ा बनना चाहिए। क्या

लेखक गोलकुण्डा के अनाक्रमणकारी शासकों से असन्तुष्ट था ? उस समय के सामन्तों का प्रतिनिधि बन कर क्या वह अपने शासकों को युद्ध के लिए प्रेरित करना चाहता है ।

शासकों को किस प्रकार के व्यक्ति सेना में लेने चाहिएँ, किस तरह गुणी व्यक्तियों का संग्रह किया जाना चाहिए इस बारे में वजही की सलाह बहुत ही व्यावहारिक है । वह बादशाह को यह अवगत कराना चाहता है कि हज़ारों अयोग्य आदमियों के रखने की अपेक्षा एक योग्य आदमी नियुक्त करना लाभकर होता है—"क्या हुआ जो पाँच लाक जोड़े ? काम के लोकाँ बहुत थोड़े । काम के लोकाँ क्या बाट में पड़े हैं ? काम के लोकाँ क्या बाज़ार में खड़े हैं ? काम के लोकाँ हज़ार में ढूँडे तो एक मिलता । असील एक बीड़े पानी च पर पलता वले इज्ज़त भोत मांगता, हुरमत भोत माँगता ।" (पृ. १०८) सामान्य नौकरों और सैनिकों को पर्याप्त पैसे मिलने चाहिएँ । जो राजा अपने नौकरों को पर्याप्त पुरस्कार और वेतन नहीं देता उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता—"अपै गए पीछे पैका जाएगा वले नावँ जासी ना । नावँ काम आवेगा, पैका काम आसी ना । सखावत बड़ी, बहुत बड़ी वस्त है कर जान । सखावत हर दो जहान का पुश्तीवान । सखावत मे दीन, सखावत में दुनिया ।" (पृ. १०७)

बड़ा आदमी ही बड़ा काम कर सकता है । सामान्य नौकरों से बड़ा काम नहीं हो सकता—"बगूला हज़ार पर धरेगा तो क्या बहरी का काम करेगा । जेता तेज हो वो सुई क्या शमशेर के बराबर हुई ? दिल्ली कूँ बाग का कस आएगा ?...बड़े आदमी कूँ बड़े काम फ़रमाना, नहने आदमी का काम घर में आना-जाना ।" (पृ. १०६) वजही का यह परामर्श कितना यथार्थ है—"भोतां में थोड़े बुरे चल जाते, थोड़यों मे बहुत बुरे काम नहीं आते, बहुत बुरा वक्त लाते । पीछे थोड़यों में बहुती च थोड़े होते, काम मुश्किल होता, बाट के रोड़े होते । जो कोई हिम्मत के मैदान में रहे खड़ा, उसके आगे खुदा च बड़ा ।' (पृ. ११०) नौकर को देख कर उस के स्वामी के बारे में अनुमान लगाया जाता है—"नफ़र कूँ देख साहब का मिक़दार जानता है, के वो नफ़र कूँ देख साहब कूँ पछानता है के इस नफ़र का साहब एती अकल एती च काम का है, उतनी च तदबीर उतने च फ़ाम का है ।" (पृ. ४८)

जो नौकर समय पड़ने पर स्वामी के काम आता है, उसे अन्य नौकरों की श्रेणी में नहीं बैठाया जा सकता—"नफ़र नफ़र फ़र्क हैं, सब कूँ बराबर नको देख, जिस नफ़र तें कुछ खूबी हो आई ज़ाहिर नफ़र, बातिन वो भाई ।...माल खूब नफर कूँ देना खुश हाल कर, केता कोई रखेगा सन्दूक में घाल कर ।" पृ. ६६) यदि शासक अपने सैनिकों को सुयोग्य पुरस्कार नहीं देता तो सैनिक भी स्वामी के लिए प्राण न्यौछावर क्यों करने लगा—"पादशाह वो खूब जो लश्करी कूँ खूब कर

जाने, खूब लश्करी कूँ महबूब कर जाने। मानिक-मोती उनो पर ते वारे। यू ग़ाज़ी मर्दो जीव देनहारे, अगर कोई मगता किसी का जीव लेवे, जीव कूँ जीव नहीं तो जीव के बदले पैका भी तो देवे। पैका हात ते नहीं दिया जाता, जीव किसी का क्यूँ लिया जाता? जीव लेने का बहुत दिल, हौर पैका देना एता मुश्किल!" (पृ. ११२) राजा का वास्तविक आधार वीर सैनिक का हृदय है। यदि वीर-हृदय नहीं है तो पत्थर का किला कहाँ तक सहायता करेगा? "जिस बादशाह कूँ खूब दिलाँ का कोट नहीं, उस बादशाह कूँ ओट नहीं। पथर्यां का कोट घड़ी में उड़ जाता। उसके आसरे कौन आता? भार कोई छुड़ानहारा अछे तो दो दीस कोट मे जाना, नहीं चुप कोट में जाकर मरना।...जो सया पानी हौर दाना तो वहीं च हुआ बन्दीखाना।" (पृ. ११३

शस्त्र-बल ही शासन का आधार

उस समय के सामन्त तथा शासक तलवार को ही शासन का सबसे बड़ा साधन मानते थे। उनके लिए अन्य बातें बहुत गौण थीं। इस तथ्य को वजही ने बिना किसी लाग-लपेट के रख दिया है—"लहवे ते यू मुल्क, यू राज आया; लहवे ते यू तख़्त यू ताज आया। लहवे ते ..ख़लीफ़ा ख़ुदा कहवाये, लहवे ते इस मरातिब कूँ पाये। पादशाहां कूँ लहवे बग़ैर राजी च नईं। आखिर भी लहवे बग़ैर इलाजी च नईं।" (पृ. ११५)

पुरुषों के सम्बन्ध मे वजही का दृष्टिकोण

वजही को समकालीन सामाजिक स्थिति का बहुत ज्ञान था। उसका लालन-पालन उच्च श्रेणी के लोगों में हुआ। जो लोग उस समय राज-काज चलाते थे, उनका व्यक्तिगत जीवन किन संकीर्णताओं से घिरा हुआ था इसे वजही ने स्पष्ट रूप से अनुभव किया था। घरेलू जीवन में पुरुष की प्रधानता थी, नारियों को विशेष सम्मान प्राप्त नहीं था। पुरुष अपने को स्वयंभू मानता था। आमोद-प्रमोद के सिवाय नारी की कोई उपयोगिता हो सकती है, इसका ज्ञान उस उच्च सामन्ती समाज को नहीं था। जीवन का बड़ा भाग पार्थिव भोग-विलास में ही व्यतीत होता था। वजही अपने समाज की त्रुटियों को समझ कर भी इन त्रुटियों की ओर प्रायः संकेत-मात्र करता है, उसने इन त्रुटियों के विरोध में खुल कर कहने की आवश्यकता नहीं समझी। उस समय के पुरुषों के बारे में वजही का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट प्रतीत नहीं होता, किन्तु उसने जो कुछ अनुभव किया, उसे व्यक्त करने का प्रयत्न अवश्य किया गया है। जो व्यक्ति केवल किसी नारी के प्रेम-सम्पादन को ही जीवन का लक्ष्य मान लेता है, वजही उसे निकम्मा समझता है। ऐसे आदमी टके में पचास बिकते हैं। वजही कहता है—"बुरा है औरत और सीने का दर्द; ज कोई यों अपस कूँ सँभाल्या सो बड़ा मर्द। औरत की बात इश्क़ है। पैगम्बराँ पो गुज़र्या है।...दाढ़ी-मूछ्याँ आया तो क्या मर्द हुए? चार औरताँ भायाँ तो क्या मर्द हुए? ऐसे मर्द

औरता ते निबत्तर रामक रास, ऐसे मर्द टकें के पचास।" पृ. ६१)

वास्तविक पुरुष वह है जो कठिन परिश्रम करके संसार में सुयश कमाता है। अनेक असफलताओं का सामना करके भी सफलता प्राप्त करना मनुष्य का कर्तव्य है। यदि वह सफलता प्राप्त नहीं करता तब भी निराश नहीं होता। असफलता के कारण उसे अधिक उत्साह मिलता है। वजही ने कितने ओजस्वी शब्दों में कहा है—"मर्दों च पर है क़िनायत होर फ़ाक़ा। मर्दों च पर गुज़रता है एकादे वक्त वाक़ा। जिसे दुनिया में ग़म नईं, वो नादिर है। खुशी-ग़म सब मर्दों च के सर है। चलता सो च पड़ता है, चढ़ता सो च पड़ता है। लहवार का खेल जो आग सूँ है तो यकादे वक्त जलता बी है। तैरालू जो दायमी पानी में मारता कधीं दम कोंद्या जा तलमलता भी है।...ग़म के वक्त खुशहाल रह्या सो मर्द।" (पृ ११६) अपनी बात को अधिक स्पष्ट करते हुए वजही कहता है—"अव्वल भूक-प्यास पर खड़े रहना पीछे मर्दों में बुजुर्गी की बात कहना। बाव के झाड़ ते कोई फल लिया है? भुई छोड़ कर कोई साद्दना किया है? बोले च है के भूक होर प्यास, नब्बियाँ होर वलियों की मीरास। खाना भूक के निवाले, होर पीना प्यास की घूँट। अगर मर्द है तो यूँ चल, बाकी सब बात झूट।" (पृ १२०)

स्त्रियों के बारे में सामन्ती समाज का पुरुष कैसा बर्ताव करता है? उसका स्नेह वास्तविकता पर आधारित है अथवा विषय-वासना तक सीमित है? वजही जैसे इसी समाज के पुरुषों को लक्ष्य में रख कर लिखता है—"इस ज़माने के मर्दों कूँ क्या पतयाना। एक जागा नज़र, हज़ार जागा दिल। कौन औरत ऐसे मर्द सूँ रहेगी मिल? बात, खुराफ़ात। मर्दों की ज़ात सब बेवफ़ा। ऐसियों खातिर करते रोये, हलाक़ हुए। अपस कूँ अज़ाब में भाये तो क्या नफ़ा? अपनी ग़र्ज़ कूँ फुसलाने आते, ग़र्ज़ सरी पीछे बात बदलाते। औरताँ कूँ कते कम अक्ल, कम ज़ात। ऐयारी मर्दों की बात। औरत जो मर्द पर नज़र करे तो जीवन मारती। अपै एकस सूँ ना अछ दसों सू हँसते-खेलते।' (पृ. १५७)

तत्कालीन सामन्ती समाज के पुरुषों की दृष्टि में नारी का मूल्य

उस समाज का पुरुष अपनी इन समस्त निर्बलताओं के रहते हुए भी नारी की सुकुमारता, गम्भीरता और दृढ़ता पर विश्वास नहीं करता था। स्त्रियों के प्रति पुरुष का मन सदैव सन्दिग्ध बना रहता था। दिल ने विषम परिस्थिति में स्त्री के बारे में जो विचार प्रकट किये हैं, वे विचार उस समाज के अधिकांश पुरुषों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दिल ने एक जगह कहा है—"औरत अजब है शकर, वले इस शकर में तमाम भरे हैं मकर।...इनों कूँ समजाने किस आक़िल कूँ यहाँ बल? नादान ज़ात, इनों कूँ तलवे में अक़्ल!... घर में अछ कर एता ग़लबला करतियाँ, अगर यू बाहर निकलतियाँ तो क्या करतियाँ? इसी च ते खुदा इनों कूँ छुपाया। घर में ते भार नकों निकलने देव कर

फ़रमाया।...घर में इनों कूँ यूँ छुपाते, जूँ शैतानाँ कूँ शीशे में भाते।" (पृ. १८६)

नारी के प्रति वजही का सहानुभूतिपूर्ण रुख

नारी की इस हीन अवस्था पर वजही प्रसन्न नहीं है। उसकी सहानुभूति नारी की ओर है। एक लेखक के नाते वह नारी की दुःखद अवस्था पर सहानुभूति प्रकट करता है। वह इस बात को अच्छी तरह जानता है कि अनेक प्रतारणाओं को सहन करके भी नारी सुकुमार है, निर्दोष है। उसके हृदय की कोमलता कठोर आघातों को सह कर अधिक कोमल हो जाती है। पुरुष के अपमानों को सह कर भी वह सृष्टि के क्रम को बराबर बनाये रखती है। वजही ने नारी की इस उदात्त भावना को व्यक्त करते हुए लिखा है—"भई औरताँ कूँ शाबाश कहना जो अपनी शर्म सूँ अपस कूँ सँभालतियाँ, एक पर तप घालतियाँ, एकस खातिर च अपना तन-मन वारतियाँ, जानी जोबन गालतियाँ। बाज़ी औरताँ मर्दाँ खातिर सतियाँ हुइयाँ हैं, आग में जालियाँ हैं, औरताँ में भोत शर्म है, औरता में भोत नेम-धर्म है। औरताँ बिचारियाँ भोत भलियाँ हैं। कौन मर्द औरत मुई तो औरत खातिर अपै बी मुआ? एक मुई तो दुसरी किया! दुसरी औरत का मर्द हुआ औरताँ च में सत है। मर्दाँ में कहाँ है धरम? सौ जनिया कूँ दिखलाते अपनी शरम।..मर्द कूँ मोम का दिल, औरताँ कूँ फ़ौलाद का दिल। मोम फ़ौलाद सूँ क्या करना भोत मुश्किल। मर्दाँ की मुहब्बत की झूटी लाफ़; अताल दुनिया में क्या रह्या है इन्साफ़।" (पृ. १५७)

उपर्युक्त उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री की दुर्दशा से वजही का हृदय व्यथित है। वह इस स्थिति को न्यायपूर्ण भी नहीं मानता किन्तु यथार्थता से अवगत हो कर भी वह आगे क़दम नहीं रखता। अपना स्वर इतना उग्र करके भी वह तत्कालीन विचार-धारा से ऊपर नहीं उठ सका। अन्य विचारकों की तरह वह भी पुरुष को आराध्य और स्त्री को दासी मात्र मानता है। अपने स्वर के तीखेपन को बिल्कुल कोमल करके वह कहता है—"औरत जेती क़बूल सूरत अछे बी अपनी क़बूलसूरती पर, अपने नाज़ पर न जाना। मर्द नीम ख़ुदा, उसकी ख़िदमत सूँ जीव लाना। उसका महर अछेगा सो नाज़ सुहावेगा। सब कूँ वो नाज भावेगा।...जिस औरत कूँ मँग्या घर का धनी, उसके दीवे कूँ क्यूँ न होसी रोशनी।" (पृ. १८२)

राजमहलों में स्त्रियों की दुर्दशा। एक से अधिक पत्नियों वाले पति का बर्त्ताव

उन दिनों शासक ही नहीं उनके सामन्त भी एक से अधिक विवाह करते थे। गोलकुण्डा के कुछ शासकों ने तो अपनी अनेक प्रेयसियों के बारे में कविताएँ भी लिखी हैं। कुछ बादशाहों के महलों में स्त्रियों की संख्या सौ-दो सौ से भी अधिक बढ़ जाती थी। जो स्त्री एक बार महल में आ जाती थी, संभवतः उसका स्वतन्त्र अस्तित्व ही शेष नहीं रह जाता था। बादशाह यह सोच ही नहीं सकता था कि दाम्पत्य जीवन

के बारे में स्त्री की अपनी परिभाषा होती है और वह इस परिभाषा को क्रियान्वित करने के लिए जीवन की सबसे अधिक प्रिय वस्तु को भी दाँव पर चढ़ा सकती है। महलों में सुख की समस्त सामग्रियों के रहते हुए भी उसका जीवन अभावों से पूर्ण रहता था। वजही ने निकट से इन स्त्रियो की भावना का अध्ययन किया था। इसीलिए तो वह लिखता है—"एकस कूँ फूल पन्हाया तो दुसरी कूँ जानो अँगार्या में भाया। एकस सूँ बात किया तो जानो दुसरे का जीव पर घात किया। एक नज़दीक सोती तो दुसरी रोती, मरने पर राज़ी होती। कलकलाती, तलमलाती।... यहाँ खाना खाता तो वहाँ पानी पीता, कहीं एक चित नही दायम हो जीता। इशरत ग़म हुआ, घर जहन्नुम हुआ।" (पृ. १७८

स्त्री तो सन्तुष्ट रहती ही है पुरुष को भी इस स्थिति से सन्तोष नहीं होता। उसका दुःख बढ़ जाता है। कही सुख नहीं मिलता—"सौकन की झल, नौज़ो बिल्लाह, जीव जावे निकल। इस झल कूं कौन सँभाले? तन-मन-रंग व रूप सब जाले।" (पृ. १७६)—सौकन ना सोवे ना सोने देवे, सौकन जीव पर उठे, सौकन जीव लेवे। . दायम झगड़तियाँ, जूँ बुलबुलाँ लड़तियाँ, इधर ते साले, उधर ते सालियाँ। चारो तरफ़ ते बरसतियाँ गालियाँ। कोई कुआ गिरती, कोई बाई, घर में खेलतियाँ चाई माई। यू घर में सुख सूँ नहीं सोता, म्याने म्याँ लोकाँ का हँसना होता। जो देखे तो कलकल औरत ते ज्यास्त सास की झल। साला दुश्मन, साली दुश्मन। बजर का इस बिचारे का मन।...बेटा-बेटी अपनियाँ मावाँ खातिर जुदा लड़ते, यू जुदा तलमलाते।" पृ. १७७)

माता-पिता की भक्ति

वजही बहुत व्यावहारिक व्यक्ति था। वह किसी भी ऐसे प्रसंग को नहीं छोड़ना चाहता जहाँ वह अपने अनुभव के आधार पर पाठक को कोई नई बात नहीं बताता। पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में वह विशेष ज़ोर देता है। माता-पिता के सम्बन्ध में वह लिखता है—"माँ-बाप मजाज़ी, खुदा उनो के हुक्म सूँ क्यूँ होना जुदा। उनो दुनिया में ल्याए, उनो परवरिश किये, उनो बढ़ाये।...उनो खुश तो खुदा रसूल राजी। उनो खुश तो हर दो जहान में फ़तहबाज़ी। उनो कूँ अपस ते राज़ी रखना उनो की दुआ लेना।...तो च लगन खूबी है जो लगन सर पर उनो की छाँवँ है।...बड़ा मक्का, बड़ा मदीना सो माँ-बाप, सुबा उठ उनों का मूँ देखे तो झड़ते सब पाप। अगर खिदमत में अपना जनम खोएगा तो बी माँ-बाप का उतराई कोई क्या होएगा?" पृ. ६६)

मनुष्य की नीयत और अच्छाई

वजही ने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है कि मनुष्य को अपना मन स्वच्छ रखना चाहिए। "जिस काम में नीयत साबित नहीं वह जस क्या देगा?" (पृ. २४) लेखक अच्छे व्यक्ति के सद्गुणों पर बहुत विश्वास करता है। जिस व्यक्ति

के मन में अच्छाई है, उसका मन किसी भी अवस्था मे बुराई की तरफ़ अग्रसर नही हो सकता—"भला भलाई च जानता। भला-बुराई क्या जाने ? बुरा-बुराई च पछानता बुरा-भलाई क्या पछान्या ? जो कोई भलाई समजता च नहीं उस सू भलाई करना न करना बराबर है। बुरे सूँ भलाई करना, दुश्मन सूं सगाई करना नादानगी सरासर है।" (पृ. १७६)

बुरे आदमी का आचरण

बुरा आदमी इस से बिल्कुल विपरीत आचरण करता है। वह जहां अवसर पाएगा बुराई करेगा। बुराई को भी वजही एक ऐसी वृत्ति मानता है, जो कभी परिवर्त्तित नहीं हो सकती। जिन लोगो के हृदय में छल कपट ने स्थान बना लिया है, वजही उनसे बहुत सावधान रहना चाहता है। शैतान कूँ मुठी खुला उतनी बती दिए तो जाता है आदमी बुराई पर आता तो कलेजा खाता है।...शैतान शैतान की सूरत सूँ अपस कूँ दिखलाता, उसका इलाज कुछ किया जाता। बुरा आदमी बड़ा शैतान, फ़रिश्ते का लिबास ले आता। भला आदमी बिचारा क्या जानता !"

संसार की नश्वरता और उसकी अभिव्यक्ति

वजही सासारिक विषयों के बारे में बड़ी सरलता से अपने गंभीर अनुभवों को व्यक्त करता है। उसकी इन उक्तियो को यदि पृथक् रूप से दिया जाए तब भी वे अपने में पूर्ण हैं। संसार की नश्वरता के बारे में बहुत से लेखकों ने विस्तार से लिखा है, किन्तु इस उद्धरण में जैसे उन सब का सार आ गया है—"दुनिया की बड़ाई को लगन चलेगी ? यू घाँस की झोपड़ी, बग़ैर आग धुएँ सूँ जलेगी। यू सोने की ठार नही जाग, कच्चे सूत पर को लग लगेगा लाग। हयात बाव का हिलना चलना। इस हयात पर एता क्या अछना।...दुनिया ज्यूँ दोपहर की छाँव। इस दुनिया कूँ सर है न पाँव।" (पृ. १२१)

इस संसार में भले आदमियों का हमेशा आदर ही होता है, ऐसी बात नहीं है। उस सामन्तवादी युग में किसी व्यक्ति का स्थायी रूप से प्रतिष्ठित रहना बहुत कठिन बात थी। बादशाह के चित्त पर जो चढ़ गया वही बड़ा कवि और विद्वान् कहलाने लगा। व्यक्तिगत भावनाओं के कारण जब लेखक और विद्वान् श्रेष्ठ पद प्राप्त करने लगे तब विद्वत्ता का स्तर कैसे उठ सकता है। वजही ने स्वयं भी इस स्थिति का सामना किया होगा। उसने अपनी आँखों से देखा होगा कि मूर्ख व्यक्ति आदर पा गया और विद्वान् का अपमान किया गया। इसीलिए वह कहता है—"लोकाँ भल्याँ कूँ बुरे कर जानते, बुर्यां कूँ भले कर पछानते। भले आदमी कूँ जीना भोत मुश्किल। दिल में केता हिम्मत धरे, खुदा सब करे, बले किसे भला आदमी न करे। अपना हेड़ा अपै खाना। अपना लहू अपै पीना तो दुनिया में भले आदमी हो कर जीना...जो लगन भला आदमी है, वाँ लगन खार है। बुरे लोकाँ कूँ सब कई ठार है। भला आदमी क्यूँ भावेगा ? गाय कस्साबी च कूँ पतयाये।...अगर तूँ मूँ का

रखना मँगता पानी तो ग़म कूँ होर अँखियाँ के अँभू पी।...भले आदमी कूँ असलियत संभालने जी पर आती है।" (पृ. ३६)

भिक्षावृत्ति के परिणाम

वजही को यह बात पसन्द नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने अभावों की पूर्ति माँग माँग कर करे। यदि कोई व्यक्ति माँगना ही चाहता है तो उसे ईश्वर से माँगना चाहिए। जब कोई व्यक्ति भिक्षा-वृत्ति अपनाता है तो उसे सर्वप्रथम निर्लज्ज बनना पड़ता है। निर्लज्ज बनने पर मनोरथ पूरा नही होता। "लाज सट को मँगता मँगनहारा, देनहारा नईं दिया तो शर्मिन्दा होता बेचारा। शर्म का कोई मँग तो वहाँ कहे है धरम। बेशर्म घडी घडी मँगेगा, उसे मँगने की क्या शरम ?...गंज-कारून अगर अछेगा तो बी देते देते सरेगा। वले बेशर्म का मँगते मँगते पेट ना भरेगा।...मँगना एक हुनर कर जान्या। जो गया वाँ कुछ मँग लिया। किने दिया, किने नईं दिया। काँ नेम, काँ सत ?"

नीतिपूर्वक आचरण की आवश्यकता

'सबरस' जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ में भी लेखक यह प्रतिपादित करता है कि व्यक्ति को बहुत समझ-बूझ से काम लेना चाहिए। यदि अवसर आये तो झूठ बोल कर भी अपना काम निकाल लेना चाहिए। उसने इस चिर-परिचित तथ्य को इस प्रकार प्रकट किया है—"मसलहत सूं चलता दुनिया का कारखाना, कईं सच्चा बोल कईं कईं झूटा बहाना। वले झूटे कूँ सब कोई पतियाते, सच्चे की बात कोई खातिर नईं ल्याते। झूटा दुनिया में भोती च भाता। सच्चे कूं कते कुछ काम नईं आता। झूटा नईं होवे सो बात काडे, झूटा दो में अदावत पाड़े। झूटा काफ़िर बेईमान, झूटा बदबख़्त बदगुमान।...शैतान ते डरे त्यूं झूटे ते डरना।" (पृ. ६३)

शैली की विशेषता

'सबरस' के सम्बन्ध में कुछ उद्धरण देकर यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है कि आध्यात्मिक ग्रन्थ होते हुए भी लेखक ने उसमें ऐसी बहुत-सी बातों का समन्वय किया है, जो दैनिक जीवन के लिए बहुत महत्व रखती हैं। उसने पारलौकिक और इहलौकिक जीवन का एक सर्वांगपूर्ण चित्र खींचने का प्रयत्न किया है। वजही की साधना इस संसार को छोड़ कर प्रारम्भ नही की जा सकती क्योंकि इस भूमि को छोड़ कर साधना कैसे हो सकती है। वजही ने जो कथा ग्रहण की है वह अपने आप में पूर्ण और अद्भुत है। पात्रों के नामकरण में पूरी-पूरी सावधानी बरती गई है। दिल हुस्न से प्यार करता है। दिल का पिता है अक्ल और हुस्न का पिता है इश्क़। अक्ल दिल पर शासन करना चाहती है। वह उसे चिन्तन में उलझा कर रखना चाहती है। अक्ल के मन्त्री का नाम वहम है। जहाँ बुद्धि है वहाँ सन्देह भी है। बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे जिनकी बुद्धि स्थिर हो गई है। इन्द्रियजन्य ज्ञान के बारे में बुद्धि प्रायः एक निश्चय पर नहीं पहुँचती। इस सन्देह के कारण 'दिल' को क़ैद

कर लिया जाता है। दिल और बुद्धि का निवास-स्थान तन नामक शहर में बताया गया है। इस 'तन' में अथवा शरीर में बुद्धि हृदय को बन्दी रखना चाहती है, किन्तु हृदय के पास नज़र (दृष्टि) है। यह दृष्टि पार्थिव नहीं है। वह अन्तःचक्षुओं के कारण बन्दी-गृह से बाहर चला आता है। उधर इश्क अपनी पुत्री हुस्न पर निगरानी रखता है, किन्तु उसकी स्वतन्त्रता में बाधा नहीं पहुंचाता। इधर इश्क के दरबार में अभागे रक़ीब की बात चलती है। रक़ीब सम्भवतः हुस्न के भाग में काँटे बोये; लेकिन हुस्न की सहेलियाँ और उपधात्री उसकी सहायता करने के लिए प्रस्तुत रहती हैं।

इश्क और अक्ल का संघर्ष चिरन्तन काल से चला आया है। इस संघर्ष में सदैव इश्क की विजय हुई किन्तु अक्ल पराजित होकर भी अपनी अकड़ में रहता है। "अक्ल दीवाना है जो इश्क से कतराता, अक्ल है अक्ल अछूती जो इश्क का साया पाता। अक्ल के दुश्मन को है ज्यादा सबब, जो इश्क से करे बगावत। इश्क से कुव्वत करने अक्ल हुई दीवानी" (पृ. १३७) इश्क और अक्ल के परिवार में जो लोग सम्बन्धित हैं, नामूस, रिश्क, हिम्मत, कामत आदि पात्र भी सार्थक हैं। ध्यानपूर्वक देखने पर पता चलता है, प्रत्येक पात्र का नाम बहुत सोच समझ कर रखा गया है। कोई व्यक्ति इन्हें सामान्य व्यक्ति न समझ ले इसलिए वजही ने ज्यों ही नया पात्र कथा में प्रविष्ट होता है, उसकी अलौकिकता की ओर संकेत कर दिया है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

हिम्मत नामक पात्र अमृत तक पहुँचने में नज़र की सहायता करता है। ज्यों ही नज़र को हिम्मत मिला, लेखक ने उसके बारे में संकेत दे दिया- "हिम्मत ते नहना बड़ा होता, हिम्मत ते पड्या सो खड्या होता। माँ हिम्मत, बाप हिम्मत, पीर हिम्मत, मुर्शद हिम्मत, ज कुछ है सो हिम्मत, हिम्मत। ..हिम्मत मर्दां का सिंगार, हिम्मत साहब दिलाँ का आधार। हिम्मत मर्दां का सघाती, हिम्मत कू खुदा मेंगता।" (पृ. ४५) इस विवरण के पढ़ने के बाद किसे सन्देह रह सकता है कि यह हिम्मत किस व्यक्ति का नाम है। किन्तु लेखक की विशेषता इसमें है कि आरम्भ में पात्र के सम्बन्ध में इतना लिखने के बाद तुरन्त वह घटना को इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठक इस संकेत को भूल जाता है। वह हिम्मत, इश्क, अक्ल आदि को सामान्य मनुष्य की तरह आचरण करता हुआ देखता है। उसे क्षण भर के लिए भी आभास नहीं होता कि ये पात्र पार्थिव नहीं हैं।

वजही अपनी बात को किस तरह प्रकट करता है, इसका बहुत कुछ परिचय ऊपर के उद्धरणों से चल गया होगा। वजही की अपनी शैली है। जिस समय हिन्दी गद्य का विकास पूरी तरह नहीं हुआ था, इस प्रकार अपनी बात को प्रभावशाली ढङ्ग से रखना सरल काम नहीं था। 'सबरस' का प्रारम्भ उस समय होता है, जब दिल अमृत का वर्णन सुन कर उसे प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो जाता है। उसकी

रखना मँगता पानी तो ग़म कूँ होर अँखियाँ के अँभू पी।...भले आदमी कूँ असलियत संभालने जी पर आती है।" (पृ. ३६)

भिक्षावृत्ति के परिणाम

वजही को यह बात पसन्द नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने अभावों की पूर्ति माँग माँग कर करे। यदि कोई व्यक्ति माँगना ही चाहता है तो उसे ईश्वर से माँगना चाहिए। जब कोई व्यक्ति भिक्षा-वृत्ति अपनाता है तो उसे सर्वप्रथम निर्लज्ज बनना पड़ता है। निर्लज्ज बनने पर मनोरथ पूरा नही होता। "लाज सट को मँगता मँगनहारा, देनहारा नईं दिया तो शर्मिन्दा होता बेचारा। शर्म का कोई मँग तो वहाँ कहे है धरम। बेशर्म घडी घडी मँगगा, उसे मँगने की क्या शरम ?...गंज-कारून अगर अछेगा तो बी देते देते सरेगा। वले बेशर्म का मँगते मँगते पेट ना भरेगा।...मँगना एक हुनर कर जान्या। जों गया वाँ कुछ मँग लिया। किने दिया, किने नईं दिया। कॉ नेम, कॉ सत ?"

नीतिपूर्वक आचरण की आवश्यकता

'सबरस' जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ में भी लेखक यह प्रतिपादित करता है कि व्यक्ति को बहुत समझ-बूझ से काम लेना चाहिए। यदि अवसर आये तो झूट बोल कर भी अपना काम निकाल लेना चाहिए। उसने इस चिर-परिचित तथ्य को इस प्रकार प्रकट किया है—"मसलहत सूं चलता दुनिया का कारखाना, कईं सच्चा बोल कईं कईं झूटा बहाना। वले झूटे कूं सब कोई पतियाते, सच्चे की बात कोई खातिर नईं ल्याते। झूटा दुनिया में भोती च भाता। सच्चे कूं कते कुछ काम नईं आता। झूटा नईं होवे सो बात काडे, झूटा दो में अदावत पाड़े। झूटा काफ़िर बेईमान, झूटा बदबख़्त बदगुमान।...शैतान ते डरे त्यूं झूटे ते डरना।" (पृ. ६३)

शैली की विशेषता

'सबरस' के सम्बन्ध में कुछ उद्धरण देकर यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है कि आध्यात्मिक ग्रन्थ होते हुए भी लेखक ने उसमें ऐसी बहुत-सी बातों का समन्वय किया है, जो दैनिक जीवन के लिए बहुत महत्व रखती हैं। उसने पारलौकिक और इहलौकिक जीवन का एक सर्वांगपूर्ण चित्र खींचने का प्रयत्न किया है। वजही की साधना इस संसार को छोड़ कर प्रारम्भ नही की जा सकती क्योंकि इस भूमि को छोड़ कर साधना कैसे हो सकती है। वजही ने जो कथा ग्रहण की है वह अपने आप में पूर्ण और अद्भुत है। पात्रों के नामकरण में पूरी-पूरी सावधानी बरती गई है। दिल हुस्न से प्यार करत है। दिल का पिता है अक्ल और हुस्न का पिता है इश्क़। अक्ल दिल पर शासन करना चाहती है। वह उसे चिन्तन में उलझा कर रखना चाहती है। अक्ल के मन्त्री का नाम वहम है। जहाँ बुद्धि है वहाँ सन्देह भी है। बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे जिनकी बुद्धि स्थिर हो गई है। इन्द्रियजन्य ज्ञान के बारे में बुद्धि प्रायः एक निश्चय पर नहीं पहुँचती। इस सन्देह के कारण 'दिल' को क़ैद

कर लिया जाता है। दिल और बुद्धि का निवास-स्थान तन नामक शहर में बताया गया है। इस 'तन' में अथवा शरीर में बुद्धि हृदय को बन्दी रखना चाहती है, किन्तु हृदय के पास नज़र (दृष्टि) है। यह दृष्टि पार्थिव नहीं है। वह अन्तःचक्षुओं के कारण बन्दी-गृह से बाहर चला आता है। उधर इश्क अपनी पुत्री हुस्न पर निगरानी रखता है, किन्तु उसकी स्वतन्त्रता में बाधा नहीं पहुंचाता। इधर इश्क के दरबार में अभागे रकीब की बात चलती है। रकीब सम्भवतः हुस्न के मार्ग में कांटे बोये; लेकिन हुस्न की सहेलियां और उपधानी उसकी सहायता करने के लिए प्रस्तुत रहती हैं।

इश्क और अक्ल का संघर्ष चिरन्तन काल से चला आया है। इस संघर्ष में सदैव इश्क की विजय हुई किन्तु अक्ल पराजित हो कर भी अपनी अकड़ में रहता है। "अक्ल दीवाना है जो इश्क से कतराता. अक्ल है अन्धा अछूती जो इश्क का माया पाता। अक्ल कूँ एती कों है ज्यादा मगर, जो इश्क से करे बराबरी। इश्क से कुव्वत करने अक्ल हुई दीवानी" (पृ. १३७) इश्क और अक्ल के परिवार में जो लोग सम्बन्धित हैं, नामूस, रिज्क, हिम्मत, क़ामत आदि पात्र भी साधक हैं। ध्यानपूर्वक देखने पर पता चलता है, प्रत्येक पात्र का नाम बहुत सोच समझ कर रखा गया है। कोई व्यक्ति इन्हें सामान्य व्यक्ति न समझ ले इसलिए वजही ने ज्यों ही नया पात्र कथा में प्रविष्ट होता है, उसकी अलौकिकता की ओर संकेत कर दिया है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

हिम्मत नामक पात्र अमृत तक पहुँचने में नजर की सहायता करता है। ज्यों ही नज़र को हिम्मत मिला, लेखक ने उसके बारे में संकेत दे दिया- "हिम्मत ते नहना बड़ा होता, हिम्मत ते पड्या सो खड्या होता। मों हिम्मत, बाप हिम्मत, पीर हिम्मत, मुर्शद हिम्मत, ज कुछ है सो हिम्मत, हिम्मत। ..हिम्मत मर्दां का सिंगार, हिम्मत साहब दिलां का आधार। हिम्मत मर्दां का मथानी, हिम्मत कूं मुदा मँगता।" (पृ. ४५) इस विवरण के पढ़ने के बाद किसे सन्देह रह सकता है कि यह हिम्मत किस व्यक्ति का नाम है। किन्तु लेखक की विशेषता इसमें है कि आरम्भ में पात्र के सम्बन्ध में इतना लिखने के बाद तुरन्त वह घटना को इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठक इस संकेत को भूल जाता है। वह हिम्मत, इश्क, अक्ल आदि को सामान्य मनुष्य की तरह आचरण करता हुआ देखता है। उसे क्षण भर के लिए भी आभास नहीं होता कि ये पात्र पार्थिव नहीं हैं।

वजही अपनी बात को किस तरह प्रकट करता है, इसका बहुत कुछ परिचय ऊपर के उद्धरणों से चल गया होगा। वजही की अपनी शैली है। जिस समय हिन्दी गद्य का विकास पूरी तरह नहीं हुआ था, इस प्रकार अपनी बात को प्रभावशाली ढङ्ग से रखना सरल काम नहीं था। 'सबरस' का प्रारम्भ उस समय होता है, जब दिल अमृत का वर्णन सुन कर उसे प्राप्त करने के लिए व्याकुल हो जाता है। उसकी

समाप्ति उस समय होती है जब वह इस अमृत को पा लेता है। यह अमृत प्रेमिका के मुख में निवास करनेवाली वाणी के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज़ नहीं है। वजही ने बड़ी खूबी से अमृत को प्राप्त करनेवाली साधना का चित्र खींचा है।

दोष : शिथिलता और गौण वस्तुओं पर विशेष ध्यान

सबरस के दोषों पर यहाँ विचार करना उपयुक्त होगा। यह आरंभ में ही बताया गया कि लेखक ने अपने चिन्तन और अनुभवों को प्रकट करने के लिए एक कहानी का सहारा लिया है, किन्तु वह उस कहानी के प्रति बहुत उत्सुक नहीं दिखाई देता। यदि वह अपने विचारों और कथानक का समन्वय कर सकता तो 'सबरस' का महत्व बहुत बढ़ जाता। जो बात उसने अपनी ओर से कही है, उन सब को वह प्रसंग के अनुसार किसी न किसी पात्र के मुँह से कहला सकता था। उस अवस्था में पुस्तक की शैली अधिक स्वाभाविक हो जाती। वजही के मन में जो विचार आते हैं, वह उन्हें तत्काल किसी न किसी तरह व्यक्त कर देना चाहता है। ऐसा करते समय वह कथा को एक ओर रख कर लिखता चला जाता है, जब दो तीन पृष्ठ लिख डालता है, तब उसे कथा की बात याद आती है। ज्यों ही उसे अपनी त्रुटि मालूम होती है अथवा उसका सन्देश समाप्त हो जाता है तो वह अलक़िस्सा अथवा बारे कह कर अपनी कहानी को फिर शुरू करता है।

कुछ स्थानों पर उपदेश वाली प्रवृत्ति पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाती है; किन्तु कुछ स्थानों पर इस प्रवृत्ति के कारण कथा में इतनी शिथिलता आ जाती है कि पाठक लेखक को दोष दिये बिना नहीं रह सकता। नज़र हिम्मत के पास पहुँचा है। अमृत की खोज में नज़र की उत्सुकता कम नहीं है। वह चाहता है हिम्मत उसे तुरन्त अमृत का पता ठिकाना बता दे। पाठक भी यह जानना चाहता है कि सचमुच अमृत कहाँ मिलेगा। हिम्मत जैसे पात्र के आते ही पाठक यह विचार करेगा कि अमृत का पता अब जल्दी ही लगने वाला है; किन्तु बातों में ही नज़र ने नौकर अथवा सेवक की विशेषताओं का जो वर्णन शुरू किया उससे पाठक की सारी उत्सुकता शान्त हो जाती है। कथा में बहुत बड़ी शिथिलता आ जाती है।

रक़ीब इश्क़ के नगर का रखवाला है। नज़र वहाँ पहुँचता है। रक़ीब के आते ही पाठक समझने लगता है, अब कोई विघ्न अवश्य उपस्थित होगा। रक़ीब किस तरह दो प्रेमियों के मिलन में बाधा उपस्थित करता है, इसे जानने के लिए पाठक बेचैन हो जाता है किन्तु कथा से असम्बद्धित रक़ीब के लालच के बारे में लेखक पृष्ठ पर पृष्ठ लिखे चला जाता है।

जब नज़र और ग़म्ज़ा हुस्न का सन्देश लेकर दिल के पास चलते हैं तो कहानी दूसरा मोड़ लेती है। प्रेमिका हुस्न का सन्देश जल्दी से जल्दी दिल तक पहुँचना चाहिए। इधर अक्ल ने चारों तरफ़ पहरेदार बैठा दिये हैं कि नज़र और ग़म्ज़े के आते ही उन्हें बन्दी बना लिया जाए। दोनों एक फुलवाड़ी में आकर

सो जाते हैं। पाठक यह अनुमान लगा लेता है कि यहाँ कोई न कोई उत्पात अवश्य उठ खड़ा होगा। यदि उन दोनों को निद्रावस्था में पकड़ने का प्रयत्न किया जाता तो कहानी में अधिक बल आ जाता। नज़र और ग़म्ज़ा को पकड़ने का जो प्रयत्न किया गया उसे बिल्कुल गौण बना कर वजही स्वप्न और जागृति का विवेचन करता है। यह विवेचन यदि किसी अन्य अवसर पर होता तो संभवतः इतना न अखरता किन्तु यह सूक्ष्म विवेचन एक ऐसे स्थान पर आया है कि विशेषता न बन कर वह दुर्गुण बन गया।

इस प्रकार अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। कथानक की इस शिथिलता के साथ साथ लेखक का एक अन्य दोष मुख्य रूप से उसकी रचना के महत्व को कम करने का कारण बनता है। कई स्थलों पर वह मुख्य तथा गौण के भेद को नहीं समझ सका है। दो पात्र हैं अथवा दो घटनाएँ घटित हो रही हैं। इन दोनों पात्रों में एक पात्र का सम्बन्ध मुख्य घटना से है, किन्तु दूसरे पात्र का सम्बन्ध कथा से विशेष नहीं है। लेखक उस गौण पात्र की भी उपेक्षा नहीं करता। वह समय-असमय का विचार किये बिना उस गौण पात्र अथवा गौण घटना को समान महत्व दे देता है। इससे पाठक को कई स्थानों पर भ्रम हो जाता है। इस दोष के कारण बहुत-सी ऐसी बातें रह गई हैं, जो कथानक को सशक्त बनाने में सहायक होतीं। उदाहरण के लिए रक़ीब और उसकी बेटी कथा के अन्तिम भाग में महत्वपूर्ण भाग लेते हैं, किन्तु उन दोनों पर यथेष्ट ध्यान नहीं दिया गया है; इश्क़ और अक्ल के युद्ध का वर्णन करते समय वजही कितनी ही दूर निकल जाता है।

ऊपर जिन दो बातों का उल्लेख किया गया है, उसके लिए वजही को पूरा पूरा दोष नहीं दिया जा सकता। भारत में उन दिनों उच्च वर्ग में फ़ारसी का अधिक महत्व था। जहाँ जहाँ मुसलमान लोग शासन करते थे, फ़ारसी राज-भाषा थी। जो लोग फ़ारसी में लिखते थे उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। दक्षिण में बहमनी शासन के समय भी फ़ारसी को यथेष्ट स्थान प्राप्त था किन्तु हिन्दी की दक्षिणी शैली को निरादर की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। गोलकुण्डा के शासकों ने इसी हिन्दी में स्वयं लिखा और दूसरों को भी लिखने का प्रोत्साहन दिया। इतना होने पर भी बहुत से लेखक फ़ारसी में लिखते थे। इस समय जिस फ़ारसी में ग्रन्थ-रचना हो रही थी वह एक विशेष रूप ग्रहण कर चुकी थी। प्रायः सभी लेखक एक-सी शैली में लिखते थे। वजही स्वयं भी अरबी और फ़ारसी का विद्वान् था। उसने सबरस में पद-पद पर फ़ारसी और अरबी के उद्धरणों से अपनी बात को पुष्ट किया है। आगे चल कर इस बात पर प्रकाश डाला जाएगा कि वजही ने फ़ारसी के ग्रन्थों से कितना प्रभाव ग्रहण किया है। ऊपर जिन दोषों का उल्लेख किया गया है, उनके मूल में बहुत कुछ यह प्रभाव ही काम कर रहा था।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वजही अपनी कुछ त्रुटियों के बावजूद अपने समय

का दक्षिण में हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ लेखक था। उसने जो कुछ लिखा है, उसका आज भी महत्व है। यह महत्व केवल कथानक के कारण नहीं है अपितु वजही की अपनी स्वतन्त्र शैली, अगाध पाण्डित्य और बहुज्ञता के कारण है। उसके लेखन में कुछ ऐसी विशेषताएँ, हैं जो वजही के नाम को भारत के श्रेष्ठ साहित्यकारों में खड़ा कर देती हैं।

गुण

वजही जब किसी वस्तु का वर्णन करने लगता है तो उस वस्तु का चित्र खींच देता है। जब किसी घटना का वर्णन करता है तो ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे वह हमारी आँखों के सामने घटित हो रही है। जब किसी व्यक्ति का वर्णन करता है तो वह अतीत से बाहर आकर हमारा जाना-पहचाना-सा दिखाई देता है। जब ग़म्ज़ा और नज़र कुछ सहायकों के साथ दिल को लाने के लिए चले हैं उस समय वजही ने जैसे शब्दों में प्राण फूंक दिए हैं—"हुस्न...धन के फ़रमाए पर ग़म्ज़ा होर नज़र लोकाँ चुने-चुने, जले-जले भुने भुने अपने सघात ले कर शहर दीदार से तन के शहर के उधर रुख धरे, यूँ चले, सो मंजिल की एक मंजिल करे। दोनों चुस्त, दोनों चालाक। दोनों रोशन ज़मीर, दोनो दिल पाक।" (पृ. १२३) ग़म्ज़ा और नज़र की निर्भयता, फुर्ती, तेजी और उद्विग्नता जैसे इन शब्दों में सजीव हो गई है। ग़म्ज़े के हिरनो की स्फूर्ति भी देखने लायक़ है—"ग़ारी सूँ जुड़ते, पौन पर उड़ते। यूँ हिरन, मनहरन। कौन सके इनो कूँ राम करन? फाँटे में पाडेगे वले फाँदे में पड़सी ना।" (पृ. १३२)

कई स्थानों पर वजही का वर्णन अधिक विस्तृत हो जाता है किन्तु इस दोष के रहते हुए भी उसकी सजीवता में अन्तर नहीं पड़ता। वह शब्दों के द्वारा जैसे चित्र बनाता है। युद्ध का वर्णन करते समय किस दक्षता से उसके दोषों का प्रदर्शन कर जाता है—"अपना होर पराया जानने की जागा नहीं है। यू आशना होर बेगाना पछानने की जागा नहीं है। न दोस्त जान्या जाता न दुश्मन। मारामार होती चारों कधन। कोई किसे हिटकता न पुकाता। जो कोई जिस के हात तले आया वो उसे मारता। अकल उस वकत आ कर अकल नहीं करती। दीवानगी आ कर अंग में भरती। तन सब होता सुन, हात चलता होर मरने च की रहती धुन।" (पृ. १४८)

ऊपर यह बताया गया है कि वजही प्रायः मुख्य कथानक को छोड़ कर दूसरे प्रवाह में बह जाता है, किन्तु इस दोष के कारण कथा का सूत्र लुप्त नहीं हो जाता। ज्यों ही लेखक कथा पर लौटता है, पाठक को उसके साथ चलने में विलम्ब नहीं लगता। एक ही वाक्य में वह समझ जाता है कि लेखक ने उसे कहाँ छोड़ा था और उसे अब किस दिशा में चलना है। जब वह कथा कहना शुरू करता है तो पाठक अनावश्यक विस्तार के लिए लेखक को बुरा-भला कहना छोड़ देता है। उसकी आँखों के आगे बड़ी तेजी से घटना-चक्र घूमने लगता है। जब वह किसी घटना का वर्णन करने लगता है तो कथा की शिथिलता दूर हो जाती है। कथा आगे बढ़ने

लगती है। ऐसे स्थलों पर लेखक की चतुराई देखने लायक होती है।

हुस्न ने दिल को फूल पर विश्राम करते देखा और लेखक ने पूरा ध्यान इस दृश्य पर लगा दिया—"आँखियाँ में ते अँभुआँ का बुन्द पड़ता, फूल ते जानों शबनम झड़ता। दोनों हुए दो भिरे, पानी होर लहू भरे। अँभू ढलते हैं—उजले होर लाल, ख़ुदा कूँ मालूम इस बिचारे का हाल। दिल हुआ इश्क़ ते दानादान, आँखी हुई याकूत होर अल्मास की खान। दीदे दीदार कूँ तरसते, बादल हो कर मोती बरसते। इश्क़ में अपस कूँ जला ली, दोनों पावँ पड़ी अला-बला ली। यू हुस्न नार मुहब्बत की मतवाली, दिल का सिर गोद में उचाली।" उसी समय दिल की नींद टूट गई। थोड़े से वाक्यों में घटना कहाँ की कहाँ पहुँच जाती है—"झाडाँ ने सब ताज़ा किए सिंगार, गले में फूलाँ के भाए हैं हार, बिन रुत आए हैं बार, जानवराँ डाल्याँ पर मस्त मरगोलते मस्त होर सरशार।...हुस्न ऐसी नार, चाँद जैसी अचम्बा औतार, बेअख़्तियार, नारी रोती है ज़ार-ज़ार।" (पृ. १५६)

अनेक उदाहरणों और उपमाओं से कथन की पुष्टि

वजही जब कोई बात कहना चाहता है तो वह इस बात का प्रयत्न करता कि पाठक उसकी पूरी बात समझ जाए। वह इसके लिए तरह तरह के उदाहरण देता है। तरह तरह की उपमाएँ खोजता है। इन उपमाओं और उदाहरणों को समझने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। जब वह उपमाओं और उदाहरणों का प्रयोग करता है तो भाषा में अधिक बल आ जाता है। यहाँ कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं, जिनसे यह बात स्पष्ट हो सके।

वजही यह बताना चाहता है कि कष्ट के बाद ही मनुष्य को सुख मिलता है। कोई मनुष्य बिना परिश्रम किये सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इस बात को वह पूरी तरह हृदयंगम करा देता है—"होर जफ़ा देखे बग़ैर नहीं होता नफ़ा। दुख के पीछे सुख, जाँ मशक़्क़त वाँ राहत। रंज तो रंज, फ़िराक़ तो विसाल का सा ज़ीराक... खारा है तो मीठे का पाया जाता है सवाद, खारा ना अछुता तो मीठे का कौन देता दाद? धूप है तो छावँ की क़द्र जानी जाती, गर्मी है तो आदमी कूँ सर्दी भाती। जहाँ बन्द है वहाँ आज़ादी, हर ग़म के पीछे शादी। शादी के पीछे ग़म, बहुत बरसाँ ते यूँ ही चलता यू आलम।" पृ. १५६)

वजही के समझाने का ढंग कुछ निराला है। वह एक मित्र के नाते कितनी सहानुभूति से समझाता है—"सबूरी अव्वल कड़वी लगती है, वले भोत मीठी होती है आख़िर। बीज ते झाड़, झाड़ ते डाली, डाली ते पात, पात ते फूल, फूल ते फल आता है हात। देखते-देखते, सुनते-सुनते, ख़ातिर ल्याते-ल्याते... मालूम होती है काम की बात।.. ख़ुदा कूँ यू दो बाताँ नहीं भातियाँ, यू दो बातां काम नहीं आतियाँ एक बेगी दुसरी ग़ारूरी।...अगर आसमान ते आग बरसेगा अब्र, वहाँ भी काम करेगा शुक्र होर सब्र। शुक्र होर सब्र हरेक दर्द का दारू है। शुक्र

होर सब्र महनत के दरिया का उतारू है।" (पृ. १५२)

किसी बात को हृदयंगम करने के लिए वह कितने उदाहरण और कितनी उपमाएँ प्रयुक्त करता है इसे एक उद्धरण से स्पष्ट किया जा सकता है—"इश्क़ में बदनामी ज्यूँ खाने में नमक, ज्यूँ दीवे में झमक, ज्यूँ महबूब में ठुमक। इश्क़ का यही है निशान बिचार, जेता पिन्हाँ करने जाय उतना होवे आशकार।...कौन आशिक़ वो जो इश्क़ को छुपाया। इश्क़ कूं कोई छिपा कर ठार्या है, आफ़ताब कूँ कोई बगल में मार्या है? आग में बाँधा है घर? गोता मार कर कौन रहा दरिया भितर?"

गम्भीर से गम्भीर तथ्य को भी अनेक उदाहरणों, दृष्टान्तों और उपमाओं से स्पष्ट करने की पद्धति महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सन्त ज्ञानेश्वर ने अपने 'ज्ञानेश्वरी' नामक ग्रन्थ में अपनाई है। साहित्य में दृष्टान्त, उपमा आदि का उपयोग अलंकरण के रूप में किया जाता है, किन्तु ज्ञानेश्वर ने इन अलंकारों का उपयोग विषय को सुगम और बोधगम्य बनाने के लिए किया। वजही ने भी अपनी रचना में इसी परम्परा को निभाने का प्रयत्न किया।

उपमा और उदाहरण

वजही फ़ारसी और अरबी का विद्वान था। उस समय के फ़ारसी लेखक भारत की उपमाओं और धार्मिक गाथाओं से या तो अधिक परिचित नहीं थे या जानबूझ कर उनका उपयोग नहीं करते थे। वजही ने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन लेखकों की परम्परा को तोड़ कर भारतीय उपमाओं, दृष्टान्तों तथा गाथाओं का उपयोग किया है। सबरस के पात्र किसी विशेष धर्म से सम्बन्धित नहीं हैं। उनका नामकरण भी किसी विशेष सम्प्रदाय के अनुकरण पर नहीं किया गया। इस सम्बन्ध में यह लिखना उचित होगा कि वजही को भारत-भूमि से बहुत स्नेह था। वह जिस प्रदेश में रहता था उसके लिए भी उसके हृदय में बड़ी श्रद्धा थी। दक्खिन पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए वह लिखता है–

दकन सा नहीं ठार संसार में
पंच फ़ाज़िलां का है इस ठार में
दखन है नगीना अँगूठी है जग
अँगूठी कूँ हुरमत नगीना है लग

दखन मुल्क कूँ धन अजब साज है
के सब मुल्क सर होर दखन ताज है
दखन मुल्क भोती च ख़ासा अहै
तिलंगाना इसका खुलासा अहै

(कुतुबमुश्तरी—छन्द। सरकरथ)

इस पद से स्पष्ट हो जाता है कि वजही अपने निवास-स्थान को संसार का

मुकुट मानता है। वह इस देश की सभी वस्तुओं से प्यार करता है। उसे इस देश के अतीत से स्नेह है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी उसके गहरे मित्र हैं। प्राचीन परम्परा से वह पूर्णतया अवगत है। फ़ारसी और अरबी के ज्ञान के कारण वह उन दोनों भाषाओं के प्रभाव से वंचित नहीं है, किन्तु इस प्रभाव के कारण उसका सम्बन्ध अपने देश से विच्छिन्न नहीं हुआ।

वजही ने कमल को कोमलता के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया है। यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि कुतुबशाहों को कमल का फूल बहुत ही प्रिय था। उनके समय की जो बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, उन पर प्लास्टर के काम में कमल का उपयोग कई प्रकार से हुआ है। हैदराबाद के चारमीनार पर ही नहीं कुतुबशाही बादशाहों की मज़ारों पर कमल का अंकन देखने लायक़ हुआ है। गुम्बज जहाँ मुख्य भवन से जुड़ती है, वहाँ कमल की पखड़ियों का कलापूर्ण अंकन इन भवनों की विशेषता है। कई भवनों पर कमल-पुष्प की माला अंकित की गई है। वजही अपने शासकों के इस कमल-प्रेम से कैसे वंचित रह सकता था। उसने न जाने कितनी स्त्रियों और पुरुषों के अंग-प्रत्यंग की तुलना कमल-पुष्प की पंखड़ियों से की है। अन्य भारतीय साहित्यिकों की तरह वजही ने कई स्थानों पर हंस, चकोर आदि को उपमानों के रूप में प्रयुक्त किया है। नीचे लिखे पद में युवती की गति की तुलना हंस की चाल से की गई है—

लाले दिए सीने जो गुल फुल फुल के तेरे गाल पर
दरिया में ते हंस आएगा आशिक़ हो तेरी चाल पर

उदाहरणों और दृष्टान्तों में वह भारतीय लेखकों की तरह प्राचीन परम्परा तथा भौगोलिक तत्वों का उपयोग करता है। राम और हनुमान को आदर्श स्वामी तथा सेवक मान कर लेखक लिखता है—

"साहब वही च जिसे साहबी करना आई, नफ़र वही च जो कर जानता है नफ़राई। राम जैसा साहब आए तो हनूमन्ता जैसा नफ़र पैदा होय। दरिया हो कर बैठे कोई तो वहाँ अपै गौहर पैदा होय।" (पृ. १०५)

दक्षिण में रहते हुए भी वजही गंगा के महत्व से परिचित है। उसका उल्लेख उसने कितनी खूबी से किया है—"गंगा वी धूपकाले में नहनी, बर्फ़काले में बड़ी। जंगल का झाड़, उसे कधीं फूल-फल, कभी पतझड़ी।" (पृ. ११६)

हुस्न और दिल के विवाह का वर्णन ऐसा मालूम होता है, जैसे लेखक भारतीय युवक तथा युवती के विवाह का वर्णन कर रहा है। दिल और हुस्न के विवाह में भी मंडवा तना है। उर्वशी और रंभा नृत्य करने आई हैं। इस वर्णन का कुछ अंश यहाँ दिया जा रहा है—"ब्याह का काज माँडे डेरे ठारे-ठारे दिए। घर सवारे, जागा-जागा नक्श निगारे। सद्र बिछाए पाचे रंबा, उर्वशी, मेनका पातराँ आ कर नाचे।...दिल सूरज का, हुस्न चाँद सूँ जल्वा दिए।" (पृ. २०२)

हिन्दी दोहों का उपयोग

इस सम्बन्ध में यह बताना भी उचित होगा कि वजही को फ़ारसी, अरबी और हिन्दी के हज़ारों पद याद थे। वह अपनी बात को सरल करने के लिए इन भाषाओं के साहित्य से अनेक उद्धरण देता है। हिन्दी के जो दोहे इस पुस्तक में दिए गए हैं, उनसे हम लोग अच्छी तरह परिचित हैं। इन दोहों में एक अमीर ख़ुसरों का भी है। इससे प्रतीत होता है सबरस लिखते समय गोलकुण्डा में अमीर ख़ुसरो, कबीरदास तथा अन्य सन्त कवियों की रचनाएँ पहुँच चुकी थीं। गोलकुण्डा के विद्वान् इस साहित्य से परिचित थे। वे इस साहित्य में रस भी लेते थे। हो सकता है दक्षिण पहुँचने तक इन पदों की भाषा में कुछ उलट फेर हुआ हो किन्तु उनसे वजही का हिन्दी के प्रति अनुराग प्रकट होता है। इन दोहों को उसने 'दोहरा' नाम दिया है। दक्षिण के अन्य लेखकों ने भी दोहे का उल्लेख 'दोहरा' नाम से किया है। निम्नलिखित दोहे का उल्लेख वजही ने अमीर ख़ुसरो के नाम से किया है—

पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव
मुज जलती जनम गया तेरे लेखन बाव (पृ. १५६)

अन्य दोहे निम्नप्रकार हैं—

चार बुलाई चौदा आई सुनो घर की रीत
भार के आकर खा गये घर के गायें गीत (पृ. १११)

जो लंघन तो सहस बल जो भोजन तो मास
ये सीना खंक्या क्यूँ क सत-सत तिनका घास (पृ १२१)

सींव सत ना छाड़िये सत छोड़े पत जाय
लछमी सत की दास है पग लागी घर आय (पृ. १२२)

धरती म्याने रीज धर बीज बिखर कर बोय
माली सींचे सौ घड़ा रित आये फल होय

जो मैं कही सो उन कहा प्रीत है उस धात
दो मन का एक मन भया अब दो की एक ही बात

जिन कूँ दर्सन इत है तिनकूँ दरसन उत
जिन कूँ इत दर्सन नहीं तिन कूँ इत ना उत (पृ. १७०)

सात सहेली एक पिव चौंधर पिव पिव होय
जिस पर पिव का प्यार है सो धन बिरली होय

तेरे करतब करने ते मैं चुप हुई बदनाम
मैं म्याने उठ गई तूँ जाने तेरा काम (पृ. १६२)

अन्तिम पद को वजही ने दक्खिनी का दोहरा बताया है। इस दोहे में भाषा

की दृष्टि से कोई ऐसी बात नहीं है, जिससे अन्य दोहों के साथ इसे न रखा जा सके। इस दोहे से यह स्पष्ट हो जाता है कि वजही दक्खिनी और हिन्दी में कुछ भेद मानता था और उस समय तक हिन्दी की इस शैली को दक्खिनी के नाम से स्मरण किया जाने लगा था।

वर्णन शैली

वजही वर्णन करते समय कई स्थानों पर सीमा का उल्लंघन करता है किन्तु किसी घटना अथवा व्यक्ति का चित्रण वह बहुत ही कुशलता के साथ करता है। नायिका के वर्णन में वह हिन्दी के कवियों का अनुसरण करके 'नख-शिख' की पद्धति अपनाता है। फ़ारसी में इस प्रकार की शैली विद्यमान है, किन्तु वजही की वर्णन शैली उससे मेल नहीं खाती। नायिका के नख-शिख वर्णन के लिए हुस्न का वर्णन उद्धृत करना पर्याप्त होगा—

"हुस्न नार, औतार, खुशदीदार, खुश गुफ्तार, खुश रफ्तार, दीद्यां का सिंगार, दिल का आधार। फूल डाली तें खूब लटकती, चलने में हंस कूं हटकती। लावे तें मीठी बोले बात, आवाज़ तें कुमरी कूं करे मात। कँवल के फूल के फकड़ियाँ जैसे हात। चमन में फूल शर्म हुजूर, लाज तें आसमान पर चढ़े चाँद सूर। मस्त हती तें मग़रूर माती-भाती; किसे खातिर नईं ल्याती। बाल जानो काले नाग, गाल जानो आशिक़ की आग। यू मोहन धन, अजायब मोहनी है। सूरज इसके दरस का दरसनी है।...जोबन अल्मास तें घट, अधर याकूत तें आला निपट। उस कियाँ अखियाँ जानो लाले, जानो शराब प्याले। दाँताँ देख मोती के दाने, घरे घर फिरते दीवाने। (पृ. ७०)...अँखियाँ नर्गिस, जुल्फ़ मुम्बुल, रुख्सार लाल, क़द की डाली, दहन गुंचा, सो बाल काला बाला। जूड़ा ताऊस, गला कुमरी, बचन में तूती के तोरे, तिल भौंरा, चाल कब्क, अधर ऐन शकरखोरे। अंगुलियाँ फँकडियाँ, हात का पंजा कँवल।" (पृ. ७१)

संवाद

सबरस में कई स्थलों पर पात्रों की बातचीत लिखी गई है। जब दो अथवा दो से अधिक पात्र आपस में बातचीत करते हैं, तब लेखक की शैली बहुत परिष्कृत हो जाती है। संवाद की भाषा समयानुकूल होती है। लेखक बातचीत में प्राण डाल देता है। खाल ने हुस्न को परामर्श दिया कि वह अपनी बहन को बुला ले जिससे दिल को प्राप्त करने में उसकी सहायता ली जा सके। हुस्न ने उसे जो उत्तर दिया है, उसमें हुस्न के मन की विह्वलता और विवशता दोनों अंकित हो जाती हैं—"क्या फ़ायदा? झगड़े कूं आ खड़े हैं हुस्न होर दिल, वो मदद आये लग बहुत मुश्किल। अताल हमें झगड़े की लाफ़ में, वो हमज़ाद हमारी कोहकाफ़ में, दर्द खुरासान में, दारू हिन्दुस्तान में।...अगर दारू करनहारे कूँ यू है फ़ाम, दारू आये लगन दर्दमन्त का काम तमाम।" (पृ. १४२)

मुहावरे और कहावतें

वजही के पास कहावतों का अक्षय भण्डार है। वह फ़ारसी, अरबी, गुजराती, मराठी और हिन्दी की बढ़िया से बढ़िया कहावत का प्रयोग करता है। मुहावरों की तो गिनती ही नहीं है। वजही केवल प्रचलित मुहावरों और कहावतों का प्रयोक्ता नहीं है अपितु वह अनेक मुहावरो और कहावतों का जन्मदाता भी है। उसके अनेक वाक्यांश दक्खिन में आज भी कहावत के तौर पर प्रयुक्त होते हैं। कहावतों और मुहावरों के अधिक प्रयोग के कारण गद्य में प्रवाह और प्राञ्जलता आई है। बात को स्पष्ट करने में सहायता मिली है। अनेक मुहावरे ऐसे हैं जिन्हें दक्खिन में अशिक्षित समुदाय आज भी प्रयुक्त करता है। वजही ने इस समाज के मुहावरों को भी त्याज्य नहीं माना। सामान्य जनता के मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करके वजही ने सिद्ध कर दिया कि उसका सम्बन्ध केवल गोलकुण्डा के बादशाहों से ही नहीं था अपितु साधारण जनता से भी था। विद्वानों के साथ रहते हुए भी वजही ने भाषा में पाण्डित्य का प्रयोग नहीं किया। उसने शक्ति-भर इस बात का प्रयत्न किया कि अभिव्यञ्जना की उसकी शैली साधारण जनता की भावाभिव्यक्ति का अनुसरण करे। यह प्रवृत्ति आगे चल कर दक्खिनी के अन्य किसी लेखक में इस रूप में दिखाई नहीं दी। वजही ने सबरस में जो कहावतें प्रयुक्त की हैं, उनमें से कुछ यहाँ उद्धृत की जाती हैं। कहावत देते समय वजही ने कुछ स्थानों पर यह बताया है कि इस कहावत का प्रचलन किस प्रान्त अथवा भाषा में है। दक्खिनी को भी उसने एक भाषा माना है। जिन कहावतों के साथ दक्खिनी विशेषण जुड़ा हुआ है, वे निम्न प्रकार हैं—

(१) जो कोई आवारा वो भाई हमारा
ज कोई करे हिम्मत मार निकाले नित
(२) मरना मरना चूके ना। ऐसा मरना जो कोई थूके ना
(३) म्यौं मते, दुनिया रहते, हाँ कूँ हाँ की नईं करते।
(४) टट्टू कूँ टूमनी तेज़ी कूँ इशारत
(५) लूत में लूत काकलूत, लत में लत गफ़लत

यद्यपि निम्न लिखित कहावतों के साथ वजही ने दक्खिनी विशेषण नहीं जोड़ा है, किन्तु इन्हें भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है—

(१) बेपिरत पुतली क्यूँ घड़ती, नाँवँ ते मस्ती क्यूँ चड़ती ?
(२) नीम दुश्मन पूरे धत्यारे, सो उनो च दुश्मन कूँ ख़बर अँपड़ान हारे
(३) मजूर की टुकडे रोटी पर नज़र, बाजे कामाँ की उसे क्या खबर ?
(४) न भले ते डरेगा न बुरे ते डरेगा, एक रक़ीब हज़ार कुत्ते का काम करेगा।
(५) गिरगट की दौड़ बाड़ी लगन।

(६) सब जागा बहता वारा, पिए तो मालूम होता है कई मीठा कई खारा
(७) जिधर हंडी डई, उधर सब कोई
(८) आक़िल अंगे ते च पछानता, नादान पीछे ते पछानता
(९) सुन रे जीवा, घर कूँ दीवा तो मस्जिद कूँ दीवा
(१०) माली जेता जपता है, वले झाड़ पेड़ ते उखड़े पछें क्या पनपता है?
(११) घर-घर नको फिरा आस, अपै होर अपनी भूक प्यास
(१२) जिसे नेट नईं उसे भेट नईं
(१३) दोनों कधन ते मुहब्बत अछे तो मुहब्वत की खुशहाली। दोनों हात मिलते हैं तो बजती है ताली।
(१४) इधर बाई उधर कुवा
(१५) मंगे सो जले, नहीं मँगे सो भले
(१६) मँगते सो मेहनत में हलाक बिचारे, नहीं मँगते वो भोत प्यारे
(१७) बाँदी मुट्ठी का भरम
(१८) खाने में ते उड्या लोन, अताल तुमें कौन हमें कौन
(१९) खाली घर में कुतिया का राज
(२०) सुना कस देखे बग़ैर मालूम नहीं होता
आदमी बस देखे बग़ार मालूम नहीं होता

ऊपर जो कहावतें दी गई हैं, उनमें निस्सन्देह कुछ का रचयिता वजही है। कुछ ऐसी कहावतें भी हैं जो कुछ परिवर्त्तन के साथ आज भी हिन्दी में प्रयुक्त होती हैं।

वजही ने कुछ कहावतें हिन्दुस्तान-निवासी के नाम से उद्धृत की हैं। वजही के अहले हिन्द का अर्थ क्या है?; उसके निकट उत्तर भारत का हिन्दी-भाषी प्रदेश हिन्दुस्तान अथवा हिन्द है। उस प्रदेश के निवासियों के नाम से जो कहावतें दी गई हैं, उन्हें नीचे दिया जाता है—

(१) चिकने घड़े पर पानी ढलता
(२) प्यासा क्या मँगता? पानी

इस श्रेणी में निम्नलिखित कहावतें भी रखी जा सकती हैं—

(१) इल्लत जाती, आदत नईं जाती
(२) जिसे देखे दुनियादार, मँगने खड़े रहे हात पसार
(३) क्या सूके क्या हरे, जिसे खुदा हिम्मत देवे सो करे
(४) दूद का जल्या छाच फूक पीता

सबरस में मराठी की एक कहावत इस प्रकार दी गई है—"मराठी का मसला होता—"बहुत भील केला भील भ्याला। बेल केला महकी झूल पा खेला।" (पृ. १९२)

इन कहावतों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि दक्खिनी तथा हिन्दी

की कहावतों में भाषा सम्बन्धी विशेष अन्तर न होते हुए भी वजही ने उन्हें अलग अलग दिया है। उस समय तक उत्तर भारत में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी और दक्खिन में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी में अन्तर पड़ चुका था। इस अन्तर को विद्वानों और लेखकों ने ठीक ठीक अनुभव नहीं किया वे समझने लगे थे दोनों भाषाएँ कहाँ पृथक् हो रही हैं। हिन्दी से मतलब किस भाषा से था? उस समय व्रज, अवधी और राजस्थानी में पर्याप्त साहित्य लिखा जा चुका था। खड़ी बोली में भी कुछ लोगों ने लिखने का प्रयत्न किया किन्तु साहित्यिक क्षेत्र में उसे तब तक ऊँचा स्थान नहीं मिला था। वजही ने हिन्दी के नाम से जो कहावतें दी हैं, वे क्षेत्रीय भाषाओं की न हो कर खड़ी बोली से सम्बन्ध रखती हैं।

वजही दक्खिनी और हिन्दी में कोई स्पष्ट सीमा नहीं बना सका। इसी लिए उसने बहुत-सी कहावतों के साथ न तो अहले हिन्द शब्द जोड़ा और न दक्खिनी।

मराठी की जो कहावत दी है, वह बिल्कुल अशुद्ध है। हो सकता है वजही उसे ठीक ठीक याद नहीं रख सका अथवा प्रतिलिपि करनेवाले मराठी से अनभिज्ञ होने के कारण उसे सही न लिख सके हों। वजही ने मराठी के अनेक शब्द सबरस में प्रयुक्त किये हैं। इन शब्दों का औचित्य देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वजही ने सम्भवतः मराठी कहावत ठीक ठीक लिखी हो, किन्तु प्रतिलिपि करनेवालों ने ही उसे विकृत कर दिया हो। प्रसंग के अनुसार इस कहावत का अर्थ हिन्दी की प्रसिद्ध कहावत "का वर्षा जब कृषी सुखानी" से मिलता-जुलता होना चाहिए। ध्वनि और अर्थ को देखते हुए इस कहावत का शुद्ध रूप इस प्रकार हो सकता है—"बैल गेला आणि झोपा केला"। इस कहावत का अर्थ है जब बैल मर गया (ठंड के कारण) तो उसके लिए झोंपड़ी बनाई गई?

वजही गोलकुण्डा का निवासी था। गोलकुण्डा तेलुगु भाषी प्रदेश में है। यह आश्चर्य की बात है कि उसने एक भी कहावत तेलुगु से नहीं ली। इसके विपरीत वह एक अन्य क्षेत्र की भाषा मराठी की कहावत उद्धृत करता है। इसका कारण यही हो सकता है कि आर्य परिवार की भाषा होने के कारण वह मराठी से शीघ्र ही परिचित हो गया होगा और मराठी की शब्दावली को हिन्दी में आसानी से प्रयुक्त कर सका होगा। तेलुगु का परिचय प्राप्त करना मराठी की अपेक्षा अधिक श्रमसाध्य है और उसकी शब्दावली तथा कहावतें मूल रूप में हिन्दी में प्रयुक्त नहीं हो सकतीं।

जिन दिनों वजही गोलकुण्डा में था, कुतुबशाही बादशाहों ने अनेक मराठी भाषी व्यक्तियों को ऊँचे पदों पर नियुक्त कर रखा था। गोलकुण्डा में कुछ मराठी भाषी परिवार बहुत प्रतिष्ठित माने जाते थे और राज-काज में उनकी सम्मति का बहुत मूल्य था। वजही के अन्तिम दिनों में कल्याणी से एक मराठी भाषी सज्जन गोलकुण्डा आये थे। वे राजस्व विभाग में ऊँचे पद पर काम करते थे। इन्हें

गाने का शौक़ था। मराठी में बहुत अच्छी कविता करते थे। कुछ दिन बाद इन्हें संसार से वैराग्य हो गया। हैदराबाद में साधक का जीवन व्यतीत करने लगे। साधक बनने पर इनका नाम केशवस्वामी पड़ा। केशवस्वामी का महत्व इस बात से जाना जा सकता है कि उनकी गिनती समर्थ रामदास के साथ की जाती है।

भाषा की दृष्टि से हिन्दी और मराठी का जो सम्बन्ध है, उसके बारे में आगे चल कर विचार किया जाएगा।

गद्य-शैली और वाक्य-विन्यास

वजही के वाक्य विन्यास और गद्य की विशेषताओं को हम निम्न प्रकार सूचिबद्ध कर सकते है। यहाँ इस सम्बन्ध में संक्षेप में ही कुछ जानकारी दी जा रही है--

(१) उसने गद्य में भी तुकान्त शैली का प्रयोग किया है।

(२) वर्णन करते समय उसने सयम से काम नहीं लिया।

(३) वह विशेषणों का प्रयोग बहुतायत से करता है। एक एक विशेषण के साथ अनेक विशेषणों का प्रयोग अबाध्य रूप से किया गया है।

इन तीनों बातो के सम्बन्ध में कुछ विस्तार से लिखना उचित होगा।

वजही शब्द चुनते समय अपनी विशेष रुचि से काम लेता है। वह प्रायः ऐसे शब्द प्रयुक्त करता है, जिनमें परस्पर मैत्री हो। जिनके एक साथ पढ़ने से भाषा में प्रवाह तथा मधुरता उत्पन्न हो सके। शब्द के बाद उसका ध्यान वाक्य और वाक्यांशो पर जाता है, वाक्यांश का अन्तिम शब्द तुकान्त होना चाहिए। इसी तरह जब कुछ वाक्यांशों को मिला कर वाक्य बनाया जाता है तो उसे भी तुकान्त शब्द के द्वारा अगले वाक्य से सम्बद्ध किया जाता है। इस तरह शब्द के साथ शब्द, वाक्यांश के साथ वाक्यांश और वाक्य के साथ वाक्य मिल कर एक शृंखला-सी बनाते चलते हैं। इन शृङ्खलाओं पर ही कई पृष्ठ चले जाते हैं। तुकान्त वाक्यावली और शब्दावली के कारण लेखक नपे-तुले शब्दों में अपने भाव व्यक्त करता है। जहाँ तक हो सका है, वह विस्तार से बचा है। शब्दों का बेढंगा प्रयोग इसी विशेषता के कारण नहीं हो सका। लेखक को बहुत चुन-चुन कर शब्द रखने पड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे एक-एक पंक्ति ढाली गई है, ढालने के बाद उसका घण्टों परिमार्जन हुआ है। एक शब्द भी कहीं निरर्थक अथवा कर्ण-कटु नहीं है। गद्य में होते हुए भी सबरस को इस शैली के कारण प्रभावशाली काव्य कहा जा सकता है। इस शैली के कारण हस्तलिखित मूल प्रतियों के पढ़ने में भी सहायता मिलती है। तुकों के कारण शब्दों के रूप और उनकी ध्वनियों के निश्चय में बड़ी सहायता मिलती है।

वजही स्थान तथा घटनाओं का वर्णन किस प्रकार करता है, इसका उल्लेख उदाहरण सहित ऊपर किया जा चुका है। वह मुख्य और गौण का बहुत कम स्थानो पर विचार करता है। जो घटना घटित हुई, जो व्यक्ति उसकी कथा में आ गया

उसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी देना वह आवश्यक समझता है। वजही ने एक गाँव का वर्णन इस प्रकार किया है—"कोहक़ाफ़ के उधर एक शहर है, उस शहर में एक बाग़ है के बहिश्त उस बाग़ की रश्क ते दाग़ है। जिसके फूल देखते जीव आवे। उस बाग़ कूँ बहिश्त सूँ क्यूँ तश्वीह दिया जावे। सहन उसका मोतियाँ सूँ भर्या जूँ तार्यां सूँ गगन। बहिश्त उसके एक बाग़ के कोने का चमन। मलायक आरजू धरते हैं उस बाग़ में आने, हूरां तरसतियाँ हैं उस बाग़ के फूल का तुर्रा लाने।" (पृ ५४) इस सम्बन्ध में एक और उदाहरण देने से बात स्पष्ट हो जाएगी। जब हुस्न को पता चला कि रक़ीब की पुत्री ने दिल के साथ धोखा किया है, दिल का प्रेम अटल है तो उसने एक पत्र लिख कर क्षमा-याचना की। इसी तरह दिल ने भी हुस्न की निश्छलता तथा पवित्रता को स्वीकार करते हुए अपने भ्रम के परिमार्जन के लिए क्षमा चाही। दोनों ने भी अपनी-अपनी पवित्रता और दृढता के लिए सौगन्धों की इतनी भरमार की है कि उससे एक-एक पृष्ठ भर गया। उस सौगन्धावली का कुछ अंश इस प्रकार है—"ख़ुदा की ख़ुदाई की सौं, तेरी जुदाई की सौं, तेरे फ़िराक़ की सौं, तेरी मुरव्वत की सौं, तेरे जलने की सा...तेरे बादल जैसे बालों की सौं, तेरे चाँद जैसे गालों की सौं, तेरी अधर की सौं...।" (पृ. १६०)

वर्णन करते समय वजही प्रायः एक चीज़ या व्यक्ति को संसार का श्रेष्ठतम व्यक्ति या वस्तु बताता है, फिर जब दूसरा व्यक्ति या चीज़ आती है तो उसे भी उन्हीं विशेषणों से अलंकृत कर देता है। पाठक यह नहीं जानता कि लेखक वास्तविक विशेषण किस वस्तु अथवा व्यक्ति के साथ लगा रहा है।

हिन्दी गद्य की परम्परा

उपर्युक्त गुण वजही की रचना-शैली की विशेषता है अथवा उसने किसी दूसरी भाषा या ग्रन्थकार से यह प्रभाव ग्रहण किया है? प्रश्न पर विचार करना इसलिए भी आवश्यक है कि सबरस में जो शैली अपनाई गई वह हिन्दी और उर्दू के प्राचीन गद्यकारों ने अपना ली। बहुत दिनों तक सबरस की शैली दोनों भाषाओं में चलती रही। सबरस का महत्व इस बात में नहीं है कि उसमें हिन्दी का प्राचीनतम गद्य व्यवस्थित रूप से सुरक्षित है, अपितु महत्वपूर्ण बात यह है कि हिन्दी गद्य की दीर्घ-कालीन परम्परा की वह एक कड़ी है। सबरस का तुकान्त और अलंकृत गद्य हमें उन्नीसवीं शती के मध्य तक प्रतिबिम्बित दिखाई देता है। उर्दू का 'बाग़ो बहार' और हिन्दी की 'रानी केतकी की कहानी' को सबरस के साथ पढ़ा जाए तो उनकी समानता स्पष्ट हो जाती है। सबरस से पहले का गद्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इसीलिए हम सबरस से पूर्ववर्ती गद्य के बारे में कुछ अधिक नहीं लिख सकते।

फ़ारसी और अरबी का प्रभाव?

वजही पर सब से अधिक प्रभाव अरबी और फ़ारसी गद्य का पड़ा होगा। इसमें भी फ़ारसी गद्य ने उसे विशेष रूप से प्रभावित किया होगा। वजही से पहले दक्षिण के कुछ

विद्वानों ने फ़ारसी गद्य में बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं। बहमनी वंश के प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री महमूद गवाँ के फ़ारसी में लिखे हुए कुछ पत्र प्रकाशित हो चुके हैं, जो फ़ारसी के पत्र-साहित्य में अच्छा स्थान रखते हैं। इन पत्रों में जिस शैली का प्रयोग किया गया है, उसमें छोटी से छोटी बात को भी बहुत घुमा फिरा कर कहा गया है। 'एक आदमी गाँव गया' केवल इसी बात को दो-तीन पृष्ठों में लिखा गया। इस अलंकृत और वर्णनात्मक शैली के कारण भाषा की शब्दावली बहुत बढ़ गई किन्तु भावार्थ समझने में बहुत कठिनाई पैदा हो गई, फ़ारसी के गद्य में तुकान्त शैली का प्रयोग भी दिल खोल कर किया गया।

प्रश्न यह है कि अलंकृत, वर्णनात्मक और तुकान्त शैली फ़ारसी की अपनी है अथवा उसने उसे किसी दूसरी भाषा से ग्रहण किया है। जहाँ तक फ़ारसी के पुराने साहित्य का सम्बन्ध है, वह बहुत ही सरल और आडंबरहीन भाषा में लिखा गया है। उसमें अर्थ को प्रधानता दी गई है। तेरहवीं शती के बाद फ़ारसी के गद्य ने मोड़ खाया। इस परिवर्त्तन का क्या कारण हो सकता है? फ़ारसी के कुछ विद्वानों ने इसका कारण अरबी का प्रचार बताया है। कुछ लोगों ने यह लिखा है कि जब मुग़ल लोग ईरान में पहुँचे और उन्होंने वहाँ शासन स्थापित किया तो फ़ारसी के लेखकों ने अलंकृत शैली में विस्तार से लिखना शुरू किया। इस भाषा को न समझने के कारण मुग़ल शासक उन कवियों को बहुत पुरस्कृत करते थे।

फ़ारसी साहित्य के कुछ विद्वानों ने इसे स्पष्ट रूप से भारत का प्रभाव बताया है। अलंकृत और तुकान्त शैली को भारतीय शैली का नाम दिया गया है। यहाँ तेहरान विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डाक्टर रज़ाज़ादा शफ़क का मत फ़ारसी से हिन्दी में अनुवादित करके उद्धृत किया जा रहा है, जो इस कथन को पुष्ट करता है—

"मुग़लों के युग में फ़ारसी गद्य की जो अस्वाभाविक शैली चल पड़ी थी वह सफ़वी युग में और बिगड़ गई। अप्रचलित प्रयोगों और अलंकारों की भरमार तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के प्रयत्न में जटिलता बढ़ गई। विशेष रूप से हिन्दुस्तान के गद्य-पद्य लेखकों ने इसी शैली को बढ़ावा दिया, परिणामतः वर्णनात्मक कृत्रिम शैली उत्पन्न हुई, जिसको 'भारतीय शैली' का नाम देते हैं।"

तारीख़ अदबियात ईरान

पृ. ४१२-१३

जहाँ तक अरबी गद्य का सम्बन्ध है वह आरंभिक अवस्था में बहुत सरल रहा है। हज़रत मुहम्मद ने कुरान गद्य में लिखी है। उनकी भाषा बहुत उत्कृष्ट है। कुरान में कुछ स्थानों पर तुकान्त गद्य का प्रयोग हुआ है, किन्तु कहीं भी अलंकारों ने उस भाषा को दुरूह नहीं बनाया है। अरबी के कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि अरबी में आगे चल कर जो अलंकृत और दुरूह भाषा प्रचलित हुई उसका कारण ईरानियों का सम्पर्क है।

यहाँ भारतीय परम्परा का उल्लेख करना उचित होगा।

संस्कृत-गद्य और उसकी विशेषता

संस्कृत साहित्य में तुकों की प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं रही। गद्य की बात तो दूर, कविता में भी तुको का प्रयोग नहीं किया जाता था। वाल्मीकि रामायण तथा अन्य ग्रन्थों में कहीं-कहीं अन्त्यानुप्रास दिखाई देता है, किन्तु वह अपवाद स्वरूप ही प्रयुक्त हुआ है। जयदेव का गीतगोविन्द अन्त्यानुप्रास का उत्कृष्ट उदाहरण है किन्तु गीतगोविन्द बहुत इधर की रचना है। जहाँ तक अलंकरण और भाषा-सम्बन्धी जटिलताओं का प्रश्न है, संस्कृत साहित्य चौथी शताब्दी तक इन दोनों बातों से अछूता रहा। कविता में भी सरल से सरल भाषा का उपयोग किया गया। गद्य की सरलता तो सर्व विदित है। उपनिषदों में जीव और ब्रह्म का विवेचन जिस भाषा में किया गया है, उसे बोल-चाल की शैली कहा जा सकता है। संस्कृत नाटकों में सदैव सरल भाषा का उपयोग किया गया। संस्कृत में किसी बात को थोड़े से थोड़े शब्दों में कहने की प्रवृत्ति बहुत बलवती रही। इसी प्रवृत्ति से सूत्र-शैली का प्रयोग हुआ। वैयाकरण तो एक मात्रा के लाघव पर भी पुत्रोत्सव मनाते थे। चौथी शती के बाद पद्य और गद्य दोनों में जटिलता प्रारम्भ होती है। यह नहीं कहा जा सकता कि यह जटिलता किसी अन्य भाषा के प्रभाव से उत्पन्न हुई। भाषा सम्बन्धी यह विशेषता धीरे-धीरे विकसित हुई। भारवि, और माघ काव्य और दण्डी तथा बाण गद्य के क्षेत्र में इस शैली के उत्कृष्ट लेखक हैं। इस काल के लेखकों ने समास-युक्त लम्बी-लम्बी पदावलियाँ प्रयुक्त कीं। अलंकारों से भाषा को लाद दिया।

चौथी शती से लेकर नवीं शती तक संस्कृत में जो गद्य प्रचलित रहा उसने प्राकृत और अपभ्रंश को प्रभावित किया। जब आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ तो यह प्रभाव पूर्ववत् लेखकों को प्रेरित करता रहा। नवीं शती के बाद जब संस्कृत में मौलिक साहित्य लिखा जाना बहुत कम हो गया; जटिल, समास युक्त और दुरूह गद्य में राजाओं की प्रशस्तियां लिखी गईं। प्रशस्तियों में जो संस्कृत-गद्य प्रयुक्त होता था उसने राज्याश्रित हिन्दी-कवियों को उसी प्रकार की शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया होगा।

दण्डी और बाण के गद्य में स्पष्ट रूप से यह बात दिखाई देती है कि सामान्य से सामान्य बात को भी घुमा-फिरा कर कहा जाए। इस शैली की अपनी विशेषताएँ हैं। भाषा में विशेष प्रकार का प्रवाह उत्पन्न हुआ। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि विभक्तियों की समानता तथा समास-बहुलता के कारण वाक्यांशों में कई स्थानों पर अन्त्यानुप्रास स्वयमेव आ गया है, किन्तु लेखक इच्छापूर्वक तुकों का प्रयोग करना चाहता है, ऐसा प्रतीत नहीं होता।

भारतीय भाषाओं में गद्य की शैली ही नहीं अभिव्यंजना में भी संस्कृत का अनुकरण किया गया। कथा साहित्य पर तो संस्कृत का यह प्रभाव बहुत

पड़ा है। संस्कृत में हज़ारों वर्षों तक कथा-साहित्य का विकास हुआ है। कथा-वस्तु में परिवर्तन होने पर भी इस विकास के कारण शैली की स्थिरता बनी रही। जातक कथाओं से लेकर पंचतन्त्र के कथानक और उपनिषदों में वर्णित अरण्य-निवासियों की दिनचर्या से लेकर बाण भट्ट के हर्ष चरित तक हमें एक ही शृंखला दिखाई देती है।

ईरानियों से हम लोगों का सम्बन्ध पुराना है। भारत के आर्यों और ईरानियों के पूर्वज एक ही संस्कृति के अनुयायी थे कुछ काल के लिए यह सम्बन्ध टूट गया था किन्तु ईसा पूर्व चौथी शती में दोनों देशों में राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुए। यह सम्बन्ध किसी न किसी रूप में अठारहवीं शती तक बने रहे। राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के कारण यदि फ़ारसी और भारतीय भाषाओं की अभिव्यंजना में समानता मिले तो वह अस्वाभाविक नहीं है। संस्कृत ने परिवर्तित रूप में यदि फ़ारसी को प्रभावित किया हो और उसके कारण फ़ारसी में भारतीय शैली का प्रचलन हुआ हो तब भी कोई आश्चर्य नहीं है।

इस विवेचन का तात्पर्य यह है कि वजही ने अपने वर्ण्य विषय के लिए जो शैली अपनाई वह विशुद्ध भारतीय है। उस शैली के अपने गुण हैं और अपने दोष हैं। 'सबरस' का लेखक इन गुण दोषों का समान रूप से उत्तराधिकारी है।

यहाँ इतना उल्लेख करना आवश्यक है कि भारतीय शैली के कारण फ़ारसी में जो विस्तृत और तुकान्त वर्णन-प्रधान शैली का प्रचलन हुआ; वजही उससे दूर रहा। संस्कृत की परम्परागत शैली को भी वजही ने अपने ढंग से अपनाया है। वजही ने पूरी पुस्तक में समासों का प्रयोग प्रायः नहीं किया। उसके वाक्य बहुत छोटे-छोटे हैं। इन छोटे-छोटे वाक्यों में वह रुक रुक कर अपनी भावनाओं को स्पष्ट करता है। कथानक में रुकावट पैदा करके भी लेखक ने अपनी रचना में दुरूहता उत्पन्न नहीं की। एक अल्पमति भी उसे आसानी से समझ सकता है। तुकान्त शैली का उपयोग करते हुए भी लेखक ने कहीं ऐसा प्रकट नहीं किया है कि वह जान-बूझ कर तुकों का प्रयोग करना चाहता है। तुक के लिए तुक की बात उसके लिए बेतुकी सी है। अनावश्यक शब्दों की भरमार से कवि बचता रहा है। जहाँ बादशाह अथवा राजवंश से सम्बन्धित व्यक्ति की चर्चा होती है, वहीं वह लम्बी-चौड़ी प्रशस्तियाँ लिखता है। संभवतः उसे युग के अनुसार राजवंश के प्रति आदर प्रकट करने के लिए ऐसा करना पड़ा हो।

वजही ने संस्कृत फ़ारसी के गद्य की परम्परा को अपनाते हुए भी जिस मौलिकता से काम लिया है, वह उसके प्रत्येक वाक्य से प्रकट होती है।

गुजराती का गद्य

इस सम्बन्ध में गुजराती और मराठी के प्राचीन गद्य का ज़िक्र करना उचित होगा। ऊपर यह बताया जा चुका है कि वजही गुजराती और मराठी से परिचित था। गुजरात उन दिनों

सूफ़ियों का एक केन्द्र था। दक्षिण भारत आने के लिए गुजरात के पास से गुजरना पड़ता था। जिस क्षेत्र में दक्खिनी का विकास हुआ, गुजरात का उससे घनिष्ट संपर्क था। राष्ट्रकूटों के समय दोनों प्रदेश के शासक एक ही वंश से सम्बन्ध रखते थे। बहमनी काल में गुजरात के शासकों ने कई बार गुलबर्गा पर आक्रमण किये। हिन्दी, विशेष कर खड़ी बोली का सम्बन्ध गुजराती से रहा है। गुजराती और खड़ी बोली शौरसेनी से सम्बद्ध हैं।

गुजराती में बहुत पुराने समय से गद्य लिखा जा रहा है। मुनि जिनविजय ने गुजराती के कुछ गद्य ग्रन्थों का सम्पादन किया है। गुजराती गद्य का विकास किस प्रकार हुआ इसका परिचय हिन्दी-गद्य के विकास को जानने में सहायक हो सकता है। यहाँ गुजराती गद्य के कुछ उद्धरण दिये जाते हैं—

"माहरी लक्ष्मी इह सरीषी हुई। तउ कहीइ-आमतणी छाँह, कुपुरिसतणी बाँह, आढनउ तूर, नदी नूँ पूर, ठाकुरनउ प्रसाद, माकडनउ विषाद, वहीनउ पडी गणउँ, सूपडानउ उठीगणउँ, दीवानु तेज, मांत्रईनु हेज, दासीनु स्नेह, शरदकालनु मेह, थोडा मेहनउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह। लक्ष्मी तणउँ त न्याय नीपनउँ, हिव वैराग्य ऊपनउँ। तापस दीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदा सिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता साँभली मनि वैराग्य पामिउँ, राजा पृथ्वीचंद्र प्रतिइं शिरू नामिउ। अनइ इसी बात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरूँ अद्भुत भाग्य, मझनइ अपनूँ वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार संसार। जिशिउँ पीपलनुं पान, जिशिउँ गजेन्द्रनुं कान, जिशिउ संध्यानुराग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ माँकडनु वैराग्य, जिसिउ वीजनु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणीनउ टबकउ, जिशिउ समुन्द्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, जिसिउ संसार चंचल। तुं एक कहिउंकरि, माहउं राज्य अंगीकारि। हउं तापसी दीक्षा तेसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वी चंद्रि तीहं बिहुप्रति कहिउं—तुम्हे करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ वनते वर्णवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावन्त, महात्मा ते जे क्षमावन्त, प्रासाद ते जे ध्वजावन्त, वाट ते जे यूथवन्त, हाट ते जे वस्तुवन्त, घाट ते जे सुवर्णवन्त, भाट ते जे वचनवन्त, मठ ते जे मूनिवन्त.....अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ।"

पृथ्वीचंद्र चरित्र (प्राचीन गूजराती गद्य संदर्भ)

पृ. १४१-१४२

उपर्युक्त पृथ्वीचन्द्र चरित्र के लेखक माणिक्यचन्द्र सूरि हैं। इस पुस्तक की रचना सं. १४७८ वि. (१५३४ ई०) में हुई। गुजराती गद्य और हिन्दी गद्य का विकास-क्रम क्या रहा है, इसका विवेचन यहाँ अभीष्ट नहीं है। इतना कहना पर्याप्त है कि इन दोनों भाषाओं का विकास समान रूप से हुआ है। गुजराती गद्य-विकास

का अध्ययन हिन्दी-गद्य के विकास जानने में बहुत सहायता प्रदान करता है। यदि सबरस के गद्य को उपर्युक्त उद्धरण के साथ पढ़ा जाय तो वाक्य-विन्यास की समानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यहाँ मराठी गद्य का एक उदाहरण देना भी उपयोगी होगा। मराठी में बहुत पुराने समय से गद्य लिखा जा रहा है। जो प्राचीनतम गद्य उपलब्ध है, उसमें महिन्द्र भट्ट द्वारा संकलित 'लीळा चरित्र' सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। यह पुस्तक शक १२०८ (१२८६ ई० से पहले लिखी गई है।

"विवाहो स्विकारू, गावीं एकी वृक्षा खालिं आसन, तंव हेडाउ उतरले होते, ते गोसावियांपासि आले, तेंही गोसावियांते राजकुमरा ऐसें देखीलें, मग तेंहीं, घोडेयाचीया जाति पुसीलिया, गोसावी घोडे जाती निरूपीती, जाति सुवास गोवे पाहातचि असे, मग हेडाउइं म्हणीतले, वीनवीलें, आपुलेया दुसा घेउनि आले, मग मर्दना जाली, मादनें केली, गोसावीयासि वस्त्रें वोळगवीलीं, घोडा दीधला, गोसावी मुख्य नाएकु, एक आघवे सेवक, ऐसें वर्त्तो लागले, मग— वोंरगळा बीजें केले, हेडाउ आले आइकानि लोकु साउमा आला।"— लीळा चरित्र (पृ. १६)

इन दोनों उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है, गुजराती और मराठी के प्राचीन गद्य में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग होता था। मराठी गद्य में तुक की प्रवृत्ति आरंभ में नहीं थी। 'सबरस' भी इसी शैली में लिखा गया है।

भाषा का नाम

वजही अपनी भाषा को हिन्दी कहता है। उसने अपनी भाषा के बारे में स्वयं लिखा है— "जेते फ़हमदारॉं, जेते गुन-कारॉं सो आज तलक कोई इस जहान में, हिन्दुस्तान में. हिन्दी ज़बान सूँ इस लताफ़त इस छन्दाँ सूँ नज्म ओर नसर मिला कर यूँ नईं बोल्या..." (सबरस पृ. ८) यहाँ लेखक ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग सम्भवतः हिन्दी भाषी प्रदेश के लिए किया है।

वजही के समय हिन्दी की उपभाषाओं में अच्छे से अच्छा साहित्य लिखा जा रहा था। अवधी में मलिक मुहम्मद जायसी ही नहीं कुछ अन्य कवियों की रचनाएँ भी लिखी जा चुकी थीं। व्रज में अष्टछाप कवियों का काल लगभग समाप्त हो चला था। राजस्थानी में वीरगाथा काल का प्रचुर साहित्य पहले ही लिखा जा चुका था। उधर मैथिली में विद्यापति ठाकुर की रचनाएँ जनता में लोकप्रिय हो चुकी थीं। यह स्पष्ट है कि सबरस में राजस्थानी, मैथिली, व्रज, अवधी आदि किसी उपभाषा का प्रयोग नहीं हुआ है। सबरस की भाषा स्पष्ट रूप से खड़ी बोली के निकट है। अमीरखुसरो और कबीर ने जो भाषा लिखी, सबरस में उसी भाषा को स्वीकार किया गया है। इसका सब से बड़ा कारण यह है कि गोलकुण्डा में उत्तर भारत के सभी प्रदेशों से लोग आए थे। ऐसे मुसलमानों की संख्या बहुत कम थी जो ईरान, अरब अथवा

वजही की भाषा

अफगानिस्तान से सीधे यहाँ आए थे। इन देशों से आनेवाले व्यक्ति भी अपनी मातृभाषा को सुरक्षित नहीं रख सके। मुसलमानों में ज्यादातर ऐसे लोग थे—जो हिन्दी-भाषी प्रदेश से आए और जो हिन्दी-भाषी प्रदेश की कोई न कोई उपभाषा या बोली जन्म से बोलते थे। इन लोगों में उस शैली का प्रचार तेजी से हुआ जो मध्य-देश अथवा गंगा-यमुना के दोआबे में तेजी से विकसित हो रही थी। इस भाषा को लोग हिन्दी कहते थे। यह स्पष्ट है कि पन्द्रहवीं और सोलहवीं शती में अनेक समर्थ लेखकों को पा कर भी यह 'हिन्दी' परिष्कृत नहीं हो सकी। उसका रूप भी स्थिर नहीं किया जा सका था और समान व्याकरण की बात तो बहुत बाद में उठी। लेखक अपने विवेक के अनुसार शब्दावली का प्रयोग करते थे, उस समय जो 'हिन्दी' मध्यप्रदेश में बोली जाती थी उसमें और गोलकुण्डा की भाषा में बहुत बड़ा अन्तर आ चुका था। इस अन्तर के कारण गोलकुण्डा, बीजापुर, गुलबर्गा, दौलताबाद में बसनेवाले हिन्दी-भाषी लोगों की ज़बान को दखनी कहा जाने लगा। इस परिवर्तन और अन्तर से वजही परिचित था, इसीलिए वह कुछ कहावतों के साथ 'दखनी' विशेषण का प्रयोग करता है।

वजही ने वर्तमान हिन्दी भाषी प्रदेश के विविध अंचलों में बोली और समझी जानेवाली भाषा में अपने विचार प्रकट किए, किन्तु उसकी भाषा से यह ज्ञात होता है कि मेवात, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पंजाब ने उसकी भाषा को बहुत प्रभावित किया था, इसीलिए वह उपर्युक्त भाषाओं के ग्रामीण रूपों का प्रयोग भी कई स्थानों पर कर जाता है। वह ऐसी संज्ञाओं का बहुतायत से प्रयोग करता है जो उस समय भी और आज भी कुछ खास स्थानों पर ही प्रयोग में आती हैं। सर्व-नाम और क्रिया-पदों में भी वह कई स्थानों पर सामान्य रूप का प्रयोग न करके क्षेत्रीय रूप का प्रयोग करता है। राजस्थान की कुछ बोलियों में भविष्य काल बनाते समय संस्कृत की तरह 'सी' प्रत्यय जोड़ा जाता है। वजही ने 'सी' प्रत्यय जोड़ कर कई स्थानों पर भविष्य काल बनाया है। होगा की जगह होसी, आएगा की जगह आसी, जाएगा की जगह 'जासी', भुलाएगा की जगह भुलासी, हिलाएगा की जगह हिलासी का प्रयोग किया है।

क्रियापदों के कई रूप क्षेत्रीय हैं। कुछ बोलियों में 'ह' पूर्व व्यंजन में 'ऐ' बन कर संयुक्त होता है। इन बोलियों में पहनना पैनना और रहना रैना बन जाता है। कुछ बोलियों में क्रियापद का 'ह' लुप्त हो जाता है। कहना को 'कना' कह कर काम चलाया जाता है। वजही ने इन दोनों रूपों को अपनाया है। वह सहना के लिए सैना, कहता की जगह कता लिखता है। कुछ बोलियों में अन्तिम महाप्राण अक्षर को अल्पप्राण बनाया जाता है। दाक्षिणात्य भाषाओं में यह प्रवृत्ति बहुत अधिकता से पाई जाती है। बहुत से संस्कृत महाप्राण शब्द इन भाषाओं में अल्पप्राण बन गये हैं। हैदराबाद और उसके आस पास के मूल निवासी कई स्थानों पर महाप्राण

का उच्चारण नहीं कर सकते। कुछ महाप्राणों को समान स्थलीय महाप्राण में परिवर्तित कर देते हैं। 'थ' प्रायः 'ध' या 'द' में बदल जाता है। ग्रन्थ को 'ग्रन्ध' अथवा 'ग्रन्द' के रूप में किसी विद्वान के मुँह से भी सुना जा सकता है। वजही ने पूछा को 'पूच्चना', काढ़ना को 'काडना' लिखा है। कुछ स्थानों पर 'ह' की ध्वनि परवर्ती व्यंजन में विलीन हो जाती है जैसे पहचानता को पछानता। कुछ स्थानों पर आदि के महाप्राण अक्षर को अल्पप्राण में परिवर्तित किया जाता है—घुलाना की जगह गुलाना।

मराठी के क्रियापद

कुछ क्रियापद ऐसे हैं जो क्षेत्रीय हैं किन्तु वजही ने उनका प्रयोग किया है। जैसे उठाने को उछाना, डालने या फेकने को भाना, भागने के लिए न्हाटना, ढलने के लिए नोड़ना, रहने या होने के लिए अछना। वजही ने केवल सज्ञाएँ ही नहीं अव्यय और विशेषण भी मराठी से लिये हैं। मराठी में 'बैठना' के लिए 'बसणे' क्रिया का प्रयोग होता है। इसी तरह 'देखना' के स्थान पर 'दिसणे'। वजही ने मराठी की इन क्रियाओं का हिन्दीकरण किया है। वह दिखाई देगा की जगह दिसेगा, बैठेगा की जगह बैसेगा का प्रयोग करता है।

क्रिया के काल

क्रिया के कालवाची रूप बनाने में भी वह क्षेत्रीय प्रभावों से मुक्त नहीं है। भूत काल में वह प्रायः क्रिया के कृदन्त रूप का उपयोग करता है। क्रिया का यह भूतकालिक रूप एक प्रकार से विशेषण का दर्जा भी प्राप्त कर सकता है। क्रियाओं का यह भूतकालिक प्रयोग हिन्दी को प्राकृत तथा अपभ्रंश से प्राप्त हुआ। आज हम लोग कृदन्त से बनाई हुई क्रियाओं का प्रयोग भूतकाल में करते हैं। वजही का सबरस इस विकास को समझने में बड़ी सहायता देता है। यहाँ कुछ क्रियाओं के भूतकालिक रूप दिये जा रहे हैं—धरना धर्या, बीतना-बीत्या, बोलना बोल्या, घोलना घोल्या, गेलना-गेल्या, समझना-समज्या, देखना-देख्या, पूछना-पूछ्या, गिरना-गिर्या, फिरना-फिर्या, डरना-डर्या, घड़ना घड्या, अडना-अड्या।

मुख्य क्रिया के लिंग-वचन के अनुसार सहायक क्रिया के लिंग-वचन को भी बदला गया है। इस बारे में भी वजही हिन्दी की कुछ बोलियों के प्रभाव से नहीं बचा है। इस समय; जाता था, खाता था आदि में सहायक क्रिया में अधिकांश परिवर्तन किये जाते हैं, मुख्य क्रिया में बहुत कम परिवर्तन होते हैं। भाती थी अथवा आती थी की जगह वजही भात्याँ थ्याँ या आत्याँ थ्याँ लिखता है।

आधुनिक हिन्दी में सज्ञाओं से क्रियापद बनाना बिल्कुल बन्द होता जा रहा है। जिन संज्ञाओं से क्रियापद बनते हैं, उन्हें संज्ञा की हद तक सीमित किया जा रहा है। एक समय ऐसा था जब केवल हिन्दी ही नहीं विदेशी संज्ञाओं से भी क्रियापद बनाये जाते थे। उदाहरण के लिए 'शर्म' शब्द हिन्दी का नहीं है, किन्तु

उससे भी 'शर्माना' बना और नियमानुसार काल, वचन आदि का आरोप करके इस विदेशी शब्द को स्वदेशी रूप दिया गया। जैसे-जैसे हिन्दी गद्य का विकास हो रहा है, यह प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। किन्तु वजही ने स्वतंत्रतापूर्वक इस प्रणाली से लाभ उठाया है। उसने बहुत से क्रियापद संज्ञाओं से बनाये हैं। उदाहरण के लिए वह 'चिन्ता' शब्द से 'चिन्तना' बनाता है और भूतकाल में इसी चिन्तना को 'चिन्त्या' के रूप में बदल देता है।

विशेषण

वजही ने विशेषणवाची शब्दों के साथ भी यही नीति अपनाई है। उसने इस क्षेत्र में भी उदारता से काम लिया। कई विशेषण ऐसे हैं जिनका प्रयोग कुछ अंचलों में होता है। वजही ने इस प्रकार के विशेषणों को त्याज्य नहीं माना है। थोड़ा या ज़रा की जगह कुछ बोलियों में 'टुक' का प्रयोग होता है। वजही ने टुक का प्रयोग आवश्यकतानुसार सर्वत्र किया है।

केवल हिन्दी की सहायक बोलियों से ही वजही ने विशेषण नहीं लिये, उसने मराठी के विशेषणों का उपयोग भी किया है। दूसरी भाषाओं का प्रभाव संज्ञाओं को छोड़ कर अन्य शब्दों पर बहुत कम पड़ता है, किन्तु वजही के गद्य को पढ़ने से पता चलता है, मराठी ने उसकी भाषा के सभी अंगों पर प्रभाव डाला है। मराठी में विविध अथवा बहुत के अर्थ में 'लइ' का प्रयोग होता है। इस समय मराठी के संस्कृत और परिमार्जित रूप में 'लइ' को विशेष स्थान नहीं है। ग्राम्य भाषा में इस विशेषण का प्रयोग होता है। वजही ने लइ का प्रयोग बहुत-विविध और अधिक के अर्थ में सर्वत्र किया है।

संस्कृत में विशेषण और विशेष्य को समान लिंग-वचन में रखा जाता है। हिन्दी के पुराने गद्य में इस प्रकार की प्रवृत्ति पाई जाती है। आज हम बिना झिझक के सुन्दर पुरुष और सुन्दर स्त्री जैसे प्रयोग करते हैं, किन्तु एक समय था जब इस प्रकार का प्रयोग अशुद्ध माना जाता था। उस समय स्त्री के साथ सुन्दर नहीं सुन्दरी विशेषण लगाना उचित माना जाता था। यह प्रवृत्ति बहुत दिन तक चलती रही। आज आकारान्त विशेषणों को छोड़ कर यह प्रवृत्ति बहुत कम स्थानों पर देखने को मिलेगी।

आकारान्त विशेषणों को छोड़ कर वचन के अनुसार कहीं भी विशेषणों में परिवर्त्तन नहीं होता, किन्तु बहुत पुराने समय में वचन के अनुसार कहीं विशेषणों में भी परिवर्त्तन होता था। यह प्रवृत्ति बहुत पहले ही समाप्त हो गई। वजही के 'सबरस' में कहीं कहीं यह प्रवृत्ति दिखाई देती है। 'वैसी औरतों' की जगह वह 'वैस्याँ औरताँ' लिखता है। यह बात विभक्तियों में भी पहुँच गई है। लेखक ने सम्बन्धवाची विभक्ति के स्त्रीलिंगवाची रूप 'की' को कई स्थानों पर 'कियाँ' में बदला है।

विभक्ति और अव्यय

'की' विभक्ति के अतिरिक्त विभक्तियों में भी लेखक दक्खिनी की विशेष प्रणाली का अनुसरण करता है। ये सब ऐसी बातें हैं, जिनके कारण हम 'सबरस' को दक्खिनी की रचना कहते हैं। पंजाबी का खड़ी बोली पर पर्याप्त प्रभाव है। इन प्रभावों में कर्त्ता कारक के साथ 'ने' विभक्ति भी गिनी जाती है। दक्खिनी पर पंजाबी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है, किन्तु 'ने' के मामले में दक्खिनी पंजाबी के बिल्कुल विपरीत है। वजही सकर्मक भूतकालिक क्रियाओं के साथ कर्त्ताकारक में प्रायः 'ने' विभक्ति का उपयोग नहीं करता। अधिकरण कारक की 'पर' विभक्ति का दक्खिनी रूप 'पो' हमें सबरस में देखने को मिलता है।

मराठी में 'ही' के अर्थ में 'च' अव्यय प्रयुक्त होता है। इस अव्यय को दक्खिनी ने आत्मसात कर लिया है। वजही ने 'च' का प्रयोग बिना किसी झिझक के किया है। कुछ अव्ययों के रूप में परिवर्त्तन भी हुआ है, जैसे 'भी' की जगह 'बी', 'और' की जगह 'होर'।

सर्वनाम

दक्खिनी में सर्वनामों का प्रयोग अपने ढंग से होता है। सबरस में 'यह' की जगह 'ई', 'वह' की जगह 'ऊ' कई स्थानों पर आया है। विभक्तिसहित सर्वनामों के रूप में तो बहुत स्वतंत्रता बरती गया है। बहुवचन में 'जिनमें' की जगह 'जिनों में', 'उनमें' की जगह 'उनों में', 'तुमको' की जगह 'तुमन', 'हमको' की जगह 'हमन', 'जो कोई' की जगह 'जकोई' या 'जे कोई' आता है।

क्रियाविशेषणों में भी इसी प्रकार का परिवर्त्तन दिखाई देता है। 'नहीं' की जगह 'नईं' का प्रयोग हुआ है। कहाँ की जगह 'कॉं', यहाँ की जगह 'यॉं', आज की जगह 'आजूँ' आगे के लिए अंगे।

संज्ञा

संज्ञा में ध्वनि सम्बन्धी अनेक परिवर्त्तन किए जाते हैं। अन्तिम 'ह' को 'आ' के रूप में बदला गया है, जैसे 'जगह' के स्थान पर जागा। नाम की जगह नाँ, लोग की जगह 'लोक', 'दिवस' की जगह 'दीस'।

ऐसी अनेक संज्ञाओं का प्रयोग हुआ है, जिनका प्रयोग खड़ी बोली के साहित्यिक रूप में नहीं होता। कुछ संज्ञाएं मराठी से ली गई हैं। इस प्रकार के शब्दों में से उदाहरण स्वरूप यहां कुछ शब्द दिये जा रहे हैं —मूर्ख की जगह कूढ़, योनि के लिए जुन्द, अन्धे के लिए अँदेला, चुगली के लिए चाड़ी, शासन के लिए राजवट, चुगली के लिए लूतरी।

हिन्दी के कुछ शब्दों का प्रयोग अपने ढंग से किया गया है, किन्तु इस ढंग के कारण उन शब्दों के सौन्दर्य तथा व्यंजकता में वृद्धि हुई है। गम्भीरता के लिए वजही 'गंभीरी' शब्द का प्रयोग करता है और दर्शक की जगह दर्शनी, गुणकारक

के लिए गुनकार।

उपर्युक्त प्रयोगों के रहते हुए भी वजही ने कई स्थानों पर विशुद्ध और सर्वमान्य प्रयोग किये हैं। जैसे वह 'होर' का उपयोग करता है और 'और' का भी। प्रतीत होता है उस समय अस्थिर और क्षेत्रीय प्रयोगों का स्थान धीरे-धीरे सर्वमान्य और स्थिर शब्दों को प्राप्त हो रहा था।

ऊपर जिन प्रयोगों की चर्चा की गई है, उनके रहते हुए भी यह कहा जा सकता है कि वजही ने अधिक से अधिक उन शब्दों का प्रयोग किया है, जो किसी संकीर्ण क्षेत्र में न बोले जाकर अधिक व्यापक क्षेत्र में प्रयुक्त होते थे। उसने जहाँ कहीं आंचलिक अथवा क्षेत्रीय शब्द अपनाये हैं, वहाँ एक ही लाभ उसकी दृष्टि में रहा है कि भाषा अधिक सक्षम बन सके। वजही के इन प्रयोगों के कारण 'सबरस' की भाषा में प्रवाह और शक्ति उत्पन्न हुई है।

कुछ स्थानों पर 'सख़ुन शनासी होर असरार दानी' और 'किताब गंजुल अर्श बहरुल माना' जैसे अरबी से प्रभावित वाक्यांश प्रयुक्त हुए हैं किन्तु ऐसा उसी समय हुआ है, जब लेखक को इस्लाम सम्बन्धी कुछ तथ्य प्रस्तुत करने पड़े हैं अथवा संयोगवश इस प्रकार की भाषा यों ही लिखी गई है। सामान्यतया वह सर्व साधारण की भाषा में लिखता है। वजही ने उर्दू अथवा हिन्दी में प्रचलित अरबी शब्दों को ध्वनि के आधार पर लिखने का प्रयत्न किया है। अरबी के हकारान्त शब्द उर्दू-हिन्दी में आकारान्त पढ़े जाते हैं किन्तु आज तक उर्दू में उन्हें हकारान्त ही लिखा जाता है। वजही इस मामले में बिल्कुल युक्ति युक्त मार्ग का अवलम्बन करता है। हिन्दी-उर्दू या दक्खिनी के बोलने वाले शब्द की जो ध्वनि प्रयुक्त करते हैं, उन्हीं ध्वनियों को उसने अपनाने की कोशिश की है। जहाँ अरबी के अनुकरण पर कुछ वाक्यांश बनाये गये हैं, या अरबी-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग हुआ है, वहीं उसने अरबी हिज्जे अपनाये हैं।

लिप्यन्तर की कठिनाई

फ़ारसी लिपि से नागरी में लिप्यन्तर करते समय अनेक कठिनाइयाँ सामने आई हैं। हिन्दी के बहुत-से शब्द ऐसे हैं, जिन्हें उर्दू में ठीक तरह पढ़ा-लिखा नहीं जाता। ई, ए और ओ का भेद अनुमान लगा कर ही समझना पड़ता है। यही बात ऊ, ओ और औ के बारे में कही जा सकती है। अल्प प्राण और महाप्राण शब्दों के बारे में भी यही बात लागू होती है। जहाँ ऐसी कठिनाई आई है, इस बात का प्रयत्न किया गया है कि उसे बोल-चाल की ध्वनि से मिला कर देख लिया जाए। आज भी गोलकुण्डा ही नहीं दक्खिन के बड़े हिस्से में दक्खिनी बोली और समझी जाती है। किन्तु इस तरह ध्वनियों को स्थिर करने में जो दुविधा बनी रहती है, उसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। स्थान स्थान पर ध्वनि में परिवर्तन होता है। सुशिक्षित और असंस्कृत परिवारों की ध्वनियों में भी बहुत से परिवर्तन हो

जाते हैं। इस तरह प्रायोगिक रूप से ध्वनि को स्थिर करते समय सभी लोग एक निश्चय पर पहुँचेंगे ऐसी बात नहीं है। इस बात का प्रयत्न किया गया है कि जो रूप दिये जाएँ वे अधिक शुद्ध हों। जहाँ वजही ने स्वयं कुछ विकल्प से काम लिया है, वहाँ उसे प्रकट कर दिया गया है। कुछ स्थलों पर स्वतन्त्रता से काम लिया गया है। वजही ने सबरस में सर्वत्र अल्लाह लिखा है। साधारण लोग इस शब्द को अल्ला कहते हैं। इसीलिए सबरस में 'अल्ला' लिखा गया है। जहाँ अरबी के उद्धरण में यह शब्द आया है, वहाँ इसे 'अल्ला' न लिख कर इसका वास्तविक रूप दिया गया है।

इसी तरह नाम, धाम आदि शब्दों के बिगड़े हुए रूप नाँवें, धावें के बारे में एक विशेष सिद्धान्त के अनुसार रूप स्थिर किया गया है। वजही ने सस्वर मकारान्त के रूप को दो तरह से लिखा है। कहीं नाँव और कहीं नावें। हिन्दी में ऐसे स्थलों पर केवल पूर्व स्वर पर चन्द्रबिन्दु लिखने की पद्धति है। किन्तु जब सानुनासिक 'म' 'व' में परिवर्तित होता है तो उसके 'अ' का सानुनासिक होना ही उचित जान पड़ता है। उच्चारण में भी हम पूर्व स्वर को नहीं, अन्तिम स्वर का ही सानुनासिक उच्चारण करते हैं।

उर्दू में समासित शब्दों को इज़ाफ़त के साथ बोलने की प्रथा है। इस प्रथा के अनुसार बहुत से स्थलों पर दो शब्दों के बीच में 'ए' या 'ओ' का उच्चारण किया जाता है। जहाँ तक दक्खिनी की प्रकृति का प्रश्न है, उसमें इस प्रकार का उच्चारण प्रचलित नहीं है। इसी लिए 'ए' और 'ओ' को ऐसे स्थलों पर नहीं लिखा गया है। 'आबेहयात' को आब हयात लिखा गया है। सबरस की जो हस्तलिखित प्रतियाँ हैं, उनमें 'ए' व 'ओ' का लिखित प्रयोग नहीं है। पाठक अभ्यास-वश ऐसा पढ़ सकता है। हो सकता है लेखक कुछ स्थानों पर इस तरह का उच्चारण रखना चाहता हो, किन्तु उन स्थलों का पता चलाना बहुत कठिन है।

सबरस की मूल प्रतियाँ

उर्दू में 'सबरस' प्रकाशित हो चुका है। प्रसिद्ध उर्दू सेवी तथा विद्वान् मौलवी अब्दुल हक़ ने उर्दू संस्करण का सम्पादन किया है। मौलवी अब्दुल हक़ ने यह संस्करण दो हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर तैयार किया था। ये हस्तलिखित प्रतियाँ किस समय की हैं, इसका पता नहीं चल सका। हैदराबाद राजकीय पुस्तकालय में दो प्रतियाँ हैं। एक प्रति बहुत पुरानी है, किन्तु कई स्थलों पर दीमकों और अन्य कारणों से अक्षर उड़ गये हैं। यह पुस्तक जिस लेखन-प्रणाली में लिखी गई है, उसे पढ़ना भी सरल नहीं है। दूसरी प्रति अच्छी अवस्था में है। इस प्रति के अन्तिम दस-बारह पृष्ठ नहीं है। दोनों प्रतियाँ किस समय लिखी गई, इसे जानने का उपाय नहीं है। दोनों प्रतियों के अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं। प्रस्तुत पुस्तक हैदराबाद के राजकीय पुस्तकालय में अच्छी स्थिति में सुरक्षित हस्तलिखित प्रति से तैयार की गई है। मौलवी अब्दुल हक़ द्वारा सम्पादित मुद्रित प्रति से भी इसे मिलाया गया है। अन्तिम दस

पृष्ठ इस मुद्रित प्रति के आधार पर ही लिखे गये हैं। उर्दू और हिन्दी संस्करण में कितना अन्तर है, इसे दोनों के मिलान करने पर आसानी से जाना जा सकता है। उर्दू संस्करण में मूल प्रति के बहुत-से स्थल छूट गये हैं। कई स्थानों पर कुछ शब्द अथवा वाक्य ठीक प्रकार से नहीं पढ़े गये।

क्षमा-याचना

सबरस में अरबी तथा फ़ारसी के बहुत-से वाक्यांश और पद उद्धृत किये गये हैं। एक बार यह इच्छा हुई कि इन्हें छोड़ दिया जाए, किन्तु सोच-विचार के बाद यह उचित समझा गया कि उन्हें नागरी लिपि में अर्थसहित छाप दिया जाए। मौलवी अब्दुल हक़ ने अरबी उद्धरण प्रायः छोड़ दिये हैं और जो पद दिए हैं उनका अर्थ नहीं दिया है। अरबी तथा फ़ारसी की अनभिज्ञता के कारण इस काम में मुझे अपने मित्रों की सहायता लेनी पड़ी। नागरी लिपि में अरबी भाषा का लिखना बहुत कठिन है। ऐसी अवस्था में अरबी तथा फ़ारसी के पदों को उद्धृत करने और उनके अर्थ देने में बहुत-सी गल्तियाँ हुई होंगी, जिसके लिए सम्पादक क्षमा चाहता है।

'सबरस' को इस रूप में प्रस्तुत करने के लिए मौलवी अब्दुल रज़्ज़ाक़ से बड़ी सहायता मिली है, मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। मैंने भूमिका लिखने में मौलवी अब्दुल हक़ की भूमिका से भी कुछ सामग्री ली है, जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। अन्त में दक्खिनी प्रकाशन समिति, विशेष कर समिति की मंत्री डाक्टर विमला वाघ्रे को, धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने सबरस को छपवाने की व्यवस्था की।

हिन्दी प्रचार सभा
हैदराबाद (दक्षिण)

श्रीराम शर्मा
२५-६-५५

बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्रहीम

तमाम मुसहिफ़ का माना अलहम्दुलिल्ला में है मुस्तक़ीम होर तमाम अलहम्दुलिल्ला का माना बिस्मिल्ला में है क़दीम। होर तमाम बिस्मिल्ला का माना बिस्मिल्ला के नुक्ते में रख्या है करीम। समज देख खातिर में ल्या अताल. हदीस बी यूँ आई है के 'अैल इल्म नुक्ता व कसरहा जहाल' याने इल्म एक नुक्ता है, जाहिलाँ ने उसे बढ़ाये जहालत कूँ। इस हद लगन ल्याये होर फ़ारसी के दानिश्मन्दाँ जिनों समजते हैं बातों के बन्दों उनो कूँ यूँ भाया है, उनो में बी यूँ आया है- -आँ जाके कसस्त, एक हर्फ़ बसस्त। होर गवालियर के चातरों गुन के गुरों उनो बी बात कूँ खोले हैं के—एके अच्छर पेम का पढ़े सो पंडित होय। कुदरत का धनी सही, जो कुछ करता सो सब वही। खुदा बड़ा, खुदा की सिफ्त करे कोई केतक— वाह दहू ला शरीक लहू। माना बाप, आप में आप। परवरदिगार, ससार का सर्जनहार। जित जो कोई कुदरत धरता, सिफ्त उसकी अपने पर ते करता। वो बेहद, उसकी सिफ्तों कूँ कहाँ है हद? अहद समद लम यूलद वलम यूलद।

बैत—

किसे है हद जो खुदा की सिफ़त कूँ हद पावे
हरेक बाल कूँ गर सौ हज़ार जीब लावे!

जिसका नावँ खुदा है वो सब सूँ मिल्या और सब सूँ जुदा है। कोई क्यों उसे कहे के यूँ है, खुदा है—ज्यूँ कहेंगे त्यूँ है। कौन समज सकता खुदा की गत? एक आपै लाखु सिफ़त। हज़ार होर एक उसका नावँ। उसकी मारफ़त ठावँ ठावँ।

फ़र्द

जहाँ जो कुछ है वहाँ सब अहे ज़हूर उसका
हरेक शै मने जल्वा देता है नूर उसका

मुसहिफ़-कुरान (सहीफ़ा) पुस्तक (ब. व.)
मुस्तकीम-स्थिर,
नुक्ता-बिन्दु, भेद
करीम-दयालू, दाता
मारफ़त-ज्ञान
जल्वा-शोभा, प्रकाश

अताल-शब
ल्या-ला
जाहिलां-(जाहिल) मूर्ख (ब.व.)
गुरा-गुरु का ब व.
जीब-जीभ
नावँ-नाम
मिल्या-मिला हुआ
ठावँ ठावँ-जगह

१ सब प्रशसा ईश्वर के लिए है २ ईश्वर के नाम से शुरू करता हू ३ ज्ञान एक नुक्ता है, मूर्खों ने उसे बढा दिया है ४ जिन लोगों के लिए एक अक्षर बस है ५ भगवान एक है उसका कोई सहायक नहा ६ ईश्वर एक है, अपेक्षारहित है, न उसकी कोई मां है न कोई बाप।

ख़ुदा क़ादिर, ख़ुदा नाज़िर, ख़ुदा हाज़िर। ख़ुदा सकता, जिसे ज्यूँ मँगता उसे वों रकता। सात ज़मीन, सात आसमान में उसका खेल, जो कुछ वो करे सो होवे; उसके हुक्म कौन सके ठेल? आपीं आप जलजलाल, दम मारने यहाँ किसे नईं मजाल।

बैत—

इस ठार पर किसे है नज़र जो नज़र सटे
गर जिब्रील होवे तो यहाँ बाल पर सटे

अजायब अजायब उसके काम; उसके काम इन्सान क्या सके फ़ामु? पैदा किया ज़मीन, पैदा किया आसमान। सब दानायाँ-सब दानिशमन्दाँ हैरान। क्या वली क्या नबी, सजदा किये इस ठार सभी। क़ादिर क़ुदरत का धनी, ग़नी-मुस्तग़नी। होता सब ख़ुदा का भाता, हो कने में हो जाता। यहाँ चरा न चूँ। अरब में कता है के-कुन फ़य कुन।

फ़र्द

धनी जो धरती धर्या होर भी धरे सो होवे
किसी के करने ते क्या होवे ख़ुदा करे सो होवे

आशिक़ कूँ इश्क़, माशूक़ कूँ हुस्न दिया, इन दोनां में अपना भेद परकट किया। एक सूँ पुरस एक सूँ किया नारी, एक सूँ किया प्यारा, एक सूँ किया प्यारी। ना यो उसे देखा, ना उसे जानी, एक सूँ देख एक होती दीवानी। दो दिल एक दिल होते भट ते। सराँ ते गुज़रते। जीयाँ पर उठते। सरज्या यूँ कुछ सरजनहार; करीम-रहीम-मेहरबान करतार।

क़ादिर-क़ुदरत वाला, निर्माता
नाज़िर-दर्शक, ईक्षक (नज़र-नाज़िर)
जलजलाल-प्रभावशाली
जिब्रील-एक फ़रिश्ता
फ़ाम-समझ
वली-सिद्ध
नबी-ईश्वरी कृपा से युक्त
ग़नी-ऐश्वर्यशाली, निरपेक्ष
मुस्तग़नी-बहुत धनी।

वों रकता-वैसा रखता
सटे-डाले, (सटना डालना, गेरना, पड़ना)
भाता-अच्छा लगता
भाना-अच्छा लगना, चाहना
हो कने में-होना कहने में
चरा न चूँ-ननु न च
सराँ-भेद (सर का ब. व.)

१ हो बोलने ही हो गया।

बैत—

यू ख़ासियत है इश्क़ की याँ कोई क्या करे ?
बेगानों कूँ यू इश्क़ बला आशना करे

भोत लताफ़त सूँ पैदा किया हुस्न, इश्क़ में रखा अपने खासी गुन चुन चुन। शान न गुमान, जान न पहचान। एक सूँ देख एकस पर एक हैरान, परेशान सरगर्दान। देखे न दिखलाए, एकस कूँ एक भाये। दिल सूँ दिल, परान सूँ परान, जानो क़दीम आशना जानो क़दीम जान पहचान। एकस के खातिर एक तरसते, एकस के खातिर एक तलमलते-जीते।

बैत—

दौड्या है इश्क़ जिस पर लहवा खींच-बाँद कर
एकस की बात एकस कूँ दिया हात बाँद कर

सगे माँ-बाप सूँ होते बेज़ार, जिस यार सूँ जीव लग्या उस यार मूँ अख़्तियार। माँ-बाप पाल पाल जनम खोते यूँ सो आखिर किसी और के होते ! जीव लग्या इधर, अताल बिचारे माँ-बाँप किधर ? माँ बाप कौन समजे-ज्यूँ खयाल होर खाब, भाई तो बिचारा किसमें हिसाब ? उनो बी अपना नफ़ा खींचे, माँ-बाप अपनी खातिर कूँ ज़फ़ा खींचे। इश्क़ ने यू खेल खेल्या ठारे ठार। इस खेल कूँ ना दुख, ना दीस न हाँक ना पुकार; हर एकस कूँ हरेक कूँ क़ौल क़रार। सब अपस में अपे याद। प्यार दिल भितर, मूँ पर लोगाँ का डर, ऐसे प्यार कूँ कौन सँभाल रखता दिल भितर ? कौन किसे मना कर सकता ? अपने दिल में हर एकस कूँ है बादशाही, वाँ दुसरो की नईं फिरती दुराई।

बैत—

पावे बक्का जो इश्क़ में अपस कोई फ़ना करे
यू ठार नईं है वो जो किसी कूँ मना करे

इश्क़ हम बातिन, हम ज़ाहिर, इश्क़ सब जागा हाज़िर नाज़िर; इश्क़ निडर, इश्क़ पादशाह, इश्क़ कूँ किसका डर ? हम मस्त-हम हुशियार हम बेखबर, हम

बेगाना-पराया
आशना-प्रिय
सरगर्दान-परेशान
हम-साथ
बातिन-गुप्त
एक सूँ-एक से
परान-प्राण
लहवा-तलवार, शस्त्र
बाँद कर-बाँध कर
दीस-दिन (दिवस) †
† मूँ-मुँह
दुराई-बड़प्पन

बाख़बर। इश्क़ सुलतान छतर उसका रुसवाई, इश्क़ का तख़्त इस्तग़नाई। इश्क़ का हश्म बेपरवाई। इश्क़ लावबाली, इश्क़ सब ठार भर्या है, इश्क़ कईं नईं खाली।

फ़र्द

इश्क़ हर्गिज़ किसे जुदा न धरे
इश्क़ दो कूँ मिला के एक करे

इश्क़ सरमस्त लावबाली है, इश्क़ अप भावता खयाली है। एक इश्क़ उसके एते रंगाँ, एते सूरताँ; एक आपै एताँ एताँ मूरताँ। इश्क़ दो के दिलाँ में सट्या ग़लबला, दोनो के दिलाँ में इश्क़ की बला। इश्क़ है सो हुस्न दिसता खूब, इश्क़ है तो नज़र तल में महबूब। इश्क़ है तो हरेक काम का लगता धन्दा, इश्क़ है तो कोई साहब होता कोई बन्दा! इश्क़ कधीं आक़िल-कधीं दीवाना होता; कधीं हँसता, कधीं हँस-हँस रोता!

फ़र्द

इश्क़ साँदी इश्क़ सरी च?
कधीं कुच है कदीं सो कुच का कुच

अपस सूँ अपै लगा लिया; किसे क्या है किने क्या किया? अपै किया उसे क्या है इलाज; जैसा पड़े वैसा सोसे बाज। इधर बी अपै उधर बी अपै। अपै तड़पते-तरसते, अपै तपते, अपै अपस कूँ देखे दिखलावे; अपै अपसते अपस कूँ छुपावे। अपस कने करे अपनी फ़रयाद, अपै देवे अपनी दाद! दीन-दुनिया कूँ दिया इश्क़ ने आरायश, पैदा करनहार ने यूँ किया पैदायश।

रुसवाई-बदनामी
इस्तग़नाई-लापरवाही
हश्म-लावलश्कर
लावबाली-बीतराग
महबूब-प्रिय (हुब-प्रेम)
आक़िल-बुद्धिमान (अक्ल-आक़िल)
साँदी-दीवाना
बाज-बिना
दाद-साधुवाद
आरायश-सजावट
छतर-छत्र
कईं-कहीं
दिसता-दिखता (दिसना-दिखना)
तल-नीचे
कधीं-कभी
सरी च-सर ही, भेद ही?
कुच-कुछ
किने-कोई
सोसे-सहे (सोसना-सहना, भोगना)
अपै-स्वयं

बैत—

सब में वो है तो दिल है उसका शाद
सब में वो है तो सब में यू है सवाद

इश्क़ में अपै है तो उसमें है यू मस्ती, यू ख़ुशी, यू उलाली, इश्क़ में अपै है, इसमें है कमाल। इश्क़ में अपै है तो आशिक़ कूँ नई जवाल। इश्क़ में अपै है तो उसे सब ठार गुज़र, इश्क़ में अपै है तो उसे सब ठार गुज़र, इश्क़ में अपै है तो उसे सब जागा की ख़बर। बेनिहायत रेल-छेल, एक खेलता एते खेल। बाटाँ भोत वले ठार एक; खेलाँ भोत वले खेलनहार एक। इश्क़ की सूरत कैसी है कर क्यूँ कहा जाता, माना बेचूनी-बेचुगूनी पर आता। इश्क ख़ुदा की ज़ात है, छुप्या रहता। ज कोई यो बाट पाया वो आख़िर यूँ च कह्या। यहाँ जिस्म कूँ देखना मुश्किल है, जान कूँ क्यूँ देख्या जाता। तख़्त कूँ देखने न पावे सुलतान क्यूँ देख्या जाता? जिस्म होर जान का एक माना; वले इतना है जो यो बाट टुक समजे ज्ञाना। इश्क़ होर ख़ुदा, कुछ जुदा नईं च। बात जुदा पन भेद वही च। इश्क़ होता है जहाँ तमाम, वहाँ च ख़ुदा है बल्के वो च ख़ुदा है—'वस्सलाम!' वासिलाँ ने बोले हैं "वल्ला हो अतमुल इश्क़ फ़हू अल्लाह।"

रुबाई—

देता है नफ़ा यो रहता है जिस रे (?) लग
दो में ने उसे जान न दे निसरे तलग

गर पीव सूँ मिल पीव च होने मँगता है तो याद कर उस पीव कूँ अपस बिसरे लग।

दर नात व इश्क़ ख़ुदा कूँ भेट्या तो उसकी ख़ातिर आसमान ज़मीन हवेदा किया। **मनक़बत** इश्क़ ख़ुदा कूँ भेट्या तो अपना हबीब कर मुहम्मद कूँ पैदा किया। अगर मुहम्मद न होता तो आसमान-ज़मीन न होता। अगर मुहम्मद न होता तो दुनिया होर

शाद-प्रसन्न
जवाल-पतन
वासिल-सिद्ध, ज्ञानी
नात-पैग़म्बर की स्तुति
मनक़बत-अली आदि की स्तुति
अपै-स्वयं
उलाली-उत्साह
बाटाँ-मार्ग (बाट का ब.व.)
यूँ च-यों ही
होर-और †
† नईं च-नहीं ही
वां च-वैसा ही
लग-तक, निकट
अपस-स्वयं, आत्मा, अहम्

१ फ़क़त, समाप्त

दीन न होता। 'साहेब तहा व यासीन साहब इला रहमतुल आलमीन।' जिसके नूर ते आलम ने पाया रोशनी, जिनके नूर ते आलम ने पाया रोशनी 'लोलाका लमा खल्क़तुल अफ़लाक' का धनी; अव्वल ख़ुदा है नबी दूअम। सोयम है वली, यो तीन ते मोमीन के दिल कूँ तजल्ली। जिस रात मुहम्मद कूँ हुई मेराज, वहाँ दूसरा न था अली बाज। किया ध्यान के काम तमाम, मुहम्मद ने लाया ज कुछ मुहम्मद ने पाया। सो अली कूँ समजाया। यो समज अली की नक़सीम आया। अली ख़ुदा कूँ भाया। रसूल कूँ भाया। मुहम्मद नबी अली वली नबूअत ख़ुदा की पेशवाई, विलायत महबूबी होर इस्तग़नाई। नबूअत कारसाज़ी, विलायत बेनियाज़ी। विलायत हार गले यार का, नबूअत धन्दा घर-दार का। विलायत आकर नबूअत आती, नबूअत आये तो क्या विलायत जाती? फ़र्क़ धन्दे का टुक म्याने आता। किसे कुछ सँपड़ता कोई कुच पाता। हज़रत कहें ख़ुदा शाहद, अैनाव अली मिन्नूरे वाहद। तन सूँ तन, जीव से जीव, दम सूँ दम-नबूअत मुहम्मद पर विलायत अली पर ख़त्म। **अबाबक्र, उमर** होर **उस्मान,** जिनो की नेकी जानता सब जहान; हज़रत के याराँ हैं —बुज़ुर्गवाराँ हैं। एकस ते एक सब भले-जूँ ख़ुदा और रसूल फ़रमाया था त्यूँ चले। लाफ़ नईं किये। ख़िलाफ़ नईं किये। हक़ पर चलनहारे, ऐसे अछते हैं ख़ुदा के प्यारे। ऐसे च अछते हैं हज़रत के यार, जिनो सूँ हज़रत करते थे बिचार। आख़िर बादज हज़रत बैठे हज़रत के ठार।

बैत—

हर एक हाल ख़ुदा कूँ यकीन सूँ जपना
विलायत होर नबूअत यो कुर्बे है अपना

विलायत की जागा पर नबूअत के जा सदर। एकस ते एक ख़ूब, एक से एक ख़ूबतर। ख़ुदा बड़ा, भोत बड़ा; सब ठार हाज़िर-सब ठार ग्वड़ा। सब में नूर भर्या, किस कुच किस कुच किसे सब कुच कर्या।

सबब किताब व सुलतान **अब्दुल्लाह,** जिल्लिल्लाह, आलमपनाह, साहब सिपाह, **हक़ीक़त मदह बादशाह** आगाह, दुश्मन परवर, सानी ए **सिकन्दर,** आशिक़ साहब-नज़र,

सोयम-तीसरा
मोमीन-भक्त
पेशवाई-अगुवापन
विलायत-वली का पद, सिद्धत्व
नबूहत-नबी पना
शाअद-साक्षी
लाफ़-बड़ाई †
बादज-पीछे

† जिल्लिल्लाह-ईश्वर कृपा पात्र
सानी-समान

संपड़ना-प्राप्त होता
(संपड़ना-प्राप्त होना)
अछते-रहते (अछना-रहना)
भोत-बहुत

१ यासीन आदि मुहम्मद की उपाधि २ हे मुहम्मद हम तुम को उत्पन्न न करते तो हम धरती और आसमान उत्पन्न न करते ३ मैं और अली एक ही नूर से उत्पन्न हुए।

दिल के ख़तर ते बा ख़बर। सूरत में यूसुफ़ थे अगले, आदम बेहोश होवे, फत्तर पिघले। हिकमत में अफ़लातून शागिर्द-सखावत में हातिम का खोले बुर्द। शुजाअत में रुस्तम गर्द, आली हिम्मत, ग़ाज़ी मर्द। शमशीर होर हिम्मत के साहब, दारा दर, फ़रीदूँ फ़र। कलीम बयाँ, मसीहा दम; मिर्रीख़ सौलत, ज़हरा इशरत। ख़ुरशीद अलम। सबा के वक्त बैठे तख़्त। यकायक ग़ैब ते कुछ रम्ज़ पाकर दिल में अपने कुछ ल्याकर वजही नादिर मन कूँ, दरिया दिल गौहर-सुखन कूँ हुजूर बुलाये। पान दिए, भोत मान दिए। होर फ़रमाये के इन्सान वजूद बिच में कुछ इश्क़ का बयान करना, अपना नावँ अयाँ करना, कुछ निशान धरना। वजही बहुगुनी गुनभर्या, तसलीम कर कर सर पर हात धर्या। भोत बड़ा काम अँदेशा। भोत बड़ी फ़िक्र किया, बलन्द हिम्मती के बादल ते दानिश के मैदान में गुफ्ताराँ बरसाया। कुदरत के असराराँ बरसाया। बादशाह के फ़रमाये पर चीन्त्या, नवी तक्तीह बीत्या के अंगे के आनहारे हमें बी कुछ ते कर समजे बारे। हमारे गुन कूँ देखे सो हमना देखे, गंगा देखे सो जमना देखे। हमना ते बी अंगे थे सो उनो का कुच बी तमीज़ करें। रियाज़त हमारी, मशक्कत हमारी चीज़ करें। आशिक़ कूँ आशिक़ जानता, आशिक़ कूँ आशिक़ पछानता।

फ़र्द

कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़
कुनद हम जिन्स बा हम जिन्स परवाज़

मूरक आसूदे दीवाने, नई जले सो जले की बात क्या जाने? ज्यूँ त्यूँ इस दुनिया में कुछ यादगार अछे तो खूब है। यो झाड़ है, इस झाड़ कूँ कुच बार अछे

ख़तर-ख़तरा
ग़ाज़ी-विजेता
कलीम-वक्ता
सौलत-दबदबा
इशरत-प्रसन्नता
ख़ुरशीद-सूर्य
सबा-प्रातःकाल
रम्ज़-भेद
नादिर-अनुपम
गौहर-मोती
तक्तीह-बौतना, कतरना
रियाज़त-मेहनत †

† आसूदा-निश्चिन्त
बार-फल
सुखन-वाणी
वजूद-अस्तित्व
अयाँ-प्रकट
तसलीम-अभिवादन
गुफ्तारॉ-वचन, बात
असरारॉ-भेद
अंदेशा-अनुमानित किया
चिन्त्या-चिन्ता किया §
नवी नई

§ अंगे-आगे
बी-भी

१ समशील जीवों में मित्रता होती है। कबूतर कबूतर के साथ और बाज बाज के साथ।

तो खूब है। इस दुनिया रहेगी सो बात है, बाक़ी दो दीस का सौरात है। जिने कुछ समझा आक़िबत लगन उने अपनी जागा रख्या अपना गुन। इसते नईं रहा गया, कुछ कहा गया के शायद कधीं कोई आशिक़ पढ़े, टुक तलमले, टुक तरफरे। होर समजे के उन आशिक़ कामिल ने क्या बोल्या है, किस जागा पर कैसे कैसे भेदाँ खोल्या है, हम गुलाब में आबलोच घोल्या है, हम मानिक, हम मोती रोल्या है। दाद देवे, इमदाद देवे। किसे कुछ सपड़े, किसे कुछ अँपड़े।

बैत—

वो है साफ़ी के जिस साफ़ी ते सफ़ा कोई पावे
वो ही है काम के जिस काम ते नफ़ा पावे

एता जिद जो धरते हैं, लोकाँ बाग़ जो करते हैं सो इसी च खातिर करते हैं के कोई खूब चतर भोगी, हवस नायक आशिक़ पीव के इस बाग़ में आवे, महजूज़ होवे, आराम पावे। बाग़ के साहब कूँ दुआ करे। फूलाँ सूँ गोद भरे। रंग में डुबावे आस, इसे बी कुछ लगे बास। इसे फ़ैज़ अँपड़े, हमना सवाब। ख़ुदा ख़ुश, रसूल ख़ुश, आलम ख़ुश इस बाब।

बैत—

जिने जो दिल को लिया हात कुछ किसी को दिया
हज़ार काबा बँधाया हज़ार हज बी किया

दर जीनत सुख़न व नामे किताब यो क़ुदरत अल्ला है, यो असरार अल्ला है, यो हातिफ़ अल्ला है, ला इलाहा इल्लिल्लाह, यो अजब किताब है सुभान अल्लाह। इस किताब का नावँ 'सबरस', सब कूँ पढ़ते आवे हवस, बोल बोल कूँ चढ़े उमस, यादगार हो अछेगा दुनिया में कई लाक बरस। भोर्त्रि च लज़ीज-आशिक़ाँ के गले का तावीज़। यो किताब सब किताबाँ का सरताज, सब बाताँ का राज, हर बात में सौ सौ मेराज, इसका सवाद समझे ना कोई आशिक़ बाज। इस किताब का

आक़िबत-प्रलय दिवस
आबलोच-मिश्री
साफ़ी-शुद्ध
सफ़ा-शुद्धता
महजूज़-आनन्दित
बाब-अध्याय, द्वार
जीनत-शोभा
हातिफ़ फ़रिश्ता
दीस-दीन
सौरात-ईर्ष्या, लालसा
तरफते-तड़फड़ाने
जागा-जगह
रोल्या-रोले (खोजकर प्राप्त किये)
अँपड़ना-प्राप्त करना
हवस-इच्छा †
† उमस-उत्साह
लाक-लाख
राज-राज्य
एता-इतना
इसी च-इसी

लज्ज़त पाने आलम सब मुहताज। क्या औरत क्या मर्द, जिसमें है कुछ इश्क़ का दर्द, इस किताब कूँ सीने पर ते हिलासी ना, इस किताब बग़ैर कोई अपना वक़्त भुलासी ना। जो कोई पड़ेगा, जिन्स जिन्स का असर चढ़ेगा। ज कोई इस किताब का समजेगा माना, क्या हाजत है उसे कैफ़ खाना? यो किताब आशिक़ाँ का जीव-साहब, माशूक़ाँ का यार मुसाहब। यो रंग रंग के फूल, सुरंग मक़बूल। सब किसे भाते, यो फूल दायम ताज़े। हर्गिज़ नईं कुमलाते। ऐसे खुशबास के फूलाँ अभूँ किसी बाग़ में नईं खिले, ऐसे फूलाँ अभूँ किसे नईं मिले। सुँगते दिल में भरे उसास, कहाँ है वो फूल जिस फूल में ऐसी बास? ज कोई यो कलाम सुनेगा, या पड़ेगा हौर फ़ातिहा ना पड़ेगा तो वो बेखबर खाम है। उसकी दानिश पर इस बात का लज्ज़त हराम है। क्या वास्ता के यो बात नईं, यो ममात वही है, इलहाम है, जिसे खुदा की मुहब्बत सूँ ग़र्ज़ है, उस पर फ़ातिहा हमारा फ़र्ज़ है। अगर ममात है तो उधर की सआदती का, मगर हयात है उधर की सलामती का। अगर कुछ किसी में सुखन-शनासी हौर असरारदानी है तो यो किताब गंजुल अर्श बहरुलमाना है। जेता कोई तबियत के किवाड खोलेगा इस किताब में नईं सो बात बोलेगा। जो कुछ आसमान हौर ज़मीन में है सो इस किताब में है। हर्गिज़ कोई फ़सीह इस फ़साहत सूँ बात नईं किया। इस धात बात कूँ सलासत नईं दिया। हरेक बशर का काम नईं, हरेक बेखबर का काम नईं। ईसे किताब कूँ जो समजेगा जो कोई साहब-राज़ है। यो किताब तमाम ऐजाज़ है। अगर दीन हौर दुनिया का उम्मीद पाने मँगता है तो यो किताब देख। अगर बड़ा होकर आलम कूँ समजाने मँगता है तो यो किताब देख। सद है, मुर्शिद है। मुसलमानाँ में पीर-मुर्शद होएगा, हिन्दवाँ में जंगम सद होएगा। हम हिन्दू तुज ते बात पा कर तुजे मानेंगे, हम मुसलमान तुजे बड़ा कर जानेंगे। एक कल्मे का फ़र्क़ है, बाक़ी खुदा की वहदानियत में हिन्दू-मुलमान ग़र्क़ है। अगर खुदा कूँ समझे और उसे ईमान होवे अजब क्या जो हिन्दू बी मुसलमान होवे। इस बात की जो कुछ बात है सो समझानेहारे के हाथ है, अगर समझन-हारा वासिल हौर कामिल है वो हिन्दू भी अगर दाना है उसे बी ये जीवती दिल

हाजत-इच्छा, आवश्यकता
कैफ़-मादक द्रव्य
मुसाहब-दरबारी
मक़बूल-प्रिय (क़बूल-मक़बूल)
दायम-शाश्वत
फ़ातिहा-मृतकों के लिए प्रार्थना
खाम-कच्चा
ममात-मौत
सआदती-सौभाग्य
† शनासी-पहचानने की शक्ति
अर्श-आकाश
बहरुलमाना-अर्थ का समुद्र
फ़सीह-परिमार्जित, सरल
सलासत-सरल
बशर-व्यक्ति
राज़-रहस्य
ऐजाज़-चमत्कार
हासिल-पाने
हिलासी-हलायेगा
भुलासी-भुलायेगा
पढ़ेगा-पढ़ेगा
अभूँ-अब तक
सुँगते-सूँघते
सद-शुद्ध
जंगम-लिंगायत सम्प्रदाय के गुरु, उपदेष्टा

है। ख़ुदा हक़ है और हक़ सब ठार है। आदमी के जिन्स कूँ हक़ पर आते क्या बार है? जेते फ़हमदाराँ, जेते गुनकाराँ सो आज तलक कोई इस जहान में, हिन्दुस्तान में, हिन्दी ज़बान सूँ इस लताफ़त, इस छन्दाँ सूँ नज़्म होर नसर मिला कर, गुला कर यूँ नईं बोल्या। इस बात कूँ, इस नबात कूँ, इस नबात कूँ यूँ कोई आबहयात में नईं घोल्या। यो ग़ैब का इल्म नईं खोल्या। ख़िज़र के मुक़ाम कूँ अँपड़ना तो इस बात में पड़ना। मैं तो यो बात नईं किया हूँ, ईसा होकर बात कूँ जीव दिया हूँ। दानिश के बाग़ में आया, बहार होकर फूलाँ खिलाया। अगर कोई कूड़ हौर जहालत सूँ, बदअसालत सूँ, रिज़ालत सूँ बात करे ना समझ यो माया, तो ख़ुदा ने इस जागा हज़रत जैसे कूँ कह्या है के कूड़ाँ हैं, मभूल-नामाकूल मरदूद-ना क़बूल। सुन्या रसूल अब्बल के पैग़ंबरां कूँ बी ये आयत उतरी थी, इस वसूल के वैज़ा खातिबेहुम उलजाहेलूम क़ालू सलामन। याने अगर कूड़ाँ का यू क़ाम है तो कूड़ाँ कूँ हमारा सलाम है। उनां पर ख़ुदा की नईं रहमत, उनां पर ख़ुदा की लानत। ख़ुदा इस बात का माना खोल्या है, ख़ुदा यो बात बोल्या है। दायम उनो की हारे बाज़ी, ख़ुदा उनो ते कधीं नईं राज़ी। जाहिलाँ जहालत पर जाते, जेता समजाये बी हक़ पर नईं आते। 'क़ाफ़िर तारीक़ दिल, तोबा अस्तग़फ़रुल्ला।' भोत मुश्किल, और गवालियर के फ़हीम† उनो बी यूँ कते हैं, 'औज़ो बिल्लाह मिनश्शैतानुरजीम।' के कूड़ बहिश्त-कूड़ सूँ मुश्ते। बात बी यूँ आई है के जानते का कर-अनजानते का भाई। फ़ारसी में यूँ बोलते हैं के कूड पर पर्दा सटे हैं फ़रामोशी, जवाबे अबलाहाँ ख़ामोशी।' कूड़ की ज़ात-नहना फ़हम बड़ी बात। न अपस कूँ जाने ना दुसरे कूँ पछाने। यो कूड पापी ख़ुदा के राने। यो जहन्तुमी, कज फ़ामी, के उनो कूँ क्या कमी? जहाँ फ़हम की बात आय वहाँ कूड़ कूँ छावँ न पड़या जाय। चराग़ में चरचर, रंग में करकर। काफ़िराँ कूड़ थे, तो मुहम्मद ते मौजिजाँ देखे बी ईमान नईं ल्याये, लाइलाज तह-तेग़ आये। उनो के दिलाँ उनो कियाँ अँखियाँ, उनो के

नज़्म-कविता
नसर-गद्य
आबहयात-अमृत
ग़ैब-अदृश्य
ख़िज़र-एक फ़रिश्ता
बहार-वसंत
कूड कपट, मूर्खता
हज़रत-मुहम्मद
मभूल-दुर्बल
तारीक़-अंधेरा †

† फ़हीम-बुद्धिमान
अबलाहाँ-मूर्ख
राना-निकाला हुआ (रान्धन ?)
कज फ़ामी-दुर्बुद्धि
मौजिजाँ-ऐजाज(चमत्कार वाले)
तहतेग-तलवार के अधीन
गुणकाराँ-गुणज्ञ
आज तलक-आज तक
छन्दाँ-गुण (छन्द)का ब.व.§

§ गुला कर-घुला कर
नहना-छोटा
किया-की का व. व.

१ यदि दुष्ट व्यक्ति हमें सम्बोधित करे तो हम उस से मिठास में बातचीत करें। २ ईश्वर की शरण चाहता हूँ। ३ अभिशप्त शैतान से शरण चाहता हूँ।

कानाँ कुदरत हूँ. बाँद कर ग़फ़लत की दी गिरह। जो मुसहफ़ में ख़ुदा कता है के—ख़तम अल्ला अला कुलूबे हिम व अला सम्मे हिम व अला अफ़सारे हिम ग़िशावा।' जिनो कूँ ख़ुदा बाट दिखलाया था, जिनो के दिल में कुछ ख़ुदा का मुहब्बत आया था, जिनो के दिल में दानिश ने किया था घर, उनो देखते च कहे के तुमन हक़ के बरहक़ पैग़ंबर। बात के सुनते च दिल में मुसलमान हुए। ताबे कुरान हुए। जाहिल किसे भाता है, जाहिल पर क़त्ल वाजिब आता है। जाहिल थे तो ख़ुदा के फ़रमान कू नई बिचारे। जाहिल थे तो लहव्याँ ते उनो कूँ मारे। जो क़ौम काफ़िर है, जहाल है; मुसलमानो कूँ ख़ून उनो का हलाल है। मुल्ला रूम जो ख़ुदा के इश्क़ सूँ मते हैं, जाहिलाँ कूँ मते हैं—जाहिलाँ कूँ उनो बी यूँ कते हैं—'पै[2] जहाल अबू जहलम, मुहम्मद बहरे दानायाँ।' देख यो आरिफ़ाँ की बात का माना अँपड़ता है कों ?(ग़र्ज़ भोत नादिर नादिर बाताँ बोल्या हूँ। दरिया होकर मोतियाँ रोल्या हूँ।) मोतियाँ का मौजाँ का मै दरिया हूँ। तमाम मोतियाँ सूँ भरिया हूँ। इस दरिया में ग़ोता खायँगे तो जागा-जागा के ग़व्वासाँ मोतियाँ पायँगे। यो किताब अजायब एक बन्दर है। अगर सूरज मँगता वगर च्चन्दर है। फ़रहाद होकर दोनो जहान ते आज़ाद होकर दानिश के तीशे सूँ पहाड़ाँ उलटाया तो यू शीरीं पाया तो यो नवी बाट पैदा हुई तो इस बाट आया। नादानाँ एते बाटाँ में यो बी एक बाट कर जाने। बली यो बाट क्यूँ काढ़े ? किस वज़ा से निकले मेहनत नईं समजे, मशक्कत नईं पछाने, उनो कूँ नईं कते ज़बाँवर, यू बोलते जनावर। अक्ल में सर्द, गुस्से में तपते, अरबी में उनो कूँ हैवान नातिक़ कते। नादान का वजूद अदम है, नहनी च में शुमार, दानायाँ कूँ सजदे किए टार, दाना मोम-दिल है। दानिश की आग पर गलेगा, दाना हमारा है, हमारा हुक्म उस पर च्चलेगा। दाना हमना रहनुमा कर जानेगा, हादी है कर पछानेगा। यो बाट न थी सो निकली अताल तो बी यकायक च्चलने किसका मजाल ! ढूँडते ढूँडते दिल के तलव्याँ में छुले आना है, यो बाट पाना है, नईं तो यू बी क्या

गिरह-गाठ
हक़-ईश्वर
बरहक़-निस्सन्देह
ताबे-अधीन
आरिफ़-ज्ञाता
मौजाँ-(मौज) लहर का ब.व.
तीशे-कुल्हाड़ी
ज़बाँवर-बोलने वाला
नातिक़-बोलने वाला
अदम-नाशमान
दाना-चतुर
कता-कहता
लहव्या-लहवा (तलवार) का ब. व.
मते-मस्त
कते-कहते
कों-कहाँ
भोत-बहुत
नवी-नई
काढ़े-काढ़े, निकाले
तलव्याँ-तलवा का ब. व.
छुले-छाले

१ ईश्वर ने उनके दिलों, कानों और दृष्टियों पर मुहर लगा दी है। २ जाहिलों के लिए अबूजहल (मुहम्मद के चाचा, जो मृत्यु तक काफ़िर रहे) और समझदारों के लिए मुहम्मद है।

कुछ नहनवादाँ का खेल है, यू बी क्या कुछ खाना है; हमारी बात में अजब कुछ टोना है। जिने सुन्या उने घायल होना है। ग़र्ज़ अताल रह्या देक कर कना। उसी कूँ करता मना कना। जिते गुनकार करते हैं गुन, इस बाग़ा में ते लेंगे फूल चुन चुन। जिसके दिमाग़ में फूल की बास जावेगी, ताज़ी अरवाह तन में आवेगी। ज कोई उचाया बुनयाद, अव्वल आखिर वही उस्ताद। यो अजब नज़्म होर नसर है, जानो बहिश्त में का क़सर है। सतर सतर पर बरसता है नूर, हरेक बोल हैं यक हूर। इसे पढ़ कर जिने हज़ पाया, जानो बहिश्त में आया। यहाँ ख़ुदा बोलनहारा च है। ज कोई बाट हमारी चल्या, वो हमारा च है। हरचन्द फ़हमदारी है, चल्या तो क्या हुआ बाट हमारी है। अगर नुक्ता किसी ते कुछ जान्या, हम ज़ाहिर, हम बातिन उसे नईं मान्या तो वो मुसलमान नईं। उसे ईमान नईं, ऐसे से डरना। भोत-भोत परहेज़ करना। यो बी एक चोरी है, यो बी एक हरामख़ोरी है। नमक पर हराम, उसका क्या अछेगा फ़ाम ? जिसे इन्साफ़ की नईं सकत, उसे दिल का दिली च में अपडती लत। जिने इन्साफ़ छिपाया, उने दिल कूँ बेदिल किया, काम गँवाया। हाजत नईं जो कोई करे ज़बान, अपस कूँ अपै क्या नुक्सान ? अगर तू है फ़हमदार, अपनी रीज नको मार, यो बात दिल में रख मर्दों की यादगार। जिने रीज कूँ जलाया उने ख़ुदा कूँ पाया। कहे च कुछ जुदा है, रीज में ख़ुदा है। रीज घुट, नको पी घुट-घुट, अगर कुछ नईं तो टुक, पुकार तू बी उठ। उसास तू बी भर, चुप नको अछ। कुछ तो बी कर, दिल में उजाला पड़ेगा मूँ पर नूर चड़ेगा। यू बात ऐजाज़ है, इस बात में ख़ुदा राज़ है। यू बात ग़ैब की आवाज़ है। मानना, जानना, पछानना, इन्सान याने ग्यान, जिसमें कुछ ग्यान नईं, वो हैवान। बेदर्द-नामर्द, मर्द में दर्द। सख़्त बेकटर, वो आदमी नईं फत्तर। आशिक़ माशूक़ सूँ दिल बँद अछता है। आशिक़ भोत दर्दमन्द अछता है। बेदर्द दर्दमन्दाँ कूँ क्या जानते ? यो नादान मुस्तमनदाँ कूँ क्या जानते ? माशूक़ाँ के नाज़ाँ क्या समजते ? आशिक़ाँ के छन्दाँ कूँ जानते एता उज्र, येता हसद, जिनो हक़ ते गुज़रे उनो में क्या अछेगा हद ? उनो कूँ हक़ क्यों होना मदद ? मूँ पो मस्जिद दिल में बुतख़ाना, ख़ुदा

अरवाह-रूह (आत्मा)का ब. व.
क़सर-महल
बातिन-गुप्त
ऐजाज़-चमत्कार
मुस्तमन्दाँ-जाननेवाला
उज्र-घमण्ड
बुतख़ाना-मन्दिर
उचाया-उठाया
रीज-रीझ
घुट-घूँट
बेकटर-निर्दय, कठोर
एता-इतना
मूँ पो-मुँह पर

लो समजता है वो माना ! आदमी के हुजूर छिपाया, ख़ुदा के हुजूर क्यूँ छिपाना ? बाज़े अजब लोगाँ है अधरम, उनो कूँ ख़ुदा की बी नईं शरम ! मुसलमानों में आते जाते, मुसलमान कहवाते; अगर यो है-मुसलमानी तो काफ़िराँ की क्या है निशानी ? इता नवी बाट पाड्या, काड्या सो गंज काड्या । कुछ नईं था सो ल्याया । बाट दिखलाया । हमें तो भोत सन्द सूँ बाट सँवारे, अताल चल लेव बाट चलनहारे । जिसका दिल साफ़ अछेगा, जिसमें कुछ इन्साफ़ अछेगा, मुसहिफ़ की सौं वो हमना भोत मानेगा । खूब हमना पछानेगा । जिसका दिल रोशन है वो नूर का गुलशन है । जो कोई नूर हुआ वो ख़ुदा के हुज़ूर हुआ । हर कुछ उजाले में नज़र पड़ता । अँधारे में कारनहारा उड़ता, तर पड़ता, बड़ पड़ता । उजाले के रहनहारियाँ सूँ लड़ता-झगड़ता । अँधारे कूँ उजाला कर समझता । लाल कूँ काला कर समझता । यो बुरा उजाला-उसका मूँ काला । जिसके दिल कूँ सफ़ा है, उसे भोत नफ़ा है । दिल की सफ़ाई किन ने पाई ? जिसे ख़ुदा दिया उसे आई । दिल की सफ़ाई न कुछ खयाल है, ऐन बिसाल है । यहाँ कुछ है ग़र्ज के हैं, 'अल्ला नूरुस्समावात वल अर्द ।' याने ख़ुदा आसमान हौर ज़मीन का नूर है । इसका नूर हर शै में भरपूर है । नूर होवे तो नूर सूँ मिलाया जाय । ज़ुल्मात नूर से क्यूँ मिलने पावे ? ज़ुल्मात कूँ नूर सूँ कौन क्यूँ कर मिलाये ? एता है जो कुछ अकल अछे तो जिने देख्या वो दूर ते दिखलाये । काम भोत खास किया हूँ, चलती इमारत रास किया हूँ । यो ग़ैब की बशारत जिसे इमारत कते सो यो इमारत माटी-फत्तर की इमारत, कुछ सदा रहनहारी नईं । वो बेवफ़ा कुछ उसमें वफ़ादारी नईं । दुनिया दो दीस की, कोई नईं किसका; आखिर रहेगा सो यो च क़द्र जानना उसका । माल-धन सब खर्चा जावेगा, आखिर यो च काम आवेगा । आखिर नाम यो च उचावेगा । तमाम यो च है, काम यो च है । यो ख़ुदा की इनायत; याँ क्या शिकायत ख़ुदा भोत बड़ा, बेनिहायत ।

आग़ाज़ दास्तान ज़बान हिन्दुस्तान

एक शहर था । उस शहर का नावँ सीस्तान । उस सीस्तान के बादशाह का नावँ अक्ल । दीन व दुनिया का तमाम काम

हुजूर-सम्मुख
गंज-खज़ाना
गुलशन-बाग़
ज़ुल्मात-अन्धकार
नावँ-नाम
सीस्तान-एक देश का नाम, ईरान की पूर्वी सीमा पर अफ़गानिस्तान के निकट
अधरम-अधर्म
नवीबाट-नया रास्ता
पाड्या-डाला
काड्या-काढ़ा
सौं-सौगन्ध
हमना-हमको
तरपड़ना-नीचे गिरना
बड़ना-प्रवेश करना †
† किनने-किसने
यो च-यही

१ ईश्वर पृथ्वी और आकाश की ज्योति है ।

उसते चलता, उसके हुक्म बाज ज़र्रा कई नईं हिलता—उसके हुक्म पर चलता। उसके फ़र्मूदे पर जो चले हर दो जहान में हुए भले। दुनिया में खूब कहवाये, चार लोकों में इज्ज़त पाये। जाँ रहे खड़े वाँ क़बूल पड़े। न आफ़त देखे न ज़लज़ला, आपे भले तो आलम भला। किसी कूँ बुरा बोलना यो वस्वास है, भलाई बुराई सब अपने पास है। आपे चल नईं जानते, दूसर्यों पर बुरा मानते। अव्वल अपनी खबर में आपे रहना, पीछे दूसरे कूँ बुरा कना। जिनें अपसकूँ पहचान्या उने सब जान्या। जिधर ढलना है, उधर अक्ल के उजाले में चलना है। आदमी ने अक्ल छोड़्या दीवाना हुआ। अपना सर आपै फोड़्या। अक्ल में जो काकलूत मिलती हुरमत में नुक्सान होता। मुद्आ दूर पड़ता। दिल ते अगर मँगता है, जो दिल कूँ ताजा रखे, मुद्आ पावे तो भला है जो अक्ल में काकलूत न मिलावे, सकत है तो अक्ल में हिम्मत कूँ कर शरीक। यू पन्द है, अगर तुझ में कुछ समझ है तो यू पन्द सीक। ज कोई यू चलन्त चलता है वो कामिल होता है। रोशन तबियत, ज़िन्दा दिल होता है। अक्ल में काकलूत-ज्यूँ रेशम में सूत; जूँ दूध में छाछ, जूँ शीरे मे मीरा; जूँ उजले जीरे मे काला जीरा। जिने दिल को जलाया उने कुछ पाया। जिने क़दम अंग धर्या उने कुछ कर्या। मर्दी व नामर्दी यक क़दम है; मर्द कूँ यहाँ फ़िक्र है, नामर्द कूँ क्या ग़म है? अनजानता बेचारा भला; जानते पर पड़े बला। काकलूत ते जो दिल मुएगा तो पीछे बिचारा क्या काम करेगा? दिल उसका जलता है, जिसमे इश्क़ होर मुहब्बत होर हिम्मत है। जिवना बी उसी च का है, उस पर रहमत है, जो हाफ़िज़ बोल्या है, दिल के घर की खिड़की-दरवाज़े खोल्या है—

बैत—

हरगिज़ न मीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बइश्क़
सिस्त अस्त बर जरीदे आलम दवा में मा

खास अछो या आम; आख़िर अक्ल के हुक्म सूँ लग्या है काम। उसके हुक्म बाज कोई किस काम में जावे, अपना किया आपै पावे।

बाज-बिना
कई-कहीं
नईं-नहीं
जाँ-जहाँ
वस्वास-खतरा
मुद्आ-ध्येय
पन्द-उपदेश §

§ कामिल-पूर्ण (अकमल-कामिल)
काकलूत-माया, ममता
सकत-सामर्थ्य
मीरा-मैला
अछो-रहो (अछना क्रि.-रहना, होना, अछता, $

$ अछे, अछेगा, अछ) सूँ-से

१ जिसका मन प्रेम से अनुप्राणित है, वह कभी नहीं मरता, रहती दुनिया तक वह अमर हो जाता है।

बैत—

अक्ल है बाज़ वले बाज़ ए बलन्द परवाज़
शिकारगाह है उसका हक़ीक़त होर मजाज़

अक्ल नूर है; अक्ल की दौड़ भोत दूर है। अक्ल ही आदमी कहवाती। अक्ल ते ख़ुदा कूँ पाये। अक्ल अछे तो तमीज़ करे। भला होर बुरा जाने। अक्ल अछे तो अपस कूँ होर दूसरे को पछाने। अक्ल ते मीर, अक्ल ते पीर; अक्ल ते बादशाह अक्ल ते वज़ीर। अक्ल ते दुनिया; अक्ल ते दौलत; अक्ल ते चलती, सुलतानाँ की सल्तनत। अक्ल ते रह्या है यू आलम खड़ा; जिसमें भोत अक्ल वो भोत बडा। अक्ल सूँ चलती ख़ुदा की ख़ुदाई, जितनी अक्ल उतनी बड़ाई। अक्ल न हो तो कुछ न होता, कुछ ई च न होता।

फ़र्द

अक्ल के नूर ते सब जग ने नूर पाया है
जिने जो इल्म सीका सो अक्ल ते आया है

अक्ल बग़ैर दिल कूँ नूर नईं, अक्ल कूँ ख़ुदा भीं कैना कुछ दूर नईं। ज़ात ज़ात ते सिफ़ात है; ज़ात जो कुछ निकल्या सो बी ज़ात है। ज्यूं आफ़ताब होर उसका नूर, अगर आफ़ताबी च न अछे तो नूर क्यूँ होवे मशहूर? अगर आफ़ताबी च म्याँने ते जावे नूर। आफ़ताब में ते निकल्या था, सो बी आफ़ताबी च में समावे। सूर कूँ नूर कते हैं, नूर है तो सूर कते हैं। नूर ते आफ़ताब है, नईं तो आफ़ताब को आफ़ताब कौन कहता। असर ते शराब है, नईं तो शराब कूँ शराब कौन कहता? बास ते फूल ने शर्फ़ पाया, बास ते फूल कहवाया। जोत ते जौहर ने

बाज-बिना
बाज़-एक पक्षी, श्येन
बलन्द-ऊँचा
परवाज़-उड़ान
हक़ीक़त-वास्तविकता
मजाज़-नाशमान, अवास्तविक
सिफ़ात-गुण, विशेषता
आफ़ताब-सूरज
शर्फ़-सौभाग्य, बड़प्पन
जौहर-जवाहर
भोत-बहुत
कू-को
अपस-स्वयं, आप, आत्मा
होर-और
पछाने-पहचाने
ते-से
कुछ ई च-कुछ भी
सीका-सीखा
बी-भी
म्याने-बीच †
† जोत-ज्योति

१ बुद्धि बाज पक्षी की तरह है, लेकिन उसकी उड़ान बाज से भी ऊँची होती है। शाश्वत और नाशमान दोनों ही इस बुद्धिरूपी बाज के शिकारगृह हैं।

पाया मोल; माने ते मीठा लगता बोल। जूँ ख़ुदा के रसूल अमीन, महबूब रब्बुल आलमीन ने, साहब आलमान-ज़मीन मे फ़रमाये के "तफ़क्कुर फ़ी सिफ़ाते इला व ला तफ़क्कुर फ़ी ज़ाते इला" याने ज़ात कूँ सिफ़ात में ढूँडेगे तो पाएँगे। सिफ़ात कूँ छोड़ दिए तो ज़ात लग किधर आयेंग। बाज़े कते हैं के ख़ुदा ए ताला आख़िरत कूँ एक मानी सूँ अपना दीदार दिखलायेगा। मुसलमानाँ के दिल का शक जायेगा। मुसलमानाँ का दिल उस वक्त रोशन होयेगा। बाज़े कतै हैं के ख़ुदा कूँ देख्या जाये; ज कोई ख़ुदा कूँ ढूँडे सो ख़ुदा कूँ पाये। जिनो ने नईं देखे, जिनो कूँ देखने का क़ुदरत नईं उनोंने शक ल्याए। बाज़े कतै हैं के ख़ुदा कूँ इस नज़र सूँ देख्या ना जासी, नज़र सूँ ख़ुदा कूँ देखेंगे तो ख़ुदा नज़र में न आसी। समझ की आँख्याँ सूँ कोई देखे तो देखा जाता है। नज़र सूँ क्यूँ दिखेगा? क्या ख़ुदा ज़ाहिर सूरत पकड़ कर आता है। बाज्याँ कूँ इस ज़ा का यू सवाल है, अगर ख़ुदा कूँ ज़हत नईं, ख़ुदा कूँ मकान नईं; ख़ुदा कूँ कुछ सूरत का निशान नईं। ख़ुदा कूँ देखना महाल है। बाज़े कते हैं, ख़ुदा समझा जाये तो बस ख़ुदा कूँ देखने का किसे क़स, यू दिल के दिली च में रहे हवस। ख़ुदा तहक़ीक़ है, इतना जान्या तो भोत सरस। बाज़े कते हैं के ख़ुदा ए ताला कूँ क़यामत में देखेंग, वले हैरान होवेंगे। कह ना सकेंग यूँ के ई च है, यूँ च है; या ऐसा ई च है। यूँ कहे तो उसके दिसने की वज़ा सूँ दिसता है। वले बोलने में नईं आता। क्या बोलूँ तमाशा च है। ख़ुदा की अजब है शोकत हौर शान। बिचारा इन्सान याँ बी हैरान, वाँ बी हैरान। इस ते च जो मर्दो हैं, नाज़ुक फ़ाम के; आशिक़ हुए उसके नाम के। उसके नाम पर जीव दिये हैं; अपना काम किये हैं। एकी च है जो दिसता है; नईं दिसता यू अक्ल ते पैलाड़ु है; आदमी समझता क्यों? अगर ये ई च वजह मुतलक़ कुछ ना दिसता तो हरगिज़ ख़ुदा है कर ना कते। इसकी इबादत छोडते उसकी याद में ना रहते। ख़ुदा है कर तो बोल्या जाता है के कुछ बी दिस आता है, तो

माने अर्थ
अमीन रक्षक
आख़िरत-प्रलय दिवस
ताला-प्रतिष्ठित, श्रेष्ठतम
दीदार-चेहरा
बाज़े-कोई
ज़हत-सीमा, दिशा
वले-लेकिन
फ़ाम-बुद्धि, विचार
महाल-कठिन †

† क़यामत-प्रलय
नाज़ुक फ़ाम-बुद्धिमान (फ़हम-फ़ाम)
कते है-कहते हैं
ज कोई-जो कोई
जासी-जाएगा
आसी-आएगा
बाज्याँ कूँ-बातों की, कुछ की
जा-जगह §

§ कस-शक्ति
यूँ ई च-यों ही, ऐसा ही
दिसता-दीखता
इस ते च-इससे ही
पैलाड़-परे

१ संसार के प्रिय २ पृथ्वी और स्वर्ग के स्वामी

इन्सान उस सूँ जीव लाता है। उस पर तवक्कुल करता है। उसे पतियाता है के मुझे तू च है। मेरा काम तुझ सू च है। बारा बारे की वज़ा सूँ दिसता है, तारा तारे की वज़ा सूँ दिसता है। बारे कूँ तारे की वज़ा सूँ देखेंगे तो क्यूँ दिसेगा? तारे कूँ बारे की वज़ा सूँ देखेंगे तो क्यूँ दिसेगा? उसका नूर सब में भरपूर है, वले उसके देखने में क़सूर है। अगर उसका क़सूर जावेगा तो सब जागा उसका जल्वा नूर ही दिस आवेगा। अगर आसमान, अगर ज़मीन, अगर आब, आतिश, खाक, बारा है; यू अपस ते अपै पैदा नईं हुए। इनो कूँ कोई पैदा करनहारा है। अगर यू आलम अपस ते अपी च पैदा हुआ है तो यू च ख़ुदा है। उस भेद कूँ समजता सो आरिफ़ जुदा है। अपस कूँ देखना अपस कूँ देखना कतै हैं। अगर अपस कूँ देखे तो बी ख़ुदा कूँ देखना मुश्किल है। ख़ुदा की मुहब्बत हासिल होती है। अम्मा ख़ुदा किसे हासिल होता है? ख़ुदा कुछ ऐसा नईं है, ज्यूँ देखना कतै हैं; त्यूँ देखा जाये। बात गुफ्तार की कोई फ़ुर्सत पाये। मन्सूर जो इस बात में आया, मुहब्बत की राज़ सूँ ख़ुदा कहवाया। नईं तो बन्दा कईं ख़ुदा कहवाता है? बन्दे ते ख़ुदा कहवाया जाता है। मुहब्बत के आलम में कोई कहे के मैं ई च ख़ुदा हूँ, ख़ुदापरस्त लोकाँ मुहब्बत के आलम में ख़ुदा कहवाय तो कहा जाये, क़ादरियत के आलम में कुछ कुदरत नईं जो ख़ुदा कहवाय। ख़ुदा सो ख़ुदा है, मुहब्बत का आलम सो जुदा है। जिते अपस कूँ साहब-इरफ़ान कर जाने, यहाँ आकर ज़बान गर्दाने। बाज़े कतै हैं के अक्ल के अहाते में ज़ात हक़ ताला 'कमा हक्क हू' नईं आ सक्या। पीछे जो आशिक़ हुआ उनें अपस कूँ इश्क में फ़ना कर बात कूँ यहाँ ल्या रख्या। ख़ुदा के दोस्ताँ ने बोले हैं, असरार के मोतियाँ रोले हैं के 'फ़ना फ़िल्ला बक़ा बिल्ला।'

फ़र्द

आया जो कोई ख़बर कूँ याँ वो ख़बर सख्या
खोल्या लहवा कमर ते सूँ आस पर सख्या

तवक्कुल-विश्वास
जल्वा-प्रकाश
आब-पानी
आतिश-अग्नि
खाक-मिट्टी
आरिफ़-ज्ञाता (इरफ़ान-आरिफ़)
अम्मा-लेकिन
क़ादरियत-प्रभुत्व
इरफ़ान-ज्ञान, ईश्वर का ज्ञान
कमा हक्क हू-जैसा चाहिए वैसा

†असरार-भेद, (सिर घ. व.)
फ़ना फ़िल्ला बक़ा बिल्ला-जो ईश्वर में लीन हुआ वह शेष रहा।
बारा-बादल, वर्षा, पानी
लहवा-तलवार, लोहे का शस्त्र
सटना-छोड़ना

§तुझ सू च-तुझ से ही
दिसेगा-दीखेगा
अपै-आप ही

१ वास्तविक नाम हुसैन, पिता का नाम मन्सूर। सोऽहम् तत्व का उपदेष्टा, ३०९ हि. में सूली दी गई।

ख़ुद बेख़ुद हुए तो ख़ुदा कूँ पावे। ख़ुदी दूर करे तो ख़ुदाई दिस आवे। जिते आक़िलाँ ने अक्ल दौडाये आख़िर इश्क़ की बेआरामी में आकर आराम पाये। इश्क़ में जा, तूँ अक्ल में की आता? समजने का नईं च तो समज्या क्यूँ जाता? जो लगन तूँ सब ते बेतमा ना होसी, इश्क़ में आये ग़ैर ख़ातिर जमा ना होसी। अगर मर्द है तो इश्क़ अपना कमाल कूँ अँपड़या। फ़िराक़ में की हलाक होता? अपस कूँ विसाल कूँ अँपड़ा। जो इश्क़ तेरा निहायत कूँ अँपड़ेगा, उस धात पीछे देल अपै बोल उठेगा। तेरे मरातिब की बात क़ाल हाल होता है। फ़िराक़ विसाल होता है। ज कुछ दिल में ते अपै आता है, अपनी मुहब्बत का कुव्वत वहाँ पाया जाता है। ख़ुदा का होने मँगता है तो कुछ ख़ुदा का काम कर। ज कोई ख़ुदा कूँ अँपड़े है, उनों की बात फ़ाम कर। हमें आशिक़ फ़िदाई; फ़िदा होना हमारा अहतशाम। क्या था, क्या है, क्या होएगा इस बाताँ सूँ हमना क्या काम? हमना ख़ुदा कूँ एक जानना होर उसका मुहब्बत फ़र्ज़, ख़ुदा के कामों सूँ हमना क्या ग़र्ज़। उसका काम वो जाने, किसे क्या क़ुदरत जो आवे म्याँने? हमें कौन जो उसके निहायत कूँ पाने का फ़िक्र करें; ऐसे कामाँ में आने का फ़िक्र करें। हमना हमारी निहायत की मालूम नईं होती ख़बर, उसके निहायत की किसे ख़बर, उस दरिया की किसे ख़बर नईं होती, हैरत ते गुंगे हुए सो मोती। मौज पर मौज आती, किसते समजी जाती? बाज़े कतै हैं के मूसा ने ख़ुदा कूँ देखने का सवाल किया। नईं दिसता सो दिसता कर ख़याल किया। फ़िक्र मुहाल किया। यहाँ बात है, यहाँ तहक़ीक़ात है। अगर देखने का ना होता, होर ना देखा जाता तो मूसा देखने का बात हरगिज़ म्याँने म्याँ ना ल्याता। क्या वास्ता के वो पैग़ंबर था। उसे यू असरार रोशन था, बल्के रोशनतर था। मूसा कूँ जवाब आया के 'लन्तरानी' यानी ना देखसी तू यू अनवार-सुभानी। यहाँ वासिलाँ कतै हैं, साहब-हासिलाँ कतै हैं, ना देखे कहे तो

बेतमा-निस्वार्थ (तमा-लालच)
फ़िराक़-वियोग
हलाक-घायल (मृत)
विसाल-मिलन
मरातिब-प्रतिष्ठा (मर्त्तबा ब. व.)
क़ाल-कथन
हाल-वर्त्तमान
फ़ाम-समझ (फ़हम)
फ़िदा-मोह
अहतशाम-प्रभु, ऐश्वर्यवान
मौज-लहर
मूसा-यहूदियों का पैगंबर।
†मुहाल-असंभव
म्याँने म्याँ-मन में
लन्तरानी-मुझे हरगिज़ नहीं देख सकेगा।
अनवार-प्रकाश (नूर ब. व.)
सुभान-पवित्र
वासिलाँ-सिद्ध (वासिल ब. व.)
की-क्यों
जो लगन-जब तक
होसी-होगा
अँपड्या-प्राप्त किया, अँपडना (क्रि. प्राप्त करना, मिलना)
धात-तरह, भाँति
म्याँने-अन्दर
गुंगे-गूँगा
देखसी-देखेगा
हासिलाँ-प्राप्त (हासिल का ब. व.)

क्या देखना नईं है ? जाँ मुहब्बत होर ख़ुदाई है, वाँ यूँ कते हैं ज कोई महरम राज़ है, उस पो नाज़ है, नयाज़ है। ना कहे तो नाँ च कूँ खींचना-पकड़ना। एक लताफ़त की बात होवे तो वहाँ च ना अड़ना। यू काम मौक़ूफ़ आशिक़ के दिलेरी पर है। (यू बी क्या ख़ाला का घर है ?) काट्याँ कूँ अलग जान्या तो बाग़ में फूल पाना। ज कोई दरिया में जावे सो मोतियाँ लावे। जिसे बख़्त, उसे तख़्त।

दोहा

सात सहेली एक पिव चौंधर पिव पिव होय
जिस पर पिव का प्यार है सो धन बिरली कोय

आबिद का इस ठार काँ हात है ? आशिक़ के समझने की बात है। यू रम्ज़-नाज़ देखे, नियाज़ दिखलाए सो जाने। आशिक़ी के मार्के में आये सो जाने। बन्दगी होर साहिबी की धात होर है, आशिक़ी होर माशूक़ी की बात होर है। एक बात लन्तरानी, आशिक़ कूँ इस में हज़ार निशानी। यू ना देखी कहना, देखनी कहने ते ज्यास्त है। आशिक़ समझता है के क्या माशूक़ की ख़ास्त है। आबिद कूँ क्या निस्बत जो आशिक़ की बात मे आकर दख़ल करे, ज्यूँ अपने काम में ख़लल किया त्यूँ दुसरे के काम ख़लल करे। आशिक़ बलन्द, आबिद पश्त। आबिद हुश्यार, आशिक़ मस्त। आबिद दीन ख़ातिर जनम ग्वोया है, आशिक़ ख़ुदा ख़ातिर दीन-दुनिया ते हात धोया है। इस बात का कौन पाया ग्वोज; कहाँ गंगा तेली-कहाँ राजा भोज ? माशूक़ दीदार दिखलाता है वले टुक तपा कर दिखलाता है। घूँगट में मूँ छिपा कर दिखलाता है। इश्क़ बढ़ाने ख़ातिर, लज्ज़त पाने ख़ातिर। मुक ख्वोले-दिखलाये यहाँ बी तो होता है दिल शाद, वले टुक हाँ-नाँ; म्याँने म्याँ अछे तो भोत सवाद। आशिक़ कूँ तपाना माशूक़ का काम है, अपस कूँ छुपाना माशूक़ का काम है। जाँ माशूक़ का काम नाज़ है, वाँ आशिक़ गुदाज़ है। बाज़े कते हैं के ख़ुदा की ज़ात बग़ैरा जिस शै का तलब है, वो तलबी च दीदार का हायल है। इस

महरम-ज्ञाता
राज़-रहस्य
लताफ़त-परिमार्जन, आनन्द
ख़ाला-मौसी
बख़्त-भाग्य
तख़्त-सिंहासन
धन-स्त्री
आबिद-उपासक (इबादत-

† रम्ज़-भेद
मार्के-संघर्ष
ख़ास्त-इच्छा, लालसा
बलन्द-ऊँचा, उन्नत
पश्त-नीचा, अवनत, उदास
वले-लेकिन
गुदाज़-घुलना
दीदार-दर्शन

जाँ-जहाँ
वाँ-वहाँ
चौंधर-चारों तरफ़
काँ-कहाँ
तपा कर-सता कर

बात पर आशिक़ होर आरिफ़ क़ायल है। अगर दिल ते तलब तमाम जावे, तो जाँ नज़र सटे याँ ख़ुदा च दिस आवे। एक दिल उसमें एता कुछ, इतने पर जो ख़ुदा कूँ मँगता वो बड़ा ही च। जिस दिल में आया यार, उस दिल में अपस कूँ बी नईं टार। जाँ अपै नईं माता, याँ दुसरा क्यों समाता? जिसमें सलूक, वही च सालिक, नईं तो 'मुंज़ब्जबीन बैना ज़ालिक।' उसे च आशिक़ाँ दीन-दुनिया ते गुज़रते हैं, जूं आशिक़ी करने का शर्त त्यूँ आशिक़ी करते हैं। अमा, दुनिया उसे कतै हैं, के बेइज़्ज़ती होर ख़ारी सूँ हासिल होवे। सिफ़लगी होर शर्मसारी सूँ हासिल होवे। आदम ज़ात कूँ दुनिया मतलूब है, वले बेमिन्नत आए तो भोत ख़ूब है। जिनों ने कुछ समज कर बेमिन्नत दिये हैं, वो देना याँ पाक है। आरिफ़ाँ ने क़बूल किये हैं। बाज़े कतै हैं के हज़रत का हदीस है यहाँ समझे क्या के 'रायतारब्बी फ़ी सूरते अमरदी' याने अमरद उस सूरत में देखा हूँ ख़ुदा का तजल्लियात यू समझना भोत मुश्किल, भोत नाज़ुक है बात। ज कुछ दिसता है होर ज कुछ सुनते हैं, उसे तो सब नावँ है। यू तो सब सिफ़त: अताल ज़ात किसे कहना, ज़ात कूँ गत। यहाँ की सिफ़ाती च में ज़ात है। यहाँ एक बात है; बल्के बात में बात है। यू तो हम दोस्त हुआ, हमा ओस्त हुआ। जिते इस शनास के प्याले सूँ मिलते हैं, उनो सब यूँ च कतै हैं; इस टार ख़ूब बिचार। फ़ारसी के वासिलाँ, फ़ारसी साहब-दिलाँ, इनो बी यू मख़फ़ी असरार, यूँ किए हैं इज़हार—

फर्द

ग़ैरतश ग़ैर दर जहाँ न गुज़ाश्त
ला जरम ऐन जुमला अशया शुद

होर वासिले हक़ आशिक़-मुतलक़ गुजराती शाहअली ख़ुदा के लाडिले, ख़ुदा के ख़ासे, ख़ुदा के वली, दायम ख़ुदा सूँ मिल रहे उनों बी यूँ इ च कहे—

हत माले चड चड कहूँ सभी सभी
सब वो है सब वही वही

हायल-बाधक
आरिफ़-ज्ञाता (इरफ़ान-आरिफ)
अमा-लेकिन, सम्बोधन करने के लिए एक शब्द।
ख़ारी-अपमान
सिफ़्लगी-कमीनापन
मतलूब-अपेक्षित(तलब-मतलूब)
†अमरद-कुमार (जिसे अभी दाढ़ी मूछ नहीं निकली)
अताल-तत्काल, अब
हमा ओस्त-सब कुछ
शनास-परिचय
मख़फ़ी गुप्त, रहस्य
इज़हार-प्रकट
यूँ च-यों ही
हत-सात
माले-छत

१ संसार में भगवान से किसी चीज़ का परायापन नहीं है। सब वस्तुएं उसी की है।

अव्वल जो सब जागा खुदा च था होर कई कुछ न था। तो यू सब काँते आया। जानहारा जानता है, जाँ ते आया। पानी ते मोती घड्या। मोती बी पानी च है वले सूरत में फ़र्क़ पड्या। यू मोती, वो पानी कहवाया। इस पानी होर इस मोती कूँ जिने समज्या सो ग्यानी कहवाया। बाज़े सिफ़ताँ कूँ ऐन ज़ात कतै हैं। बाज़े ना ज़ात, ना खारिज ज़ात, यू बात कतै हैं। कुल एक वजूद। है हिर्स, मरातिब होर माल ते जुदाई पड़ी। बेगानगी म्याँने आकर खड़ी। यू बी एक इस बात की बुद—

आँकस के ना मा बुवद व शुमा मा व शुमा शुद—यू मेरा व तेरा हुआ। म्याँने म्यान कूँची पडी, घर कूँ जाने फेरा हुआ। अगर यूँ मेरा होर तेरा म्याँने म्याँ ते जावे तो बेगानगी जाकर तमाम एगानगी आवे। सब नेकी च हो दिसे। सब एकी च हो दिसे। दरिया मेनी क़तरा भार पड्या तो क़तरा हुआ, नई तो क़तरा आपी दरिया च था। दरिया कू बी इश्क़ का तूफ़ान चड्या नई तो दरिया बी जैसे का वैसा च था।[1] "अल आन कमा कान" ज़ात ते सिफ़ात है, सिफ़ात ते ज़ात है। ज़ात होर सिफ़ात नावें होवे। एक-दो ठावें होवे। फ़र्क़ मरातिब हुआ ज़हूर बात में; अफूँ बी माना है इस बात में। सिफ़ात खारिज ज़ात नई च। इस बात पर सब क़ायल हैं। यहाँ बात नई च। बात बी क्या ग़ैर जात है? यू क्या बात है? इस बात ते पैलाड़ 'बेचूँ बेचुगूँ।' वाँ क्या देखेगा चग होर चूँ? वाँ सब खाली होर लबालब है, वाँ कुछ नई होर सब है। वाँ कुछ नई होर सब वा ते आता, जाँ कुछ नई, वाँ क्यूँ कोई जाता? इस कुछ नई में सब कुछ, अगर ग्यान है तो समझ अब कुछ। जाँ कुछ नई, वो के नूर का रंग काला। उस काले में कौन देखता उजाला? फ़ना हुए बाज वहाँ रह्या न जाय, यू बात किसे कह्या न जाए, मूरक क्या समझेगा मत? बमानी फ़ना होना है ना बसूरत। दोनों जहान ते गुज़रना तो इस टार आशनाई करना। खुदा के ज़ात बग़ैर बी किस पर नज़र ना अछना। अपस की अपस कूँ खबर न अछना। अपस ते बेखबर उसते बाखबर, लाज़िम यूँ आता है आशिक़ पर। हज़रत कू जिस रात मेराज की बड़ाई दी, खुदा कूँ देखे बग़ैर किस पर नज़र नई किये। जिस सूँ लग्या काम, उसका च अछना फ़ाम, यूँ फ़ाम था तो यू बड़ाई पाये।

हिर्स-ईर्ष्या
मरातिब-मर्तबा का ब. व.
क़तरा-बूँद, बिन्दु
बेचूँ बेचुगूँ-निरुपम
चरा चूँ-ननु न च, दुविधा
फ़ना-नाश
बाज-बिना
आशनाई-मित्रता, प्यार
मेराज-जिस रोज हज़र मुह-

† म्मद को ईश्वर का दर्शन हुआ। * पैलाड़-दूसरा छोर, उस तरफ, दूर

फ़ाम-बुद्धि
वा-वहा
जा-जहाँ
यू बी यह भी
चड्या-चढा
वैसा च-वैसा ही
अफूँ-अब भी, आज भी
नई च-नहीं ही
बी-भी *

१ जैसा पहले था वैसा ही अब भी है

यू फ़ाम था इस हद लगन आये, यू फ़ाम था तो हबीब कहवाये। यू फ़ाम था तो ख़ुदा कूँ भाये। रसूल हुए, क़बूल हुए। साहब, "मौ ज़ाग़ल बसर व मा तग़ा" साहब वो "मौ यन्तिकु" "अनिल हवा" याने किसी बात में अपस कूँ म्याँने म्याँ नईं ल्याया, वही बोल्या ज कुछ ख़ुदा ने फ़रमाया। रसूल इसी च ते नावँ दिया। रब्बुल-आलमीन ख़ुदा के अम्र-अमानत में अपने नफ़्स कूँ दख़्ल नईं दिया। ज कुछ ख़ुदा ने कह्या सो किया।

बैत—

जिसे है अक़्ल वो हर बात कूँ संभाल कहे
जो सौ बरस कूँ होवेगा सो वो अताल कहे

करामत कतै सो अक़्ल तमाम, ज कुछ दुनिया में हुआ सो सब अक़्ल का काम। अक़्ल ते हुआ हलाल होर हराम। अक़्ल ते पकड्या फ़र्क़ ख़ास होर आम। अक़्ल ते रखे हरेक का नाम, नईं तो काँ था सुआ होर शाम? शीशा होर जाम, पिस्ता-बादाम, सैयाद और दाम, साहब और ग़ुलाम। यू कुछ अजब नक़ल है, ग़र्ज़ ज कुछ है सो अक़्ल है। सो उस अक़्ल बादशाह कूँ, आलम-पनाह कूँ, जिल्लिलाह कूँ, साहब-सिपाह कूँ, एक फ़र्ज़न्दा अथा के उसका जोड़ा दुनिया में कईं ना था। वासिल-कामिल, आशिक़-आक़िल, आलिम-आमिल, नॉवें उसका दिल, दानिश-मन्दी, तर्कशबन्दी, क़बूल सूरती, दिलावरी, सब आलम ते उसे हासिल।

फ़र्द—

करे नित दिल पै नाज़िश अक़्ल जैसा
के फ़र्ज़न्द नईं किसी दुनिया में ऐसा

तख़्त-ताज का लायक़, सब पर फ़ायक़, बात में क़ाबिल, सबमें फ़ाज़िल। सो एक दीस उस अक़्ल बादशाह, आलम पनाह, जिल्लिल्लाह, साहब-सिपाह,

---

हबीब-प्रिय
रब्बुल आलमीन-विश्वम्भर
अम्र-आदेश
नफ़्स-इच्छा, लालसा
हलाल-ग्राह्य
हराम-त्याज्य
सैयाद-शिकारी
दाम-जाला
नक़ल-कहावत, कहानी §

§ आलमपनाह-संसार का आश्रय
जिल्लिल्लाह-जिस पर ईश्वर की छाया हो, न्यायी राजा
फ़र्ज़न्द-पुत्र
आलिम-विद्वान् (इल्म-आलिम)
आमिल-आचरण करने वाला (अमल-आमिल)
नाजिश-नाज करने वाला
फ़ायक़-श्रेष्ठ †

† फ़ाजिल-योग्य
अथा-था
दीस-दिन

१ न आँखें चौंधयाई और न उन्हों-ने देखने से अस्वीकार किया।
२ वे अपनी इच्छा से कोई बात नही बोलते।

हक़ीक़त-आगाह के दिल पर कुछ आया। अपना अँदेशा अपसकूँ भाया। सो उस दिल शाहज़ादे कूँ, उस माहज़ादे कूँ, उस मुस्तग़नी कूँ, उस सब इल्माँ के धनी कूँ, तन के मुल्क की बादशाही दिया। तन के मुल्क का बादशाह किया। सरफ़राज़ किया, मुमताज़ किया।

बैत--

अक़्ल दिल कूँ दिया है बादशाही
अक़्ल दिल कूँ दिया आलमपनाही

सिर छतर छाया, तख़्त बैसलाया, दिल बादशाह के हात में तन का मुल्क आया। ठारे ठार, कूँचा-कूँचा, बाज़ार-बाज़ार अपनी दराही फिराया। तन दिल का फ़रमाबरदार, ज्यूँ नफ़र ख़िदमतगार।

बैत—

ख़बर दिली च कूँ मालूम हर एक मंज़िल का
फ़क़ीर तन यू बिचारा मुती है दिल का

जिधर जिधर दिल जाता, दिल के पीछे तन पै आता। नवे नवे क़ानून धरने लग्या, दिल तन के मुल्क की बादशाही करने लग्या। दिल जान; दिल आशिक़ दिल कूँ शराब का भोत ध्यान, चतर सुघड़ दिल; शराब बग़ैर नईं रैता यक तिल शराब उसे भोत भाया था, शराब पीना उसे आया था। बादशाहाँ कूँ सई करना वाजिब है। अद्‌ल-इन्साफ़ पर बादशाहाँ कूँ शराब पीने का क्या डर? बादशाह कूँ अद्‌ल-इन्साफ़ बग़ैर होर कुछ पूछ पछार ना होसी, बादशाह शराब पिया तो गुनह गार ना होसी। बादशाहाँ कूँ ख़ुदा ने प्यार कर ली कुछ दिया है। दुनिया का सबाद बादशाहाँ ख़ातिर पैदा किया है। बादशाहाँ दुनिया का सबाद छोड़ने पर आये पीछे दुनिया में क्या रहा जाये, दूसर्यां कूँ दुनिया क्यूँ भाये? दुनिया कूँ लोकाँ मँगते हैं, सो दुनिया का ज़ौक़ करने ख़ातिर, न झिझक कर हसरत सूँ मरने ख़ातिर, बादशाहाँ

माहज़ादा-चाँद का बेटा
मुस्तग़नी-निरपेक्ष
नफ़र-परिचारक
मुती-आज्ञापालक (एताअत-मुती)
सई-कोशिश
मुमताज़-प्रतिष्ठित (इम्तियाज़-मुमताज़)
ठारेठार-जगह जगह
कूँचा गली
दराही-टोंडी (दर-घंटी)
दिली च-दिल ही
लग्या-लगा
रैता-रहता
तिल-क्षण
पूछ पछार पूछताछ
होसी-होगा
दुसर्यां कूँ-दूसरों को

ने दुनिया का हज़ छोड़े, ख़ल्क़ का दिल तोड़े। ख़ल्क़ आज़ुर्दा हुआ, दिल पज़मुर्दा हुआ। ख़ल्क़ में ते गर्मी गई, ख़ल्क़ अफ़सुर्दा हुआ। बादशाह खुशी पर आये तो ख़ल्क़ कूँ बी खुशी भाये। हरेक कोई दो प्याले पिया, बादशाह कूँ दुआ दिया। दो दीस की दुनिया, महज़ूज़ हो जिया। जान ताज़ा, ईमान ताज़ा। ईमान ताज़ा तो सब जहान ताज़ा। बादशाहाँ के दिल पर अछता है के अपस के दौर के लोकाँ अपस ते खुशहाल अछें। अपस कूँ भोत मँगे, अपने फ़िदा होवे। हरेक टार रखवाल अछे। अपना दिल शाद करें। अपस कूँ दायम याद करें के हमारा बादशाह ऐसा है। जैसी तारीफ़ करेंगे, उस तारीफ़ जैसा है। ता दौरे क़यामत अपने दौर कुछ बात होना। अंग के लोकाँ जो कोई सुने तो शहमात होना। शराब सब कैफ़ाँ का पादशाह कैफ़, जाँ आशिक़ होर माशूक़ अछे वहाँ शराब ना अछे तो बडा हैफ़। ज्यूँ नमक नईं सूं खाना, बेनमक खाते आदमी नईं, क्या सवाद पाना ? ज्यूँ जोत नईं सो घर, ज्यूँ मिठाई नईं सो शकर, ज्यूँ माना नईं सो बात, ज्यूँ सखावत नईं सो हात, ज्यूँ पानी नईं सो लहवा, जूँ सब्ज़ा नईं सो हवा, जूँ हुस्न नईं सो नार, काजल नईं सो सिंगार। दीवे में बत्ती नईं सो उजाला क्यों पड़ेगा ? शराब में मस्ती नईं वो शराब क्यूँ चढ़ेगा ? जिस काम में नीयत साबित नईं, वो काम जस क्या देगा ? दिल में तक्वा च ना अछे तो मशक्क़त क्या देगा ? पानी नईं सो चश्मे पर गये तो क्या प्यास जाती है ? हज़ार कैफ़ ग्वाये तो क्या शराब की कैफ़ आती है। यू बात खुदा जानता है। अपै आप: आशिकाँ कूँ शराब मना करना बड़ा पाप। आशिक़ मुफ़लिस, आशिक़ का ज़खीरा सो यू है, आशिक़ में गुनाह कबीरा सो यू है। आशिकाँ कूँ शराब पिलाना आशिक़ का धरम है। यहाँ इश्क़ है, आशिक़ का आशिक़ पर करम है। आशिक़ होर दिल सख़्त ! यू तो अजब तमाशे का है वक्त !! आशिक़ का दिल नर्म अछना, आशिक़ का आशिक़ पर करम अछना। अगर आशिक़ को आशिक न पछाने तो बेदर्द बिचारा क्या जाने ? यहाँ जानता फूल मारता तो पुकारे, अनजानता पथरे मार्या तो दम नईं मारते। जैसी-तैसी ज़ाहिरी ज़ोर है, अनजानते का इलाज कुछ और है ! ज्यूँ फ़ारसी में बोल्या है के—

हज़-स्वाद
पज़मुर्दा-कुम्हलाना, मुरझाना
अफ़सुर्दा-उदास
महज़ूज़-प्रसन्न
दायम-हमेशा
ता दौरे क़यामत-प्रलय के आगमन तक §
§ शहमात-पराजित
कैफ़-नशा, खुमारी
हैफ़-अफ़सोस
सखावत-उदारता
लहवा-तलवार, शस्त्र
सब्ज़ा-हरियाली
तक्वा-धैर्य §
§ मुफ़लिस-अकिंचन, दरिद्र (इफ़लास-मुफ़लिस)
ज़खीरा-पूँजी
कबीरा-बड़ा
करम-दया
दीस-दिवस, दिन

"गैर न बूदी चोबे तर फ़रमा न बदें गाव ख़र"

शराब माशूक़ का मुशाता। एक हुस्न कूँ सौ हुस्न कर दिखलाता। मुहब्बत कूँ बढ़ाता। ज कोई आशिक़ है, उसे शराब भोत भाता। शराब आशिक़ होर माशूक़ के दिल का शक दूर करता। शराब दोनो कूँ मुहब्बत में चूर करता। शराब पिये पीछे दिल में कुछ खिलाफ़ नईं अछता। शराब पीये बग़ैर दिल साफ़ नईं अछता। दुनिया का लज्ज़त तो शराब, शराब ना अछे तो आशिक़ों के लेके दुनिया सब ख़राब। शराब हर्गिज़ ग़म कूँ आने नईं देता। शराब खुशी कूँ दिल में ते जाने नईं देता। शराब इशरत का मेंगाती: जो शराब वहो इशरत आती। दिल की तारीकी जाती। दिल पकड़ता सफ़ा, शराब पीये तो आशिक़ कूँ भोत नफ़ा। जिस घर में शराब आवे, उस घर मे मुहनत क्यूँ रहने पावे? अगर मेंगता है ग़म कूँ मारने तो शराब पी। अगर मेंगता है जफ़ा तेरे अंग हारे तो शराब पी। अगर मेंगता है सख़ावत पर आने तो शराब पी। अगर मेंगता है रन मे घोड़ा भाने तो शराब पी। अगर मेंगता है माशूक़ सूं हज़ पाने तो शराब पी। अगर मेंगता है हुस्न का नज़्ज़ारा करे तो शराब पी। अगर मेंगता है दिल मे मुहब्बत भरे तो शराब पी। अगर मेंगता है ऊँचा चड़ने तो शराब पी। अगर मेंगता है ख़ुदा कूँ अपडने तो शराब पी। बाज़े वलियाँ ने शराब नोश किये हैं, यू तेजाबा नोश किये हैं। शराब मुरक्कब है मुहब्बत के बाट का, शराब हादी है इस बाट का। शराब आगइश बज़्म बादशाही, शराब असगर खिल्वत खाना-इलाही। ऐन खुशी में उसे बिसरता की? अमल बुरे नकी कर, डरता की? जहाँ खूब वस्त है, वहा अलबत्ता मना करते हैं। कम हौसल्याँ कूँ डराने के यू बदनीयत धरते है। अगर पाक हुआ है तेरा दिल व जान और तू बी आशिक़ है तो आशिक़ को पछान। शराब कूँ अताल हराम कते हैं सख़्त; वले हलाल था ईसा पैग़ंबर के वक्त। इते शराब की मनाई, आख़िर यही फ़ैल पर बात

मुशाता-दुलहन का सजाने वाली (औरत, नाइन)
इशरत-प्रसन्नता
तारीकी-अंधकार
सफ़ा-पवित्र
जफ़ा-जुल्म, कष्ट
हज लज़्ज़त, आनन्द
तेज़ाबा-शराब
नोश-पीना
मुरक्कब-मिश्रित
हादी-उपदेशक §
आगइश-शोभादायक
बज़्म-सभा
असगर-भेंट
खिल्वत-एकान्त
खाना-घर
इलाही-ईश्वरीय
फ़ैल-काम
लेके-लिए
अंगे-आगे, सामुन
भाने-बढ़ाने, बढ़ाने †
चड़ाने-चढ़ाने
अपडना-प्राप्त करना
बाट-रास्ता
की-क्यों, क्या, प्रश्नवाचक
बस्त-वस्तु

१ अगर भीगी लकड़ी न हो तो गाय और गधा आज्ञा पालन नहीं करते।

आई। बुरा फ़ेल मना है, ना के शराब। आरिफ़ाँ सो जहल मना है, ना के शराब। शराब ना पीकर जो बुरे फ़ेल करते, वाँ नईं डरते।

बैत—

अंज़ हसद इमरोज़ ज़ाहद मी कुनद मनै शराब
वर्ना कै ईं मुसलमानाँ रा ग़म फ़रदाये मास्त

आलम ख़ारिज शराब हज़ार गुना करता, ज्यूँ जीव को भाता; वहाँ कोई मना करने नईं आता, वहाँ क्यूँ चुप रह्या जाता। क्या तमाम ताक़ीद शराब पर ई च आया है; बाक़ी गुनाह सब बख़्शे कर कोई लिख लाया है? सवाद के गुनाह सब अपी च करना। दूसर्यों कूँ डराना, होर अपने ना डरना। ख़ुदा ने बख़्शना किया कर, ख़ुदा के फ़र्मूदे में एते मकर। दो दीस की दुनिया; कोई केता जोड़ेगा? गुनाह करने को नईं छोड़ते, सो सवाब करने कूँ छोड़ेगा? लोकाँ लोकाँ के माल पर होर जीव पर खड़े हैं। शराब ने क्या किया? शराब के दुम्बाल की पड़े हैं? आपै पीना, दुसर्यां कूँ मना करना यों इन्साफ़ है। ख़ुदा कूँ ना बिसरना, अपने गुनाह अपसकूँ अछ्ना फ़ाम। दुसर्यों के गुनाह सूँ किसे क्या काम? दुसरे की तक़सीर का हुज्जत अपस पर ना आसी। किसी के गुनाह ख़ातिर किसी कूँ दोज़ख में ना भासी। हर कोई अपना सवाब होर गुनाह पहचानता है। अपना जवाब अपै दे जानता है। अगर कोई दोज़ख़ी अछो वगर कोई बहिश्ती तुझे क्या काम आयेगी किसी की ख़ूबी, किसी की ज़िश्ती? तुजे काहे कूँ दुसरे की ज़िक्र, तूँ कुछ अपने आक़िबत की कर फ़िक्र। ग़र्ज़ आदमी में जहल ना अछ्ना। आदमी में बुरा फ़ेल ना अछ्ना, सुराही के गर्दन पर गुनाह का भार ना धरना। आदमी अपै बुरा अछे तो शराब ने किया करना। अगर कोई पूछे के शराब कैसा है, तू बोल के जैसे सू वैसा है। यू बोल यों क्यूँ रहता है पर ज्यूँ फ़ारसी में कहता है—

मिसरा—**अंज़ शीशा हमूँ बुरूँ तुरा ओ के दरदस्त**

केता कहना दुरा दुरा। ख़ूब सूँ ख़ूब, बुरे सूँ बुरा। आपै बुरे और करते बुरे काम, म्याँने

जहल-क्रोध	केता-कितना	१ परहेज़गार आज केवल ईर्ष्या
ताकीद-रोक-थाम	दुम्बाल-पीछे	के कारण शराब पीने से मना
हुज्जत-तर्क	आसी-आएगा	करता है, अन्यथा कल प्रलय के
दोज़खी-नारकी	भासी-बहायेगा, डालेगा	बाद जो न्याय-दिवस में मुसल-
बहिश्ती-स्वर्गगामी	जैसे सूँ-जैसे से	मानों पर गुज़रेगी उसका दु ख
जिश्ती-बुराई	दुराना-छिपाना	उन्हें क्यों है।
आक़िबत-मृत्यु के बाद का, अन्तिम परिणाम	म्याँने म्यां-बीच में	२ जो हाथ से बाहर निकलता है, अन्दर भी वही है।

म्याँ बिचारा शराब बदनाम। होर बहाना किया के शराब पिये तो यूँ होता। यूँ तलखाब पिये तो यूँ होता। शराब पर हज़ार हज़ार तुहमत करते। अपने बुरे फ़ेल कूँ सो बिसरते। अगर कोई खूब समजे तो उस सूँ बात किया जाये। एक बात कूँ सौ धात किया जाये। शराब के मना करने में एक रम्ज़ है, बल्कि एक ग़र्ज़ है। अगर कोई पावे यू बात किसे समजाने की नई, मगर खुदा समजावे। अगर दाना दरिया दिल पाक कर पीवे शराब तो नादान बी देखा देखी पीकर अपस कूँ, आलम कूँ करे खराब। शराब तो खूब है। वले सत में उसे बुरा बोल को डराते, मना करते, हराम कते, तोबा कराते।

बैत—

मै के[1] बदनाम कुनद अहले खिरद का ग़लत अस्त
बल्के मै मीशवद अज़ सुहबते नादाँ बदनाम

आम-खास पर मना का हुक्म आया। यू आलम जानता है। पीछें ज कोई गज़ जानता है, अम्र पछानता सो पछानता है। अगर उसमें कुछ खुदा का राज़ ना अछता तो अहल-राज़ उस पर मायल ना होते। अगर इस राज़ कूँ ना समझ कर यू काम करते तो कामिल ना होते। अगर किस इन्सान में कुछ फ़ाम है, तो दिल पाक करना बड़ा काम है। खुदा मना किया सो बुरे फ़ेलों च खातिर। इस नामाकूलों के जहलों च खातिर, नई तो कामिलों के अंग यू बी एक अर्क़ है, अर्क़ होर उसमें क्या फ़र्क़ है। दरिया एक बूँद ते आलायश नई पाता। वले दरिया तैरना किसे आता। जाहिल सूँ एक बात आरिफ़ बोलेगा तो वो बोलेगा दस। शराब पिये, गुनाह किये, खुदा बख़्शेगा, वले तो बस। नई तो इस हलाल कूँ हराम नई करते। आरिफ़ाँ हर्गिज़ ऐसा काम न करते। अक़ीम हलाल, होर शराब हराम, यू क्या आरिफ़ाँ का है काम? ममलहत है कुछ इसमें, वही च समजे समज है कुछ जिसमें। तमाम मस्ती कूँ हराम किये हैं, क्या जाने क्या फ़ाम किये हैं?

बैत—

नामकूल[2] ऐ ज़ाहिद मनै शराबत अज़ कुजास्त
आँचे गन्दुम कर्द बा आदम शराबत आँ न कर्द

तलखाब-शराब
रम्ज़-राज़
अहल-राज़; भेद के जानने वाले
मायल-इच्छुक
फ़ाम-समझ (फ़हम)
आलायश-मैलकुचैल, गंदी चीजें

सौ भात-सौ प्रकार, भात-भाँति
जहलों-जहज (क्रोध) का ब. व.

१ शराब को बदनाम करना अनुचित है, शराब नादान लोगों की संगत से बदनाम हुई है।
२ हे मूर्ख परहेज़गार, शराब पीना मना किया गया है। गेहूँ ने तो (आदम) को स्वर्ग से निकाल दिया किन्तु शराब पीने का ऐसा परिणाम कब निकलता है।

यूँ कहे तो अन मस्ती है, ज़ोर किये तो तन मस्ती है। इश्क़ कुव्वत पकड़ता तो मन मस्ती, खुदा कुछ दिया तो धन मस्ती है। शराब की मस्ती कूँ किये मना। इस मस्तियाँ कूँ क्या कना? यूँ ना जैद बोल्या है ना उमर, मुत्तज़ा अलै सलाम का क़ौल है के "मुकुल हुकूमत अफ़ज़ल मिन मुकुल खमर" याने हुकूमत की मस्ती शराब की मस्ती तें ज्यास्त है। यू बड्यां का कौल है। अलहक़ रास्त है। यहाँ चुप रहना, किसे कुछ नईं कहना। किधर की भी बात बुरे फ़ल ई च पर आती। बदनीयती होर जहली च पर आती। बुरा फ़ल हराम है, बाकी सब हलाल। खाना पीना, आनन्द करना, महजूज़ अछना; नेकी कूँ हर्गिज़ नईं जवाल। अगर चे बहस्बे जाहिरी शराब पीना मना है, वले, गुनाह कूँ भी खुदा की बख़्शीश का पनाह है। खुदा का नाँव ग़फ़्फ़ार हे। ग़फ़्फ़ार का क्या माना? गुनाह ना बख़्शे तो ग़फ़्फ़ार क्यूँ कहवाना? बोली च है के बन्दा गुनहगार, खुदा बख़्शनहार। वले आशिक़ाँ ने यू गुनाह अख़्तियार किये हैं। उस गुनाह कूँ भोत प्यार किये हैं। आशिक़ाँ कूँ खुदा पर जो इतना पतियारा है, यू माकूल गुनाह खुदा बख़्शनहार है। नापाकाँ के कने शराब जाता तो नापाक होता है। पाकाँ कने जाता है तो पाक होता है। शराब भोत बुरी वस्त, पत्थर पर कोई सटेगा तो पत्थर होवेगा मस्त। बख़ाक होना तो यू आग पीना, इस काम कूँ फ़ौलाद का होना। सैना अपने फ़ले बद कूँ, नईं कर सकते मना। शराब कूँ बुरा किया खातिर कना। मर्द होना जो इसे हज़्म करे। इस सूँ बज़्म करे, ज कोई पाक पूरा होना उसे यूँ च शराब शराब न तुहूरा होना। दाना कूँ या क्या चारा? नादान की समझ मे है अन्धारा। समजा सो पाया। नईं समजा सो गँवाया। ज कोई इस शराब की मस्ती नईं समज्या सो इस शराब की मस्ती क्या जाने? जे कोई इस शराब का भेद नईं पाया सो उस शराब कूँ क्या पछाने? शराब कूँ अपे पीना ना यूँ अछना के शराब अपस कूँ पीवे। जो शराब अपस कूँ पीवे, जो शराब उसे पीया खराब किया तो यूँ क्यूँ जीवे? घोंस आग खाने जाये तो जलना, मछली खुश्की पर पड़े तो तलमलना! चिमटी हस्ती का भार उछा सकती है? टिटरी बद्दरी का ज़ोर ल्या सकती है, कंकर डूँगर की बराबरी करेगा? तारा चंद सूँ

जैद-अमुक, अ व क अमुक अमुक
मुत्तज़ा-हजरत अली की उपाधि
अलैस्लाम-उन का कल्याण हो
क़ौल-कथन
अलहक-सत्य
महजूज़ आनन्दित
जवाल अवनति
बहरे जाहिर-नियमानुसार सामाजिक दृष्टि से
§ ग़फ़्फ़ार-क्षमाशील
बख़ाक-भस्मसात
तुहूरा-पवित्र
बहरी-बाज की तरह पक्षियों को खानेवाला चील जैसा पक्षी
बड्यां-बड़ा का ब. व.
फ़ल ई च-फ़ल ही
नापाकाँ-नापाक का ब. व.
† कने-पास
बस्त-वस्तु
सटना-डालना, फेंकना, गिरना
सैना-सहना
डूँगर-पहाड़
१ शराब के नशे से हुकूमत का अधिक नशा होता है।

हम भरेगा ? दीवा आफ़ताब के सन्मुख आयेगा, शराब शोले पर मूँ भायेगा ? शराब पर हर कोई हम नईं भाता, शराब पीना सब किसे नईं आता ? शराब हुस्न का ज़रीना है, मैखाना इश्क़ का मदीना है। आशिक़ की इबादत हुस्न देखना, राग सुनना, शराब पीना है। आशिक़ जे कुछ मैखाने में पाया सो काबे में ज़ाहिद के हात नईं आया। आशिक़ी मुसाहिबत होर यारी इबादत, बन्दगी और खिदमतगारी। महबूबाँ हैं सो साहब की गोद में सोते, चाकराँ सो हात जोड़ कर खड़े होते। नफ़र जेता बड़ा हुआ बेमहबूबी का नाज़ कुछ होर है। यू राज़ कुछ और है। सर पछाड़ लेते हैं, तो बी क्या कुछ किसे देते हैं ? केतक महबूब ऐसे हैं, मतलूब ऐसे हैं, जो दिये बी नईं लेते हैं। बरदर होर दरबर। यों आसमान ज़मीन का अन्तर। यू हरेक मरातिब का है मक़ाम, इस मरातिब के आदमी कूँ उस मरातिब का क्या है फ़ाम ? हरेक कोई अपने मरातिब कूँ खूबी च कर जानता। दुसरे के मरातिब कूँ एकाएक नईं मानता। यू ज़ाहिर का मरातिब नईं। ज कोई दमामा बजाय, बातिन की बुज़ुर्गी नादाँ कूँ क्यूँ देखा जाय ? आशिक़ होर आबिद का मरातिब दिसना क़यामत पर मोकूफ़ हुआ है। अभूँ बात परदे में है। रिवायत पर मोकूफ़ हुआ है। आशिक़ के मरातिब पर कौन खड़ा, आशिक़ का मरातिब सब मरातिब सें बड़ा ! आशिकाँ यू शराब भोत फ़ाम सूँ पीते हैं, भोत अहतराम सूँ पीते हैं। ज्यूँ शीशा हल्क़ लगन पेट में शराब भरता, बले बदमस्ती नईं करता। ज्यूँ प्याला दुसर्यां कूँ चड़ता, बले अपे बदमस्त हो नईं पड़ता। ज्यूँ खुम लबालब शराब सूँ भर्या है, होर मस्ती कम। शराब पीओगे इस बज़ा. तो शराब पीने का पाओगे मज़ा। बारे, ज्यूँ हक़ीक़त कों शराब में ते मन्सूर एक क़तरा पीकर 'अनलहक़' कहवाया। बाज्यों ने खुमों खाली किये। बले, राज़ कोई भार नईं भाया। जिने यू प्याला पिया उने यू अमगर छुपाया। मुहम्मद कूँ क्या यू प्याला नईं आया ? मुहम्मद दरिया था, मुहम्मद में समाया। इतना च इशारा दिखलाया। 'अना अहमद बिला मीम' यू बात आशिकाँ में चलाई, यू अमगर है क़दीम। याने अहमद ते जो मीम गया तो अहद हुआ, पाक हुआ, समद

ज़रीना-स्वर्णिम, शोभादायक §बातिन-गुप्त हम-बराबर
मैखाना-मधुशाला आबिद-उपासक/इबादत-आबिद) जेता-जितना
मदीना-शहर अहतराम-सम्मान होर-और
ज़ाहिद-वीतराग, परहेज़गार खुम-शीशा केतक-कितने
नफ़र-परिचारक, नौकर अनलहक़-सोहम भार-बाहर
मतलूब-वाञ्छनीय, प्रिय अना-मैं भाना-डालना
(तलब-मतलूब) बिला-बिना
बरदर-दरवाज़े पर समद-पवित्र
दरबर-बगल में §

हुआ। यू राज़ की बात जो मुर्त्तज़ा अली कुवे में सर भा कर बोले थे पिन्हानी, तो कते उस वक्त लहू हुआ था सब उस कुवे का पानी। यू सुभाव, यू गंभीरी उनी च को सुहावे। कमज़र्फ़ आदमी के हात ते यू काम क्यूँ हो आवे। यू हौसल तो उनो कूँ शाह-विलायत कतै हैं। बुज़ुर्गी उनो की वेनिहायत कतै हैं। जिन वली ने विलायत की तशरीफ़ पाया उसकी तशरीफ़ पर शाह विलायत का सिक्का आया। विलायत बग़ैर अज़ शाह विलायत किसे नईं आती? यू बुज़ुर्गी बात में नईं पड़ी। हर किसे दी नईं जाती।

अलक़िस्सा एक रात दिल बादशाह, आलमपनाह, जिल्लिल्लाह, साहब-सिपाह कमाँच, तम्बूर, क़ानून, ऊद मँगा कर मुतरिबाँ—ख़ुश सरूद—बुला कर डफ़, दायरा, चंग, रबाब सूं, वेहिजाब सूं दो चार प्याले शराब के पिया था। अरकान दौलत, नदीम, शायर, क़िस्साख़ाँ, शहनामख़ाँ, ख़ुशतबाँ, लतीफ़ागोयाँ, हाज़िर जवाबाँ, गुलरूयाँ, ख़ुशख़ोयाँ सब हाज़िर थे। मजलिस क्या था, जिसका राग इस्म है, वो इश्क़ का जिस्म है। इस जिस्म में इश्क़ का जान है। इस जान में सुभान है। इस ठार आशिक़ कूँ शक ल्याना काफ़िरी है, बेदर्दी, बेरहिशी, बदगोहरी है। इश्क़ की सूरत् वले पकड़ने गये तो हात में नईं आती। आशिक़ कूँ भोत भाती। दिल की अँखियाँ सू देखे तो देखी बी जाती। आशिक कूँ आग हो जाले, आशिक़ का दिल नर्म, यूँ तो बादे समूम भोत गर्म। राग में अजब है तासीर, आशिक़ के दिल कूँ यूँ लगता ज्यूँ तीर। बहते पानी कूँ खड़ा करे, उड़ते जनावर कूँ पाड़े, दाने कूँ दीवाना करे, हुशियार कूँ मस्त कर पछाड़े। राग होने च में आशिक ज़ार ज़ार रोता। बेअख़्तियार रोता। हाकाँ मार मार रोता, पुकार पुकार रोता। सीना फोड़, दिल कूँ आग लगाता। वले सुनते सुनते हर्गिज़ जीव नईं बहकता। दखेशाँ कूँ हाल आता है, हज़ार हज़ार दिल में ख़याल आता है।

मुर्त्तजा-अली की उपाधि
पिन्हानी-गुप्त
ज़र्फ़-हौसला, पात्र
शाह विलायत-अली की उपाधि
अज़-से
कमाँच, तम्बूर, क़ानून, ऊद, डफ़, दायरा, चंग, रबाब — बाजों के नाम
मुतरिबाँ-गाने वाले
ख़ुश सरूद-मधुर कंठ †
† अरकान-सदस्य, (रुक्न ब. व.)
नदीम-सामन्तवर्ग, परिचारकगण
ख़ुशतबाँ-विदूषक
गुलरूयाँ-प्रेमिका (पुष्पमुखी
ख़ुशख़ोयाँ-अच्छे स्वभाव वाले
इस्म-नाम
दरवेश-फ़क़ीर
भा कर-डाल कर
कते-कहते है
पाड़ना-गिराना
हाक-दहाड़, पुकार, हाक का ब. व. हाकाँ

बैत—

सरूद चीस्त के चन्दे फ़नूने इश्क़ दरूस्त
सरूद महरमे इश्क़ अस्त व इश्क़ महरम ऊस्त

बारे, इस वक्त यकायक ऐन मस्ती में, बादापरस्ती में, फ़राख़दस्ती में, इस कमाल हस्ती में, एक क़दीम, नदीम, भोत लताफ़त सूँ, भोत फ़साहत सूँ, भोत बलाग़त सूँ, बात का सरिश्ता काड़ कर एक ताज़े आब-हयात का क़िस्सा पड़या। वले पड़ते वक्त इस क़िस्से की मस्ती चड़ी सो अपै बी टुक गिर पड़या। दिल खोल्या, बात सुना था सो बोल्या। ज कोई यू ताज़ा आब-हयात पीवेगा सो दुसरा ख़िज़र होवेगा, इस जग में सदा जीवेगा। इस आब-हयात की एक बात है, यू नवा आब-हयात है। ज कोई धाया, हर्गिज़ ज़ोरॉ सूँ किने नईं पाया। यू ख़ुदा के है हात, इस आब-हयात का जीव है यू आब-हयात। आब हयात कूँ पीवेगा, वेहयात दुनिया में जीवना उसी च का है। ज कोई यू आब-हयात पिया नईं तो दुनिया में अबस आया। क्या लज़्ज़त देखा? कुछ नईं किया, अबस जिया। जिसके दिल में यूँ नईं तमा, क्या उसका जीवना—किस जीवने में जमा? जिसके आब-हयात सूँ तर होएँगे लब, हैरान होयेगा, तमाशा देखेगा अजब अजब। उन आब-हयात में इस आब-हयात का रख्या है लाज, नबी होर वली सब इस आब-हयात के मुहताज। इस आब-हयात की बात का असर भोत। वहाँ सूँ दिल बादशाह, आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह, साहब सिपाह के सर चड़या, दिल बादशाह इस आब-हयात की बात पर मुतलक़ आशिक़ हुआ—बेताब हो पड़या, काम ऐसा घड़या।

बैत—

नावँ सुनते च दिल हुआ बेताब
बास आने च में चड़या यू शराब

दिल भोती च तालिब हुआ, इश्तियाक़ ग़ालिब हुआ। बात सुनते इस हाल कूँ अँपड़या; आशिक़ था बिचारा, वेगी च सँपड़या। इस फ़िक्र तें घुट्या। बादशाही

फ़राख़दस्ती-खुले हाथ
फ़साहत-सरल शब्द
बलाग़त-कठिन शब्द
आबहयात अमृत
ख़िज़र-एक पैग़म्बर
वेहयात-बिना मृत्यु के
अबस-व्यर्थ (अबस अलिफ़ से नहीं ऐन से शुरू होता है)
तमा-लालसा
इश्तियाक़-शौक़
काढ़ना-निकालना
नवा-नया
धाना-दौड़ना
उसी च का-उसी का
सुनते च-सुनते ही
आने च-आते ही

१ राग में ऐसी कौन-सी चीज़ है कि जिस में प्रेम की इतनी विशेषताएँ व्यक्त होती हैं? राग प्रेम के रहस्य को समझता है और प्रेम राग के रहस्य को जानता है।

का सिक्का सट्या। आशिक़ था तमाम, आखिर इस हद लगन आया काम। बात सुनते हाल हुआ इस धात का, तासीर देखो इस आब-हयात का। दिल उस आब हयात कूँ मुतलक़ मँगता है। अलहक़ बरहक़ मँगता है। नावँ से असर चड़या। नईं तो चुप हलाक होना, किसे क्या पड़या। इस नाँवँ में एता ज़ोर है, तो दिल के दिल में यू सरशोर है। जीव कूँ मुहब्बत के रंग में रँगना तो कोई किसी कूँ मँगना। कोई कुछ बी लताफ़त धरता है, तो एकस के दिल में ठार करता है। पौलाद के टाँक्याँ सूँ तन अपना घड़या है, तो हर एक कोई उसे मँगता नईं, तो मँगन्या क्या मुफ्त पड़या है। यू बात खेल नईं, भोत मुश्किल। किसी में कुछ खूबी देखता है तो रीझता है दिल। नईं तो दिल जैसा दाना, दिल जैसा आक़िल होर यूँ होता दीवाना!

बैत—

हुआ दिल भोत अब बेदिल के मुश्किल वक़्त आया है
यू दिल लाने की जागा है अगर दिल, दिल लगाया है

ऐसी दीवानगी सूँ इस दिल कूँ क्या निस्बत? यही अपसकूँ सँभाल्या है। शाबाश रहमत। दिल में ते उठे जहाल, क्यूँ कर रखे सँभाल?

बैत—

आशिक़ है इसकूँ इश्क़ अपना है
इश्क़ जलना है इश्क़ तपना है

बिचारे आशिक़ का दिल बेग लग जाता है। आज़मा कर दिल लगाता, दग़ा खाता। आज़माने गये तो सबाद तुटता, लज्ज़त कम होता। नईं आज़माये तो यू बला आती, दिल दरहम होता। धारे, यू किसे है फ़ाम, आशिक़ पर सबूरी है हराम! सबूरी का नाँवँ लेते जीव जावे: आशिक ते सबूरी क्यूँ कर आवे। बेसबरी आशिक़ की सिफ़त, बेताबी आशिक की इज्ज़त। तलमलाना आशिक़ का काम। जलना आशिक़ का अहतराम। सादी ने बोल्या है, इश्क़ में ऐसी है चाल 'नै सब्र

अलहक़-सच है
बरहक-ठीक है
सरशोर-शोरगुल
रहमत-कृपा
दरहम-यम्र, खण्डित होना
सादी-फ़ारसी का प्रसिद्ध §

§ कवि शेख़ सादी

एता-इतना
एकस के-एक के
टाक्याँ-टाँका का ब. व.†

† जागा-जगह
क्यूँ कर-कैसे

१ प्रेमी के मन में न धैर्य रहता है और न छलनी में पानी।

दर दिले आशिक़ न आव दर ग़िरबाल । आशिक़ बेताब । बेआराम हुए तो खूब, आशिक़ टुक बी बदनाम हुए तो खूब । बदनामी ते इश्क़ में किचवाना ख़ामी है, यू बदनामी में आशिक़ की नेकनामी है । इश्क़ में बदनामी ज्यूं खाने में नमक, ज्यूँ दीवे में झमक, ज्यूँ महबूब में टुमक । इश्क़ का यही है निशान बिचार, जेता पिन्हाँ करने जाय, उतना होवे आशकार । सब का हाल ज़ाहर हो आया, कौन आशिक़ वो जो इश्क़ को छुपाया । खुसरो, शीरीं, फ़रहाद, यूसुफ़, जुलेखा, लेला, मजनूँ उनो का इश्क़ फ़ाश हुआ तो यू हिकायताँ चलियाँ आजूं । इश्क़ कूं कोई छिपा कर ठार्या है, आफ़ताब कूं कोई बगल में मार्या है ? आग में कोई बाँधा है घर ? ग़ोता मार कर कोन रहा दरिया भितर ? इश्क़ हर्गिज़ नई छुपता । छुपाने कतैं सो बाताँ हैं, हिकायताँ हैं, ख़ुराफ़ाताँ हैं । यू आग, इस आग कूं कोन दिल मे छुपाया है । आग कूँ दिल में छुपाने का इल्म किसे आया है ? आशिक़ का दीवाना होना च काम, पैलाड़ ज कुछ होवेगा, सो ख़ुदा कू च फ़ाम । आशिक़ जो जीव लगते वक्त अंदेशे पर आया, इश्क़ का लज्ज़त गँवाया । अंदेशा आशिक़ कूँ लहना नई, अताल बात कहना नई । इश्क़ में आया डर, पीछे लज्जत किधर ? अताल डरेगा क्या ? क्या बिचारा आशिकी करेगा ? जिसमें अछेगा यू फ़ाम, एक दिल करेगा क्यूं दो काम ? रन में घुसने पीछे लहवा और तेशा क्या ? आशिक़ हुए तो बी अंदेशा क्या ? अगर जीव ते डरता तो कौं इश्क़बाज़ी करता ? जो नईं डर, वो दिलबर, जो डर वो ख़तर । डर मे डर, बर में दिलबर । कौन ऐसा आशिक़ है ग़ाज़ी, हरेक का काम नईं जाँबाज़ी ! इश्क़ खेले नईं सो दीवाने, इश्क़ का खेल खेल कर जाने ।

अलक़िस्सा दिल पादशाह, आलमपनाह भोत बेदिल हुआ । दिल पर काम मुश्किल हुआ । शहर सब हैरान, घर-घर लोकाँ परेशान । जेते जितना दौडे, सरगर्दां होकर सब सर फोडे । पेशवा, दबीर, अमीर, खान, वज़ीर कोई कर नईं सके इसकी तदबीर ।

बैत—

पादशाह के जो दिल पै आवे ग़म
तिल मने मुल्क सब होवे दरहम

पिन्हाँ-गुप्त
आशकार-प्रकट
लहवा-तलवार
तेशा-लकड़ी काटने का औज़ार, कुल्हाड़ा
दिलबर-प्रेमिका
बर-पहलू
ग़ाज़ी-जो युद्ध से जीवित और § विजयी लौटे
जाबाज़ी-प्राण देने वाला
सरगर्दां-परेशान
पेशवा-अगुवा
दबीर-लिपिक
टुक-ज़रा
किचवान- ? †
आजूं-आज भी
ठार्या-ठहरा
पैलाड़-उस तरफ़, दूसरा छोर, दूर
लहना-प्राप्त करना, शुभ होना
कौं-क्यों
पै-में, पर, ऊपर
तिल-क्षण

वैसे में दिल पादशाह कूँ, आलमपनाह कूँ ख़ुसूस एक जासूस था। उसका नाँवँ नज़र, सब ठाँवँ उसका गुज़र, सब जागा की मालूम उसे ख़बर। साहब-फ़िरासत, साहब-हिम्मत, ख़ुश तबियत, ख़ुश-सुहबत। अक्ल भोत धरे, नईं होता सो काम करे। कोई ना जा सके वहाँ जावे, कोई नईं खबर ल्याता सो ख़बर ल्यावे। सारे शहर की ख़बर दिल कूँ तिल में देवे, हर रोज हज़ार शाबाश्यॉ लेवे।

बैत—

धर धनी वो च जिस कूँ घर है खूब
वो च साहब जिसे नफ़र है खूब

सो वो नज़र जासूस दिल पादशाह, आलमपनाह के हुजूर आकर सिर कूँ झुका कर तस्लीम कर, भोत अदब सूँ, एक सबब सूँ बोल्या, बात का माया सब खोल्या के ए दिल बादशाह-आलमपनाह, दिल कूँ रख घट, तक्वा नको सट। ख़ुदा सर पर धरता, फ़िक्र का करता ?

बैत—

भाई है उसे नफ़र न कहा जाय
आ पड़े पर ज कोई नफ़र काम आय

जेताँ कूँ तू कसता, इस काम पर कोई नईं धँसता। इस काम पर अताल मैं राज़ी, देख मेरी जाँबाज़ी। मुझे रुख़्सत दे, इस काम कूँ मै जाऊँगा। जिधर-तिधर ढूँढ़ कर तूँ मंगता सो आब-हयात की ख़बर ल्याऊँगा।

बैत—

खींचा है दिल कूँ इश्क़ ने अब दिल कूँ कुछ चारा नहीं
आशिक़ कूँ कोई कैता रखे किसते रहनहारा नहीं

तूँ मँगता सो आब-हयात है। तो उसकी खबर तुझ लगन आई। अगर यू आब-हयात दुनिया में ना अछता तो ना देता कोई तुझे यू बधाई। नदीम पड़ते वक्त में क्या फ़ाम ? के यहाँ तो कुछ है दाम, वले आखिर होनहारा है कुछ है काम। बादशाह का दिल जगा जोत है, सब ठार जीवता है। पादशाहॉ के दिल पर

ख़ुसूस-विशेष
फ़िरासत-बुद्धिमत्ता
ख़ूब-अच्छा, श्रेष्ठ
नफ़र-परिचारक, नौकर
तक्वा-धैर्य
नदीम-परिचारक
दाम-जाला
ल्याना-लाना
वो च-वही †
† घट-वृद्ध
जेता कूँ-जिन को
कसना-परीक्षा लेना

ज कुछ गुज़रता है सो होता है। पादशाहाँ का दिल खुदा के रहने की ठार, यहाँ शक ल्याना तोबा अस्तग़फ़ार। खुदा यहाँ बैठ कर अपना काम चलाता। खुदा यहाँ बैठ कर देता-दिलाता। बातिन में तो खुदा च आया कतै, ज़ाहिर खुदा का साया कतै। जाँ पादशाह का दिल जा सकता है, वाँ तें किस का दिल खबर ल्या सकता है? जिस दरिया में उनो का दिल तैरे, दुसरे दिल कूँ कुदरत है जो वहा फैरे। ज़र्रा आफ़ताब के अगे क्या दिसेगा? एक बोल किताब के अगे क्या दिसेगा? जेता जेता कोई दौड़े जिधर, दरिया में क़तरा किधर? यू मरातिब पाये, जो खुदा के खलीफ़ा कहवाये। ज कोई खलीफ़े कूँ समझ्या सो खुदा को समझ्या। जिने खलीफ़ा कूँ नईं समज्या उनें क्या समज्या। ज कुछ पाना है, सो वहाँ पाना है, ढूँडता सो दीवाना है। आरसी हात में, होर मूँ देखने नईं आता! खीसा कमर में होर नकद लेने नईं पाता। जीता है होर जीना बिसर्या! दरिया में पड़्या, होर पानी पीना बिसर्या। सर में फूल और दिमाग़ में बास नईं आती! दिल मे माना भर्या, होर बात कहे नईं जाती! माशूक़ घूँगट खोल्या, उनें अखियाँ झाँक्या, यार लुटपुट हुआ, यो डर कर भाग्या। ज़ाहिर खलीफ़ा च कना है। बातिन में ज कुछ है, सो बात कना मना है, चुप रहना है। यूँ बादशाहाँ भोत बड़े हैं, भोत बड़ी जागा खबड़े हैं, उनो सूँ बेअदबी सूँ पेश आना नाबूद की निशानी है। उनो सूँ बदनीयती करना मरदूद की निशानी है। ज़ाहिर-बातिन इनो सूँ साफ़ दिल अछना, गत-दीस उनो की दुआ सूँ मिल अछना। उनो की ख़िदमत अज़मत ही बड़ा सवाब है। अज़मतबख़्श है। यहाँ फ़तहयाब है, शाहाँ के वजूद का शर्फ़ माबूदी च जानता। जिसमें कुछ बी बूद है, वही च पछानता। बारे, दिल बादशाह, आलमपनाह नज़र तें तक्वे की यू बात सुन्या, उम्मीद के चमन में तें गोद भर भर फूल चुन्या।

फ़र्द

मन के चमन में बाव आ फल के है गुंचा आस का
डाली च पर फूल हैंस पड़या उम्मीद अब है बास का

खुश हुआ, जीव नई रह्या, नज़र जासूस कूँ शाबाश शाबाश कह्या, गले लाया। भोत मिन्नत किया, खुदा के दरगाह उम्मीदवार होकर रजा दिया के तूँ जा।

अस्तग़फ़ार-शरण चाहना
बातिन-गुप्त
साया-छाँया
खीसा-थैली
नाबूद-नाश
मरदूद-अपमानित
अज़मत-श्रेष्ठ §
माबूद-खुदा
बूद-अस्तित्व
ज कुछ-जो कुछ
जाँ-जहाँ
फैरना-पहरना, प्रवेश करना
झाँक्या-झाँका †
कना-कहना
माबूदी च-ईश्वर ही
बूद-बुद्धि
बाव-हवा, वायु
लाया-लगाया

ख़ुश ख़बर लेकर वेग आ। यू वक्त भाईपने होर यारी का वक्त है। मुख़लसी होर ख़िदमतगारी का वक्त है। दिलदाश्ती होर दोस्तदारी का वक्त है। ताख़ीर नको कर। इस काम कूँ तक़सीर नको कर। इस काम पर जिद धरेगा, ख़ुदा बी तेरी मुराद हासिल करेगा। मक़सूद आयेगी बर में, दायम ख़ुश अछेगी तेरे घर में। मुबारक है, जाग तेरे नसीब, के "नसरुनमिनल्लाह व फ़तहन क़रीब।"

बैत—

शाहाँ कने कोई आदमी क़ाबिल अछे तो खूब है
साहब से अपने एक जहत एक दिल अछे तो खूब है

जासूस नज़र दिल पादशाह आलमपनाह सूँ विदा होकर क़दम आगे धर रवाना हुआ, अपने काम शमा पर परवाना हुआ। ज्यूँ बाव कई उठ्या, कई गिर्या, जागा जागा ढूँड्या, आलम सब फिर्या। जिस वक्त जिस ठार गया, जब तमाशे देख्या अजब अजब।

बैत—

सफ़र की किया है ख़बर जो लगन वो घर में है
सफ़र किया सो वो जाने के क्या सफ़र में है।

जो फ़ारसी में कता है—

बैत—

सैद तजर्बा शुद हासिल दर राहे बहर कामी
बिसयार सफ़र बायद ता पुख्ता शवद ख़ामी

चित इस दिल सूँ लाया। फिरते फिरते एक शहर में आया। उस शहर के इमारताँ जैसियाँ किसी शहर में कोई आज लगन नईं बँधाया। के इस शहर के आसपास तमाम फुलवारी, तमाम फूलाँ की बास। लोकाँ वहाँ के आवदार, तमीज़दार, नेकबख्त, बरख़ुरदार, शीरीं गुफ्तार, नेकनीयत; नेक किरदार, परदेसी कूँ आये गये कूँ भोत करते प्यार।

मुख़लसी-शालीनता (ख़ुलूस-मुख़लसी)
ताख़ीर-देर
तक़सीर-अपराध
मक़सूद-इच्छित (मक़सद-मक़सूद)
बर-बग़ल
जहत-सीमा, दिशा §

§ शीरीगुफ़्तार-मधुर भाषी
नेक किरदार-शुद्धाचारी
कने-पास
अगे-आगे
जो लगन-जब तक
कता है-कहता है
जैसियाँ-जैसी का ब. व.

१ ईश्वर की सहायता है और वह शीघ्र ही तुम्हे सफलता और विजय प्रदान करेगा।

२ प्रत्येक कार्य में बहुत-से अनुभव प्राप्त होते हैं, बहुत-सी यात्राएँ करने के बिना मनुष्य पक्का ज्ञान प्राप्त नहीं करता।

फ़र्द

दुनिया दग़ाबाज़ है औबाश होर हील्याँ भरी
आदम वो ही है जो करे आदम सेती आदमगिरी

नज़र वहाँ के लोकाँ ते लिया ख़बर के यू ठाँवें क्या है ? इस शहर का नाँवें क्या है ? वहाँ के लोकाँ हुए एक कोने । सब बोले--इस शहर का नाँवें आक़फ़ियत होर इस शहर के पादशाह का नाँवें 'नामूस' । नज़र अपने मक़सूद दिल में याद कर हज़ार हज़ार किया अफ़सोस के आख़िर यू काम क्यूँ होवेगा ? इस काम का सरंजाम क्यूँ होवेगा ?

बैत—

ख़ुदा मदद है उसी कूँ जिसे हिम्मत कुछ है
वही मुराद कूँ अँपड़या है जिसमें सत कुछ है

मैं तो ज्यूँ त्यूँ वहाँ ते याँ लग ज़मीन चुक लिया, मनम कर निकल्या । अताल ख़ुदा शर्म रखे । ख़ुदा नेम-धरम रखे । एता कह कर टुक एक राह कर, अक्ल सूँ अपने दिल में कुछ ल्याया, दिल कूँ समजाया । वहाँ के बड़ लोकाँ कूँ म्याँने म्यान भाया । नामूस पादशाह सूँ जाकर मिल्या । अपने काम ख़ातिर भोत बिलबिल्या । नामूस पादशाह उसे देख कर उसकी अदा, देख कर, उसकी गरिश देख कर भोत ख़ुश हुआ । हँस्या, हिल्या, गुंचा था सो ख़ुशी सूं ज्यूँ फूल खिल्या ।

फ़र्द

अदब है जिसमें तवाज़ो है जिसमें वो मर्द है
वो कुछ यूँ जिसमें नईं है वो मर्द सर-दर्द है

दूर था सो उसे अपने नजदीक बिसलाया । पूछ्या के तू कौन है, तेरा मक़सूद क्या है, तू काँ ते आया ।

बैत—

ज कोई किस कने आवे ग़र्ज़ कूँ अर्ज़ करे
वही भला जो ग़र्ज़ वो अपस पो फ़र्ज़ करे

औबाश-कमीना, आवारा
आक़ियत-कुशलता
नामूस-प्रतिष्ठा
मनम-अहंकार
अताल-अब
गुंचा-कली
भोत-बहुत
हील्याँ-हीला ब. व.
सेती-से
सत-शक्ति

लाज सट को मँगता मँगनहार, देनहारा नईं दिया तो शर्मिन्दा होता बेचारा। शर्म का कोई मॅग तो वहाँ कहे है धरम। बेशर्म घड़ी घड़ी मॅगेगा, उसे मँगने की क्या शरम। उसे ख़ुश लग्या है मँग लेना, वले कोई किसे केता देना। गंज-क़ारून अगर अछेगा तो बी देते-देते सरेगा। वले बेशर्म का मॅगते-मॅगते पेट ना भरेगा। यू गदा उसका ई च, ऐसा सदा शर्म कूँ नईं पछान्या। मँगना एक हुनर कर जान्या। जाँ गया वाँ कुछ मँग लिया। किने दिया, किने नईं दिया। काँ नेम, काँ का सत? भई अपनी वही च आदत। इस बात पो यू बात बी आती के इल्लत जाती, वले आदत नईं जाती। खूब लोकाँ कू ख़ुदा होर ख़ुदा के ख़लीफ़ा का आस, आर आती मँगते दुसर्यो पास। दुसर्यो पास मॅगते जीव पर आता, ऐसे लोकाँ ते किस पास क्यूँ मॅग्या जाता? किसी का बीड़ा पान क़बूल करने का नईं ताब, एक बीड़ा क़बूल किया तो उसमें हज़ार हिजाब। ख़ुदा ना करे जो मुर्दार हलाल होने का वक़्त आये कई तो बी देखना के किस पास मँग्या जाता है क्या नईं ख़ुदा का ख़लीफ़ा क़िस्मत करनहार है। अगर याँ मँगे तो, बारे, मॅगने के ठार है, ऐब नईं मॅगना इस ठार; पादशाह कूँ अपना ख़लीफ़ा किया है परवरदिगार। पादशाहाँ पास हक़ है सबका, मँग्या उस ठार जाता है, ख़ुदा दिलाता है तो याँ ते कुछ आता है। ना के जिसे देखे दुनियादार, मॅगने खड़े रहे हात पसार। साहब साहब कहते फिरते आसपास; जानो यू च साहब उसी च के चाकर, उसी च की आस। ज कोई यूँ किसी के दुंबाल लग लग पेट भरे, बेहयाई पर दिल धरे, पीछे† हिम्मत का आदमी लाइलाज होकर कुछ तो बी देता है, बिचारा क्या करे? एक बार, दो बार, तीन बार। मुबालिग़ा चार बार दिया जाएगा। पाँचवें बार ऐसे आदमी ते आदमी बेज़ार होवेगा। तंग आयेगा। यू अपनी जागा पर ते नईं हिलता। बक़ौल अहलहिन्द—'चिकने घड़े पर पानी ढलता।' कोई भला कहो, कोई बुरा कहो। एते कूँ किसका कहना असर ना पड़े। यू बेहयाई का शराब पिया है, मस्त है। उसे ख़बर ना होसी। दर असल किसी पास मॅगना भले आदमी कूँ मालूम है के क्या बला है। दिल पर क्या आफ़त है, क्या ज़लज़ला है, बल्के क़यामत गुज़रता है। भोत मशक़्क़त गुज़रता है। माँ-बाप होर ख़ुदा पास बी मॅगते दिल कूँ मुलाहिज़ा आता है। यकायक नईं मॅग्या जाता है। लाज के आदमी कूँ भोत आती लाज। पीछे ज़रूर कूँ हो आता लाइलाज, उसका क्या इलाज। लोकाँ का यू हाल, लोकाँ की यू चाल, अताल, बिचारे भले

गंजक़ारू-क़ारूँ नामक राजा का खज़ाना
गदा-दरिद्र
इल्लत-ऐब
आर-लज्जा
हिजाब-लिहाज़
† दुम्बाल-पीछे
अहले हिन्द-हिन्दुस्तानी
ज़लज़ला-भूकम्प
कई-कहीं
बी-भी
§ यू च-यही
जागा-जगह
होसी-होगी

आदम्याँ का क्या हाल ? लोकाँ भल्याँ कूँ बुरे कर जानने । बुर्यां कूँ भले कर पछानते । भले आदमी कूँ जीना भोत मुश्किल । दिल में केता हिम्मत धरे, खुदा सब करे, वले किसे भला आदमी ना करे । अपना हेड़ा अपै खाना, अपना लहू अपै पीना तो दुनिया में भले आदमी होकर जीना । बुरे आदमी बहा-फुसला भला जानते, दग़ा दे जानते । ज्यूँ त्यूँ किस पास ते कुछ ले जाते । जाँ लगन भला आदमी है, वाँ लगन खार है । बुरे लोकाँ कूँ सब कईं ठार है । भला आदमी क्यूँ भावेगा ? गाय क़स्साबी च कूँ पतयावे, यू समझे नईं दर असला । दक्खन का है यू मसला—"जो कोई आवारा वो भाई हमारा । ज कोई करे हिम्मत मार निकाले नित ।" उलटी चलती दुनियादारी, भले लोकाँ की हुई खारी । नाअहल पास । जो सवाल करना है; वो जिवना नईं है, बल्के मरना बेहतर है । शर्म के आदमी कूँ शर्म का आदमी अछे सो जाने । जिसमें शर्म नईं, वो शर्म के आदमी कूँ क्या पछाने ? जो कोई जानते हैं अपने ईमान रहना **'अलहयातमनउर्रिज़्क़'** के माने ज कोई जानते हैं, हया के लोक अक्सर रिज़्क़ के बाब तंगी सूँ गुज़ारते हैं । दुनिया झूट्या की है, दग़ाबाज़ाँ की है, बेईमानाँ की है । यू खूबी पछानते हैं, हक़ कडवा है, यू कडवा जिसे मीठा लगा वो बड़ा । इस बाट में पाँव फिसलता है । हर कोई नईं होता खड़ा । अगर किसी में बात समजने का माया है तो हदीस में 'अलहक्को मुरं' भी आया है । अगर तू मूँ का रखना मँगता पानी तो ग़म कूँ होर अँखिया के अंभू पी । ये सारे भल्याँ की ज़िन्दगानी । असील बग़ैर असालत कौन पाता है ? भले आदमी कूँ असालत सँभालने जीव पर आता है । लाइलाज कूँ सकाल-दुकाल होता है, तो मुर्दार बी हलाल होता है । भले आदम्याँ ते किस पास मग्या नईं जाता, तो उनो पर यू वाक़या फ़ाक़ा आता । भले आदम्याँ का मँगना एक इशारत है । या नईं तो एक बात करना है । इतने में काम हुआ तो हुआ । नईं तो उस काम ते दर गुज़रता है । पीछे खुदा जिलावेगा तो जीवेंगे, नईं तो मरेंगे । भले आदम्याँ का मँगना करना इतना च है, भई क्या करेंगे, दुनिया दो दीस की दुख अछो या सुख; ज्यूँ त्यूँ याँ वक्त गुज़र जाता है । वाँ देखे बुर्यां का क्या हाल है ? होर भल्या के हात में क्या आता है ? खुदा बोल्या सो सच है । रसूल बोल्या सो सच है । बड़ाँ भले और बुरे का पूच बिचार होवेगा । बुरा होवेगा सो इज़्ज़त गँवायेगा । खार होवेगा, शर्मसार

क़स्साब-कसाई
खार-अपमान
ना अहल-फूहड़
असील-कुलीन
शर्मसार-लज्जित
बुरे कर-बुरा समझ कर
केता-कितना
हेड़ा-हड्डी
बहा फुसला-बहला फुसला
भावना-अच्छा लगना
कस्साबी च कूँ-कसाइ को ही
अंभू-आँसू
इतना च-इतना ही ।
† दीस-दिन
पूच-पूछ

१ लज्जा भोजन को रोकती है ।
२ सच्ची बात कड़ी होती है ।

होवेगा। खातिर ल्या भले लोकाँ कूँ। ख़ुदा होर रसूल के बाती च का तक़वा है। नईं तो दुनिया में जीव बी नईं सकते। यहाँ खूब समझ कर यहाँ की आस छोडे हैं। उम्मीद वहाँ च की रखते। भले लोकाँ इसी ते दुनिया छोड़े हैं, दुनिया ते दिल कूँ तोड़े हैं। भले आदमी काश के दुनिया में ना आते; तो बुरे लोकाँ एती जफ़ा ना पाते। बुरे लोकाँ शहर में कूँचे-कूँचे भरे हैं। बुरे लोकाँ भल्याँ कूँ बुरे करे हैं। बुरे लोकाँ भोत, भले लोकाँ थोड़े। भले लोकाँ सूँ भला होवे तो यारी जोड़े। जेता जीये बी आख़िर मरना है, इतनी खातिर क्या करना है। ज्यूँ दखनी मसल है—"मरना मरना चूके ना, ऐसा मरना जो कोई थूके ना।" जिनो तहक़ीक़ जाने के पैदा करनहार एक ख़ुदा है, उनो का राह-रविश, उनका चलन्त जुदा है। बुरे लोकाँ अगर ख़ुदा है कर जानते तो भले होकर अछते। बुराई कूँ पछानते। कुछ ख़ुदा का डर धरते। बुरे कामाँ हर्गिज़ न करते। ख़ुदा है कर जानना भोत मुश्किल है। उसकी वहदानियत कूँ पछानना भोत मुश्किल है। जिसने बुरे फ़ेल दूर हुए, उसे जानना के यू ख़ुदा कौन है कर जानता है, अपस के पैदा करनहारे कूँ पछानता है। देखते के अंग कुछ किया जाता है। देखते के अंग क़ुदरत का माल लिया जाता है। ज कोई कते हैं के ख़ुदा ही समी है, बसीर है, क़ादिर है, अलीम है कर जानते हैं तो यू होता नईं। यू बाता हैं जानने की निशानी। फ़ेल नेक है, दीगर बाक़ी अपनी खातिर कियाँ हिकायतों हैं।

बारे, नामूस पादशाह के हुज़ूर नज़र राज़ का पर्दा फाड्या। इस ताज़े आब-हयात की बात काड्या। नामूस बोल्या के इस आब-हयात का क़िस्सा एक तावील धरता है, एक तमसील धरता है। हरेक कोई आकर नासमझ कर इस ठार बात करता है, अक्ल कूँ बोल लगाता है। फ़हम पर घात करता है। यू बड़ा एक पेखना है। यहाँ अँदेशा कर देखना है। आब-हयात कते सो वो आब-हयात मर्द के मूँ का पानी, जो लगन यू पानी तो लगन मर्द की ज़िन्दगानी। इस पानी खातिर लोकाँ मरते, क्या क्या मशक्क़त जो नईं सो करते।

बैत—

यू सिकन्दर कू नईं मिल्या एक जाम
ज़ोर होर ज़र सूँ नईं यू होता काम

वहदानियत-एकत्व अलीम-जाननेवाला (इल्म- ज्ञान फ़हम-समझ
समी-सुननेवाला अलीम)
बसीर-देखनेवाला तावील-अन्यथा एती-इतना
क़ादिर-प्रभुतायुक्त (क़ुदरत-क़ादिर) तमसील-उपमा (मिसाल-तमसील) § पेखना-देखना, प्रेक्षण करना

जूँ हाफ़िज़ तबियत तता (?) यूँ कता---

सिकन्दर रा नमी बख्शंद आबे
बज़ोरो ज़र मयस्सर नेस्त ईं कार

यू पानी रोशनाई में है, ज़ुल्मात में नईं, यू पानी ख़ुदा देवे किसी के हात में नईं। यू पानी होवे तो हयात ख़ूब, यू पानी होवे तो सब बात ख़ूब। इस पानी के मानी पानी रख्या सो जाने। जीव उसते पाना यूँ च प्रानी है, दुनिया में ज कुछ है सो पानी है।

फ़र्द
दीन व दुनिया की ख़ूबी भी नेम और धरम है
ईमान की निशानी सो मर्द कूँ शरम है

के कते हैं 'अलहया मिनल ईमान' हज़रत का हदीस है। यू तहक़ीक़ जान। अगर इस आब-हयात की कुछ बात है तो हया में यू आब-हयात है। मैं बोल्या निशान, अताल यू समझ पछान। खोल कह्या इस बात के छुपे माना। इस पानी सूँ तुजे कुछ काम अछेगा तो तूँ जाने। नज़र बोल्या के ऐ नामूस पादशाह, आलम-पनाह तूँ मर्द है, फ़र्द है, हमदर्द है। नेम-धरम तुझ कने रहता है, तूँ ज कुछ कना सो मुझे तेरी बात करे शहमात, सोने के पानी सूँ लिख रखना यू तेरी बात---

बैत—
आदमी नईं वो जिस में कुछ नाम व नंग नईं
आदमी नईं वो जिस मने आदमी के ढंग नईं

वले मेरा मुद्आ कुछ और है, मेरी मुद्आ में हनोज़ बी शर व शोर है। वो आब-हयात जो मैं मँगता हूँ उसी कूँ पछाने, को अछेगा सो ख़ुदा जाने।

बैत—
चल्या उम्मीद कूँ उम्मीद कौन बर ल्यावे
वो नाउम्मीद हो आता उम्मीद तूँ पावे

ज़ुल्मात-अंधकार
मुद्आ-उद्देश्य, तत्व
हनोज़-अभी
शर व शोर-गड़बड़
बर ल्यावे-पूर्ण करे
नेम-नियम
कना-कहना
को-कहाँ

१ सिकन्दर को यह जाम नहीं बख़्शा गया। यह शक्ति और धन से प्राप्तव्य नहीं।
२ लज्जा ईमान का एक अंग है।

नज़र नामूस पादशाह कूँ सलाम कर कुछ कलाम कर चल्या। निशान उस आब-हयात का कई नईं पाया कर भोत तलमल्या। काम ताख़ीर हुआ, दिलगीर हुआ। भई याद कर उस दिल की यारी, ख़ुदा सूँ लगाया उम्मीदवारी। जाते-जाते, तलमलाते-तलमलाते, हैफ़े खाते खाते, बाट में देखा एक डूँगर अज़ीमुश्शान, दुसरा आसमान, हरेक खोरे में उसके चाँद-सूरज का मकान, हरेक झाड़ की बेल उस पर जूँ कहकशाँ। ख़याल का हात उस पर नईं अँपड़ता। ख़याल चढ़-चढ़ कर पड़ता। नज़र उसकी बलन्दी पर नईं जाती, किचवाती, फिर फिर आती। जीव नईं रह्या, उस डूँगर के नज़दीक गया। वहाँ के लोकाँ कूँ पूछ्या के इस जागा कौन क्या कते हैं? यहाँ कौन रहते हैं?

बैत—

ख़ुदा करीम है सब कूँ मकर में ते काढ़े
किसी के मकर के फाँद किसी कूँ ना पाड़े

उनों बोले के यू डूँगर है, ज़हद व रिज़्क़ का आशियाँ। मुश्किल है उस डूँगर पर यकायक जाना। इस डूँगर पर एक कुहना बुढा अछ्ता है रात-दीस, उससे परसन हुआ है परमीस। उसका नाँवँ रिज़्क़, मकर होर उसमें कुछ नईं फ़र्क़। नज़र कूँ भोत थी अपनी तलब की आस। बाब हो डूँगर पर चड़्या, गया उस रिज़्क़ के पास, उने कह्या—ऐ पीर सलाम, साहब-तदबीर सलाम! उने कह्या ए जवान, आलेकुस्सलाम। यू बेग़र्ज़, उसे ग़र्ज़ तमाम, ख़ुदा करे तो होवे यू काम।

बैत—

यू काँ का वो काँ का यू दोनों हवाई
तमाशा अजब है नवी आशनाई

रिज़्क़ कहा के यहाँ तूँ क्यूँ आया? कौन तुजे यहाँ ल्याया। कौन तुझे यू बाट दिखलाया? यहाँ क्या है तेरा काम? हैरान हूँ मैं नईं होता फ़ाम। नज़र अपने

ताख़ीर-देरी
दिलगीर-चिन्तित, दुःखी
हैफ़-अफ़सोस
अज़ीमुश्शान-जिस की बड़ी शान है
कहकशाँ-स्वर्गंगा (घास ते पूले को बालू रेत में खीचने से जो निशान पड़ता है) §
§ मकर-छल कपट
आशियाँ-घासला
कुहना-पुराना
अलेकुस्सलाम-प्रणाम, अभिवादन
नहीं पाया कर-प्राप्त नहीं करने से †
† खोर-खोह
डूँगर-पर्वत
काढ़े-काढे, निकाले
पाड़-डाले
परसन-प्रसन्न
परमीस-परमेश्वर
काँका-कहाँ का

दिल की गाँठ खोल्या, इस ताज़े आब-हयात का क़िस्सा बोल्या। रिज़्क़ कह्या आब-हयात का चश्मा किसे कहते सो ना किस बाग़ में है ना किस किश्त में है। वो एक चश्मा तू कता सो बहिश्त में है। तूँ इस चश्मे कूँ ढूँडता दुनिया म्याने, उसका निशान कोई क्या समजे, क्या जाने ?

बैत—

यू ग़र्ज़ी है पूछे बग़ैर नईं रहता
यू कुछ पूछता वो उसे कुछ कता

ग़र्ज़ अगर तुझे होना च है यू पानी, तो आशिक़ के अँझवाँ में है उस पानी की निशानी। आशिक़ के आँख का पानी क्या है ? इश्क़ की खोय, इस पानी ते क्या अजब जो मुआ सो जीवता होय। मसीहा का दम उस पानी ते फ़ेज़ पाया। मसीहा उस पानी ते मुवो कूँ जिलाया। इस पानी के क़तरे मे लाख फ़ेज़ाँ है, अगर कोई पछाने; यू च पानी आब-हयात है अगर कोई जाने।

जो अपने रोने ते महज़ूज़ हैं दर्दमन्दाँ
सो हँसनी ते नईं पाते हैं हज़ यू महबूबाँ

चन्दाँ किस किस लज्जत भरे दर्दी सूँ अँखियाँ मे ते पड़ता है बुंद एक एक, अगर तूँ आशिक़ है तो बुंद बुंद का लज्ज़त देख। इस ग़म में क्यूँ ख़ुश आई, इस कड़वाई मे कौन रंग मिठाई। काँट्याँ ते फूल की कौन लियाँ है बास ? आग में पानी है वो पानी कौन पिया है ? वो भोग कौं है, जो यू बास लेवे ? वो परवाना कौं है जो यू पानी पीवे, होर इस पानी की खबर देवे। यू क़तरा है, भीत लज्ज़त भर्या, हर क़तरे में सौ दरिया। मुझे मालूम था सो किया अर्ज़, अताल तूँ जाने तेरा फ़र्ज़। नज़र हँस कर रिज़्क़ कूँ, हीले के बर्क़ कूँ बोल्या होवे तूँ बी कता है सो उसमें एक माना है। वले यू माना पाना है। मगर कते थे वले यहाँ कुछ नहीं दिस्या। तमाम मीठा बग़ैर शकर कुछ नईं दिस्या। शाबाश, अँझवाँ का अजब बयान किया। आशिकाँ के ख़ातिर नशान किया। आशिकाँ के अँखिया के आँसू ऐसी च हैं। जूँ तूँ कता वैसी च है। जिस अँखियाँ कूँ दीदार की लगी हैरानी, उस अँखिया का क्यूँ न होवे एसा पानी ? कौले ताला—क़ल्ब उल मोमीन अर्श अल्ला ताला। याने

किश्त-खेत
बहिस्त-स्वर्ग
चश्मा-झरना
खोय-विशेषता
महजूज़-दुःखी
फ़ेज़-आनन्द
महबूब-प्रिम (हुय महबूब)
बर्क़-बिजली
अँझवाँ-अँझू (आसू) का ब. व.
दिस्या-दीखा
१ भक्त का हृदय ईश्वर का आसन है।

मुसलमानाँ का दिल ख़ुदा का अर्श है। यू पानी उस अर्श में ते आता है। आशिक़ के अँखियाँ के कँगूरियाँ पर ते जाता है। नौज़बिल्ला; यू पानी अगर क़हर में आवे दरिया कूँ डुबावे। नूह का तूफ़ान, इस पानी का क़तरा जान। इस पानी का भोत अदब धरना। इस पानी सूँ बेअदबी ना करना। इस पानी से भोत डरना। यू पानी अगर मौज उचावे, तिल में आलम कूँ गुलिस्ताँ कर दिखलावे। फूल कूँ फूलवाड़ी करे, बाड़ कूँ बाड़ी करे, पात को झाड़ करे, कंकर कूँ पहाड़ करे, ज़र्रे कूँ आफ़ताब करे, आतिश कूँ आब करे, गदा कूँ पादशाह करे, सितारे कूँ माह करे। तेरा सुख़न मुझे ख़ुशी दिया, तेरी बात ते मैं भोत हज़ किया। अजब फ़हम धरता है, शाबाश भोत समज सूँ बात करता है। तूँ कह्या सो बात बी मेरी बात में है, दो दीस बी इस रात में है। तूँ जो मोती सट्या मैं चुन्या, तूँ जो बोल्या सो मै सुन्या। बले मेरा मुद्आ कुछ जुदा है, किस ते क्या होवेगा अताल ख़ुदा है।

यू कह कर वहाँ ते उठ्या। उसकी ख़िदमत के बन्द में ते छुट्या। इस काम पर यूँ थी क़ज़ा, जाता हू कर मँग्या रज़ा। इस फ़िक्र ते चल्या, भोत तलमल्या। भई अपने काम कूँ बाव हो कर जंगले जंगल चल्या। इस जगल में देखता है यकायक जो एक कोट नज़र आया, आसमान पर पड्या उसका साया, सात ज़मीन उस कोट के एक तरफ़ का पाया। हरेक कंगूरा उसका अर्श का हमसाया, ऐसा कोट दुनिया में आज लगन कोई पादशाह नईं बँधाया, जानो अपै कुछ कुदरत ते मुस्तैद हो आया।

फ़र्द

अजब कोट ओट है केता बखानूँ
के हल्क़ा अज़दहा मार्या है जानूँ

इस कोट कने आकर वहाँ के लोकाँ की रविश पाकर पूछ्या के इस कोट का नाँव क्या है? इस कोट के पादशाह का नाँव क्या है? इस कोट के पाहशाह की कैसी अदालत? वहाँ के लोकाँ बोले के इस कोट का नाम हिदायत और इस कोट के पादशाह का नाव हिम्मत।

फ़र्द

हिदायत लग तू आया है देखें क्या होवे हिदायत सूँ
नज़र ने ली जफ़ा देखने लग्या अब काम हिम्मत सूँ

अर्श-सातवें असमान के ऊपर ईश्वर का आसन
नौजबिल्ला-शरण में रखे
क़हर-प्रलय
आतिश-आग
आब-पानी
गदा-दरिद्र
माह-चाँद
सुख़न-वचन
क़ज़ा-आदेश, होनहार
बाव-हवा
साया-छाया
अज़दहा-अजगर साँप
कोट-क़िला

नज़र बोल्या के शुक्र "अलहम्दुलिल्लाह।" एता देखी सर धुन, बारे अँपड़े हिम्मत लगन। अताल खुदा हिम्मत देवे। खुदा फुर्सत देवे। हिम्मत ते कुछ मत पावे, मुराद अपनी बर ल्यावें। हिम्मत ते नीयत होना हस्त, दुनिया में हिम्मत बड़ी बस्त। अक्ल हिम्मत ते पकड़ती बलन्दी, हिम्मत के सर है तमाम अर्ज़मन्दी। हिम्मत काड़ी कूँ होवे तो दरिया सूँ दावा धरे। हिम्मत ते नहना बड़ा होता, हिम्मत ते पड्या सो खड्या होता। माँ हिम्मत, बाप हिम्मत, पीर हिम्मत, मुर्शद हिम्मत; ज कुछ है सो हिम्मत। हिम्मत। जिस मर्द में कुछ हिम्मत है उस मर्द पर रहमत है हज़ार रहमत है।

बैत—

वही मर्द जो हिम्मत सूँ हमेशा हमदस्त है
हिम्मत खुदा के ख़ज़ाने की कुछ बस्त है

बड़ाई कुछ मुफ्त नईं आई, जितनी हिम्मत उतनी बड़ाई। हिम्मत जिने गँवाया, उने दुनिया में क्या पाया? हिम्मत की सिफ़त जू है, त्यूं कोई करसी ना। हिम्मत की सिफ़त जेता कहे बी सरसी ना। मर्दों कूँ हिम्मत, आशिक़ाँ साहब-दर्दों कूँ हिम्मत, फ़र्दों कूँ हिम्मत क्या काम आवे—रस नईं सो गाँडा। जिसमें हिम्मत नईं सो खाली भाँडा।

बैत—

ज कुछ खूबी है सो हिम्मत के बाब है
हिम्मत का नाँवें लेना भी सवाब है।

हिम्मत मर्दों का सिंगार, हिम्मत साहब-दिलाँ का अधार। हिम्मत सूँ राज़ी अपै परवर दिगार। हिम्मत तालीम खाने में नको झट, दुश्यार अल्ले हिम्मत नको सट। हिम्मत मर्दों का सँघाती। हिम्मत कूँ खुदा मँगता, हिम्मत खुदा की भाती। ग़र्ज़ मर्द कूँ हिम्मत मतलूब है, भोती च खूब है।

अल क़िस्सा जासूस नज़र हिम्मत बादशाह, आलमपनाह सूँ जा कर मिल्या के खिदमत करे, अज़मत पावे। नामुरादी जावे, मुराद आवे। मेहनत का झाड़, राहत के फल बार ल्यावे।

बाब-द्वार
मतलूब-वांछनीय
मत-बुद्धि
हस्त-हाथ †
† काड़ी-तिनका
नहना-छोटा, तुच्छ
करसी-करेगा
सरना-पूर्ण होना, पर्याप्त होना †
† गाँडा-ईख या गन्ना
भाँडा-बर्तन
१ सारी प्रशंसा परमेश्वर के लिए ही है। ईश्वर की कृपा है।

बैत—

ग़र्ज़ धरता नईं तो क्या ग़र्ज़ है याँ लग आने कूँ
ज कोई सेवा करे किसकी सो कुछ मक़सूद पाने कूँ

सीना हुआ ख़फ़ा को लक यू जफ़ा
ख़ुदा जाने कौन से दिन कधाँ होता नफ़ा ?

नज़र का खातिर वहा टुक जम्या, चन्द रोज़ हिम्मत की ख़िदमत में गुम्या। गुमते-गुमते हिम्मत कने एक दीस इस ताज़े आब-हयात की बात कहा, अपने सब वाक़यात कह्या। हिम्मत सुन हँस्या। हस कर बी रोया, अँझुवाँ सूँ मूँ धोया। लहू को पानी में घोल्या, होर घोल्या। इस ताज़े आब-हयात की बात कने, ताक़त नईं मुझ मने। यू आब-हयात तो है, यू शहद, यू नबात तो है; वले बात कने असर चड़्या, आदमी बेहोश हो पड़्या। रग रग लहू को आता जोश, यू आलम सब फ़रामोश। यू बात भोत तुन्द और तेज़, नाज़ आमेज़, ख़ूनी ख़ूँरेज़। इस बात ते परहेज़ हज़र कर, ऐ नज़र, ख़ूब नज़र कर। इस बात ते दर गुज़र कर, बल्के दुसर्यां कूँ बी ख़बर कर। भोत लोका इस बात में आकर जीवाँ गँवाये हैं, ईमान पर बात ल्याये हैं। शेख सनआँ ने तीन सौ साठ मुरीदाँ सूँ मुसहफ़ कू जा लिया। सूर चराया, शराब पिया। अपस कूँ कुफ्र मे घाल्या। दाऊद इस खातिर अपने जीव पर उठे। एकस कूँ ज्यूँ मारे, ख़ुदा कूँ बिसारे। ऐसा किये, जो आख़िर पछता कर कमर बिसला लिये। मजनूँ जीव ते उठ्या, अपना लहू अपूँ घुट्या, मजनूँ का सीना फट्या। इस खातिर ज़ुलेखा ने क्या क्या करी, शर्म ते उठी, जीव ते नईं डरी। तालिब थी बेचारी, सच्ची काकलूत मे आकर यूसुफ़ पर क्या क्या फ़तवे रचे। मर्द कूँ बेहिम्मती ख़ुश नईं आती। जिसे हिम्मत है, उसे साहब-हिम्मत की सोहबत भाती। तू बात सुनते ही कुछ का कुछ होवेगा, दीवाना होवेगा। हुच होवेगा, बेताब होवेगा। बे आराम होवेगा, चुप आलम में बदनाम होवेगा।

बार लाना-फल देना
नबात-मिश्री
तुन्द-तलख़
हज़र-परहेज़
सनआँ-अरब का एक स्थान, शेख सना अरब का प्रसिद्ध विद्वान
मुसहिफ़-जिस पुस्तक में पुस्तकों को संकलित किया गया। पवित्र पुस्तक, कुरान।
लकना-देखना
कधाँ-कब
गुम्या-घूमा
गुमते-घूमते
कने-कहने
सूर-शक्कर
बिसलाना-बैठाना
हुच होना-बेवकूफ़ बनना

बैत—

शराब पिये तो पिये कोई नईं होता माता
हुस्न शराब, के जिस देखते असर आता

तुज में ना रही तेरी सुद, पीछे काँ की अक्ल काँ की बुद। तुटे दिल कूँ अपने जोड़, इस बात का दुंबाला छोड़। मैं, के हिम्मत हूँ, सो इस ठार मेरा यू अहवाल ? अताल दुसर्यों की बात क्या कहूँ, दुसर्यों का क्या हाल ? नज़र यू खबर सुन भोत घाबरा हुआ, चुप चित का बुग हुआ। मामला कुछ का कुछ घड़्या, अँदेशे में पड़्या। यू पिरत है, ऐसे कूँ निहायत कूँ अँपड़ाया, उसकूँ अन्त नईं। कौन उसका अन्त पाया के यू आब-हयात उस आब हयात के खातिर वैस्यों वैस्यों ने यू जफ़ा देखी, क्या नफ़ा देखी ? तोबा किये, पछतायेः आखिर भी अपनी फिर जागा पर आये। कोई इस बाट में जा कर अपस कूँ पूरा नईं अँपड़ाया, जिस बाट गया था, उस बाट का मक़सूद नईं पाया। गिर्या, फिर्या, ड़र्या, नहीं कर्या। दिल पे अगर इस आब-हयात की खबर पावेगा तो क्या निहायत कूँ अँपड़ावेगा। गर दिल के इधर देखता हूँ तो दिल के फ़ायदे कियाँ भोत बातों हैं। उधर जीव के रहने का कुछ फ़िक्र करता हूँ तो कई हिकायतों हैं म्याँने ग्याँ पड़्या, बिचारे पर मुश्किल घड़्या।

बैत—

नफ़र शाहाँ कने कोई दूरंदेश होवे तो खूब
के ज़ेरे काम न होवे काम पेश होवे तो खूब

वले आशिक़ कूँ क़ाबिल की बात खातिर में काँ आती ? पन्द किसी की काँ भाती ? दोस्ती जा कर दुश्मनी बिसाती। दिल मेरी बात क्या मानेगा, अगर बोलूँगा तो दुश्मन कर जानेगा।

बैत—

ज कोई खूब कौन कहे और कोई बुरा माने
न बोल बोल के क्या काम सब ते पछताने

कह्या खूब मत सूँ, चित धरना, अताल क्या करना ? क्या सूके क्या हरे, जिसे खुदा हिम्मत देवे सो करे। दिल के दिल में मेरी है आस, मैं भी अँपड़ता हूँ हिम्मत

दुम्बाला-पीछा	माता-नशे में मस्त
पिरत-प्रेम, प्रीति	तुटे-टूटे
पन्द-शिक्षा, उपदेश	घाबरा-घबराया हुआ

पास। बारे, याँ लग आया हूँ, मक़सूद कूँ जगाया हूँ। काम होता च भला, कम हिम्मती का ख़तरा सोता च भला। दुसर्यों का क़िस्सा सुनाऊँगा, दिल कूँ बी हिम्मत पर ल्याऊँगा। दिल है आख़िर यू काम कुछ करेगा। विज़्ज़ात मर्दाना है। मर्दानगी पर दिल धरेगा, हर्गिज़ न डरेगा। दिल कूँ बी कहूँगा के करते तो क्या? वले हुश्यारी जिया। मर्दी में टाँव अछना। कुछ नाँवँ अछना, के अरे सुन रे दिल, काम किया जाए, वले काम निभाना मुश्किल। यू बोल्या हूँ तेरी ख़ातिर। मैं कुछ अख़्तियार करता हूँ, तुझे अपने ठार हुशियार करता हूँ।

बैत—

नफ़र वही च के साहब के काम पर जीव दे
अपस के काम कूँ सट देवे नाम पर जीव दे

के मैं नफ़र तेरा, तू साहब मेरा। तेरा नेम-धरम मेरा शर्म। साहब की बुज़ुर्गी नफ़र की बड़ाई, ज कोई नफ़राँ ख़ूब हैं दायम उनो कूँ ऐसी च अक्ल आई, ऐसी च अक्ल ते उनो की बड़ाई। ऐसा कुछ अँदेशा कर, क़दम पेश कर। हिम्मत कूँ बोल्या के, तूँ बादशाह, तूँ हिम्मत, तूँ फ़तह, तूँ नुसरत। तूँ साहब मुल्क, तूँ साहब मुमलिकत। तूँ साहब-दीन, तूँ साहब-दौलत। तूँ हिम्मत, मुझे मेरे काम कूँ हिम्मत दे, हिम्मत की कुछ मत दे। हिम्मत ते हिम्मत ख़ूब है, हिम्मत मतलूब है। तेरा जीव नईं रह्या, तूँ यू बात अलबत्ता मेरा जीव देखने कह्या। नईं तो तूँ हिम्मत, तुजे यू बात किधर, तुजे इस बात पर कहाँ नज़र? तू सआदतमन्द, तूँ हिम्मत, हिम्मत बलन्द। जहाँ ते हिम्मत हारी, पीछे वहाँ तमाम खारी। जो लग ख़ुदा की ख़ुदाई क़ायम, तो लग हिम्मत क़ायम, हिम्मत दायम।

बैत—

मुझे क्या है तूँ बेदिल यू क्या अक़्ल करता
हुए सो काम में मेरे तूँ की ख़लल करता?

ख़ूब ख़ुदा ख़ातिर ज्यूँ त्यूँ इस आब-हयात की बात तूँ बोल, अताल दिल कूँ खोल। जो उसके असर ते क्या होता है। घड़ी भर दोनों एक जागा दोनों मस्त होकर पड़े। एकस के एक गले लग लग टुक हँसे, टुक रोएँ। टुक चढ़-पड़े, यू बी

विज़्ज़ात-जात से
नुसरत-विजय
मुमलिकत-मुल्क का ब. व.
सआदत-नेक
दायम-शाश्वत
उनोकी-उनकी
मत-मति, बुद्धि
जो लग-जब तक
तो लग-तब तक

एक तमाशा देखें, एक मामले कूँ बेखतर ल्या देखें। यूँ बी एक आलम है, आख़िर खुशी है, क्या ग़म है ? एक साथ मस्त हो अछें। अपस में अपै हमदस्त हो अछें। दोनों बी मस्त। दोनों बी मैपरस्त। दोनों बी दाने। दोनों बी दीवाने, दोनों बी दानिशमन्द, एकस सूँ एक बिचारे। एकस कूँ एक लेवे पन्द। आज लगन आक़िल थे, एक दीस दीवाने अछें। यू बी एक गुलरेज़ी जाने अछें, देखे अछें। बे पिरत पुतली क्यूँ घड़ती, नाँवँ ते मस्ती क्यूँ चड़ती ? कोई कते यू बात ख़ुराफ़ात है, नाँवँ ते मस्ती चड़ना भोत बड़ी बात है।

फ़र्द

नफ़ा है क्या जो छुपा राखे दिल मने धर कर
जो काम दिल मने आवे वो देखना कर कर

तूँ हिम्मत, तूँ साहब-शौक़त। बारे, हमना कुछ फ़ैज़ अँपडे, तेरी दौलत मक़सूद सँपडे। दिल कूँ खोल, वो आब हयात कॉ है ? उसका नशान अताल बोल। केता तपावेगा, सबूरी करते जीव जावेगा। हिम्मत नज़र कूँ भोत कम्या, पेट पकड़ पकड़ को हँस्या। कहा शाबाश, तुझे इस काम पर भोत हम है, तूँ भोत साबित क़दम है। जिसका नफ़र ऐसा अछेगा उसका साहब कैसा अछेगा ?

फ़र्द

नफ़र जिसे कते दुनिया में वो नफ़र कॉं है ?
नफ़र सबी च कहवाते किसे ख़बर कॉं है ?

नफ़र ऐसा अछना जो साहब का नाम करे, अपना काम करे। नफ़र वो जो अपने काम ते साहब का काम अगला जाने। नफ़र वो जो साहब नईं कहे लग साहब का ख़याल पछाने। नफ़र कूँ भोत अक्ल का सकत अछना। नफ़र भोत आली हिम्मत अछना। जॉं ऐसा साहब, ऐसा नफ़र, वॉं काम फ़तह ज़फ़र। अताल क्या है डर ? ज कोई है दाना, ज कोई समझता है बात का माना। वो नफ़र कूँ देख साहब का मिक़दार जानता है के वो नफ़र कूँ देख साहब कूँ पछानता है के उस नफ़र का साहब, येती अक्ल, येती च फ़ाम का है, उतनी च तदबीर उतने च काम का है। नफ़र कूँ कई मक़सूद कूँ भेजें तो भोत फ़िक्र करना। आक़िल लोकों भोत तमाशे के

मैपरस्त-शराबी
दाना-होशियार
गुलरेज़ी-फूल का छिड़काव
हम-हिम्मत
ज़फ़र-सफलता †
मिक़दार-प्रतिष्ठा †
दीस-दिवस
कर कर-करके
पकड़ को-पकड़ कर §
कॉं-कहाँ §
अगला प्रथम, बड़ा
कहे लग-कहने तक

हैं। भोत डरना। जो कोई दानायाँ दानिशमन्दाँ कहवाते, बाती च में बात कूँ समज जाते। आक़िलाँ ने अक्ल सूँ मुल्कगीरी किये हैं। उजाला पाड़े हैं। रोशनज़मीरी किये हैं। जो अक्ल होर फ़िक्र पर आये हैं। थोड़े कूँ भोत कर दिखलाये हैं। तदबीराँ किये हैं। मुल्काँ लिये हैं। अगर अक्ल कूँ टुक हिम्मत की चाशनी दिया जाए तो ये बी कुछ काम किया जाए जेता अक्ल, जेता ज्ञान है; तवक्कुल बी म्याँने म्यान है। मर्दी कूँ एक अक्ल है, के उस अक्ल का नाँव दीवानगी, मर्दानगी। मर्दी कूँ वो भोत भाती। वो अक्ल आड़े वक्त पर काम आती। वो अक्ल नईं सब किसे, मगर ख़ुदा देवे जिसे। बाज़े लोकाँ ऐसे लोकाँ कूँ दीवाने कते, उनो क्या जाने कते? दरअसल अपस में नईं है समज, क्या समझेंगे दाने, दीवान्याँ की रज। उनो चुप बाताँ करते आकर म्याँने, आखिर भले-बुरे के यार सो दाने-दीवाने। तदबीर सच सूँ अछे तो सवाद है, काम समज सूँ अछे तो कुछ सवाद है। जिस तदबीर में सच नईं वाँ इज्ज़त कूँ कुछ समज नईं। ऐसी तदबीर का पाया क़ायम नईं अछता, दायम रहेगा कर जानता। वले दायम नईं अछता। दुश्मन कू ज़ेर करने, पेश होना या ज़बर। दुश्मन तिल तिल की लेता है ख़बर। आज क्या खाया क्या पिया? आज किस सूँ क्या बात किया? आज क्या तदबीर करता है? आज क्या क़स्द रखता है? आज किस कने क्या ल्याया? आज किसे क्या दिया? आज कहाँ बैठा, कहाँ सोता? आज घर मे क्या अँदेशा होता? यूँ बी मैं पर मिसाल ले देता, नज़दीक के लोकाँ कूँ बाँद लेता। यूँ गाफ़िल बिचारा खबर नईं धरता। ज कुछ अपस कूँ भाये सो करता। यूँ तो सब कूँ भले जानता, सब कूँ मानता। इसका तो सब पर ऐतबार, वले बाज़े नज़दीक के लोकाँ च दुश्मन के ख़बरदार, नीम दुश्मन पूरे धत्यारे, सो उनो च दुश्मन कूँ ख़बर अँपडानहारे। दुनिया ऐसी है, जो इस दुनिया ख़ातिर लोकाँ ने माँ-बाप कू मारे हैं, सगे भाया ने सगे भाया सूँ अदावत सारे हैं। दुनिया माँ, दुनिया बाप दुनिया माई, आखिर यू दुनिया किसकी हो नईं आई। दुनिया के लोक भोत मस्त, भोत बेख़बर, ख़ुदा रसूल इनो कूँ किधर। इनो का माँ-बाप, इनोंका ख़ुदा-रसूल; सो ज़र। राम जो जान कर रावण पर आये, घर के भेदी ते लंका जाये। राम जो जान कर रावण पर आया, माया देकर भाई कूं भाई च मारने फ़रमाया। यू दुनिया है, सगे भाई कूँ यहाँ पतयाया न जाए। नफ़र-चाकर तो बेगाना। नफ़र-चाकर पर यकायक पतयारा क्यूँ आये? दुनिया में हरेक काम कू वसीले भोत हैं। दुनिया

तवक्कुल-ईश्वर विश्वास
रज-जोश, भावना
ज़ेर-नीचे, पराजय
पेश-नीचा दिखाना
ज़बर-ऊपर आना, उभारना
क़स्द-विचार †

† नीम-आधा
ज़र-सोना, धन
रज-सम्पत्ति, मिट्टी
किस कने-किसके पास
बाँद-बाँध §

§ धत्यारे-हत्यारे
अँपडानहारे-प्राप्त करानेवाले
लोक-लोग
इनों कूँ-इन को

दग़ाबाज़ां की है। दुनियाँ में मकर होर हीला भोत है। एक पादशाह जो दुसरे पादशाह सूँ कुछ काम धरता है, तो उसके नज़दीक के लोकाँ कूं बी कुछ दे कर अपने चाकर करता। उसके बन्दे जो अपने हुए चाकर, तो काम दुनिया का बँद बैठा है आकर। जो उसके अरकान-दौलत अपस सूँ किये क़ौल करार, पीछे इनों के पादशाह के दिल कूँ फिगते केती बार? अव्वल के दाना लोक भी यूँ ई च फिक्रयाँ ढूँडते थे अपस में अपे बिचार। भोत कामां ऐसी तदबीराँ सूँ च किये। जाँ इनों कूँ कुछ मुश्किल पड़या इस ठार। दुनिया तमाशे की ठार है। वले ज कोई आक़िल है वो अपनी जागा भोत हुश्यार है। दर-दीवार ते बिचकने की जागा है। अपने जीव के यार ते बिचकने की जागा है।

ज्यूँ त्यूँ एकस कूँ अपने जीव की बात पतया कर कता के यू मेरे जीव के प्यार का यार है, इस कूँ बी इस यार पर ऐतबार है। यू राज़ किसे ना बोलसी। अगर खातिर क़रार है। उस भरोसे पर यू तेरी राज़ की बात जाकर उस अपने जीव के यार कने कता। उसे यार कर पतयाया है। ज्यूँ नईं रहता जाँ जीव पतयाया वाँ हरेक बात कने कूं दिल में मुलाहिज़ा नहीं आता। यूँ च यार कूँ यार, यार कूं यार कने कते भीतर की छुपी बात भार जाती। तदबीर का बंद टूट्या, एकाधे वक्त नईं सो कने की बला आती। यार कूँ यार किया नफ़र सुन्या, चाकर सुन्या, एक बात पर चार बातों ज्यास्त बन्या। ऐसियाँ बातों सुनते भले आदम्याँ के नक्शाँ चुनते हुजूम मिलता चौंधर ते। पीछे वो खिलवत में की मख़फ़ी बात कूंचे-कूंचे बाज़ार-बाज़ार फिरती। इस बात की यू है जड़। इस जड़ का उसे नईं खबर। यू हैरान होता, परेशान होता, कता यू बात मैं खिलवत मे फ़लाने सूं कह्या था। वो बी एक बहाने सूं कहा था। यू बात भार क्यूँ पड़ी? यू बात ग़ैर ठार क्यूं पड़ी? तू अपनी बात कूं अपे नईं छिपा सक्या। जब तो दुसरा तेरी बात ना छुपा कर किसे बोले तो क्या अजब? एकस का माया लेना, वले अपना मक़सूद अपने दिल में रखना। दिल का यार सो पाक-परवरदिगार। जिने हर किसे पतयाया उने दग़ा खाया। अगर कोई किसे पतया कर अपने राज़ की बात बोली तो उसे यूँ छिपाना ज्यूँ अपनी शर्म, तो उसे कते हैं नेम, उसे कते हैं धरम। हज़ार जीव का यार अल्ले तो बी कोई अपनी शर्म दिखलाता है! अपना शर्म दिल दिखलाना किसे खुश आता है? ऐसा काम हर्गिज़ किसे भाता है? अमानत में खयानत करना भले आदमी का काम नईं। यू काम दानायाँ का है। नादान कूँ फ़ाम नईं। ज कोई दुनियादार है, सो दुनिया कूँ खूब फ़ाम करे हैं।

अरकान-सदस्य
खिलवत-एकांत
मख़फ़ी-गुप्त
कने कूँ-कहने को
कते कते-कहते कहते
बँद-बन्धन
आदम्याँ-आदमी का ब. व.
चौंधर-चारों तरफ़
वो बी-वह भी

दुनिया में दोस्त थोड़े, दुश्मन भरे हैं, दुश्मन अगर चिमटी है तो भी अदावत सर चढ़ेगी। ग़फ़लत में एकाधे वक्त दग़ा देकर लड़ेगी। ज्यूँ फ़ारसी में कता है—

फ़र्द

'दानी चे गुफ्त ज़ाल बारुस्तमे खिरद
दुश्मन न तुवाँ हक़ीर बेचारा शुमर्द

बारे कहानी कही सारी रात, भई आखिर वही च बात के दुश्मन गुज़रता सो ज़रूर, कौन गुज़रता है? अपस के बल में सँपड़्या तो कुछ करता है। मर्द यूँ रहना के दुश्मन उसके रहने की वजा च को देख डरे। अपने हद सूँ अछे ज्यास्ती फ़िक्र ना करे। मर्द यूँ रहना जो खुदा बी शाबाश-शाबाश कहे दाने। जो रखते दाने-दीवाने वो एक ज़रूर के वक्त काम आते। वक्त जिसे कते वो ज़रूर का है। यू अँदेशा भोत दूर का है। सब बातों का यू च माना के दाने-दीवाने लोक बहुत बुलाना। भोतों कूँ थोड़े मारे सो दाने-दीवाने। खुदा च कूँ बड़ा जाने सो दाने-दीवाने। दाने-दीवाने लोक मिला। अपै बी बुज़ुर्गी सूँ जिये। दुसर्यों कूँ बी बुज़ुर्गी सूँ जिला। यू मकरी दग़ाबाज़ा काम क्या आती? है लगन खाते। नईं तो निगल जाते। अपनी इज्ज़त की नई शर्म सो दुसर्यों का क्या रखेंग नेम-धर्म। दाने-दीवाने छोड़ जाने नईं जानते। भई कुछ हीला मकर म्योंने नईं जानते। उनो का दिल भोत कड़वा, लेने-देने की बी कुछ नईं परवा। बाज़े लोकाँ मजूरी करते। साहब के काम पर नज़र नईं, हर किस की शर्म हुजूरी करते। मजूर की टुकड रोटी पर नज़र, बाज़े कामा कों उसे क्या खबर? मजूरा मे कों बड़ा फ़ाम, ऐसे मजूराँ ते क्या होवेगा काम? ज कोई आकर दौलत पर खड़े दाने-दीवाने मिले तो हुए बड़े। खुदा जाने किसके सर यू असर चड़्या है। बड़े होना क्या बात मे पड़्या है? आदमी जागता नईं सोता है। आदमी जिस पे मैं पड़्या सो होता है। मशक्कत टाली नईं जाती। हिम्मत खाली नईं जाती। बले शर्त है। जूँ हिम्मत अछना, सकत का गत अछना। आंशिक़ नाँवे के होकर खुदा पास टोवे मँगना, मँग तो नाँवँ मँगना। मर्द वही च जो अपस कूँ पछान्या, अपने नाँवे की लज्ज़त जान्या। अलकिस्सा हिम्मत ने नज़र कूँ, इस खुश खबर कूँ खिलवत में ले जाकर अपने नज़दीक बिसला कर समजाया, मक़सूद उसका पाया।

अदावत-दुश्मनी
खिलवत-एकान्त
चिमटी-चींटी
चढ़ेगी-चढ़ेगी †
† रहने की वजा-रहने का तरीक़ा
भोतों कूँ बहुतों को
है लगन-होने तक
सकत-शक्ति
बिसलाना-बैठाना
१ रुस्तम के बाप ज़ाल ने अपने पुत्र से क्या अच्छा कहा कि दुश्मन को कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।

बैत—

जिने यकीं सूँ जीब अपने यार सूँ लाया
ज कोई साबित हो आया मुराद उने पाया

कहा खूब तूँ मर्द सुधी है, हौर इस काम पर भोती च बजिद है। तो क़िस्सा कता हूं सुन के अँपड इस आब-हयात के चश्मे लगन। मशरिक़ विलायत में, बेनिहायत में, एक बादशाह है, जिल्लिल्लाह है, आलमपनाह है, साहब-सिपाह है, हक़ीक़त आगाह है। इश्क़ उसका नाँवँ, हर दिल में उसका ठाँवँ। सब सूँ जोड़या, किसी सूँ नई तोड़या। केता करेंग उसकी बयान, अगर मिलेग हर दो जहान। इश्क़ आप भावता, इश्क़ मदमाता। इश्क़ खुदा कूँ अँपड़ाता, इश्क़ खुदा कहवाता। इश्क़ कूँ न पीछे की फ़िक्र न अंग का अँदेशा, इश्क़ सरमस्त, बेपरवा उसका रेशा रेशा। इश्क़ किसते ना डरे, इश्क़ खुशी भावे सो करे।

बैत—

वो शाहे इश्क़ है यू सब जहाँ उसका है
सितारे-चाँद सूरज आसमाँ उसका है

इश्क़ आग है। जाँ जाए वहाँ जाले, इश्क़ की आग कूँ कौन सँभाले? इश्क़ का जीव हुस्न। इस जीव में लाख लाख गुन। इश्क़ झाड़ है, हुस्न पानी, हुस्न ते क़ायम इश्क़ की ज़िन्दगानी। इश्क़ हुस्न पर वाला व शैदा, इश्क़ हुस्न खातिर हुआ पैदा।

फ़र्द

अजब शराब अहे हुस्न जिसमें सब मस्ती
के इस शराब सूँ चउनी है इश्क़ कूँ मस्ती

इसका काम नाज़, उसका काम नयाज़। यू मुस्तग़नी, वो मुहताज, यू सब शोखी, वो सब राज। इश्क़ हौर हुस्न दोनों जोड़ा, करे भोत, समज्या कोई थोड़ा। इश्क़ हुस्न खातिर हुस्न इश्क़ की खातिर हुआ आशकार। इन दोनों च का है शोर, घरें घर, ठारें ठार। इश्क़ आशिक़, माशूक़ हुस्न नारी; इश्क़ के माशूक़ दायम सँवारी-सिंगारी।

मुराद-वांछा	वाला-पागल, मुग्ध	सुधी-विद्वान्
बजिद-हठी	शैदा-मुग्ध	भोती च-बहुत ही
सरमस्त-बेसुध	मुस्तग़नी-निरपेक्ष	कता हूं-कहता हूँ
रेशा-टुकड़ा		

अलक़िस्सा इस इश्क़ बादशाह कूँ, आलमपनाह कूँ एक बेटी है। भोत मक़बूल, भोत ख़ुश अ़सूल, भोत माकूल, भोत ख़ुशरंग, भोत ख़ुशढंग, नूर में सूर, नईं उसके सम नाज़ुक नरम; जूँ फूल, जूँ अ़बेशम। बालाँ किरना देखती अँखियाँ कूँ घेरे आकर किरना-सुद छोड़ दीवाने होकर फिरना।

बैत—

घर में ते हँसते निकले आँगन मने फूलाँ झडे
आशिक़ होकर चाँद होर सूरज दरवाज़े पर आकर पडे

यू नवा नूर नवा आफ़ताब, उसे देखने का किसे ताब? आलम आलम उसकी ख़ातिर ख़राब, हर दिल में उसका इज़्तराब। हर तरफ़ आशिक़, हज़ार मजनूँ, हज़ार फ़रहाद; सरमस्त, दिलरुबा बेपरवाह, बेदाद।

बैत—

गुल के रंग क्या चमन में शाबाँ हैं
लाले नईं जानो आफ़ताबाँ हैं

नाँव उसका हुस्न। केते बोलूँ उसके गुन? कोहक़ाफ़ के उधर एक शहर है। उस शहर में एक बाग़ है के बहिश्त उस बाग़ की रश्क ते दाग़ है। जिसके फूल देखते जीव आवे। उस बाग़ कूँ बहिश्त सूँ क्यूँ तश्बीह दिया जावे। सहन उसका मोतियाँ सूँ भर्या जूँ तार्यां सूँ गगन, बहिश्त उसके एक बाग़ के कोने का चमन। मलायक आरजू धरते हैं उस बाग़ में आने। हूराँ तरसतियाँ है उस बाग़ के फूल का तुर्रा ल्याने।

बैत—

बुलबुल होकर नाले भरे चमने चमन सेराब हो
फूलाँ के ख़ातिर जा पड़े काँटयाँ उपर बेताब हो

मजनू-लैला नाल्या, अपस कूँ भोत सँभाल्या। आख़िर दीवाना हुआ उस बाग़ के फूलाँ वास्ते। फ़रहाद कोह में आह भरता है अजूँ, इस बाग़ के शीरीं फलाँ की आस ते। ज़ुलेखा जो फिरती थी जो यूसुफ़ के आसपास, सो इस बाग़ के फूल की पाई थी बास।

मक़बूल-सूरत, इच्छित	शाबाँ-बहार (शाब-जवानी)	सेराब-तृप्त
ख़ुशरंग-सुन्दर	लाला-एक फूल	कोह-पहाड़
अबेशम-रेशम	तश्बीह-उपमा	
इज़्तराब-उद्विग्नता	मलायक-फरिश्ते (मलक ब. व.)	शाबाँ-शाब का ब. व.
बेदाद-क्रूर	नाला-शोर, रुदन	अजूँ-आज भी

बैत—

जिधर-तिधर भी हुस्न है जो दिल बहलाता है
किधर-किधर की बला आशिक़ाँ पै ल्याता है

जिस दिलरुबा शहर में यू दिलाराम बाग़ है उस दिलरुबा शहर का नाँवँ दीदार। उस दिलाराम बाग़ का लक़ब रुख़्सार, इस बाग़ में एक चश्मा है, इस चश्मे का नाँवँ धन, मनमोहन जगजीवन। मोती च मीठा जूँ नबात; इस चश्मे में है तू मँगता सो आब-हयात। इस चश्मे पर जावेगा तो वो आब-हयात पावेगा। होर वो हुस्न नार, दिल का सिगार; जिस पर भूल्या सब संसार।

फ़र्द

लाले दिये सीने पो गुल फुल फुल के तेरे गाल पर
दरिया में ते हंस आयगा आशिक़ हो तेरी चाल पर

इश्क़ की बेटी लताफ़त की बीबी। भोत नाज़ सूँ, भोत साज़ सूँ, लटकती ठुमकती, झलकती, झुमकती, रुख़सारे की फुलवाड़ी में, उस फूली फुलवाडी में नाज़, ग़मज़ा, इशवा, अदा, हरकत, दिलरुबाई, ख़ुशनुमाई, लताफ़त ऐसियाँ चाँद जैसियाँ, सुघड-सहेलियाँ सू मिल-मिल ऐसियाँ रँगीलियाँ, छबीलियाँ सूँ मिल मिल दायम तमाशे देखती फिरती है, जा बजा देखती फिरती है।

बैत—

आई धन चमन के आँगन में
फूल फिरता है फूल के बन में

ऐसा खयाल कते हैं, वो आकर इस चश्मे में ते हमेशा आब-हयात पीती है। हिम्मत यू बात कहा। गुम हो रहा नज़र। नज़र सुन्या बेसुद हुआ; मर धुन्या। दोनों हुए बेहोश, दोनों किये अपस क फ़रामोश। न यू देखता उसके उधर, न उसकी उसको ख़बर। दोनों मस्त। दोनों बेसुद हो पड़े। बारे, केते वक्त कूँ दोनों हुश्यार हुए। दोनों उठ खड़े। दोनों हैरान, दोनों परेशान। एकस का एक देखे मूँ। कहे अजब था यू जुनून। नज़र दिल पर फ़िक्र की कस्वत बुन्या। ऐसा तमाशा ना कोई

दिलाराम-प्रेमिका, मनोरंजक
दिलरुबा-मनमोहक
रुख़्सार-गाल
नबात-मिश्री
लताफ़त-कोमलता
ग़म्ज़ा-नख़रा
इशवा-नाज़, नख़रा
जुनून-उन्माद †
† कस्बत-बेरा
सीने पो-छाती पर
मूँ-मुँह

देख्या ना कोई सुन्या। यू कुदरत का काम, यू हैरान होने का मक़ाम। हिम्मत कहा—मैं कहा सो अंगे आया; बारे, अलहम्दुलिल्लाह, ज्यूँ त्यूँ तू अपने मक़सूद पाया।

बैत—

सब किसी कूँ खुदा मुराद देवे
उसके महनत की उसकूँ दाद देवे

अताल तुझे मैं क्या कहूँ? न कहूँ तो चुप बी क्यूँ रहूँ? तूँ तो भोत दाना, भोत आक़िल है। वले हुश्यार, दिलरुबा शहर—दीदार कूँ अँपडना भोत मुश्किल है। बाट में जिन्स-जिन्स की रोहनत हायल है। इस दरिया में कहीं ग़र्क़ाब, कही साहल है। क्या वास्ता अंग एक शहर है। इस शहर का नाँव सुबुकसार; तोबा अस्तग़फ़ार। दिल कूँ बाँ भोत इकराह। लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला। एक देव है पादशाह रूसियाह, गुमराह, बदकार, उसका नाँव रक़ीब, ना बरखुरदार, दिल आज़ार, पुश्त मुरदार, हेचकार, बेबहार।

फ़र्द

इश्क़ के दरवाज़े पो सब किसकू सर धरना अछे
जो इश्क़ फ़र्माये अपै अख्तियार हो करना अछे

वले इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, साहब-सिपाह के हात में है उसका अख़्तियार; इश्क़ पादशाह कूँ इस जिन्स का आदमी बी है दरकार। बादशाहाँ नईं अछते पर कम; बादशाहाँ कने जिन्स जिन्स का अछता आदम। इश्क़ पादशाह के फ़रमान तल रक़ीब सर धरे, ज कुछ इश्क़ बादशाह फ़रमाये सो रक़ीब करे। दिलरुबा शहर का है निगहबान अग़ाधार कूँ बाँ नईं देता आन। हर्गिज़ किसते नईं डरता। ज कोई आता उसे मना करता। उसके डर ते नज़र भर कने न पावे, अन्दाज़ा किसका जो कोई बाँ आवे। ज कोई आता उससूँ झगड़ता, कुत्ता होकर लड़ लड़ पड़ता। जो ऐसा आदमी अछे नित कुत्ता रखने की बाँ क्या हाजत? न भले ते डरेगा न बुरे ते डरेगा, एक रक़ीब हज़ार कुत्ते का काम करेगा।

अलहम्दुलिल्लाह-सब प्रशंसा परमेश्वर के लिए
जिन्स जिन्स-तरह तरह
राक़ाब-गहरा पानी, भँवर
साहल-किनारा
सुबुकसार-हल्का, नाज़ुक
अस्तग़फ़ार-शरण में रखे
इकराह घृणा
देव-राक्षस
रूसियाह-अभागा, काला मुँह
रक़ीब-जिस स्त्री के दो प्रेमी होते हैं। दोनों प्रेमी एक दूसरे के लिए रक़ीब कहलाते है। रक्षक। शत्रु।
नाबरखुरदार-नालायक
दिल आज़ार-दिल को पीड़ा
† देने वाला
अग़ायार-शत्रु (ग़ैर ब. व.)
हाजत-जरूरत
फ़रमान तल-आदेश के नीचे

१ ईश्वर के अतिरिक्त किसी में शक्ति नहीं है।

बैत—

बाग़ में माली क्यूँ किसे छोड़े
बिन रज़ा आये तो कमर तोडे

तूँ अगर इस शहर सुबकसार ते, इस बेऐतबार ठार ते ख़लासी पावेगा होर खुदा तुझे ले जावेगा तो याद अछो मेरा वहाँ एक भाई है, एक माईजाई है। क़ामत उसका नाम, इस्तक़ामत उसका काम। दिलरुबा शहर दीदार में उसका मुक़ाम। क़बूल सूरत, मदन मूरत। बलन्द बाला, बहुती च आला। दिल कूँ लगे, जीव कूँ ठगे। सुद छिने, बुद छिने। फ़िराक़ कूँ सुलगावे, इस्तयाक़ कूँ अंग लावे। बेताबी कूँ पाले, आराम कूँ जाले। क़रार कूँ बेक़रार करे, इन्तज़ार कूँ प्यार करे। सबूरी कूँ लूट लेवे, इज़्तराब कूँ कुव्वत देवे।

बैत—

यू दुनिया में हुस्न नईं एक बला है
के आलम इस बला पर मुब्तिला है

क़ामत नईं वह एक आफ़त है। आशिक़ाँ के दिलाँ का ज़ियाफ़त है। इस क़ामत ख़ातिर आशिक़ा पर भोत महनत है, भोत मशक्क़त है। इस्तक़ामत कूँ इस क़यामत कूँ, तेरी सिफ़ारिश ख़ातिर एक किताबत लिख देता हूँ। तेरे क़िस्से की हिकायत लिख देता हूँ। मेरा नाँवँ ले, यू किताबत उसके हात दे। अलबत्ता तुज सूँ कुछ मुहब्बत धरेगा, मुरव्वत करेगा। तुजे काम आएगा, वहाँ की रविश समजाएगा।

फ़र्द

एकस पर महर धरना खूब है कुछ
मुरव्वत किस मूँ करना खूब है कुछ

जिस वक्त तूँ वहाँ ते भी क़दम अंगे धरेगा यार, तुज पर लइ लइ क़िस्से घड़ेंगे इस ठार।

फ़र्द

नफ़ा है त्यूँ च जफ़ा भी इसे सफ़र म्याने
खुदा किसे न ले जावे बुरे शहर म्याने

ख़लासी-छुटकारा
क़ामत-क़द
इस्तक़ामत-दृढता
बाला-ऊँचा
आला-श्रेष्ठ
इज़्तराब-उद्विग्नता
ज़ियाफ़त-दावत, समारोह
रविश-चाल चलन
बहुती च-बहुत ही
म्याने-में
लइ-बहुत

अलक़िस्सा जूँ हिम्मत ने नज़र कूँ, उस पुरहुनर कूँ, उस चंचल नज़र कूँ उस आब-हयात का निशाना दिया, ख़ातिर निशान किया। नज़र हिम्मत कने रज़ा मँग कर, उमंग कर भोत मुहब्बत सूँ, भोत मुरव्वत सूँ, चकोर होकर, शर्म-हुज़ूर होकर, भई मशरिक़ की मुल्क के उधर रुख़ किया, तवक्कुल के हात में हात दिया। नज़र कूँ पकड़या उचाट, यही अपै और अपनी बाट। केतक दीस चलते-चलते, तलमलते तलमलते, अपने दिल कूँ तक्वा दिया, समझाया। एक दीस उस बैतुलमाल, उस शहर सुबकसार में, उस पलिष्ट .टार में, बात वही च थी। लाइलाज हो आया। रक़ीब पादशाह के लोकाँ, उस रूसियाह के लोकाँ देखे के यू आदमी इस शहर में नवा आया है। पालती है, जासूस है, भेदी है, चोर है इस का माया है।

बैत—

पराये शहर में हर्गिज़ ख़ुदा किसे ना लिजाये
अगर हज़ार भला है पै उसकूँ कौन पत्याये

दिल में सब यूँ जाने, उसका माया पाने, पकड़ कर, जकड़ कर, रक़ीब बादशाह रूसियाह, बदराह कने कते जने मिल कर ल्याये। अहवाल उसका सब समजाए। रक़ीब ने, रूसियाह ने, बेनसीब ने बोल्या के तूँ कौन है, कहाँ का है? इस जागा तूँ क्यूँ आया? इस शहर की बाट तूँ क्यूँ पाया? तुझे कौन दिखलाया। नज़र आक़िल था, समझ्या के यू तुर्फ़ा वक्त है, काम भोत सख़्त है। यहाँ अक्ल ना बिसरना; अंदेश कर कुछ काम करना।

बैत—

अक्ल अछना वक़्त ऊपर ख़ुदा का कुछ करम होना
अगर फ़ौलाद है तो बी ज़रूरत कूँ नरम होना

रक़ीब रूसियाह कूँ, उस गुमराह कूँ, ख्वाही न ख्वाही वक्त क़सूर था, ज़रूर था सलाम कर, कुछ कलाम कर, चुप नईं रह्या। कहा के मैं हकीम हूँ। भोत मौतबर हूँ। सब हिकमत ते बाख़बर हूँ। सर से पाँव लग इल्म में हुनर हूँ। बेजान कूँ देऊँगा जान, शागिर्द है मेरा अफ़लातून-अरस्तो, बूअली होर लुक़मान। दुनिया में अक्ल कुछ बी जो धरता सो सोई च खूब। मजलिस में समझ कर बात करता सो

तवक्कुल-भरोसा
तक्वा-धैर्य
बैतुलमाल-प्राप्त राजस्व को जहाँ जमा किया जाता है
पालती-जासूस §
§ अहवाल-हाल (ब व.)
तुर्फ़ा-अनोखा
ख्वाही न ख्वाही-चाहे अनचाहे
पलिष्ट-अपवित्र
नवा-नया
बूअली सीना-ईरानी, विद्वान, विचारक,

वो ई च खूब। नईं जानता हूँ ख़ुदा का भाया, जो मुझे इस मुल्क में लाया। अगर हिकमत पर मैं ध्यान धरूँगा तो माटी कूँ सुना करूँगा। गर किसी कूँ सुना भाता है तो मुझे रास करने आता है। बग़ैर पुट, बग़ैर आस, पीतल कूँ कर दिखलाऊँगा सुने ते खास। रक़ीब बेनसीब, बेरविश, बेतरतीब सुने का तालिब था, इस्तियाक़ भोत ग़ालिब था। बोल्या के अलहम्दुलिल्लाह यू तूँ नईं आया है, अलहक़ के यहाँ तुजे ख़ुदा ल्याया है। हिकमत के इल्म में नादिर ऐसा, भोता दीसाँ पीछे मुझे मिल्या तुज जैसा।

बैत—

खुदा सँभाले बुरी है तमा की दुश्वारी
जहाँ भोत तमा भोत है वहाँ ख़ारी

भोत तमा ते भोत है ज़ियाँ! भोत तमा ते इज्ज़त कूँ नुक्सान, भोत तमा ते रहता नईं मान। भोत तमा ते आदमी दीन गँवाता। भोत तमा ते आदमी का ईमान जाता। तमा ते बहिश्त में ते आदम कूँ काढ़े। तमा ने आदम पर यू बला पाड़े। जिसके बड़याँ पर तमा ते यूँ ल्याये ख़ारी। उनों के फ़र्ज़न्दान सूँ क्या करेगी वफ़ादारी? तमा का आदमी सर नईं उचाता। जाँ जाता वाँ सर नवाता। जिसके सर पर तमा का भार, उसका सर दायम तलार। बेमग़ज़ ख़ाली सर, भोती च पड़ पड़ता, फिरता फिर फिर। तमा ते बड़ाई जाती, तमादार कूँ बड़ी बात काँ आती? नहना काम क्या क़बूल? बड़ाई कहाँ ते आएगी धूल? बेतमई ते ख़ुदा का विसाल, बेतमाई ते होता साहब-हाल। सवाब नईं रहता। जाँ तमा आती बेतमई सब किसे भाती। जाँ तमा आई, वाँ ख़ुदा सूँ बी कुछ सवाद नईं अछता। तमा ते दायम परेशान। कधीं दिल शाद नईं अछता। ज्यास्ती तमा न ख़ल्क़ कूँ भाती ना ख़ुदा कूँ भावे। ख़ुदा पास बी इतना ना मँगना जो ख़ुदा बी वाज़ आवे।

बैत—

तमादारी बुरी है ऐ अज़ीज़ाँ
नहीं कुछ खूब ऐसा है तमीजाँ

× ×

तालिब-इच्छुक (तलब-तालिब) § विसाल-मिलन जाँ-जहाँ
इस्तियाक़-शौक़ वाज़-तंग तलार-नीचे
नादिर-अलभ्य, अनुपम अज़ीज़ाँ-अज़ीज़ का ब. व.
ज़ियाँ-हानि काढ़े-काढ़े, निकाले तमीजाँ-तमीज का ब. व.
तमा-लालच § उचाता-ऊँचा करता †

तमादारी सूँ आती बार ख़ारी
तमादारी में नईं है रुस्तगारी
तमादारी के सर ते जो उठे हैं
वो ही ऐसी बलायाँ सूँ छुटे हैं

यूँ लिये तो लेनहारे का दिल शाद किया अछेगा, वाज़ होकर दिये तो उस देने में सवाद क्या अछेगा ? बग़ैर मँगे वो देनहार है । अगर नईं दिया बी किसकूँ क्या चारा है ? उसकी लोड़ लोड़ना, अपनी ख़ुशी उसकी ख़ुशी पर छोड़ना । किसी पास ते ज़ोर सूँ कोई लेता है, देनहारा है सो अपी च देता है । अगर ज़ोरॉ सूँ कुछ लिया जाता तो काम उस जफ़ा पर ना आता । ज कोई कहवाया बन्दा, ख़ुदा च पर छोड़ना अपना धंदा । ज कुछ दिया उने, उस पर शुक्र करना । ग़र्ज़ ख़ारी सूँ पेट ना भरना । बड़ा नईं होन देती तमा की ख़ारी, तमा यो नहना हुआ नईं तो उसे क्या धाड़ मारी ? ज कोई मर्द है बेतमा वो बड़ा है । सदा उसका ख़ातिरजमा । दुनिया दो दीस की है । थोड़े पर बी गुज़रता है । भोत पर बी गुज़रता है । वले ज कोई मर्द है वो इज्ज़त पर नज़र करता है । जीव है लगे च किसे, एक से चार; आखिर वक़्त कूँ बराबर है मिस्कीन होर दुनियादार । अगर कोई हक़दोस्त अछेगा, उस वक्त दुनियादार ते मिस्कीन का मरातिब ज्यास्त अछेगा । मर्द की नज़र हिम्मत पर है । मर्द की नज़र इज्ज़त पर है । मर्द कूँ मर्द जाने । मर्द कूँ मर्द पछाने । भोत का ना करना हवस, इज्ज़त सूँ जितना मिल्या उतना च बस । बेइज्ज़ती पर आये ते मिल्या जाता; वले मर्दों के अंग वो मुर्दार है । मुर्दार कूँ कोन खाता ? हरेकस पास क्यूँ मँग लेता । मँगने च पर आये तो हर कोई देता । देना तो ख़ुदा का देना, या ख़ुदा के ख़लीफ़े का देना । बाक़ी क्या बिचारे, बाक़ियाँ पास क्या मंग लेना ? उनों बी हज़ार मशक्क़त सूँ मिलाये कर आस । यू दास तिल मन की परदास, यू बाँदी तिल मन की बाँदी क्या हुआ जो वो उड़ के मिला के नादी ? अगर कोई भूखे अछे या नंगे, हैफ़ नईं । ज कोई अपने जैसे पास मँगे मुर्दार बी बड़ी जागा ते कुछ ले सकते हैं । मुर्दार बी किसे कुछ दे सकते हैं ? इज्ज़त ख़ुदा कूँ आया, इज्ज़त रसूल कूँ आया, इज्ज़त मुसल्मानॉ का माया । जिने इज्ज़त कूं समज्या उने ख़ुदा कूँ पाया । इस माना पर यू आयत आई है मुसहफ़ में: जहाँ ते उपजा है दीन के 'अल्लाहिल इज्ज़त वल रसूल वल मोमनीन' ज कोई हरेक पास ते कुछ मँग लिये, हरेक जागा

बारख़ारी-अपमान
रुस्तगारी-छुटकारा
मिस्कीन-जिसकी आकृति से दरिद्रता प्रकट होती है
हक़दोस्त-ईश्वर प्रेमी
हैफ़ दुःख
मुसहफ़-कुरान
लोड़-इच्छा
तिल मन परदास-?
तिलमन-?
नॉदी-लाँघी
१ प्रतिष्ठा ईश्वर, मुहम्मद और भक्तों की है ।

सर नवाये, नहने थे सो उस पर बड़ी हुई। अताल उसे बड़ाई कौं ते आती ? एक सर एतियाँ का भार, किस किस का रचायेगा उपकार ? यक साहब छोड़ इतने साहब क्या ? वही साहब उसका जिने उसे कुछ दिया। ऐसे कूँ ध्यान कौं ? एक साहब पर यू पचास साहब का एक नफ़र। ऐसे कूँ ऐसी बातों का कुछ आर नई। ऐसे का एक जागा पर ईमान क़रार नई। माटी में जाओ नंग-नाम। ऐसे आदमी कूँ नेकियाँ सूँ काम, इज्ज़त हुरमत की क्या हवस ? नेकी हात में आये तो बस। कोई बुरा कहो या भला। तले मुंडी किये होर अखण्ड कला। दिल क़रार रख। आजिज़ नको हो निपट। अगर माटी लेगा तो बड़ी ढीग पर हात सट, खुदा घट। क्या है, काहे कूँ घुटना। जीव गया तो बी हिम्मत न सटना। मर्दा जीव के तमा ते बी छोटे हैं, सर गया बी तो मारते उठे हैं। अपने नेम ते ना जाना। मुए भी हात हिलाना। बड़ा हो बड़े काम पर अस्तियारा च देना। एक दम जीवना, बेखबर नको हो। हुशियार अछ। जिस बज़ा सूरया लेना है, उस बज़ा सूँ बाँ खुदा कूँ जवाब देना है। यहाँ तेरी हिम्मत का यू उसूल, वहा तुझे खुदा क्यू करता कबूल ? यहा च का काम नई कर सक्या फ़ाम, वहाँ बी तो अर्फू लड़ है काम। यहाँ की आरज़ू पर एता मुश्किल, वाँ बी तो लड़ लड़ जागा तरसेगा दिल। बुरा है औरत और सीने का दर्द, ज कोई याँ अपस कूँ सँभाल्या सो बड़ा मर्द। औरत की बात इश्क़ है। पैग़म्बरां पो गुज़र्या है। बहर हाल पराया माल तू क्या अछेगा। कोई उस पर करेगा ख़याल ? दाड़ी मूछ्याँ आया तो क्या मर्द हुए ? चार औरतों भाया तो क्या मर्द हुए ? ऐसे मर्द औरतों ते निबत्तर रासकरास, ऐसे मर्द टके के पचास। ख़बरदार कहवाते होर बेख़बरी च। सूरत आदमी की और सीरत कुछ का कुच। यहाँ ग्यान कू भोत बड़ा जजाल है। आदमी होकर आदमी कूँ समजना तमाम अशकाल है। बारे, रक़ीब बेनसीब का तमा ते सीना गया था चुकल्या। नज़र के हुज़ूर मू में ते यूँ निकल्या के तेयाँ बाताँ सुन मैं रहा हूँ। आस कर अताल जूँ तूँ कहा त्यूँ सुना रास कर।

बैत—

सुनेगा हित बुरा है आदमी कूँ
के ग़म करता अहै सब बेग़मी कूँ

आर-लज्जा
नंग-शर्म
सीरत-स्वभाव
अशकाल-शक्ल का बहु वचन (कठिन)
चुकल्या-कुचला
एतियाँ का-इतनों का
नेकियाँ सूँ-नेकियों से
कला-कहला
निपट-बिलकुल
ढीग-ढेर
नेम-नियम †
† मुआ-मरा
नको-मत
निबत्तर-निकृष्टतर
रासकरास-ठीक ठीक
बेख़बरी च-बेख़बर ही
कुच-कुछ

नज़र जवाब दिया के सुने की तरकीब कूँ कुछ कुछ दारवाँ का मोप दरकार है। मादन इस दारवाँ का दिलरुबा शहर दीदार है, होर गुलशन रुखसार है। रक़ीब, बदनसीब, बेनसीब बोल्या अगर सुना रास करना मयस्सर है, तहक़ीक़ अक्सीर है तो बेहतर है। दिलरुबा शहर दीदार होर गुलशन रुखसार भी नजदीक बल्के नज़दीकतर है। ख़ुदा क़ादिर है, ज कुछ तूँ मँगता सो सब हाज़िर है। हमें तुमें मिल कर जाएँ, जो कुछ मुस्तैदी होना शहर-दीदार ते ल्याएँ। उने बी कहा खूब, इने बी कहा भोत खूब, मतलूब पर आया मतलूब।

बैत—

ज़बाँ एक थी दोनों का दिल जुदा था
समजता हाल उनका सो खुदा था

रक़ीब-बदबख़्त, गुमराह, दिलसख़्त होर नज़र दिल का दौलतख़ाह। दोनों मिल कर, एक दिल होकर दिलरुबा शहर दीदार के ऊधर चले; दिल में कूड-कपट, मूँ पर दोनों भले।

फ़र्द

अगर कोई मर्द है या इस्त्री है
दुनिया में सब दग़ाबाज़ी भरी है

मसलहत सूँ चलता दुनिया का कारख़ाना, कई सच्चा बोल, कई कई झूटा बहाना। बले झूटे कूँ सब कोई पतियाते, सच्चे की बात कोई ख़ातिर नईं ल्याते। झूटा दुनिया में भोती च भाता, सच्चे कूँ कते कुछ काम नईं आता। झूटा नईं होवे सो बात काढ़े, झूटा दो में अदावत पाड़े। झूटा काफ़िर, बेईमान; झूटा बदबख़्त, बदगुमान। झूटे की बात कूँ नईं कुछ बन्द, झूटा सच्च्याँ के कोशाँ का असबन्द, झूटे के मूँ में दायम गंद। झूटे कूँ कई इज्ज़त नईं। झूटा काफ़िर, पैग़म्बर का उम्मत नईं। हज़रत कहे हैं यू सचपने की रती। "अलकज़्ज़ाब ला उम्मती" झूटे

मोप-सामान,
बदबख़्त-अभागा
मादन-उद्भव स्थल
कोशाँ-कोशिशें
उम्मत-जमात, समुदाय
रास करना-अपनाना, परिचित होना †
† दारवाँ-दारू का बहु वचन † दवादारू
सुना-सोना (स्वर्ण)
ल्याएँ-लावें
उने बी कहा-उन्होंने भी कहा
कूड कपट-कूड़ा कचरा, छल कपट
भोती च-बहुत ही †
† असबंद-संबंध
गंद-गंदगी
१ झूठा मेरे समुदाय का नहीं है।

की जीब पछाड़ कर काटना। झूटा शैतान का साला, दीन-दुनिया में मूं काला। झूटा अपने मन में बातां जोड़े, झूटा लोकां के घर फोड़े। झूटे की मैं क्या कहूं बात, ख़ुदा पनाह देवे, झूटा है शैतान की ज़ात। सच्चे कूं हेच कते, कुच का कुच कते। सच्चे की बातां कूं कौन मानता? सच्चे कूं कते यू क्या जानता? सच्चे कूं सच्चा जाने, झूटा सच्चे कूं क्या पछाने? सच्चा झूटे ते दग़ा खावे, सच्चे कूं झूटे की सुहबत काम ना आवे। शैतान ते डरे, त्यूं झूटे ते डरना, झूटे के मूं पर लानत करना।

बैत—

झूटे ते काम ना आसी बड़ा निकामी है
ज कोई झूट कता भोत वो हरामी है

सच्चे पर हँसते, मसख़रियाँ करते। सच्चे कूं उड़ाते। सच्चे कूं बोलां धरते। सच्चे में नईं हैं झूटीयाज़ी; सच्चे सूं ख़ुदा-रसूल गज़ी। बाज़े नापाकी पैग़म्बर कूं बोलते थे के यू दीवाना है, साहर है। यू छुपी नईं बात, ज़ाहिर है। अताल दुसर्यां कूं बोले तो क्या अजब। इस जाहिलां की ज़ाती च ही ऐसी है के हदीस है "अ़सिद्क़ यंजी वलकिस्व योहलक" सच्चे का दिल पाक। झूटे के दिल में शक। याने झूट हलाक करता है और सच देता है नजात, यू रसूल ते आई सो है बात। ख़ुदा रोज़ी ना करे अहल कूं नाहल की सुहबत, यू भोत बड़ा अजाब, यू भोत बड़ी महनत। यां आक़िल सूं बैठना मिल, यां महबूब सूं लाना दिल। ज कुछ हुवे हासिल, या अकेले अछ्ना होर अपे कहना, होर अपे सुनना अपने बैन। यहाँ बी हदीस है के "अ़स्सलामत फ़िलवहदत वलाफ़ात बेनुलअस्ने" याने अकेले अछ्ने में सलामती है। अकेले अछे तो ग्यान कूं बल है। जहाँ दो तीन मिले वहाँ बड़ा कुचाट। वहाँ भोत ख़लल है। दाना की घट होर है, नादां की हट कुछ होर है। फ़ारसी में कता है—"सोहबत[3] के बइज़्ज़त नबूअद दूरां बेह" जां इज़्ज़त ना अछेगी वा क्या सवाद देवेगा बैसना। होर यू बी कता है के "ए वाये बरां सोहबते लादीन वला दुनिया" ज कोई दाना है, वही च यू बात कुछ पाया। कुछ

साहर-जादूगर (सहर-साहर)
अताल अब
नजात-मुक्ति
अज़ाब-कष्ट
हेच-नीच
आसी-आएगा
मसकरियाँ-मस्करी (मज़ाक़) का ब. व.
ज़ाती च-ज़ात ही
बैन-वाणी
कुचाट-उद्विग्नता
बैसना-बैठना

१ सच्चाई जीवन देती है, झूठ मृत्यु देती है।
२ एकाकी रहने में कल्याण है। जहाँ एक से दो मिलते है आफ़त है।
३ जिस संगति से प्रतिष्ठा न मिले उससे दूर रहना अच्छा है।

समझ्या, कुछ सुन्या। नादान में बैठ अबस बोलना, अबस सुनना, औक़ात ज़ाया करना दाना का काम नई। दाना कूं हर घड़ी, हर जागा हज़ार काम है। नादान कूँ फ़ाम नईं यू उम्र ऐसी नईं है, जो कोई उसे गुज़रा। लहो लाब कर जाने। काम के आदमी कूँ यों काम करना है। क्या काम है सो फ़ाम करना है। तन्हाई दाना का ख़ासा है। तन्हाई दाना का ग़ुलासा है। तन्हाई में दाना कूँ भोत हासिल है। तन्हा वही च रहते जे कोई वासिल कामिल है। नादान ते एक तिल तन्हा रह्या ना जासी। नादो कूं हर्गिज़ तन्हाई ना भासी। अगर तूं दाना है, नादानों सूं नको मिल, ख़लल में पड़ेगा दिल, काम भोत होवेगा मुश्किल। गदगड़ा होवेगा तेरा साफ़ पानी, जमीयत तेरी होवेगी परेशानी। नहने अक्ल के आदमी सूं बड़े अक्ल के आदमी ने भोत बात किया तो भोत ज़ियाँ है। उसकी बी अक्ल नहनी होती। बड़ी अक्ल कूँ नुक़्सान है। शराब में नमक गलाये तो क्या सवाद देगा। गुलाब में छाच भाये तो क्या बास लेवेगा? ऐसो से बात करना जिसकी बात कू कस चढ़े, बात कुव्वत पकड़े। बात कूं रस चढ़े। बड़ी अक्ल में नहनी अक्ल मिले तो वूं है खाजी; जूं शराब में ताड़ी, जूं दूध में काँजी। फ़ारसी मे दी दिये है दानाया ने यू बुद।

फ़र्द

पिसरे[1] नूह बाबदाँ बनिशिस्त
ख़ान्दाने नबूअतश गुमशुद

आक़िलाँ ने अव्वल ते बोदे हैं यू कायदा, नादान सूं थोड़ी बात बोलना भोत फ़ायदा। दानाँ नादान की सुहबत सूँ बेज़ार है। दाना कूं नादान सू बोलना आर है। जूँ फ़रीज़क कता है—'तौ मन बाशम सख़ुन बाज़बहमक़ न कुनम' आरिफ़ बग़ैर कौन गुज़रान सकता यू जनम। जिने दानाई का लज़्ज़त पाया उसे नादान की सुहबत हर्गिज़ नई भाया।

अलक़िस्सा वो रक़ीब नापाक, यू नज़र सीनाचाक। इस मुसफ़्फ़ा दिलकुशा क़ामत के बुस्तान में, ऐसे नादिर मकान में, बारे दोनो आये। दीदयाँ कू दूर ते शहर दीदार का तमाशा दिखलाये।

औक़ात-समय
लहोलाब-खेलकूद
ख़ासा-आदत, विशेषता
तन्हाई-एकान्त
ज़ियाँ-हानि
मुसफ़्फ़ा-पवित्र
दिलकुशा-दिल खोलनेवाला §
बुस्ताँ-उद्यान
जासी-जाएगा
मासी-आएगा
गदगड़ा-गदला
भाये-डाले
अबस-बेकार

१ नूह के पुत्र के बुरो की संगति में रहने के कारण उस परिवार से नबूअत लुप्त हो गई।
२ मुझ से जहाँ तक संभव होता है, मूर्ख से बात नहीं करता हूँ।

बैत—

ख़ुदा मुराद देता उसकूँ जिसकी है हिम्मत आली
अजब है उस वक्त उस आदमी की ख़ुशहाली

क़ामत जो नज़र कूँ रक़ीब के सघात देख्या, चोरी सूँ उसके अहवाल की बात पूछ्या।

फ़र्द—

छुपे कुछ रम्ज़ होर नज़दीक अग़्यार
अंखी सूँ बात करना आक़िल इस ठार

नज़र अपना क़िस्सा क़ामत कूँ बोल्या, हिम्मत ने जो मकतूब लिख्या था सो क़ामत के अग्र खोल्या। क़ामत उस मकतूब का मज़मून खातिर ल्याया। भोत मह जूज़ हुआ। भोत ख़ुशी मे आया। क़ामत कू एक ग़ुलाम था, सीमसाक़ उसका नाँव था। उसे बोल्या के नजर कू अपस मे किधर तो भी पिन्हा कर, जीव दान कर, मुश्किल इसका आसान कर के रक़ीब जितना ढूँढे तो भी उसे कई ना पावे, रक़ीब के हात मे नज़र फिर ना जावे। रक़ीब के हात ते नज़र देख्या है भोत ग़ज़ा, हमना ते उसे यू च नफ़ा।

बैत—

मर्द वो जो इस्म अपना उचावे
के जूँ त्यूँ कुछ किसी के काम आवे

क़ामत ते, ख़ूबी की अलामत ते यू बात सुन सीमसाक़ ग़ुलाम ने-दिल के आराम ने नज़र कूँ फ़र्श फ़रह बख़्श के आसरे छुपाया, जे कोई ना पावे उसका माया।

फ़र्द

ख़ुदा ना रोज़ी करे किसकूँ बंद दंदी का
ख़बर ख़ुदा च लेवे बस इस बिचारे बंदी का

मकतूब-पत्र
महजूज़-प्रसन्न, लज़्ज़त प्राप्त की
सीमसाक़-जिस की पिंडली चाँदी की। हो सीम-चाँदी, साक-पिंडली †
† फ़रह-प्रसन्न
पिन्हा-गुप्त
इस्म-नाम
अलामत-चिह्न
दंदी-रात्र
सघात-संगात, साथ
अखी सूँ-आँख से
उचावे-उठावे
जूँ त्यूँ-ज्यों त्यों
बंदी-क़ैदी

रक़ीब देखता है, जो नज़र नईं, जिधर ढूँडता है बी किधर नईं। कह्या सुना रास करते, सो धत्यारे हैं। ऐसे धत्याराँ कूँ तू च लोकाँ मारे हैं दुनिया में कौन सुना यूँ होता तो सब कोई करते। यूँ की लोकाँ भूकों मरते? निर्जीव कूँ जीव देना होर सुना रास करना जाँ ऐसी बात होवे वाँ भोत डरना। ख़ुदा का आलम है। नाँवँ ना कह्या जाए, वले हमें तो इस तलब ते भोत अदब पाये। नज़र आख़िर क्या अपने क़ौल पर नईं रह्या। दग़ा दिया, दग़ाबाज़ था। दग़ाबाज़ी किया। इसका मकर उसे न था फ़ाम, उने तो किया अपना काम।

फ़र्द

रक़ीब बन्द किया था सो बारे बंद ते छुटया
हुआ ख़लास बिचारा यू उसके बंद ते छुटया

रक़ीब गुमराह, रूसियाह, हैरान, परेशान, सरगर्दां, फ़िक्र में चौक्या, अक्ल ते गिर्या आख़िर कुछ तदबीर नईं दिसी। लाइलाज नाख़ुश होकर अपने शहर उधर फिर्या।

फ़र्द

उम्मीद सट को रक़ीब आज नाउम्मेद हुआ
ख़ुदा किया जो नज़र पर नज़र यू भेद हुआ

रक़ीब नज़र के हाथ ते खलासी पाया, ख़ुश हो कर भी क़ामत कने आया। दिल का मुद्आ खोल्या। बोल्या के तेरी हिम्मत ते, तेरी दौलत ते, रक़ीब की मेहनत ते आसूदा हुआ। तेरी महर, तेरी मुरव्वत का मुजे आज़मूदा हुआ। त्यूँ मुझ पर लइ शफ़क़त लइ प्यार किया। मुज पर तो लइ उपकार किया। यू काम करने तू च सके, ख़ुदा तुझे सलामत रखे। मुझे लग्या है शहर-दीदार का खयाल, रज़ा दे अताल। भोत ज़रूर है यू काम, यू ज़रूर मेरा ख़ुदा च कूँ-फ़ाम। क़ामत कहा—ऐ वल्लाह, बिस्मिल्लाह, बसेहत व सलामत ख़ुदा तुझे तेरी मुराद कूँ अँपडावे, ज कुछ तूँ मँगता सो ख़ुदा ते पावे।

बैत

दुनिया में मिल को बिछड़ना यू भोत मुश्किल है
लग्या है दिल सेती दिल मिल रहने च पर दिल है

धत्यारे-दग़ाबाज़ | सुना-सोना | § ख़लास-समाप्त
आसूदा-निश्चिन्त | की-क्यों | चौक्या-चौंका
बसेहत व सलामत-सकुशल | रास-राशि § | दिसी-दिखी

भोत इस्तक़ामत सूँ, नज़र क़ामत सूँ विदा होकर, तसलीम कर कर सर पर हात धर कर अपने ठार ते हिल्या। चल्या सो देखने इस शहर-दीदार कूं, उस रंग भरे गुलज़ार कूँ, उस लताफ़त के लालाज़ार कूँ, उस नवे रूप के नव-बहार कूँ। लज़्ज़त सब मुहब्बत होर प्यार में है; जिसे सवाद कते सो दीदार में है।

बैत—

ज कोई आशिक़ है उसकूँ हुआ बला दीदार
किया दिलाँ कूँ बिचार्यां के मुब्तिला दीदार

इश्क़ दीदार ते पकड़्या ज़ोर, इश्क़ को दीदार ते लज़्ज़त है कुछ होर। जिन आशिक़ ने समज्या है, कुछ इश्क़ के गत; जूँ-त्यूँ उमे दीदार भोत है ग़नीमत। दीदार देखे तो दिल में आया प्यार, दीदार देखे तो दिल कूँ होता क़रार। आशिक़ जो मंगता अपना पीव, दीदार के खातिर देता जीव। यार में लताफ़त ठारे ठार है, वले ज कुछ है सो दीदार है। दीदार सब खूबी का सिंघार है, दीदार दीद्याँ का अधार है। दीदार सहर, मंतर, टोना; आशिक़ कूँ दीदार होना। जो आशिक़ दिल माशूक़ पर वार्या; आखिर दीदार दीदार कूँ पुकार्या। खुदा का बी दीदारी च देखना है, वहाँ बी कुछ झलकारी च देखना है। दीदार दीदे होर दिल का आराम, आशिक़ कूं दीदारी च सूँ लग्या है काम। दीदार में हुस्न जल्वा लेता है, दिल लेता सो दीदारी च लेता है। दीदारी च की लज़्ज़त दिल पर यू बला ल्याती, दीदारी च की लज़्ज़त दिल कूँ इस बला में भाती। भोत कर उसी च ते हुस्न कूँ छिपाते हैं। भोत क़ैद कर महाफ़िजत में ल्याते हैं। अगर हुस्न सब जेशक निकलता भार, आशिक़ाँ में होता ठारे ठार। खूनाखून, मारामार। हुस्न आफ़ताब है, परदे में ते उजाला पाड़े। हुस्न का हुक्म लाजवाब है। दिल में ते इश्क़ कूँ मैदान में काढ़े। अगर हुस्न पर पर्दा ना करने तो एक आशिक़ ना जीवना। सब लड़ लड़ मरते। जाँ अपै होर ग़ैर हुआ वहाँ हुस्न पर पर्दा हुआ, सो भोत ख़ैर हुआ। जिसका हुस्न इस्म है, भोत बड़ा तिलस्म है। इस तिलस्म ते कोई छूट नईं सक्या, ज कोई जुड़ा सो टूट नईं सक्या। इश्क़ के दरिया का तूफ़ान सो हुस्न। आशिक़ का दीन होर ईमान सो हुस्न। हुस्न कूँ अपस ते छुपाने नईं आता। सब में अपस कूँ दिखलाता छुपाते छुपाते हज़ार पर्दे फाड़्या। पर्दे में ते अपस कूँ भार काढ़्या। खूबी क्या छुपी रहती है? महबूबी क्या छुपी रहती है? जे कोई खूब है उमे अपनी

इस्तक़ामत-दृढता
तसलीम-प्रणाम
गुलज़ार-चमन, वाटिका
लालाज़ार-लाला फूलका खेत
मेहर-जादू
जल्वा-प्रकाश
महाफ़िज़त-सुरक्षा
तिलस्म-जादू, आश्चर्यजनक
सिंघार-सिंगार
दीदारी च सूँ-दीदार से ही
भाती-डालती
पाड़े-निकाले

ख़ूबी छुपाने नईं भाता। ख़ूबी छुपाने ख़ूबाँ कूँ हर्गिज़ नईं आता। हर कोई मँगता है के अपनी ख़ूबी कूँ देखे, हर कोई मँगता है अपनी महबूबी कूँ देखे। ख़ूबी ख़ूब है दिखलाने ख़ातिर ना के छुपाने ख़ातिर। अपस कूँ अपै देख कर हसरत खाने ख़ातिर ना के छुपाने ख़ातिर। अपस कूँ अपै देख कर हसरत खाने ख़ातिर। वले बाज़े ख़ूबाँ ख़ूबी अपनी किसे नईं दिखाये हैं। जितना सके हैं उतना ख़ूबी कूँ छुपाये हैं। हुस्न कूँ नईं छोड़े, जो फिरे बाज़ारे बाज़ार, हुस्न कूँ क़ैद किये है टारे टार। उनों का रेशा किसी के नज़र नईं पड़या। सर ते च उनों कूँ ख़ुदा ने शर्म सूँ घड़या। असील औरतों अपने मर्द बग़ैर दुसरे मर्द कूँ अपना हुस्न दिखलाना गुनाह कर जानतियाँ हैं, अपने मर्द कूँ दो जहान में दीन ईमान अपना पछानतियाँ है। जे ख़ुदा कूँ माने त्यूं अपने मर्द कूँ मानतियाँ हैं। जो मर्द राज़ी तो ख़ुदा राज़ी, रसूल राज़ी। जो मर्द राज़ी तो दीन-दुनिया में औरत की सरफ़राज़ी। जिने नख़र्यों में अँपड़ी, मर्द का दिल हात नईं पकड़ी, अपनी चातगाई कुछ फ़ाम नईं की, निकामी कुछ काम नईं की। वही औरत भली जो कोई मर्द के कहे में चली।

बैत

सख़्या है ग़म ने अदावत तरब अज़ीज़ हुआ
नफ़ा दिया है बशारत जफ़ा यू चीज़ हुआ

अलक़िस्सा बारे, हज़ार मशक़्क़त सूं, हज़ार महनत सूँ, शहर-दीदार कूँ आया, नज़र का जीव भोत ख़ुशी पाया। इस शहर-दीदार में देख्या रुख़सार, अजायब गुलज़ार; मगर नबी बहिश्त पैदा किया है परवर दिगार, झाड़ाँ-डालियाँ सब फूलाँ सूँ बार; फलों सूं सब नादिर, सब अचंबा, सब औतार।

बैत

सिफ़त इस बाग़ की गर कोई सुनावे
अजब क्या जो जन्नत कूँ रश्क आवे

मक़बूल वहाँ हर फल फलता। पाते पात जीव बहलाता। आशिक़ देख वहाँ जीव खोना। हर फूल में लाक तिलस्म, लाक टोना। रंग उसका करे अँखियाँ सूं

तरब-ख़ुशी (तरब तोय से लिखी जाती है)
बशारत-ख़ुश ख़बरी
रश्क-ईर्ष्या
ख़ूबी-विशेषता, श्रेष्ठता
सर ते च-सिर से ही
असील-शीलवान
नख़र्यां-नखरा का ब. व.
चातराई-चतुराई †
† निकामी-बेकार रहनेवाली
औतार-अवतार, दिव्य
पाते पात-पत्ता पत्ता
लाक-लाख
टोना-जादू

हम-आग़ोशी, बास उसकी तमाम दारु ए बेहोशी। तूबा सूँ दावा करती, हर झाड़ की डाली, उस नादिर फूलाँ सूँ भर्या है चमन। कई नई खाल्ची। आशिक़ हुआ सो समज्या यू माना। जिने यू फूल दिख्या सो हुआ दीवाना। आक़ली पड़ी, दीवानगी खड़ी, हुश्यारी उतरी, मस्ती चड़ी। क्या लताफत, क्या नाज़, क्या छब, जिने यह तमाशे देख्या उने बी रह्या अजब अजब। कमर कूँ देख्या के बाल ते बारीक, देखते वक्त नज़र होती तारीक।

नज़र हैरत ते याँ गुम होके जावे
कमर दिसती च नईं क्यूँ बाट पावे

मूठी में क्यों पकड़े बिचारा, जिधर देखे उधर बाव-बारा। नज़र कूँ ऐसे जागा पर ते गुज़रना भोत मुश्किल हुआ। नज़र हैरान, परेशान, फ़िक्रमन्द, बेदिल हुआ।

बैत—

नज़र कूँ ठार नईं किस ठार जावे
वक़्त मुश्किल खुदा कुछ काम आवे

नज़र खार, आवारा; कुछ नईं दिसता चारा। आजिज हुआ बिचारा। क़ज़ा यूँ हुआ, खुदा का रजा यूँ हुआ। जो दीस में हुस्न नार, ओतार, खुशगुफ्तार, खुशरफ्तार दीद्याँ का सिगार, दिल का आधार। फूल डाली ते खूब लट करती। चलने में हंस कूँ हटकती। लावे ते मीठी बोली बात, आवाज़ ते कुमरी कूँ करे मात। कँवल के फूल के फंकड़ियाँ जैसे हात। चमन में फूल, शमे हुज़ूर; लाज ते आसमान पर चड़े चाँद-सूर। मस्त हती ते मग़रूर माती-भाती। किसे खातिर नईं ल्याती। बाल जानो काले नाग, गाल जानो आशिक़ की आग।

बैत—

यू मोहन धन अजायब मोहनी है
सूरज इसके दरस का दरसनी है

हम आग़ोशी-आलिंगन
§ मर्या-मरे
गुम होना-खोना
बाव-बारा=हवा-पानी
दीद्याँ-दीद (आँख) का ब. व.
हटकती-तिरस्कार करती
कँवल-कमल
हात-हाथ
फंकड़ियाँ-पंखड़ी (ब. व.)
हाती-हाथी
माती-मस्त
उसकियाँ-उसकी का ब. व.)
तूबा-स्वर्ग का एक वृक्ष
नादिर-अनोखा
तारीक-अन्धकार
क़ज़ा-संयोग
लावा-एक पक्षी
कुमरी-एक पक्षी §

जोबन अल्मास ते घट, अधर याकूत ते आला निपट। उसकियाँ अँखियाँ जानो लाले, जानो शराब के प्याले। दाँताँ देख मोती के दाने। घरे घर फिरते होकर दीवाने।

बैत—

अजब परी है सो इस पर जो हूर आशिक़ हुए
मसीह देख के गुम हुए सूर आशिक़ हुए।

सो इस दिलरुबा नार कूँ, दीद्याँ के सिधार कूँ, चतर चौसार कूँ, एक सहेली थी। भोत छबीली थी। रात-रँगीली थी। नावँ उसका लट, साँवली निपट। रंग कूँ काली, घूँगरवाली। क़ामत की गुल्ज़ार का तमाशा होर शहर दीदार का तमाशा देखती थी। जाबज़ा देखती थी। आब व हवा देखती थी। तमाशे सूँ जीव लाई थी। आसायश पाई थी। सो उस वक्त धूप की गर्मी थी। अपनी नर्मी थी। मकर छावँ तले आई थी। अपस में एकाएक नज़र पर उसकी नज़र पड़ी। बैठी थी सो बिचक कर उठ खड़ी हुई।

बैत—

आशना अशना कूँ जान्या नईं
आशनाईं कूँ कोई पछान्या नईं

नज़र कूँ पूछी तूँ कौन ? किधर ते आया ? इस बाग़ की खबर तूँ क्यूँ पाया ? तेरा खातिर नईं जमा, तुज में भोत दिसती तमा। परेशान सा दिसता, हैरान-सा दिसता। कुछ गँवा लिया, त्यूँ दिसता। किसी की चोरी किया त्यूँ दिसता। दोनों हैरान, दोनों सरगर्दान, सकते नईं है एकस कूँ एक पछान। नज़र की माँ थी हिन्दुस्तानी, सियाह-पेशानी, बाप था तुर्किस्तानी। लट सूँ लटपट होकर यार निपट होकर आशनाई व हमशहरी का इज़हार किया। उस वक्त, बारे, दस्तगीरी कूँ ठार किया। जीव लगा कर बाले बाल बोल्या उस कने सब अहवाल।

बैत—

महर आजिज़ पै हर किसे आती
के ख़ुदा कूँ बी आजिज़ी भाती

के याँ लग आकर यूँ पड़या हूँ क्या करूँ ? तदबीर नहीं अड़या हूँ। यू पुल

अल्मास-एक रत्न § आशनाई-दोस्ती गँवाना-खोना
आसायश आराम सियाह पेशानी-काला माथा
आशना-दोस्त § दस्तगीरी-आश्रयदातृत्व

सरात की बात है, भोत याँ अटा अट है। एता कुछ मुज पर घड़या। वले ऐसा मुश्किल कई नईं पड़या। लट कूँ इसकी परेशानगी पर, इसकी हैरानगी पर, इसके सरगर्दानगी पर महर आई। उस गले लाई। कही ऐ भाई, ख़ुदा है, कुछ ग़म नको कर। ख़ुश अछ, ख़ुदा कूँ नको बिसर। तक्का कम नको कर, यू बोल बोल लट भोत लंबी, भोत बड़ी, वाँ ते पेचा खाती खाती घर पर चड़ी। वाँ ते दो-चार तार सट नज़र कूँ घर पर ल्याई। कही-अताल मेरी ख़ुशी किधर जाता उधर जा भाई। नज़र लट कूँ भोत भली कर जान्या, भोत उसका उपकार मान्या। हिम्मत मेंग्या। रुख़्सत मेंग्या। लट मे दी चट काड़ कर थोड़े दिये बाल, के कई तुझे काम पड़े तो यू बाल आग पर जाल। मैं हाज़िर हूँगी उस टार, पैलार, काम करनहार परवरदिगार।

फ़र्द

ख़ुदा का खेल कुछ सब ते जुदा है
जिसे कोइ नईं मदद उसकूँ ख़ुदा है

डर नको, इस वक़्त पर हिम्मत बिसर नको। लट सूँ बिदा होकर वहा ते शहर दीदार के उधर चलने सर कू क़दम किया। ख़ुश हुआ हौर ग़म कम किया। बारे, बेगी च शहर दीदार में रुख़्सार के गुलज़ार मे अजायब नादिर टार मे आया। आसूदा हुआ। राहत पाया। अंखियाँ नर्गिस, ज़ुल्फ़ सुम्बुल, रुख़्म र लाल; क़द फूल की डाली, दहन गुंचा, सो बाल काला बाला। जूड़ा ताऊस, गला कुमारी। बचन में तूती के तोरे, तिल भौंरा, चाल कब्क, अधर ऐन शकर ख़ोरे। गले में चारों तरफ़ गोहरों जानों मीठे पानी के लड़ाँ। अंगुलियाँ फँकड़ियाँ, हात का पंजा कँवल। जोबन सो अमरित के फल। जिधर देखता है उधर ख़ुशी हौर अनन्द, जिधर देखता है उधर नाज़ हौर छन्द।

बैत—

नज़र अपनी मुराद कूँ अपड़या
था बेदाद दाद कूँ अँपड़या

सरात-सीधा पुल, स्वर्ग जाने से पहले यह आता है, बाल से बारीक।
अजायब-अजीब
आसूदा-ख़ुश
दहन-मुँह
गुंचा-कली
ताऊस-मोर †
तूती-तोती
कब्क-चकोर
शकर ख़ोर-एक छोटी चिड़िया
गोहर-मोती
पैलार-आगे, दूसरा छोर
चलने सर कूँ-चलने जैसा चलने के लिए §
§ बेगी च-जल्दी ही
तोरे-नौर
लड़ाँ-लड का ब. व.
फंकड़ियाँ-पंखड़ियाँ
कँवल-कमल
छन्द-छल

यकायक वहाँ कितेक हब्शी बच्चे नज़र के नज़र पड़े, बचे-कुचे नज़र के नज़र पड़े। जितने उतने-भोत सुहाने, जाना तिल के दाने। बातों बोलते उतनी च सिन में, चाले ऐसे जैसे जिन में। इतने, वले सब फ़ितने। हरेक तेज़ तुन्द, जानो शराब का बुन्द। चिनग्याँ ते गर्म, हमदिल जाले हमचर्म। सूरत उस तिल का, जानो क़तरा ज़हर हलाहल का।

तिल नईं हैं हुस्न के दीदे हैं
जीव लेने कूँ भोत सीदे हैं

नज़र पूछ्या के तुमें कौन है? क्या नाँव धरते हैं? क्या काम करते हैं? उनो बोले के हुस्न नार, आलम के दिलाँ का आधार। दिलबर, शूख़चश्म, दिल शिकार, हब्श होर ज़ंगबार ते भोत प्यार ते मँगाये थे।

बैत—

मँगाई थी सो यक तिल धरती है
तिल अपने पै भोत दिल धरती है

वो तिल आफ़त है, बला है। आशिकाँ के दिलाँ में उसका ग़लबला है। साहर-टोने व एक जीव का झूँटी बार दिल का जोड़ मा एक (?) आशिकाँ पर करता ज़ुल्म, सब आशिकाँ होते यहाँ हैरान होर गुम। जिस आशिक़ कूँ उनें मार्या, वो आशिक़ न कईं दाद मेंग्या न कईं पुकार्या। भोत छबीला, बड़ा हटीला। हमें सब उसके गुलामाँ है, आशिकाँ के दिलाँ के दामाँ है। इस बाग़ की निगहबानी क-ते हैं, चमने चमन पानी देते फिरते है। झाड़, पहाड़, पात, फूल-फल यहाँ का है हमारे हवाले, यू फल झाड़ा सब पानी दे दे हमे पाले।

बैत—

दो आशना यू बिछड़ कर हुए सो बेगाने
एकस सूँ एक मिल एकस कूँ एक नईं जाने

वले नज़र कूँ एक भाई था। भोत खुशफ़ाम, ग़मज़ा उसका नाम। नहनपन ते च जुदा पड़्या था, ऐसा कुछ किस्सा घड़्या था। आख़िर हुस्न की ख़िदमत उसे रोज़ी हुई, फ़ेरोज़ी हुई।

सिन-उम्र
जिन-शैतान
तुन्द-सख़्त
चिनग्या-चिनगारी §
§ हबश) -देश
जंगबार)
दाम-जाला
फ़ेरोज़ी-सफलता
दामाँ-दाम (जाला) ब. व.
घड़्या-घड़ा, घटित हुआ

बैत—

ज कोई काम कूँ चाहता है काम पर अछता
वले वो काम होवे लग भी भोत डर अछता

अल क़िस्सा क़ज़ार यूँ हुआ जिस वक्त के नज़र रुख़सार के गुलज़ार के तमाशा करता था, दिल पारा पारा करता था। ख़ुदा क्या करेगा कर इस्तखारा करता था। ग़मज़ा नर्गिस-ज़ार में उस इश्क्यों के गुलज़ार में मस्त फिरता था। वले शश्रूर धरता था, सब ठार नज़र करता था। नज़र कूँ नज़र सूँ देखा। ग़मज़ा नईं पछान्या, कोई बेगाना है कर जान्या। हड़बड़ा उठ्या, अपना लहू अप पुट्या। होर लहवा उस पर उचाया के तूँ कौन है? कथ उस बाग़ में आया? ग़मजा मस्त, ग़ुस्से सूँ हमदस्त। नज़र कूँ मारने खातिर नज़र की अंखियाँ बोध्या। तन पर के कपड़े उतार्या, मँगता था के मारे, वले नईं मार्या, कुछ दिल बिचार्या। नहनपन में नज़र होर ग़मजे की माँ ने कुछ फ़िक्र की थी। दोनों लाल दोनों कूँ दी था, बाज़ू कूँ बाँधने। महर मुहब्बत सूँ नाँदने। दुनिया कूँ क्या पतयाना है, के एक वक्त है, ज़माना है। कुछ हुए तो एकम कूँ एक पछाने, एकम कूँ एक जाने। ग़मज़े ने नज़र के बाज़ू का वो लाल पछान्या के यूँ तो अपना भाई है, अपस में होर उसमें क्या जुदाई है? भोत रोया, गले ल्याया। भोत उज़रखाही किया।

बैत —

ज कोई बिछड़े पीछें मिलने बीच आता है,
ख़ुदा मिलाने कूँ मँगता तो यूँ मिलाता है

बोल्या यूँ किस्सा किसे था फ़ाम? ख़ुदा के लेखे है काम। भोत इज्जत सूँ, भोत हुर्मत सूँ ग़मजे ने नज़र कूँ अपने घर लेकर गया। दिलासा दिया। जूँ तवाज़ो करना था त्यूँ तवाज़ो किया। अलकिस्सा हुस्न नार ने, गुलज़ार ने, अंखियां के सिंगार ने, दिल के अधार ने सुनी के ग़मजे का भाई जो नहनपन तें बिछुड़्या था सो मिल्या, ग़मज़े के दिल का ग़ुंचा जे फूल खिल्या।

क़ज़ारा-संयोगवश
इस्तख़ारा-ईश्वर से भलाई चाहना सफलता या असफलता के जानने के लिए माला के सम विषम मनकों मे किसी निर्णय पर पहुँचना।
जार-खेत
इश्क्यों-नाज (इश्क़ व. व.)
लहवा-तलवार
उज़रख़ाही-माफी माँगना क्षमा याचना
पुट्या घूँटा, घूट पी
उचाया-उठाया
नाँदना प्यार से लालनपालन करना, नन्दित रहना, जीवन व्यतीत करना
नहनपन-बाल्यावस्था

बैत—

ज कोई तालिब है उसकूँ तलब अँपड़ता है
तलब में साबित होता है तो सब अँपड़ता है

हुस्न नार, चतर-चौसार। साहब सूरत। साहब दीदार, दुसरे दीस ग़मज़े कूँ बुलाई। कही मैं सुनी हुई के भोत दीसाँ बिछुड़या था सो मिल्या है तेरा भाई। क्या नाम धरता है? क्या काम करता है? ग़मज़ा बोल्या के मेरे भाई का नाँव नज़र, अजब मर्द है बाख़बर। बोली के क्या हुनर जानता है? बोल्या के लाल-मानिक-हीरे-रतन ख़ूब पछानता है—

बैत—

ख़ूबी अछती है ख़ूब के सँगात
ख़ूब आदमी कते हैं ख़ूबी च बात

हुस्न नाँव, दिल परवर, दिलदार, जीव के आधार पास बड़े मोल का, भोत तोल का अजब एक जोहर था के किसी पादशाह के ख़ज़ाने में वैसा जोहर न था के जो पड़ता उस जोहर का झलक रोशन होते सातों फ़लक। बोली के मेरे दिल में भोत दीस्याँ से यू था, ख़बर लेती थी जा बजा, के कोई मर्द ख़ास पैदा होवे; जोहर शनास पैदा होवे। जोहर कूँ जाने; जोहर की क़द्र कूँ पछाने।

बैत—

आदमी कूँ आदमी की तलब गर आये
आदमी जैसा मँगे वो वैसा पाये

बारे अलम्दुलिल्लाह ऐसा जोहर-शनास आदमी आया। ख़ुदा ने उसे यहाँ लाया। यू बात हुए पीछें ग़मज़े ने नज़र कूँ दुसरे दीस हुस्न के हुज़ूर ल्याया। नज़र आया। नज़र का रविश हुस्न कूँ भोत भाया। नज़र की नज़र हुस्न पर पड़ी, हुस्न की नज़र नज़र पर खड़ी। सलामलेक, अलेकुमसलाम, यूँ दुनिया का रविश था त्यूँ चलना दुनिया का काम।

बैत—

चतर था गया बेग मजलिस कूँ फ़ाम
सिखा कर लेना दिल चतर का है काम

फ़लक-आसमान चतर-चतुर † दीस-दिन
शनास-पहचानने वाला चौसार-सुलक्षण † दीस्याँ-दीस (दिन) का ब. व.

हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन हुस्न जिस जिस इल्म की जूँ-जूँ बूझी बात, नज़र ने त्यूँ त्यूँ एक एक बात कूँ कहा सौ सौ भात। छबीली नार, रँगीली सहरकार वो बात सुन हुई शहमात। हुस्न दहन, खुशतबा, खुशफ़ाम, जीव होर दिल का आराम। बात ते दुखिया का दुख जावे, मूँ देखते दिल में खुशी आवे। खज़ानेदार कूँ बुलाई। फ़रमाई के वो सग, खुशरग तराशी सूरत है, मनमूरत है। जा, बेग लेकर आ। खज़ानेदार बी बेगी च धाया। जो सूरत हुस्न धन, मनमोहन मँगी सो लेकर आया, दिखलाया। नज़र की जो उस सूरत पर नज़र पड़ी, हैरान हुआ। अक्ल गिर पड़ी।

बैत—

यू गोहर देख कर गोहर पछान्या
जो उस गोहर में जोहर था सो जान्या

कह्या, मनहर मूरत, यू आशनाई की सूरत, औतार मूरत मुजे भोत भाई, वले यू सूरत यहाँ क्यूँ आई? यू पाकसूरत, औतार मूरत, मग़रिब होर शाम के पादशाह की है। आलम तमाम के बादशाह की है। यू उसकी सूरत है, जिसकी साहबी सब पर चले। यू उस की सूरत है जिसके हुक्म ते ज़मीं आसमान हिले। सूरत भोत आक़िल, उस सूरत के साहब का नाँव दिल।

बैत—

सिफ़त दिल की क्या ले हुस्न के पास
लगाया दिल के आख़िर हुस्न कूँ आस

नज़र जागा जागा के परदे खोल्या, छुपियाँ बातों बोल्या। हुस्न यू सवाद भर्या बातों सुन, यू खरियाँ बातों सुन कुछ फ़िक्र दिल पै ल्याई, दिल पिघलाई। आशिक़ हुई, दिल पर ते उड़ गई दुई।

बैत—

हुस्न पर दिल भाया दिल हुस्न ऊपर
पड़या अब काम मुश्किल हुस्न ऊपर

दिल पर इश्क़ छाया, नाज़ नयाज़ पर आया। हुस्न कूँ दिल का लग्या

सहरकार-जादूगर
खुशतबा-सपुरुषभावी
संग-पत्थर
मग़रिब-पश्चिम
जूँ जूँ-ज्यों ज्यों
धात-प्रकार
मूँ-मुँह
धाया-दौड़ा
छुपियाँ-छुपी
खरियाँ-सच्ची
दुई-द्वैत

ध्यान, दिल हुस्न का हुआ प्रान। हुस्न का ज़िक्र हुआ दिल। हुस्न पर वक्त काम हुआ मुश्किल।

'[1]ग़ज़ल गुफ्तन हुस्न अज फिराक़ दिल—'

ग़ज़ल

सहेली यार बिछड़या है मुजे वो यार याद आता
बिसर नईं सकती एक तिल म्याने वो सौ बार याद आता
जहाँ मैं देखती हूँ वहाँ मुझे उसका च मूँ दिसता
वही बिसता है दिल में वो च ठारे ठार याद आता
मेरे यू दीदे नादीदे कहीं टुक देखेंगे दीदार
मुझे दीदार दे आ टुक मुजे दीदार याद आता
मेरी अँखियाँ में फिरता है तेरे मुख ख़याल आकर
तेरे रँग रूप पर भूले, तेरा रुख्सार याद आता
खडे क़द की बला ल्यूँगी नज़र भर देखूँगी जिस दीस
तेरे नैनाँ तेरे सीनाँ तेरा गुफ्तार याद आता
सटी हूँ सुद मैं अपनी कहाँ की बुद है मुज में
न मुझ खुशबोई खुश लगती न मुज सिंगार याद आता
तेरे दीदार का मैं ध्यान दिल म्याने पकड़ रही हूँ
न मुज कूं फूल खुश लगता न मुज गुल्ज़ार याद आता

खाना नईं भाता पानी नईं भाता: दिल की खातिर हुस्न का जीव जाता।

बैत—

हुस्न पर अँधारा हुआ सब जहान
हुस्न पर पड़या टूट कर आसमान

इश्क़ फोदे सेपड़ी, बातों च सुन उस हाल कूं अपड़ी। गुमान जो उसे था सख़्त; पाँव सूँ पड़ने का आया वक्त। इश्क़ आजिज़, इश्क़ तवाना, इश्क़ दाना, इश्क़ दीवाना। इश्क़ अपने रँग में आपै धुलता, इश्क़ अपस पय आपै भुलता। इश्क़ के चाले-कौन सँभाले। इश्क़ चन्दर, इश्क़ भान। इश्क़ दीन, इश्क़ ईमान। इश्क़ आशिक़; इश्क़ सुलतान। इश्क़ ते रोशन ज़मीन। इश्क़ ते रोशन ज़मीन।

तवाना-बलिष्ठ, मोटा
† सुद-बुद-सुधबुध
अंधारा-अँधेरा
बिसता-बैठता, प्रवेश करता
चाला-नखरा
ठारे ठार-जगह †
१ दिल के वियोग में हुस्न ने ग़ज़ल कही।

इश्क़ ते रोशन आसमान। इश्क़ ते रोशन हर दो जहान। इश्क़ ते आशिक़ मग़रूर, इश्क़ ते माशूक़ ने पकड़ी ज़हूर। इश्क़ रोशन सब में भरपूर, इश्क़ उजाला, इश्क़ नूर। आशिक़ होर माशूक़ के मन का माया सो इश्क़। इन दोनों को घुँदलाया सो इश्क़। हलाक हो कर ग़म सूँ एकम कूँ एक बहलाते हम सूँ। क्या पुरस क्या नार, इश्क़ म्याने क्यों आया पीछे कौं का क़रार? इश्क़ लगे बग़ैर दिल लगता नईं, इश्क़ का लज्जत ऐसा है जो हरगिज़ दिल बहकता नईं। इश्क़ में जितना दुक, आशिक़ कूं उतना सुक। जों दो जीन होते हैं राज़ी, वों दिल की खिलती है बाज़ी। जीव के दरिया में प्यार का तूफ़ान मार्या, किने दिल जीता किने दिल हार्या। आशिक़ अपस कूँ सँवारता, के माशूक़ देखे। माशूक़ कूँ खुश आवे, माशूक़ कूँ भावे। माशूक़ अपस कूँ सँवारे ताके आशिक़ कूँ रिझावे, आशिक़ का दिल बहलावे। आशिक़ कूँ अपने फंद में भावे। माशूक़ नौंवे है वले माशूक़ में बी तमाम आशिक़ की सिफ़त है। आशिक़ नौंवे है, वले आशिक़ में बी तमाम माशूक़ की गत है। आशिक़ माशूक़ दो नाम, वले दोनों का एक काम। सब कूँ एक बज़ा सूँ घड़े, वले नौंवे जुदा पड़े। इश्क़ एकी च है। जो दोनों जागा जल्वा दिया है, कईं नाज़ की सूरत पकड़्या; कईं नियाज किया है। एक इश्क़ है जो दोनों कूँ बेआराम किया है, एक इश्क़ है जो दोनों कूं बदनाम किया है। एक इश्क़ है जो अपने काम किया है। दोनों बी इश्क़ पर आशिक़ हैं। यूँ कौन नाम किया है। आशिक़ रोता, माशूक़ बी रोती, इश्क़ की बात घर-घर होती। माशूक़ अपनी मुश्ताक़ी दिल में छुपाती, आशिक की बेताबी जाहिर हो आती। आशिक़ उतावला भोत गर्म। माशूक़ कूँ हायल होती शर्म। इश्क़ सब कूं उचाता, किसे नईं छोड़्या है। इश्क़ का हात कोई बी ऊड़्या नईं है। माशूक़ पुकारता के आह इश्क़, आह इश्क़, हम आशिक़। हाँक मारता आह इश्क़, आह इश्क़। इश्क़ निरहंकार, मुनज्ज़ा, पाक। माशूक़ परेशान, आशिक़ हलाक। इश्क़ आलमगीर; अपै पादशाह, अपै वजीर। अगर जवान है वगर पीर। यहाँ किसे क्या तदबीर। इश्क़ की गत किसे है फ़ाम, सब सो ग़र्ज़ और किस सूं नईं काम। सब के दिलों पर सत्या है जाला; आलम हैरान, अपै निर्वाला। इश्क़ क्या किसते डरता है? खुशी भावे सो करता है। अपस कूँ अपै च भाता है। अपस कूं अपै च लग जाता है। फ़ारसी में कता है के—

जहूर-अस्तित्व, प्रकटीकरण
मुश्ताक़ी-लालसा
मुनज्ज़ा-पवित्र

पुरस-पुरुष
म्याने म्या-अन्दर
सुक-दुख
खिलती-खेली जाती है †

† हार्या-हारा
भावे-डाले
एकी च-एक ही
कता है-कहता है

बैत—

इश्क़स्त बस के दर दो जहाँ जल्वा मी कुनद
के अज़ लिवासे शाह अज़ किस्वते गदा

इश्क़ कधीं साहब कधीं गुलाम। एक शख़्स के यू दो नाम। आजिज़ी और इश्तग़नाई। यू एक सिफ़त है इश्क की, जो दो सिफ़त हो आई। अगर तू आशिक़ है तो याँ समज रे भाई! बारे हुस्न धन, जीव का जीवन, अजायब रतन, गुलरू, गुंचादहन। नज़र कूँ ख़िलवत कर, घर में बुलाई, अपनी नज़दीक बिसलाई। इश्क़ सूँ सीना जाले। अखियां में ते अंभू ढाले, सुभान अल्लाह, यू इश्क़ है। अगर यकस के दिल कूँ ज़ेर व ज़बर करेगा, पानीं कूँ खून ज़िगर करेगा तो आख़िर दुसरे के दिल में बी घर करेगा। आग है जानेगा, असर करेगा, मस्ती बख़्शेगा, बेखबर करेगा।

बैत—

इश्क़ ते आशिक़ाँ मुरादाँ पाय
इश्क़ आख़िर मुराद कूँ अपडाय

रमूज़ राज़ होएगा, नाज़ नियाज़ होएगा। भूले बग़ैर भुलाया न जाए। ढूंडे बग़ैर पाया न जाए। बात एकी च। केता कैना, ज कुछ है, सो साबितपना, साबितपना।

बैत—

इधर ते नाज़ तूँ करता उधर वो करते नाज़
दो नाज़ खूब नईं दोनों भी होवेंगे बाज़

माशूक़ ने नाज़ करे तो आशिक ने नियाज़ जोड़ना, आशिक़ बी नाज़ कर कर माशूक़ का दिल तोड़ना। दो नाज़ाँ बला है, दो नाज़ाँ में बड़ा गलबला है। सारा भाँड़ा नको फोड़, जाँ दो नाज़नी याँ तोड़ातोड़। माशूक़ का ना मँगना बी एक प्यार है। दिल टूट्या तो ना मँगना बी क्या दरकार है? जो लगन ना मँगना है म्याने म्यां तो लगन उसमें मँगना बी है तहक़ीक़ जान माशूक़ नईं मँगता तो बेगी नको कर। दिल नको तोड़। जितना वो तोड़ेगा, उता तूँ तोड़। इश्क़ दो रोज़

इश्तग़नाई-निरपेक्षता
ज़ेर ज़बर-नीचे ऊपर
रमूज़-भेद
वाज़-तंग
गलबला-शोर
बिसलाई-बैठाई
अंभू-आंसू
यकस के-एक के
कैना-कहना
भाँडा नको फोड़-भंडा मत फोड़

१ प्रेम ही दोनों जगत में प्रकाश करता है। कभी वह बादशाह के वेश में दिखाई देता है, कभी दरिद्र के।

लग्या सो जाता क्यूँ ? तूँ नईं तोड़ता सो तुटता क्यूँ ? माशूक़ का नईं मँगना ऐन नाज़ है । इश्क़ ठार आशिक का काम नियाज़ है । इसके नईं मँगने ते तू एता की वाज़ है ? आशिक़ है तो माशूक़ का नाज़ तू सूस । तूँ नईं सूम्या, यूँ ही समयाभ्या तो हज़ार अफ़सोस के आख़िर इस्तग़नाई आजिज़ी का पैनेगी लिबास । नाउमीदी उम्मीद ते होएगी ख़ास । माशूक़ का नाज़ धात-धात है, अगर कोई आशिक़ ही समजेगा तो यों बात है ।

अलक़िस्सा हुस्न धन, मन-मोहन, जगजीवन दिल खोली । दिल पर जो आशिक़ हुई थी सो नज़र कने अपना सब अह्वाल बोली । सगाजाई, कही ऐ भाई ज्यूँ-त्यूँ दिल की सिफ़त कर मुजे दिल पर आशिक़ किया है; त्यू च अताल उसके मिलने की बी फ़िक्र कर । ख़ुदा तुजे फ़ुर्सत दिया है । मुझे दिल पर आशिक़ करने तुझे आता, दिल कूँ मुझ पर आशिक़ किया तो तेरा क्या जाता ?

बैत—

जो दिल का यार अछे कोई तो कहूँ मैं बात उसे दिल की
के आसानी कुछ अंदेशे करम कर मेरे मुश्किल की

ज कोई चतर है, ज कोई जान है सो तुजे पछानता है । तू यू क्या, यूँ क्या सो वूँ बी करना जानता है । तू ई च है मुझे दिल कूँ मिलाने का ज़मान, तूँ च है मेरे होर दिल के म्याने म्यान । इतना किया सो तूँ च है, यू काम सब तुझ सूँ च है । महबूब ख़ूब नईं कही ऐसे दुनिया मने । सूरज-चाँद दोनो मिल इस तारे कूँ जने । नज़र बोल्या, ऐ हुस्न धन, जगजीवन, मन मोहन, मनहरन, महबूबी की रोशनाई, नाज़ाँ की सफ़ाई, जीवा की प्यारी, दिलाँ कूँ आराम देनहारी, दीदे मुश्ताक़ तेरे दीदार के, आशिकाँ उम्मीदवार तेरे प्यार के । यू होर कुछ नईं है, यू दिल है; दिल हात लेना भोत मुश्किल है । दिल बादशाह, दिल आप भाता । दिल सूँ दिल मिले बग़ैर दिल हात नईं आता ।

बैत—

करे कोई दिल कूँ क्यूँ अपना सीने में छुपको यू दिल है
तुजे आसान दिसता है मुजे तो भोत मुश्किल है

दिल तो मिले जो दिल कूँ दिल मिला जाने, ज कोई दिल सूँ दिल मिलावे, दिल कूँ पछाने । अव्वल ते दिल किसी सूँ जोड़ नको, वो तोड़ेगा तूँ तोड़ नको ।

ज़मान-ज़ामिन
मुश्ताक़ शौक़ीन
सूसना-भुगतना, सहना
पैनेगी-पहनेगी
वूँ बी-वैसा भी

इश्क़ करते सो दीवाने ही च, होर दिल लगा तोड़ते सो सख़्त दिल बज्र कूड । इश्क़ में माशूक़ की जफ़ा ते किचवाना ना । दिल पर अपने दरेग़ ल्याना ना । इश्क़ का वज़ा च यूँ है; क़ज़ा च यूँ है । यों अपस कूँ बेदिल ना करना, काम अपस पर मुश्किल ना करना । इश्क़ ऐसी च चाल्यों ते पाया रिवाज । आशिक़ कूँ सूझे बग़ैर किया इलाज । हर जफ़ा कूँ फ़राग़त है, हर रंज कूँ राहत है । क्या वास्ता के यू इश्क़ है । आशिक़ का यू हाल करता है तो क्या माशूक़ ते गुज़रता है । माशूक़ में इश्क़ नईं सँपड़ता, माशूक़ कूँ इश्क दीवाना करता । माशूक़ डांवाडोल नईं होते । माशूक़ घाँगराघोल नईं होते । माशूक़ बी इश्क़ सवाद लेते हैं । माशूक़ बी आशिक़ खातिर जीव देते हैं । माशूक़ बी ज़ार ज़ार रोते हैं । आह भरते हैं । माशूक़ बी आशिक़ खातिर लिए कुछ करते हैं । इतनी ताक़त का उसमें जो बिछड़ सके । बिछड़े का दुख सह सके । माशूक़ का दिल बेदिल होकर कॉ जाता । इश्क़ अपै च लट पकड़ कर जोरां सूं खींच ल्याता । आशिक़ के इश्क़ कूँ पाकर; माशूक़ पावों पर पड़ते आकर । माशूक़ बेपरवाह साहबज़ात, आशिक़ का जो इश्क पूरा देखते तो वो आजिज़ हो करते बात । अगर वो अपनी बेपरवाही पर आवे तो आशिक़ का घर में जीव जावे । त्यूँ आशिक़ तुझ मे कितना नवाज अछना, कितना इस्तियाज़ अछना तो यूँ अपना पेश, ज्यू बादशाह अग्ग दरवेश । जू साहब अगे ग़ुलाम; हज़ार हज़ार तस्लीम, हज़ार हज़ार सलाम । उसका हुस्न तेरे दिल का उजाला । उसका इश्क तेरे पीने का प्याला । माशूक़ का जफ़ा सूझे आशिक़ कू आर नईं, आशिक़ कूँ माशूक़ बग़ैर आराम की ठार नईं । आशिक़ के माशूक़ बग़ैर सरना च नईं । आशिक़ माशूक़ की बेरज़ाई करना च नईं । आशिक़ कू क्या म्याने म्यान ल्यावे, वही खूब जो माशूक़ कूँ भावे । आशिक़ जो साबित हुआ अपने ठार; माशूक़ अपै च आती है बेअख्तियार । माशूक़ ज कुछ करे तो आशिक़ के चाड़; तुझे माशूक़ की क्या पड़ी तूँ आशिक़ है अपनी निबड़ ।

बैत--

माशूक़ बेनयाज़ है बादशाह परी
माशूक़ सूँ नको करो हर्गिज़ बराबरी

माशूक़ बेनयाज़ साहब है । वो ज कुछ करेगा सो उसे मुहाता । तूँ आशिक़ खरीदी बंदा, तुजे दिल तोड़ लेना क्या काम आता ? दिल तोड़या तो क्या दिल

किचवाना-(?) सरना-काम चलना, पूरा पड़ना
कूड-कूडा, करूर, मूखे चाड़-रुचि, शौक, चाव
घाँगराघोल-परेशान

तोड़ा जाता है ? दिल तोड़्या हूँ कर चुप मूँ में ते बोल आता है । यू इश्क़ है, इसते जीव क्या बहकेगा ? जितना तोड़ने जाएगा उतना लगेगा । अगर इश्क़ मे है इश्क़ की निशानी तो आशिक़ पर माशूक़ अपै होती दीवानी यू सुन, एक इश्क़ उसमें एते गुन । बारे, ऐ मनमोहन, तू जो कती है के मै दिल पर आशिक़ हुई हूं मुजे दिल सूँ मिला, मेरा दिल गुंचा हुआ फूल कर खिला । दिल भोत है बड़ा । दिल पर कौन रह सकता खड़ा ? कहे है "क़ल्बुलमोमनीन; अर्शे अल्लाह ताला" दिल भोत आला याने खुदा का अर्श । मुसलमानों के दिल ज कोई दिल कू अँपड़्या वो वासिल खुदा । बाज़े कते हैं के हज़रत कूँ बी मेराज दिली च पर हुआ था । यू राज-काज दिली च पर हुआ था । दीदार कूँ दिली च में देखे । परवरदिगार कू दिली च में देखे । जो बातों खुदा कूं भात्यॉं थ्यों सो बातों दिली च में ते आत्यॉं थ्याँ । बाज़े कते जो रूह जिस्म सूँ आसमान पर जाता उस जिस्म कूं रूह सूँ मुफ़ारक़त लाज़िम नईं आता । जो ज़िस्म रूह होकर आसमान पर चढ़ उस जिस्म कूँ शिकस्त तरकीब नईं वो क्यू खाक मे पड़ी ? हज़रत जो दिल पो आने सके, जो खतरा दिल में ते आता था उस खतरे का नाव जिब्रील रखे । बाज़े कते के यूँ नईं, बुज़ुर्गा कते थे के हज़रत रूह सूँ आसमान पर गये थे । उनोंने तहक़ीक़ ये किये है, हगना खबर यूँ दिये हैं, शरअ के लोकों कते हैं के ना यू नईं, हजरत इसी जिस्म सू आसमान पर गये थे, इसी क़िस्म सूँ आसमान पर गये थे । जो जिब्रील खुदा के पास ते खबर ल्याता था तो आदमी की सूरत होकर आता था । जों असरार की बात अछूती बेश्तर, हज़रत जाने हौर परवरदिगार । यू बात अक्ल की हद थे अंग है । नक्ल की हद ते अंग है । जितना है इस दर दो जहान की मज़िल में उतना है सब दिल में । वही हुआ आशिक़ हौर वही भूल्या, जिस पर पर्दा खुल्या । दिल में जाने हौर, दिल कू पाने की बात जुदा है । दिल मे खुदा है, यही दीदे यहा देखते सो दीदे दिल में जावें तो दिल का दीदार पावें । दीदार हौर दिल, दोनों एक हुए मिल । दिल दीदार, दीदार दिल । यू बी 'मैंन रफ़ा नफ्स हू फ़क्त अरफ़ा रब्ब हू' का मक़ाम है । अपस कूँ देखना, अपस कूँ समजना आरिफ़ हौर आशिक़ का काम है । यू अपना पेखना है, यहाँ अपस कूँ अपै देखना है । यू हुज़ूर का जल्वा है, यू अपने हुस्न के ग़रूर का जल्वा है । ज कोई यहाँ आता है, वो कुछ खुदा कूँ पाता है । एकस कू कने पूछ्या के तूँ खुदा कूँ क्यूं जान्या ? कहा-देख्या, चले नईं पछान्या । दीदार होवे तो दिल मे जाना, जीव होवे ते पीव कू पाना जीव की जीव कूँ पाना, दिल कूँ देखना अजब तमाशा है, सर ते पावँ लग अजब तमाशा है । बाप के सुल्ब में ते जो क़तरे

मुफ़ारक़त-जुदाई, वियोग
शरअ-इस्लामी क़ानून
सुल्ब-लिंगेंद्रिय
कती-कहती
भात्यॉंथ्याँ-भाती थी ।
पेखना-देखना, प्रेक्षण करना
एकस कूँ-एक को

१ भक्त का हृदय ईश्वर का आसन है ।
२ जिसने अपने को पहचाना उसने ईश्वर को पहचाना ।

माँ की रहम में आया था होर जीव उसमें समाया था, हनोज़ अपै इसमें च है। वले यहाँ समजने में पेंच है। वही क़तरा जो वजूद पकड़ कर भार निकल्या, वही क़तरा है यू इमारत अपस पर सँवार निकल्या। वही क़तरा है जो रीझता रिझाता; वही क़तरा है जो भुलता भुलाता। वो क़तरा जीव का वजूद, जिस जीव में माबूद वो क़तरा जो अझूँ अँखियाँ में है ताज़ा, यहाँ दम मारने किसे अन्दाज़ा। आरिफ़ की शनास वो ई च है, अझूँ इस क़तरे की बास वो ई च है। एक क़तरा वले हज़ार दरिया, उसमें खुदा ने क़ुदरत अजायब कर्या, कुच उसमें उस कतरे का कोन पाया माया। आसमान, ज़मीन उस कतरे में समाया। खूबी देख, अँखियाँ होर दिल का सूत्र एक। ज कुछ करतियाँ अँखियाँ होर दिल; इसे समझने आशिक़ होना या भोत आक़िल। यू बात भोत बारीक़, भोत मुश्किल। इस बात के माने 'नौज़ बिल्ला' नादान कुछ का कुछ जाने। दाना कूँ फ़िक्र सर चढ़े। नादान हँस पड़े। इतने पर बी क्या चुप रहेंग? क्या जाने क्या क्या कहेग? यू रम्ज़ नुकात बोलता हूँ, खुदा के राज़ की बात बोलता हूँ। यू आशिक़ होर आरिफ़ के सँगात बोलता है के आरिफ़ आशिक़, आशिक़ आरिफ़ है बिज्ज़ात। वो पावेगा यू बात। इस क़तरे में जीव होर जीव तो मरता है। वो क़तरा ताक़यामत जैसा का वैसा ई च है। इस क़तरे कूँ कोई तहक़ीक़ करता नई। केता कहू इस बात के माने, इसते अंगे खुदा जाने। ग़र्ज़ यू जीव होर सब दिल में है हज़ार हज़ार आलम। हरेक मंज़िल में है। ए चतर सुजान, इन्सान कू नहना नको जान। अगर खुदा कूँ पछानने मँगता है तो इन्सान कूं पछान। जुन्द का जिस्म सो बिंद है, बिन्द मे जुन्द है। जिने अपने बाप के बिन्द कूँ देख्या उने अपनी जुन्द कूँ देख्या। अपस में जाएगा तो अपस कू देखेगा। अपनी माहियत मालूम होवेगी। अपने नफ़्स कूँ देखेगा। यू तन जानहारा है। उसे अताली च ते कर जुदा; जीव सूं तू जाना सो खुदा। एते जो यू खुदाई है इन्सान कूं खुदा ने ऐसा बड़ा पैदा किया है के यू खुदाई सब उसमें समाई है। इधर-उधर देख कर क्या होता अजब, अपस में देख के तुझ में च है सब। यू देखे तो सब ठार खुदा है, हरेक ठार एक लज़्ज़त जुदा है। अगर कोई समजनहार है तो जाँ खुदाई नई, वो कौन ठार है? अगर खुदा आफ़ताब हो आया तो हमना कूँ क्या हज़? अगर चाँद होकर दिखलाया तो हमना क्या हज़? आदम की सूरत में अगर कोई खुदा कूँ पावे तो सवाद है। आदम में ज कुछ है सो देख्या जावे तो सवाद है। यहाँ खूब अँदेश देख अगर तुजे नज़र है। तुजे है निगाह के

रहम-गर्भाशय § बिज्ज़ात-ज़ात से † केता-कितना
माबूद-ईश्वर माहियत-असलियत, यथार्थता जुन्द-जून, योनि
शनाख-पहचान जानहारा-जाने वाला, नाशमान
नुकात-सूक्ष्म, (नुक्ता ब.व.)§ अझूँ-आज भी, अभी † अताली च ते-अभी से

खुदा आपै बोल्या है—'ऐनेमा तवल्लो फ़शम वेजहुल्लाह'। एक राज़ की बात कता हूँ। सुन के वो बात खुदा च है। इस आयत के माने यू है, जिधर तूँ देखता है उधर खुदा च है, अगर तुझ में कुछ शनास है, अगर तुझ में है कुछ दीद, तो मुसहफ़ में यूँ बी आया है के 'नहनो अक़रब इले हे मिन हबलुल वरीद' खुदा शहरग ते नज़दीकतर है। वले क्या फ़ायदा के आदमी बेखबर है? आदमी जिस काम सूँ जीव ल्याता है, खुदा ना उम्मीद नई करता। कुछ बी पाता है। बेखबरी दूर कर खबरदार अछ। दुनिया दो दीस की है। हुशियार अछ, उने हमना इस खातिर पैदा किया है के उसे समजे, उसे याद करें, उसके होवें। नाके ग़फ़लत सूँ जीवें, ग़फ़लत सूँ खावें, ग़फ़लत सूं पीवे, जनम अपना ग़फ़लत सूँ खोवे। ज कोई उसे समज्या, होर उसकी याद में रह्या वो इन्सान। ज कोई यू दो काम नई किया वो हैवान। हैवान बी खाता-पीता है, हैवान बी जीता है। अगर लहोलाब से जीए, पस हज़ार हैफ़ है कुछ नई किये। खाली हात जाना, खाली हात जाना। या खुदा होर रसूल कूँ क्या मूँ दिखाना?

बहस्बे ज़ाहिरी पाँच वक़्त का नमाज़ करने का जो शर्त है, त्यूँ बी नमाज़ के पीछे बी हजार जिन्स की इबादत है। यू इबादत किये तो खुदा का दीदार रसूल की शफ़ाअत है, लाख-लाख इनायत है। नमाज कू खड़े रहे तो दिल कूँ पाक कर खड़े रहना। दिल पर होर कुछ ना ल्याना। जो लगन नमाज़ करते हैं तो लगन खुदा च याद आना। अगर यू भेद कोई पाया है, तो "लासलात इल्ला बहुज़ूर उल क़ल्ब" बी आया है। नमाज में ज कुछ पड़ना है, सो जानो; खुदा सूँ बातों करना है। यू अदब की जागा है। यहाँ ज्यास्ती का मान सब बिसना है। नमाज़ यूँ करना के नमाज़ करते वक्त यू दुनिया उसके वहम मे ना गुज़रना। "अलहम्दुलिल्लाह" होर "कुल हू अल्लाह" ज कुछ पड़े सो उसका माना समज कर पड़े तो भोत हासिल होता है। दिल इधर-उधर नई जाता। उस वक्त यूँ जानना के 'वोंद हू ला शरीक़ लहू' खुदा एक है, हाज़िर है, देखता है। मे उसकी इबादत करने आया हूँ, बन्दा हूँ,

---

शहरग-गले के मूल का रग
लहोलाब-खेल कूद
हैफ़-दु ख
रसूल-हज़रत मुहम्मद
बहस्बे ज़ाहिरी-दिखाने के लिए
पाँच वक्त नमाज-फ़ज़र (सूर्योदय से पहले) ज़ोहर (मध्याह्न में सूर्य के ढलते समय) असर (सूर्यास्त से पहले, पाँच बजे के लगभग) मग़रिब (सूर्यास्त के समय) इशा (रात्रि के पहले प्रहर में ८ बजे के लगभग)
शफ़ाअत-कृपा
जोलगन-जबतक
बिसना-भूलना

१ जिस ओर तुम मुँह करो वहाँ भगवान है।
२ मैं धमनी से भी अधिक निकट हूँ। अकरब (अलिफ़ मे क़ाफ़ ब ब.) ऐन मे लिखने पर बिच्छू!
३ कोई नमाजदय हृदय की उपस्थिति के बिना निरर्थक है।
४ सब प्रशंसा परमेश्वर के लिए है और अल्लाह का स्मरण करो।
५ ईश्वर एक है और उसका साथी कोई नहीं।

आजिज़ हूँ। उसकी दरगाह अपनी आजिज़ी ल्याया हूँ के वो दिल का मालिक है। दिल तें ख़बरदार है, बेऐब, पाक, परवरदिगार है, जितना सिकना उतना दिल कूँ इस बातों में रखना। उस चीज़ पर जो मक़सूद का ख़तरा दिल पर आता बेअख़्तियार। आख़िर इस ख़तरे का इलाज होना है इसी ठार, तो इस ठार ख़ातिर ख़ूब-ख़ूब अछना के सब मक़सूदाँ बर आवें, बल्के अपस तें दुसरे कूँ च मक़सूदाँ पावे। अगर उस वक्त तुजे दुनिया कूँ बिसरने की न मिले ठार तो याद कर गोर का अज़ाब होर क़यामत का पूछ बिचार। इधर-उधर नको जा, दोज़ख़ होर बहिश्त तो बी ख़ातिर में ल्या। मा या बाप मरते वक्त देखा अछेगा वो वक्त कूँ बी याद करके उस वक्त यू दुनिया क्यूँ दिसती थी होर क्या गुज़रता था तेरे ऊपर। शायद यूँ तो बी नमाज़ के वक्त दुनिया टुक फ़रामोश होए, बेहोशी तेरी जाए। साहबहोश होवे। जिने ख़ुदा कूँ तहक़ीक़ जान्या होर रसूल कूँ बरहक़ मान लिया, नमाज करना बस उसका काम है। नईं तो भूमी पर सर रखना और आयत पढ़ना यू एक रस्म आम है। याने नमाज़ करता है नईं। नमाज़ करता है, ख़ुदा कूँ बाज़ करता है, अगर इस दो बातों पर कोई इस्तकामत पकड्या है तो नमाज़ में उसका ख़ातिर ज़मा अछेगा। नईं तो दिल तमाम क़तरा-क़तरा हो कर सौ ठार अछेगा। ज कुछ है सो ख़ुदा एक है कर जानना है। रसूल को रसूल बरहक़ है कर मानना च है। ना रसूल कूँ समजे न ख़ुदा कूँ पछाने। यू कैसी मुसलमानी है, कौन जाने! एक घड़ी दुनिया का धंदा छोड़ ख़ुदा की इबादत में रह्या नईं जाता वो कैसे जो तमाम उम्र छोड़े है। अर्कूँ बी छोड़ना च दिल पर आता। ज कोई साहब है, देता-दिलाता है, उस सूँ दिल जोड़ना उसे हर्गिज़ न छोड़ना। जिसते सब कुछ पाना, उसकी इबादत में होर खतरा कूँ क्यूँ म्याने म्यान ल्याना। ज कोई साहबदिल है उनो के दिल इस गुल में ना भासी। उनोके दिला पर ऐसे खतरे हर्गिज़ ना आसी। ख़ुदा बग़ैर दिल में ते सब काढ़े, पीछे खतरे क्यूँ आते आड़े? अगर उसके दिल पर कुछ बाक़ी अछेगा तो होर खतरा आवेगा। उसके मशगूलियत में ख़लल भावेगा। इन्सान ने इतना तो हासिल करना है के बारे, नमाज़ के लगन उसे ख़ुदा बिन कुछ याद ना आवे। इस दुनिया में आने कूँ, कुच बी अपना काम करने पावे। चुप नाचीज़ हो ना जावे खाने-पीने च का लग्या है, मरना बिसर के जीने च का लग्या हैं, पत्थर पर सर फोड़ेगा तो बी कोई तुजे जीवते ना छोड़ेगा। जीवता है लगन मरने का काम कर, कुछ करने का काम कर, जीवने तें कुछ हासिल करने मँगता है अगर; तो आख़िर मरना है, मरने कू नको बिसर। बल्के जीवते च मर। ख़ुदा च का याद, ख़ुदा च का ज़िक्र, ज कोई जीवते च मुआ, उसे मरने का क्या फ़िक्र। इस दुनिया में मर रहना, अपना

गोर-क़ब्र § इस्तक़ामत-दृढ़ता बर आना-सफ़ल होना
अज़ाब-वेदना साहबदिल-ईश्वर भक्त भासी-भाएगे,अच्छे लगेगे
बाज़-तंग § जीवता है लगन-जीने तक

काम कर रहना। अपना काम अपसूँ केता बिचारे, क्या हाजत है जो उसे होर कोई उतारे। जो कोई जीवने खातिर पुकारेगा, इज़राईल उसे आ कर मारेगा। बूड़े कूँ कोई किने पुकार्या नईं, मुए कूँ कोई मार्या नईं। 'मूतू क़ब्ला अन्ता मूतू' हदीस बी यूँ आई है। इस जीवने के माना समझाई है। करने का सो नईं करते होर नईं करने का सो करते। बिसरने का सो करते, होर याद करने का सो बिसर करते। एक साअत तो बी दिल साफ़ रखना। दुनिया का कुचाट दिल ते धोना। तक्या क़रार रख खातिर जमा करना; घाबरे ना होना। आयना-सा अछेगा तो खुदा के नूर का झलक उसमें पड़ेगा। दिल रोशन होवेगा, मोत बलन्दी पर चड़ेगा। खुदा के आगे खड़े रह कर एक जीव सूँ अपना दिल खोलना।

ज कुछ अपना मुद्दआ अछेगा सो नमाज़ मे खुदा सूँ बोलना, नमाज़ में खुदा च सगात अछना। खुदा सूँ बात अछना, खुदा सूँ अख्तियारी करना। खुदा कूँ अपनी बेबसी दिखलाना; जारी करना। जो नमाज़ कूँ जाए तो यह जानना के अपे खुदा के हुज़ूर जाता हूँ। उने फ़रमाया सो उसकी फ़रमूदगी बजा ल्याता हू। खुदा कूँ हाज़िर-नाज़िर कर जानना, आफ़रीन्दा कादिर कर जानना के उने पैदा किया है। जीव दिया है। उसे समज कर जानना के उने पैदा किया है। जीव दिया है। इसे समज कर जिने उसकी इबादत किया वो मोत बड़ा। ऐसा समज के गंज में ते जिने कुच लिया वो मोत बड़ा। अव्वल इस दुनिया के बूद की यक ज़रा खातिर में ना ल्याना। पीछे इबादत करने, खुदा के हुज़ूर जाना तो देखना के दिल कहाँ जाता है होर क्या सफ़ा पाता है। दिल पर क्या क्या खुदा का तजल्लियात आता है। इस पाँच वक्त ज़ाहिरी नमाज़ के खारिज जो इबादत है, सो शुगल होर जिक्र यू मोत दूर-न्देशी, यू बड़ी फ़िक्र, यू मर्दो का काम है। यू साहब-दिला का काम है, यू खुदा के खासे ऐन खुदा के महरम, बेयाद हर्गिज़ खाली नईं। इनो का आता-जाता दम अपे होर अपना खुदा, बाकी दिल में सब जिने जुदा। इनो का हमराज़ अल्ला का महरम अल्ला। चडता दम 'ला इला', उतरता दम 'इल्लिलाह'। जो 'ला इलाहा इल्लिलाह' का समज दिल मे सबूत पाया खातिर में बी खूब आया। खुदा ने याँ कुछ समजाया। पीछे चडता दम उतरता बी 'अल्ला अल्ला' कहता आता है। बन्दा खुदा सूँ यार होता है, बन्दा खुदा कूँ भाता है। शराब की मस्ती चड़ती त्यूँ मुहब्बत की

इज़राइल-यम, मृत्यु का अधिष्ठाता
साअत-घड़ी
कुचाट-झगड़ा
आफ़रिन्दा-पैदा करने वाला
गंज-खज़ाना
बूद-अस्तित्व §

§ तजल्लियात-प्रकाश
खारिज-बाहर
शुगल-ईश्वर का ध्यान, व्यस्तता
खासे-खास, प्रिय
बूडा-डूबा
किने-किसी ने

कुचाट-बेचैनी

१ मरने से पहले मर जाओ।
२ कोई अस्तित्ववान नहीं।
३ ईश्वर के सिवाय।
४ ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

मस्ती चढ़ती। बन्दे होर खुदा में यारी पड़ती। आशक़ियत होर माशूक़ियत आकर खड़े रहती। नाज़ होर नयाज़ किया बाताँ कते। मुहब्बत ज़ोर होता! काम कुछ होर होता। ज कोई इस ठार मुहब्बत का बीज बोता है, रहते रहते उस भिनगे होर उस कीड़े का क़िस्सा होता है। मन्सूर यहाँ च आकर बोल्या मुतलक़ के मै हूँ, मैं च हूँ। अनलहक़, अनलहक़। यू बन्दे होर खुदा का विसाल है, यू इश्क़ की कमालियत का विसाल है। यहाँ यू हाल है। इश्क़ ऐसा है के इश्क़ ते ऐसे कामाँ भोत हो आते। बाज़े आशिक़ाँ दिखलाते, बाज़े आशिक़ाँ छुपाते। बाज़े कते दिखलाने में सवाद है; बाज़े कते छुपाने में। हरेक कुँ एक क़िस्म का वक्त था। हरेक ज़माने में बाज़े आशिक़ाँ या आरिफ़ाँ इश्क़ या इरफ़ान के ज़ोर सूँ खुदा कहवाये। भोत खूब थे, आशिक़ थे। आरिफ़ थे। सुहाये। यू च है तो कहवाया जाए। 'अम्मा अनअल्ला' याने मै च खुदा हूँ। यू बी विसाल तो हुए। यू बी कमाल तो हुए। यू बी हाल तो हुए, वले मैं होर खुदा यू दो हुए इस निहायत यगानगी सूँ यू बी दुई का मक़ाम है। दुई तो वाँ लाज़िम नई आती जाँ इश्क़ तमाम है। दुई दूर करना यू तो इश्क का एन काम है। 'अनअल्ला' का माना इश्क़ कता सो आशिक़ कुँ फ़ाम है। जो इश्क़ 'अना' कहने पर आता तो आशिक पूरा मक़सूद पाता। सब आपी च होता। 'अनल्ला' में का दुई पना दूर हो जाता। यहाँ अपना अपै च यार है। 'वाहदहु ला शरीक लहू' की ठार है। यहाँ अपना इश्क़ अपस सूँ धरता। यहाँ अपनी परस्तिश अपै करता। यहा नूँर अला नूर' है। यहाँ अपै च सब जागा भरपूर है। हज़रत जो खुदा सूँ मिलने गये थे मेराज की रात, तो परदे में ते यूँ आई बात के सबूर करो। खुदा नमाज़ करता है याने अपना शग़ल अपस सूँ धरता है। वो नमाज़ कते सो यू नमाज़ है। अगर कोई पछानेगा, ज कोई महरम राज़ है, सो जानेगा। जो तहक़ीक़ हुआ आपी आप, ना उसे माँ ना उसे बाप। अहद हुआ। 'लैमयलद' हुआ, 'वलम यू लद' हुआ। दर ते गुजरो वहद हुआ। जो कोई अपना इश्क़ अपस सूँ धरता वो दुसरे की नमाज़ कूँ करता! उसे अपनी इबादत ते फ़ुरसत नई एक तिल, यूँ अपस सूँ अपै गया है मिल। तहक़ीक यूँ च है, ज्यूँ कहा गया त्यूँ च है। अमा यक अनअल्ला वो इश्क़ी है वो यक 'अनअल्ला' वाँ इरफ़ानी है। अगर यू दोनों हासिल है तो 'ज़हे स आदत' तमाम शादमानी है। अगर चे इश्क़ होर इर्फ़ान ज़िक्र एक है, वले हुए दो ठार। आशिक़ मस्त है, आरिफ़ हुशियार, 'अन-

अनहक़-सोऽहम, मैं ईश्वर हू
परस्तिश-पूजा, अर्चा
अहद-एक
शादमानी-खुशी
कियाँ-की
यगानगी-एकत्व
दुई-द्वित्व
सबूर-सन्तोष
१ लेकिन मै खुदा हूँ
२ ईश्वर एक है, उस का कोई साथी नहीं।
३ एक से बढ कर एक, सबसे बढ कर और श्रेष्ठ।
४ किसीने उसे उत्पन्न नही किया
५ उसने किसी को उत्पन्न नहीं किया।
६ खुश किस्मती का क्या कहें?

अल्ला' के मुक़ाम पर हम इश्क़ में, हम इरफ़ान में ज कोई कामिल है वो हमेशा खड़ा है। वले 'अना' पर 'अना' होर बशरियत बिल्कुल, उसते जाना यू मुश्किल। यू काम भोत बड़ा है। अगर कोई आशिक या आरिफ़ इस टार यू समज कर करता है फ़र्क़; तो 'अना' पर 'अना' यकादे वक्त बेअख्तियार मयस्सर होता है। 'अल-हाल कल वक्त'। तमाम बशरियत किसते गई होर किसते जाती। यू निहायत दूर होती। यक वक्त यक पल इस हद लगन आती। तो यू 'अना' पर आना होर यू अना कहवाना यू अपस ते अपे च कुछ हो आता है। ना यहाँ अपस का भाता है, अगर यू अपे म्याने आवे होर अपस कूँ कहावे। 'नाऊज़ो बिल्लाह' काफ़िर हुए या मरदूद हो जावे। 'अना' पर 'अना' भोत मुश्किल है। अना का तमाम इल्म किसे हासिल है। 'वल्लाह बिल्लाह ता अल्लाह' मुहम्मद ने यहाँ च कह्या 'ला इलाहालिल्लाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह'। नईं तो क्या मुहम्मद कूँ यू हाल न था, यू विसाल न था। यू क़ाल न था। बशरियत मुतलक़ जानहारी नहीं च, यू दुरुस्त नहीं कहीं च।' 'अना' के मक़ाम बग़ैर जेते मक़ाम है वो सब हाल है, यू विसाल है। कुब का अन्दाज़ है, माशूक़ियत का नाज़ है। हिम्मत का इमदाद है, इश्क का इत्तिहाद है। जो लगन बशरियत इसमें बाक़ी है तो लगन 'अन अल्ला' कहने का मुश्ताक़ी है। बशरियत की धुन 'अन अल्ला' लगन। अल्ला का इश्क़ यों लग अपड़ता है के यू 'अन अल्ला' कहता है। पीछे रहते रहते यू यखादे वक्त 'अना' के मक़ाम पर आता तो 'अन-अल्ला' बी कहना रहता है। 'अना' के मकाम पर जो 'अना' है सो लइ 'माअल्लाह' के वक्त का माना। यारों हो इन्साफ़ करो, दिल कूँ साफ़ करो; भोत नको लाफ़ करो। कह्या मानो, अपस कूँ पछानो या ना जान कर, या मस्ती सूँ, या दीवानगी सूँ लइ कुछ कह्या जाता है। वले जिसे समज्या वो बी अपनी जागा पर आता है। अरबी में यूँ दिये हैं खबर "कैलामुल मजानीन ला तसरा"। अम्मा जूँ इब्तिदा ते रसूल खुदा ते ज़िक्र शग़ल का क़ाअदा आता त्यूँ ब्यान किया जाता है के इन्सान 'अन अल्ला' हुआ अछो या 'अना' हुआ अछो। अव्वल तो वाजिब है, अपस कूँ यों बिसरना। वले बिला अख्तियार खुदा-खुदा बोलता जाता है। उसे क्या करना? पस मालूम होता है के 'अना' बी माशूक़ियत के कमालियत का मक़ाम है; जिस कूँ समज में समज है, जिस कूँ फ़ाम में फ़ाम है, उसे यू फ़ाम है। अगर चे खुदा सूँ

मरदूद-अभागा, निकम्मा † लाफ-बड़ाई
क़ाल-कथन क़ाअदा-विधान, नियम
मुतलक-बिलकुल
कुर्ब-सामीप्य जानहारी-जाननेवाली
इत्तिहाद-संगठन कहीं च-कहीं भी
बशरियत-व्यक्तित्व
मुश्ताक़ी-शौक †

१ यह बिजली की तरह है।
२ ईश्वर रक्षा करे।
३ ईश्वर की क़सम। मुझे बिलकुल ख़बर नहीं है।
४ ईश्वर साथ है।
५ दीवानों की बात का कोई अर्थ नहीं लगा सकता।

मिल ख़ुदा हुआ है। इश्क़ रख्या नईं जुदाई; अम्मा इतना हुए पर बी बशरियत सूँ मिल चलती है ख़ुदाई। "अनअल्ला" व 'अना' का तो क्या लग्या है धंदा ? वले जो बशरियत की अहतियाज म्यानें आये तो वो ख़ुदा सूँ ख़ुदा-यू बन्दा सूँ बन्दा।

बैत—

गश्तम तमाम जमा व परागन्दगी कुजास्त
सर ता बपा ख़ुदा शुदम व बन्दगी बजास्त

अमा, जो इब्तिदा ते रसूल ख़ुदा ते हुआ है सो रवा है। बन्दा अगर ख़ुदा हुआ तो ख़ुदा के काम करना। ख़ुदा के काम अगर हात नईं हुए तो अपै बन्दा होकर फ़ाम करना। क़तरा दरिया सूँ वासिल हुआ, दरिया क़तरा कूँ हासिल हुआ। वले यू क्या अपै 'बिज़्ज़ात' दरिया है। दरिया क़तरे में भर्या है। अजब क़तरा है, वो जिस में दरिया भरना क़ुदरत देख्यो क़तरे कूँ दरिया करना तो दरिया में दरिया समाता, क़तरे में दरिया क्यूँ आता ? जिनो याँ खड़े हैं, उनो भोत बड़े हैं। इन्सान जो इस मुक़ाम पर आता है तो बी कुछ किया जाता है। यू सब इश्क़ होर इरफ़ान का ज़ोर है। मबादा तूँ जानेगा कुछ होर है। यू बात तहक़ीक़ सब वों च है, जो यारां जाने। अमा, टुक वले है दरम्याने। यकी च था, सवाद की ख़ातिर एक के दो हुए। याने यो थे सो वो हुए, ला इल्लाहाइल्लिल्लाह का ज़िक्र अव्वल चन्द रोज़ ज़बान सूँ करते हैं। ख़ातिर क़रार रख, दिल कूँ ठार रख। भोत ध्यान सूँ करते हैं। जो यू ज़िक्र उसे ख़ूब वज़ा सूँ भेदे। यू फ़िक्र ख़ूब वज़ा सूँ भेद्या। इस ठार पराया पर आया, मुहब्बत हासिल हुई। यहाँ का लज़्ज़त पाया। बाद अज़ाँ अल्लाह के इस्म के, इस क़िस्म के ज़िक्र करते हैं के जबान कूँ इस जिक्र का असर नईं अँपड़ता। ज़बान कहाँ है के ज़बान कू ख़बर नईं अँपड़ता। जाँ इस ज़िक्र कूँ ठार है, वाँ ज़बाँ बेकार है। उस जागा पर फ़िक्र करना के यू बेज़बान ज़िक्र करेगा सो कौन है ? अपस में अपे हज़ार हज़ार फ़िक्र करता है सो कौन है ? यू ज़िक्र उस हद लगन अँपड़ता है के ज़ाकिर मज़कूर होता है। ज़ुल्मात सब नूर होता है। लताफ़त आते ही कसाफ़त सब दूर होती है। ग़ायब हुज़ूर होता है, ख़ाली सब

अहतियाज-आवश्यकता
रवा-उचित
बिज़्ज़ात-ज़ात से
मबादा-इस के बाद
बाद अज़ाँ-इस के बाद
इस्म-नाम
ज़ाकिर-चर्चा करने वाला †
† (ज़िक्र-ज़ाकिर)
मज़कूर-जिस की चर्चा की जाती है (ज़िक्र-मज़कूर)
यकी च-एक ही
१ मैं सब बुराइयों से उठ कर पूर्ण हो गया हूँ। सिर से पाँव तक ईश्वरमय हूँ, यद्यपि मेरा व्यक्तित्व शेष है।
ज़ुल्मात-अन्धकार
नूर-प्रकाश, चमक
कसाफ़त-मैल कुचैल

भरपूर होता है। जो बेज़बान बोलता वो तो 'बेचूँ' बेचुगूँ' 'बेशुबानमूँ' है। सुनता है होर कान नईं, बोलता है होर ज़बान नईं। ज कुछ वो कता है वो हमी करते। अगर मर कता तो मरते। दौड़ते हैं जिधर वो दौड़ाता, आते हैं जिधर वो ल्याता। हमना चारा नईं। हमें बिचारे जकुछ वो फ़रमाता सो करनहारे। कले कधीं हमारी बी बात सुनता है, हमारा बी दिल हात लेता है। हमना सूँ बी मिल चलता। हमना बी दिलासा देता है। ग़म के वक्त यारी करता, खुशी के वक्त दिलदारी करता। आ पड़े कूँ काम आता। मरने की जागा ते बचा ल्याता। खुश दिल करता है। मुराद हासिल करता है। वो 'बेचूँ बेचुगूँ' बेज़बान बात करता है, सो उसे बी बेसूरती सूँ नूर की सूरत है। भोत पाक, भोत लतीफ़ मूरत है। इतनी नाज़ुक है जो दिखलाई नईं जाती, जेता कहे बी कहने में नईं आती। अगर कहे तो बी कोई यकायक पतयासी ना, यू दरिया किसी क़तरे में आसी ना। बीज में जा कर झाड़ कूँ कौन देख्या है? कंकर में घूस कर पहाड़ कूँ कौन देख्या है? तारे में आसमान क्यूँ समाना? जर्रे में आफ़ताब कूँ देख्या जाना। मुहाल यू हाल खुदा के त्यूँ च होवे। इस हाल बिसाल, खुदा करे तो च होवे। यू बात जो आती सो खुदा ते आती। जॉ ते आती वो खुदा यू खूब पछान जॉ ते बात आती वाँ जाती। बीच में जो बात ढूँड्या सो हुआ सरगर्दान। होर आम खास सब, आलम सब हैरान। होर जिस पर्दे ते बात भार पर आती सो रुह 'कुलरुह मिन अम्रे रब्बी' जिसे अम्र-खुदा कते। यू रूह का मकान त्यूँ च रूह ते बात हमना पर आती तो हमें बोलते के हमे इन्सान। बाजे वक्त यूँ होता है के आलम ग़ैब का मदद होकर रूह होर इन्सान अपस में अपै बात कते हैं मिलाद वले यू भेद कूँ समजना भोत मुश्किल; किसे है दिल। कौन है ऐसा कामिल-वासिल? उस ग़ैब की हुवियत में ते बात हज़ार हजार जिन्स की आती, इन्सान कूँ खुदा अक्ल दिया है तो हरेक बात हरेक जागा समज कर कही जाती। वहाँ ते ज कुछ आया, होर उने भार भाया। जो मजज़ूब हुआ, दीवाना कहवाया। बेखुद बेहोश हुआ, क्या कता क्या नहीं कता फ़रामोश हुआ। बेबन्द हुआ, बन्द छुट्या। आदमियॉ में ते उठ्या। यू लाबवाली दरगाह। यॉ क्या फक़ीर क्या बादशाह? गुनाह और सवाब सब भार है, दिल में खुदा की च टार है। वले आरिफ़ कूँ ज़रूर यू तहक़ीक़ कर जाने। नफ्सानी खतरा होर रहमानी खतरे कूँ सब पछाने। नफ्सानी शैतानी खतरे कूँ सर भार काड़ने ना देना। इस खतर्या क भोत क़ैद सूँ रखना। जागा नाज़ुक है, पर्दा फाड़ने न देना। 'नौज़ो

मुहाल-कठिन
हुवियत-ईश्वर का अस्तित्व
मजजूब-लीन (जज्ब-मजजूब)
लाबवाल - [illegible]
रहमा -इश्व

करनहारे-करने वाले
पतयासी-भरोसा करेगा
आसी-आएगा

१ अनुपम, अनुपमेय
२ उस पर कोई सन्देह नहा।
३ आत्मा क्या है? ईश्वर का आदेश है।

बिल्लाह' अगर यू नफ्सानी खतरे भार निकले, नड़री पर पावें दे गला कुचले। गुनहगार यू खतरे करते हैं, शर्मसार यू खतरे करते हैं। अगर मर्द है तू साहब-हाल, तो इस नफ्सानी खतर्यो कूँ सँभाल। तेरे रहज़न सो यू च हैं, तेरे दुश्मन सो च हैं। दुश्मन कूँ पतयाना खूब नईं, इनों में मिल जाना खूब नहीं, पूच बिचार के वक्त बला तुझ पर भावेंगे। अप म्याने ते निर्वाले हो जाएंगे। उस वक्त क्या तूँ उनो कूँ पकड़ने पावेगा? किधर ढूँडेगा? कहाँ ते ल्याने जावेगा? काम भोत कुबल, अगर तूँ आक़िल हो तो देख चल। झाड़, पहाड़, खाक, बारा, आतिश, आब, चाँद, तारा, अभाल, आसमान, आफ़ताब यू छिपे नईं हिजाब। अगर किस पर खुले हैं होर किसते देखा जाता है तो दानिश के अँखियाँ सूँ, खुदा सब मे है। 'बेचूनी, बेचूँनी' की वज़ा सूँ दिस आता है। देखनहारा होवे तो दिस आवे, ढूँडनहारा हुए तो पावे। पीर-मुर्शद तो बोलने का बोलता है, वले उसका तलब उस पर खोलता है। जिस तालिब का तलब कमाल है वो खाली नईं, अलबत्ता उस पर कुछ हाल है। अगर पत्थर सौ बरस पानी में अछेगा, फोड़ च तो पत्थर सूखा। कूड आदमी ऊपर चिकना दिसता दरूनी में सब रूखा। जिने रीझ्या वो भीतर भीज्या। जिस तालिब कूँ तलब का ज़ोर है उसे पीर मुर्शद का सुहबत असर करता है। जिस तालिब कू तलब का ज़ोर नईं पीर मुर्शद केता वी कहो क्या फ़ायदा? कुछ याद नईं अछता, सब बिसरता है। जूँ हाफ़िज़ कता है के—

बैत—

गोहरे पाक बबायद के शवद क़ाबिले फ़ैज़
वर्ना हर संग कुजा लूलुए मार्जां न शवद

जो तलब जिस ठार है, सब उसकी तलब का यार है। तलब बोद्या दरवाज़ा खोलता। तलब बुलाता, तलब बोलता। तलब मतलूब कूँ अँपड़ाती, वही तलब जिस पर तलब तमाम आती। 'लाइलाहाइल्लिल्लाह' की जिक्र यूँ है। अल्लाह के ही जो 'ला' कने हैं तो ज़मीं होर आसमाँ कूँ फ़ना कर को जानना अपना वजूद जुमला जहान कूँ फ़ना कर जानना। जो तालिब इस शग़ल के दुम्बाल हुआ वो क़सूर उसका कमाल हुआ। पीछे ये दिसता सो ऊपर का छिलटा सब दूर हुआ। भीतर यू बेज़बान

रहज़न-चोर, डाकू
हिजाब-पर्दा
कमाल-पक्का
दरूनी-अन्दरूनी
दुम्बाल-पीछे
नड़री-नल्डा, टेंटवा
सो च-वही
भावेंगे-टालेंगे
निर्वाले-अलग सलग
कुबल-कठिन §
§ अभाल- ?
फोड़े च-फोड़ते ही
१ अनुपम।

बोलता सो रह्या। जो यू बी इस 'ला' के संगात फ़ना हुआ, बाद अज़ाँ इस बोलने कूँ जो बोलता वो रहा। इल्लिल्लाह कते सो वो च है। तालिब कूँ इस ठार इतनी मशक्कत तू च है। इश्क इश्क कर आशिक़ाँ कूचे-कूँचें पुकारते। मन्सूर 'अनलहक़' कहा। अगर 'अनल इश्क़' कता तो हर्गिज़ उसे ना मारते। खुदा शाहद था, माना वाहद था। बन्दा जो अपस कूँ तमाम दूर किया, तमाम नूर किया। पीछे बन्दे में खुदा च रहता है। नईं जानता सो कुछ का कुछ कता है। खुदा अपस कूँ खुदा हूँ कर बोलना बन्दे कूँ का है सकत। यू बोलता सो होर कोई है, कौन समजता यूँ गत? किसे कुदरत है जो वहाँ लगन आवे, खुदा होर बन्दे का भेद पावे? यू 'अल इन्सान सरी व अनासिरहू' का ठौर है। यहाँ जुदाई की जागा नईं, खुदा होर बन्दे का नाँव है। एक झाड़, एक डाली, झाड़ डाली कूँ जुदा कर नको जानो, डाली ते झाड़ सुहाता है पछानो। फूल-फल सब डाल्याँ कूँ आता बार। फूल होर फल होर डाली झाड़ का सिंघार। आरिफाँ जेते निशान्याँ देते नादाना चुप अपस कूँ खुदा कर लेते। दिल में अपनी हुई आनी, डाली ने अपस कूँ झाड़ ते जुदा कर जानी। एक झाड़ उसे कतॉ डाल्याँ सुन, हरेक डाली में जिन्स-जिन्स के गुन! उस डाल्या में भी रग-रग के फले है फूल। फूल कता मे डाली ते आया, डाली कती मे झाड़ में ते आई। सब झाड़ है नको भूल। बन्दे कूँ अगर खुदा कूँ अपड़ने का तलब है तो उसे बी पीर-मुशद ही एक सबब है। जिने जो अपड़या है अपनी तलब सूँ अपड़या है। इन्सान के जो दिल मे खतरा आ कर दुई पाड़ता है वो खतरा अगर दूर करे तो तमाम अपस कूँ नूर करे। जात कूँ अपड़े, बात कूँ अपड़े। कुल कायनात क अपड़े। बन्दा बन्दगी ते जुदा हुए, अपै च खुदा हुए। अव्वल दूदी च था। दूद का दही हुआ। दही का छाच हुआ। तमाम छाच में मशक्कत करते-करते कुछ निकल्या। उसे मस्का गुने नाम। जो मस्का आग की आँच खाया होर सूरत पाया घीव कहवाया। दूद अपस कूँ बनवाया। बन्द यूँ च अपस कूँ गँवाये तो खुदा कहवाये। अगर खुदा मे 'फ़ना' होने मँगता है तो तूँ इतना जान, अपै ना अछना म्याने म्यान। आखिर दूदी च जमवे तो दही होता है। दूदी च छाच मस्का-घीव होकर कई का कई होता है। पीछे इस घीव में एक सुवाद है, के उसे वो च कते हैं। बन्दे मे खुदा मे यूँ च कता है। अपस कूँ पाक कर खुदा सँ अपड़ने में हुनर है, ना लोकाँ सूँ लड़ना होर झगड़ने में हुनर है। अगर मर्द है तो अपस से लड़, अपस से झगड़। दुसर्याँ का दुम्बाल नको पड़। अपस सूँ झगड़ेगा तो

शाहद-साक्षी
वाहद-एक
कायनात-विश्व
सिंघार-शृंगार †
† कता-कहता है
कती-कहती है
पाड़ना-डालना
दूदी च-दूध ही
घीव-घी।
† जमवे-जमावे
मस्का-मक्खन
दो च-वही

हाती च में आएगा दिल, किस सूँ झगड़ेगा तो क्या हासिल ? हर यकस कूँ यक जागा रखे हैं। तुजे झगड़ने से क्या ग़र्ज़, यू खुदा के कामों में लड़ना सो क्या ग़र्ज़ ? उसे कोई वा रख्या है, तो वो वाँ रख्या। तुझे उस सूँ लड़ो ककर कौन कह्या। खुदाई के दावा करता, नईं डरता। आदमी ने खुदा के कामों समज कर चुप रहना, किसे कुछ ना कहना। सबी च अपने खुदा के उधर ढले हैं। बुरे कोई नईं, सब भले हैं। सब में इश्क़ है, सब में इश्क़ की मस्ती उछलती है। खुदा की खुदाई यूँ चलती है। जो आया सो कुछ कुछ बोल्या च, आखिर पर्दा खोल्या च। बशरियत की मंज़िलों जीतिया, यू चल कर आया, खुदाइयत की मंजिल तलक, दिल तलक। उत्ते मंज़िलों पर भी एकाध वक्त उसे गुज़र बी होना है। खुदाइयत आई तो क्या हुआ ? बशरियत बी उसमें अछती है, जाती नईं। बशरियत बी एक क़िस्म की खुदाइयत है। दिल का तलब कधीं इस पर होता है। यू गज़ ही उसका तमाम काज। उस सूँ आज नही अछता। चन्दा बशरियत का मुहताज नहीं अछता। यू होर है उसका खासा। मंज़िल है कईं, यू अगर है तो है नईं। नईं तो नईं। बादशाहाँ रात दीस तख़्त पर ई च नही बैठते अछते है, अपने महलों में बी सैर करते हैं। सब उनो च का है, अगर दिल माँग्या तो उधर बी रुख़सत धरते हैं। वासिल पर, कामिल पर। इस बात ते कुछ कसूर नईं आता। बाज़ लोकाँ अबे हैं। यूँ तमाशा उनों ते देखा नईं जाता। यू नादान अपै च रहेंगे पुकार-पुकार। अँदेल्याँ होर अहमक़ाँ के बाताँ का क्या ऐतबार। अपनी खातिर कूँ पुकारते। झक मारते। यूँ बादशाह की बाता का दाब है। मफ़लूकाँ कूँ सुनने का कों ताब है ? एकाध वक्त चार हरामख़ोराँ हरामखोरी पर आते हैं तो बादशाहा ते आजार पाते हैं। वले भई पादशाह सो पादशाह सरज़ोर, मफ़लूक सो मफ़लूक हरामखोर। जो आशिक़ कूँ इश्क़ जोश में आकर, ख़रोश में आकर जागता है, उछालता है। अगर इश्क़ जो कमाल कूँ अँपड्या त्यूँ इरफ़ान बी कमाल कूँ अपड़े; तो हजार मशक्कत सूँ जूं-त्यूँ संभालता है। आशिक़ बदमस्त होकर सीस कूँ नईं फोड़ता। जेता मस्त अछो, जेता बेखबर अछो। हुशयारी कूँ निपट नईं छोड़ता। हम हुश्यार अछता, हम मस्त; यू हाल हर किसे नईं देता दिस्त। मस्ती अपनी अपस में समा कर रहना। नईं कने की बात जाँ ना कहना वाँ नहीं कहना। इश्क़ छुपता नईं च यू खलासा है उसकी

बशरियत-मनुष्यत्व
चन्दाँ-कुछ
रजावत-इच्छा
अहमक़-मूर्ख
दाब-दस्तूर
मफ़लूक-अकिंचन
ख़रोश-जोश, हंगामा
हाती च में-हाथ ही मे
ककर-कह कर
सबी च-सब ही
जीतियाँ-जीती
उत्ते-उतने
कधी-कभी
उनोच का-उन्हीं का §
§ अँदेल्याँ-अंधे, अँदेला का ब.व.
जूँ त्यूँ-ज्यो त्यों
सीस-सिर
दिस्त-दृष्टि

मस्ती का वले फ़र्क़ उसमें खुशी मस्ती हेार बदमस्ती का। जो बदमस्ती आवती जीव पर ल्याती। जो इश्क़ और मस्ती इर्फ़ानी बारी होती तो मस्ती उसकूँ हुशयारी होती। जाँ इश्क़ हेार इर्फ़ान होते एक वजूद वॉ आलम आकर करता सजूद। यू इश्क़ इर्फ़ां का विसाल है। अम्मा मुहाल दर मुहाल है। बड़े नसीब उसके जिस पर यू हाल है, इतने पर बी इश्क़ पादशाह है। अगर जोश में आया च तो आया च, नईं समाया तो नईं समाया च। जो यू अपनी वादी पर आता है, तो सब आलम उसमें समाता है। ग़र्ज़ ऐसे मस्त कूँ इर्फ़ां कमाल दरकार है। नईं तो ऐसे मस्त कूँ कुछ का कुछ करते क्या बार है? इश्क़ में इतना च मना, महरमियत की बात नामरहमाँ कने ना कना। नही तो इश्क़ है। इश्क़ का सुख़न कह्या जाता है। नईं कहे तो क्या रह्या जाता है? अगर यू बात जिसे कता है उसे फ़ाम है, तो इस बात कने में भोत आराम है। एकस के दर्द-दिल कू एक अपड़ता है, एकस की बात का असर एकस कूँ चड़ता है। दोनो मस्त, दोनो डुलते। राज़ॉ के पर्दे खुलते। यकस ते यक फ़ैज़ पाता, ख़ुदा खुश रसूल कूं भाता। ज़ाहद कूँ पिला ये शराब, नहीं तो तूँ होएगा ख़राब। ख़िल्वत में जो कोई आते हैं ऐसी बातॉ सू च मारे जाते हैं। ख़िल्वत में का प्याला भार के लोकां कू पिलाने जाना पीछे जैसा अपै करते वैसा पाना। इस मस्ती में आकर अपै सुद ना धरे तो कोई क्या करे? हरेक बात समज कर कना है। अपस मे अपै गरज कर कना है। मन्सूर मुहब्बत में मस्त हुआ। 'अनलहक़' उसके मस्ती का उबाल था, ना के जूँ यो नादानॉ समजते हैं के मन्सूर कूँ कुछ वो ख़याल था। उनने हक बोल्या, लोकॉ उसे नाहक़ मारे; झूठ मारे। दुनिया में अहमक़ बहुत हैं, ना समज कर ऐसे कामाँ करनहारे। यू मुहब्बत के प्याले के चाले थे, यू मुहब्बत की बेखुदी के उलाल थे। बन्दा अगर अपस कूँ समज कर ख़ुदा कहे तो पतयाने की बात है। या झूट है, या दीवाना है, या मस्ती की धात है। दीवाने कूँ, झूटे कूँ, मस्त कूँ समजाया जाता है। ना के दीवाने पर, झूटे पर मस्त पर खून लाज़िम आता है। भोतॉ ने इस मुहब्बत के बाट में अपना सर ल्याये, अपनी जुर्रत दिखाये। वले क़बूल पड़या सो मन्सूर का सर के उस सर में था कुछ तो सिर। यू वो दरगाह नईं के यहॉ हर किसी का सर क़बूल पड़े। सर यता बलन्द हुए तो ऐसी बलन्दी चंड।

बैत—

ताके अज़ जानिबे माशूक न बाशद कशिशे
कोशिशे आशिक़ बेचारा बजाये न रसद

सजूद-सिर झुकाता (सजदा) § महरमियत-रहस्य बातॉ सूँ च-बातों से ही
अम्मा-लेकिन ज़ाहद-परहेज़गार भार-बाहर
वादी-दाव § सिर-भेद कना-कहना

कते हैं, केतक तालिबाँ अपने मुर्शद कूँ पूछे, अपने सुद कूँ पूछे, के ज़ाहिर की सूरत तुमारी देकते हैं, अपने बातिन की सूरत हमना कूँ दिखलाव। वो मुरशद कामिल था, वामिल था; साहब दिल था। बोल्या के तुम जाँ आशिक़ होते हैं वहाँ दोनो में जो इश्क़ होर मुहब्बत है, जो नाज़ व नयाज़ है जो लज्ज़त होर राहत और मशक्कत है, वो मैं हूँ। मुँझे देखो, मुँझे समझा। मुँझे पाव; वले हरेक नादान, हरेक नाक़िस ते यू बात ढुक छुपाव। यू 'अनलइश्क़' का मक़ाम आशिक़ जानता है। आबिद कूँ यू कॉ फ़ाम तू जानता के उसका वो जानता के तेरे पर आशिक़ हैं। तुमें दोनो भी मेरे पर आशिक़ हैं। मैं तरसाता, मैं तपाता, मै आग लाता, मै जलाता। उस जलने में क्या है सो देख। उस तलमलने में क्या है सो देख। वो जलने में होर जलता नई, वो तलमलने में होर तलमलता नही। ऐ आशिक! ऐ राहरो! ऐ नेक! तू कई देखता है तो उस देखने में क्या है सो देख। इस देखने में बी एक शख़्स देखता तो किसे ख़बरी च नई। सब यहाँ च बेखबर हो जाते। वहाँ का किसी में असरी च नई। सब यहाँ च बेखबर हो जाते, वहाँ किसी में असरी च नई। वो वो च है, ज कुछ है सो यो च है, बाज़े सब कूँ ज़ाती च कर जानते। सब कूँ ज़ाती च कर पछानते। वले यहाँ बात है, यहाँ बुर्द यहाँ शहमात है। जूँ हमारा बजही है हमारे सँगात, त्यूँ है ज़ात होर सिफ़ात। अंखी कू देख कते तो देखती। हात कूँ खींच ल्या कते तो ल्याता। पावँ कूँ बैठ कते तो बैठता, उठ कते तो उठता। जिधर जा कते उधर जाता। हात होर पाँव हमारे है, हमना सूँ हैं। वले वो हमें नही। यू सब हमारे फ़रमाबरदार हैं। हमारे हुक्म बाज़ कई जा सकते नही। इस बज़ा सूँ सिफ़ात तावेज़ात है। जूँ हमें होर हमारा हात है। यूँ कते हैं सब के, 'अलइन्सान बुनयानुलरब' जिधर जात ले जाता उधर सिफ़ात बी आता। बन्दा सूँ सिफ़ात, खुदा सूँ ज़ात। इश्क़ कूँ खुदा नज़दीक, अक्ल कूँ खुदा बहुत दूर। अक्ल ग़ायब है कर जानती है। इश्क जानता है के हाज़र हुजूर जो इश्क़ का गुंचा फूल होकर खिलेगा तो उस फूल मे बास है, सो खुदा अलबत्ता मिलेगा। बात का आलम बहुत बुरा आलम है, कोर बातिन कूँ इस आलम में गुजर कम है। यू अपने दिल का रेश देखने का जागा है, यू खूब अंदेश देखने का जागा है। अगर कोई चुप देखेगा आसमान क्या समजेगा बिचारा। जो बात ना आसी म्यानेम्यान। बात खुदा की ज़ात मे है। ज़ाहिर बातिन सब खुदा की ज़ात में है।

बातिन-अदृष्ट
आबिद-उपासक (इबादत-आबिद)
राहरो-पथिक
बुर्द-शतरज के खेल में जब सब मुहरे मर कर केवल † बादशाह रह जाता है, उस बाजी को बुर्द कहते है।
तावेज़ात-अधीन
कोर बातिन-अधा अन्तःकरण
रेश-घाव
असरी च-अमर ही
ज़ाती च कर-ज़ात ही समझ कर
सो भी-वह बी

१ मनुष्य ईश्वर का आधार है।

जो कोई बात में आया उसने खुदा कूँ पाया, यू ज़बान से बोलते हैं सो भी बाती च है। यू बात होर जागा इतनी च है। जो बात नईं आइ, पीछें छुपी सब खुदा की खुदाई। हैवॉ का बी यू च हाल है, वले वहाँ ख़तरे का चाल है। होर जेते भीतर की है ज़ात, वहॉ ना खतरा है ना बात। भीतर है जॉ लगन वो तमाम सुन। ज़मींन बहुत बड़ी। उसमें नवी होर वली समाये हैं। जाएँगे भी खाकी च में होर खाकी च में ते आये हैं। उसी च में ते निकले होर उसमें च का निकल्या खाते। आख़िर जाएँगे वहाँ च ही, नईं कई आते, नईं कई जाते। अमा खुदा की शान होर शौक़त अदल होर इन्साफ़ की जागा सो आसमान। अगर अपस कूँ कुछ मुश्किल पड़े तो दिल सूँ आसमान पर जान। अगर खुदा सूँ इश्क़बाज़ी है। हमराज़ी हैं, खुदा बाज़ होर तलब नईं है। खुदा सूँ हमज़ूज होने मगता है, तो खिलवत दिल है, दिल में आना सब छोड़े बाज़ दिल में रह्या नही जाता। यू इसरार हर किसी कने कह्या नईं जाता। इस बात में हबीबॉ के पावॅ कू पड़े गढे दिली च में अछने खातिर यू आलम सब सटे। कते हैं के बात में बात आती है, तो बात कही जाती है। वही हुस्न होर दिल का गुफ्तार, जो बात कते-कते छोड़ी थी उस टार।

अलक़िस्सा नज़र बोल्या के बिन पर की परी, ऐ नादर सुन्दरी, ऐ दुनिया के सर्ग की अपछरी, ऐ गुनवन्ती, गुनभरी तूँ दिल सूँ दिल ल्याई है तुजे भोत बड़ी हवस आई है। तूँ हुस्न तुजे दिल सूँ दिल लाना मुहाता है। दिल कूँ भी हुस्न भोत भाता है। वले मैं क्यूँ तुजे दिल सूँ मिलाऊँ? मै दिल कूँ क्यूँ तेरे कने ल्याऊँ? मैं तुजे क्यूँ दिखलाऊँ? यकायक क्यूँ ल्याया जाता है? क्यूँ मिलाया जाता है?

बैत—

मेरे कहने ते आता है जो मैं ल्याऊँ
वो दिल क्या अपनी भाता है जो मैं ल्याऊँ

दिल कूँ तेरे कने ल्याता है सो खून ज़िगर कर खाता है। बादशाही में भाता है। कुछ अक्ल, कुछ तदबीर, कुछ हुनर करता है। आलम-आलम कू ज़ेर व ज़बर करता है। सर का खतर है, जीव का डर है। अक्ल पादशाह, आलमपनाह जो दिल पादशाह साहब का बाप है। उने दिल पादशाह कूँ तन के कोट मे असीर किया है। कई ना जावे कर तदबीर किया है। ना किधर जान देता, ना किधर आन देता के दिल आशिक़ है, जान है। क्या जाने क्या करेगा कर दिल में गुमान है। दिल कूँ तो इस बात जफ़ा है। वले बड़े जो कुछ करते हैं उसमें बहुत नफ़ा है।

हैवॉ-हैवान, पशु
असीर-क़ैद
खाकी च मे-खाक में ही गटे-गट्टे, पॉव में चलने के कारण पड़नेवाले †
† गट्टे
अपछरी-अप्सरा
कई-कहीं

फ़र्द—

जो कोई बन्द म्याने किसके सँपड़े
ख़ुदा बिन हाल कूँ कौन अँपड़े

उस बाप के हुक्म में गिरफ्तार है, अपने हाते में बेअख़्तियार है। दिल हज़ार-हज़ार जागा फिरने तलमलाता, वले वो बाप है, क्या करेगा ? बाप सूँ कुछ नईं चलता। मा-बाप मजाज़ी। ख़ुदा उनो के हुक्म सूँ क्यूँ होना जुदा। उनो दुनिया में ल्याए, उनो परवरिश किये, उनो बढ़ाये। उनो सूँ बेअदबी क्यूँ कर्या जाए ? उनो ख़ुश तो ख़ुदा रसूल राज़ी। उनो ख़ुश तो हर दो जहाँ में फ़तहबाज़ी। उनों कूँ अपसते राज़ी रखना। उनों की दुआ लेना। उनो सूँ बेअदबी सूँ न चलना। उनो कूँ दुआ देना। यू बहुत अदब की ठाँवँ है, तो च लगन ख़ूबी है जो लगन सर पर उनों की छाव है। माँ-बाप की मेहर दुसरे में ना आसी। यू मेहर कोई दुसरे में ना पासी बड़ा मक्का, बड़ा मदीना सो माँ-बाप, सुबा उठ उनों का मुं देखे तो झड़ते सब पाप। अगर ख़िदमत में अपना जनम खोएगा। तो बी माँ-बाप का उतराई कोई क्या होएगा। माँ-बाप की रज़ा में चलता है सो वो अदबदार। भोत नेक बक्त, अरख़ुरदार। वले ऐ नार, इस ठार बी एक बात है वो तेरे च साथ है। इस दर्द का दारू सो तूँ च है। इस दरिया का उतारू सो तूँ च है। इस ज़ख़्म के मरहम माया तेरे पास है। उस दाग़ के रेश का फाया तेरे पास है। उस बीमार कूँ शफ़ा तुज तें आना है। यू नुक्सान नफ़र तुज तें पाना है। उस उम्मीदवार की उम्मीद तूँ बर ल्याना, इस ग़मकश कूँ ख़ुशी तूँ दिखलाना। बक्त पर यकस कूँ काम आना, भोत बड़ा सवाब। प्यासे कूँ पानी पिलाना भोत बड़ा सवाब। पड़े कूँ उठा कर खड़ा करना पड़ा धरम है, नहने कूँ बड़ा करना ऐन करम है। ऐसा कौन है, जिसे नेकी प्यारी नईं, दुनिया में नेकी ज़ाया होनहारी नईं। नेकी जिस ठार पड़ेगी, उस ठार निकलेगी। नेकी पथर पर सटेंगे, तो फूट कर भार निकलेगी। नेकी सब ठार करती यारी। नेकी क़यमत की छुड़ानहारी। नेकी दुश्मन कूँ दोस्तदार करती; नेकी सूँ जिसने बदी किया तो नेकी च उसे ख़ार करती। जेतें दुनिया में आकर किये सो नेकी च करो किये। नेका ने नेकी करना, दुनिया में नेकी ना बिसरना। मुजे यू फ़ाम होता है के तूँ टुक करम करती है तो सब काम होता है। क्या वास्ता के आज ब सों हुए हैं, क़र्न गुज़रे हैं जो दिल कूँ आब हयात की प्यास लगी है भोत आस लगी है। मुहब्बत गमकरास पकड्या है। उस आबहायत की ख़ातिर भोत हैरान है, परेशान है, सरगर्दां है। नशान पूछता ठारे ठार। वले कोई नईं है इस आब-हयात का निशान देनहार ! जो कोई ग़म में सँपड़ कर

मजाज़ी-अवास्तविक
रेश-घाव
क़र्न-बारह वर्ष का एक क़रना
तो च-तब तक, तभी
आसी-आएगी
पासी-पाएगी §
§ उतराई-अहसान

असीर होता है, खुदा च उस वक्त आ दस्तगीर होता है। अगर कोई तूँ नज़दीक का आदमी देवेगी मेरे सँघात, होर वो जीव आब-हयात काँ है सो बोलेगी बात; तो मैं जा कर समझा कर दिल कूँ तिल में राम करूँगा। तेरी खातिर यू काम करूँगा। तेरा बी काम होता है, उसे बी आराम होता है। मेरा बी नाम होता है।

फ़र्द—

किसे है अक़्ल एती होर किसे है एता फ़ाम
बहुत अक़्ल सूँ किया है नज़र यू दिल का काम

हुस्न धन मनमोहन, जगजीवन एक गुलाम धरती थी के गुलाम एक पल में मशारिक़ होग मग़ारिब फिर आवे। आसमान-ज़मीन, अर्श व कुर्सी की खबर ल्यावे। बेगी में भोत मशहूर, बाव उसकी शर्म हुजूर, सूरतनवीसी के नाम मे तमाम, खयाल उसका नाम। चतर चौसार, हुस्न का आइनेदार। हरेक काम मे उसका आड़ था, तारीफ़ तें कुछ पैलाड़ था।

बैत—

दिल कूँ कोई जाको बेग बोलो बात
दिल मिल्या है अताल आब-हयात

बारे, हुस्न धन, मनमोहन कने एक याकूत की अंगुश्तरी थी। उस आब-हयात के चश्मे पर मुहर पड़ी थी। हुस्न हूर ने, अखियाँ के नूर ने दिल कूँ बुलाने खातिर वो अंगुश्तरी दिये, खयाल हो नजर के हात। अपने जीव की जो कुछ थी सो बोली बात के आब-हयात का यू मुहर निशान है, ले कर जाव, दिखलाव होर दिल कूँ मुज लग जूँ-तूँ ले कर आव के वो तालिब है आब-हयात का उसे इश्तियाक ग़ालिब है। आब-हयात की यू बात सुन भोत खुश होवेगा, अलबत्ता-अलबत्ता आवेगा।

बैत—

हुस्न यूँ मँगती है जो दिल कूँ बहलाये
दिल भोला भूल्या सो क्यूँ ना आये?

असीर-कैद
ग़ाम-मुग्ध
मशरिक़-पूर्व
मग़रिब-पश्चिम
अर्श-आकाश ❀ कुर्सी ज़मीन
सूरतनवीसी-नक़ल करने-वाला
अंगुश्तरी-अंगूठी
इश्तियाक़-शौक़
बाव-हवा
चौसार-हुशियार

ख़याल होर नज़र हुस्न कने है रज़ा ले कर, दुआ दे कर, तन के शहर कूँ चले, दोनों आशिक़, दोनों जले। केतक दीसाँ कूँ चलते-चलते तन के शहर में आये। दिल पादशाह, साहब-पनाह जिल्लिल्लाह के दीदार पाये। नज़र यू ख़ुशख़बर आया, तसलीम कर, गुज़र्या सो क़िस्सा बयान किया। हाल हक़ीक़त जो कुछ था सो सब अर्याँ किया।

फ़र्द—

दिल ख़ुशी म्याने आज भोत आया
दिल ने मक़सूद अपने पाया

दिल ने नज़र कूँ अपना हमराज़ किया, बहुत सरफ़राज़ किया। हज़ार हज़ार शाबाशी दिया। गले लाया। कह्या के मर्दा जो हैं सो हिम्मत बलन्ध धरते हैं, जूँ बोलते त्यूँ च करते हैं। हिम्मत धरे तो यूँ धरना, कुछ काम करे तो यूँ करना।

बैत—

ख़बर माशूक़ का जब कोई ल्यावे
वो बी माशूक़ आधा क्यूँ न भावे

दिल रो-रो कर, हँस हँस कर यूँ च बात पूछ्या केतक वक्त लग यूँ च फिर-फिर कर यू च बात पूछ्या। उसका बस होवे तो सारा दीस; सारी रात पूछता अछे यू बात। जेता नक़ल कहे खोल खोल। दिल कहे क्यूँ फिरा बोल। आशिक़ कने जो माशूक़ के मूँ की बात आती है वो एक बात लाखों पाती है। उसकी लज्ज़त क्या कहूँ? कही नहीं जाती है। 'मन ज़ाक़ अरफ़ा'। चाखी सो जाने। नहीं चाख्या सो क्या पछाने। नज़र सू इस धात बोल, यू बात बोल हुस्न धन, मन मोहन, महबूबी का गुल्शन, जगजीवन के ख़याल कूँ इस ख़बरदे हिन्दा बिसाल कूँ अंगे बुलाया। भोत ख़ातिर दार्श्ती किया, बहुत समझाया। तक्वा दिया, आखिर ख़याल होर नज़र दोनों मिल कर एक दिल कर व याक़ूत की अंगुश्तरी का नशान के उस हुस्न परी ने, उस हूर ते आली इस्तरी ने, उस गुनवन्ती गुनभरी ने दी थी सो दिल के हात में दिये। ख़िदमत अपना मुजरा किये। दिल की अंगूटी देख चूम-चाट सर चड़ाया। कह्या, बारे; काम यहाँ लगन आया, मैं अताल अपनी उम्मीद पाया। यू बातों हुए पीछे, यू हिकायतों हुए पीछे नज़र ने, साहब-हुनर ने, जीव के जिगर ने खबर ने बोल्या ऐ दिल बादशाह, साहब-सिपाह, आलमपनाह, जिल्लिल्लाह, हक़ीक़त आगाह एती मशक़्क़त, एती महनत मैं इस ख़ातिर किया के तूँ पछाने, तूँ मुझे माने। मेरा था सो

अर्याँ-प्रकट कने-पास १ जिसने चखा उसी ने स्वाद जाना।

मैं किया, अताल तेरा तूँ जाने। आसिफ़ ने ऐसा काम सुलेमान के ख़ातिर नहीं किया। बिल्क़ीस के बाप तो साहब था। इस इश्क़ मे तेरी बड़ी बेताबी देख मैं अपस पर क़बूल किया यू अज़ाब। ऐ दिल पादशाह, तूँ जिसकी ख़ातिर तलमल्या, मैं तुझे देख जल्या। तूँ अथा बेताब, बेदिल, बेआराम; मै नफ़र था, मुझ से आसूदगी हुई हराम। नफ़र किये तो क्या? सब नफ़र हुए, सबी च असील, सबी च मौतबर हुए। नफ़र होना कुछ जुदा है। जो के नफ़र है उनो कू समझेगा अंगे ख़ुदा है। नफ़र नफ़र फ़र्क है, सब कूँ बराबर नको देख। जिस नफ़र ते कुछ ख़ूबी हो आई; ज़ाहिर नफ़र, बातिन वो भाई। ख़ूब नज़र कूँ कहाँ है जोड़ा, जितने उसे दिये उतना थोड़ा। माल ख़ूब नफ़र कूँ देना ख़ुशहाल कर। केता कोई रखेगा सन्दूक मे घाल कर। जिस नफ़र की स्विदमत पादशाह के दिल मे जमी उस नफ़र कूँ माल की क्या कमी? कहाँ आग का शोला, कहाँ बर्क़? मेरे काम कूँ होर दुसर्या के काम कूँ जमीन आसमान का फ़र्क! साहब समज कर नफ़र कू हात पकड़े तो नफ़र का होवे नाम। कौन चाकर, किस बादशाह ख़ातिर किया ऐसा काम? सारी पादशाही थी वले यू काम कोई कबूल नहीं किया। मै क़दम अंगे रख्या। जीव पर होड़ खेल्या। मै यू काम अपने सर लिया। मर्द वो जहाँ, सब डरते वहा। न डरे मर्द वो, जो कोई न कर सके सो करे। दिल पादशाह, आलमपनाह, साहब सिपाह ने बोल्या के ऐ नज़र, ऐ पुरहुनर जो कुछ बोलता है सो ख़ूब बोलता है। मोत ख़ूब बोलता है। बहुत माकूल बोलता है। दिल की गरह क्या खोलता है? यू च है, जू तूँ कता त्यू च है। मै बी जानता हूँ, नजर कू पछानता हूँ। जो तेग मँगता है दिल, वो च तेरी मुराद होवेगी हासिल। तूँ दानिशमन्द दाना, दूरन्देश, बहुत रास्त है; माल क्या तुजने ज्यास्त है? सच कता है, माल खर्च करने कूँ है, ना के ख्वाली सन्दूक मे भरने कूँ है। मर्द वो जो ख़ुदा दिया सो माल अपै खर्चे। अपना नाँव जगावे, ना के य माल छोड़ जावे ता होर कोई आवे, होर कोई खाया, होर कोई अपना नावँ किया तो उसे क्या हासिल? मै समजता हूँ इतना इस बात मने नहीं हूँ ग़ाफ़िल, ख़ुदा दिया सो माल अपना अपै खाना, और अपना नावँ अपै जगाना। जो कोई जोड़ता है सो होर यकस की ख़ातिर छोड़ता है। गुनागार होर बदनाम यू कहवाता, माल सूँ म्याने म्यान होर कोई खाता। खानहारे खा कर जाते, ख़ुदा के पूच-बिचार सब उस पर आते। किधर-किधर का हिसाब, कौं कौं का बिचारा देगा

आसिफ-हजरत सुलेमान के मन्त्री
सुलेमान-एक पैगम्बर
बिल्क़ीस-सुलेमान की पत्नी
आसूदगी-चैन
शोला-अंगारा, पतंगा †
† बक-बिजला ता-इस लिए
इस्तरी-स्त्री
अथा-था
असील शालवन §
§ सबी च-सब ही
होड़ शर्त, प्रतिस्पर्धा
जगाना जीवित रखना, चैतन्य रखना

जवाब ? अपना अपै करना नुक्सान, शर्म हुजूरी ख़ुदराज़ियाँ। हिसाब का बोल सब किसे भाता ? मुलाहिज़ा काम नईं आता। किस मफ़लूकों का तूँ क्या लेवेगा ? तेरा जवाब क्या ख़ुदा कूँ होर कोई देवेगा ? यहाँ सब फ़ुसला कर खाने अएँग। वहाँ कोई क्या म्याने आएँगे ? नफ्सानफ्सी घड़ेगी, अपनी-अपनी पड़ेगी। मैं यू सब केता केता हूँ फ़ाश। जाँ ऐसे दोस्त अछेंगे वहाँ दुश्मन क्या कुमाश ? यू बात सुन आदमी भले, ऐसे दोस्तों ते दुश्मन भले। दुश्मन तो दुश्मनी च हैं रास्ता पाक, यू दोस्त हो कर दुश्मन ते ज्यास्त करते हलाक। तूँ अगर अपना दोस्त है तो दुश्मन कूं पछान, गुमान क्या खातिर रखना म्याने-म्यान। तूँ अपनी हद पर चल, जो दुसरे बी अपनी हद पर आवें, एते बी मीठे ना होना जो मखियाँ तोड़-तोड़ खावें। भला आदमी कुछ करता तो यू कुछ कूँ कुछ पाते। कुतियाँ कूँ सिल्क दिये तो मूँ चाटने आते। ज कोई हैं मलूक, जैसाँ सूँ वैसे करते सलूक। नफ़र हज़ार-हज़ार हो तो बी साहब ने अपना दाब रखना, अपना हिसाब रखना। तूँ साहब नकों छोड़, यहाँ नकों जा खातिर के ख़ुदा बोल्या है—' वे मन यामल मिस्क़ाल ज़र्रतन खैरन यग।' जाँ साहबी तेरी [redacted] में दस, आख़िर कूँ सत्तर, यू ख़ुदा की बात है। उसे तूँ नकों कतर। तुझ में भोत है गुन, किसी का तूँ बी बोल सुन। दुनिया दो दीस की मेहमान, टीक पछान। नाम कर ले, कुछ काम कर ले। बेकिया फ़ुर्सत पावेगा, बेकिया तूँ करने आवेगा। रह्या सो अंगन होर का डेर, जो कुछ तूँ लिया सो तेग।

बारे, अलक़िस्सा नज़र ने हुस्न की दिया था ख़ुश खबर। दिल का दिल ताज़ा हुआ, बल्के ताज़ातर। दिल की दिल में भरी थी आस आस, उस याकूत की अंगुश्तरी ते आने लगी आब-हयात की बास ! दिल के दिल में जीव आया, ख़याल कूँ नज़दीक बुलाया। पूछा के तूँ क्या काम करता है ? क्या हुनर धरता है ?

मफ़लूक-अकिंचन
नफ़्सानगी-अपनी अपनी
कुमाश-सिफ़त, विशेषता
सिल्क-हार §
§ मलूक-राजा (मलिक का ब. व.)
सत्तर-बेशुमार
घड़ेगी-घटित होगी
बेकिया-बिना किया हुआ
१ यदि सदाचरण रत्ती भर भी हो तो ईश्वर उसका बदला देगा।

बैत—

ऐ यार आदमी आये अगर यार पास ते
फिर फिर के उस सूँ बात करे आशिक़ आस ते

वो बात बहुत सवाद भरी, जो बात वो नार करे, ज्यूँ-ज्यूँ सुनती त्यूँ त्यूँ भाती, जीव में हज़ार-हज़ार खुशी ल्याती। माशूक़ कने का जो आदमी आता वो भोत भाता, उस पर भी भोत प्यार आता। माशूक़ बोल भेजे सो बातां दिल का दिलासा है। यूं बातां फिर फिर पूछना, फिर फिर सुनना आशिक का फ़ेल खासा है। जहाँ जीव लगता, वहाँ इस बात ते नहीं दिल बहलता। बारे, खयाल बोल्या के मैं नक्क़ाश हूँ। सूरत नवीसी आज मेरा नावे है। चित्तर हूं, चित्र चितरना मेरा काम है। ऐसा चित्र चितरूँ जो कोई देखे सुद ना रहे। जो कोई देखे सो शाबाश-शाबाश कहे।

बैत—

खुश खयाल ने अपस के हुनर की सेहत किया
आकिल अथा तो जीव बहलाने यू गत किया ?

दिल ने कह्या क्या चितरना सो चितर, देखें तेरा हुनर। खयाल खुशहाल होकर हात में ले क़लम उसी दम मनमोहन की सूरत, जगजीवन की सूरत, हुस्न धन की सूरत लिख दिखलाया। दिल देखते च उस हुस्न की अजायब सूरत पर, मनहर मूरत पर आशिक़ हुआ। वो नक्श भाया, उस नक्श सूँ जीव लाया। सुद खोया, बुद खोया। आह नाले भरने लग्या। दीवानी दीवानी चाले करने लग्या। अक्ल सट्या, हैच हुआ, कुछ था, सो कुछ हुआ। ताक़त गई, सबूरी ना रही। बेखाब हुआ, बेताब हुआ। माशूक़ में एती दूरी, आशिक़ में का की सबूरी ? निसदिन कहे हुस्न-हुस्न, यू च लगी थी उसकू धुन।

बैत—

बहुत बेताब है दिल दिल मने कुछ ताब नईं उबर्या
जिगर में लहू कहाँ का लहू की जागा आब नईं उबर्या

बारे, आक़िल खयाल होर नज़र सूँ विचार कर दिल शहर दीदार सूँ अज़्म किया, अज़्म बिल जज़्म किया, उस वक़्त दिल पास एक वज़ीर था। वहम उसका

सूरतनवीसी-चित्रकारी § अज़्म बिल जज़्म दृढ संकल्प चित्तर-चित्रित
नाला-शोर चितरना-चित्रित करना
अज़्म इरादा § जागा-जगह

नाम, धरम उसका काम; बरहम उसका फ़ाम।

फ़र्द

नज़ीक दिल के तो दिल का मुराद सब आया
यू दिल के काम मने वहम आ ख़लल भाया

उनने सुन्या के दिल अताल जाता है। आप दिल भाता है। ऐसा अन्देशा-अन्देशा अपे मारता अपने पावँ पर तेशा। खयाल होर नज़र की बात कूँ लगेगा, तो क्या हमारे हात कूँ लगेगा। बहुती च पकड़या है इज्तराब। आखिर मुल्क सब करेगा ख़राब। परवा नहीं करता ताज होर तख़्त का, क्या जाने क्या लिखा है बख़्त का? बेग बेग अक्ल पादशाह आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह कने जा कर, जीव ला कर उन चोर ने, उन हरामखोर ने चड़ी खाया, पछाड़ी खाया, अखियाँ में पानी ल्याया। सब खोल कर कहा माया के नज़र जो तन के शहर में ते तायब हो गया था, ग़ायब हो गया था। जाने कों रह्या था, सो अताल आया है। फ़ितना उचाया है। इश्क़ पादशाह आलमपनाह की बादशाही में ते एक धरघालू, दग़ाबाज़, खयाल फ़ाम, नक्काश कूँ सघात ल्याया है। यू दोनों जने मिल कर मँगते हैं जो दिल कूँ दीदार के शहर के उधर ले जावे; उस भरे शहर मे, कुछ फितना उचावे। तन के मुल्क कू खराब करें। एक बला बिसावे। लश्कर सब बेखबर, कौन जानता है, किसमें क्या है मकर? मबादा कई की बला आवे, यू मुल्क हमारे हात ते जावे। इस बात कूं नको ताख़ीर कर। बेगी च कुछ उसकी तदबीर कर। जो करना है सो कर आज, कुछ भला-बुरा हुआ तो पीछे क्या इलाज? नहीं तो वही च मरहटी मसला होता 'बहुत (छील-झील) झेला झील भयाला। बेल केला महकी झूल पा खेला।' होर फ़ारसी में भी बोल्या है, समझाया है मर्द के 'इलाजे वाक़आ पेशे वकू बायद कर्द' ऐस्याँ ते बहुत्या का घर गया, ज़र गया। ना नावँ, ना निशान रह्या। अगर दिल में बुराई ल्यावे तो क्या अजब। हमारे लोकों कूँ हमना फिरावे तो क्या अजब? जो कोई इस मकर सूं जा कर उस मकर सूं आवेगा वो क्या ऐसे कामा ते पीछे जावेगा? मैं कता हू तुजे, तू तो अक्ल है, वले मुजे यूँ दिसता के आखिर कुछ खलल है। यूँ नज़र का आन जाना यू खयाल कूँ संगत ल्याना, यूँ दिल के फुसलाना होर यू ज़माना, खुदा खैर करे, किसी सूँ ना बैर करे। मुझे कुछ धरकत नई दिसता, कुछ गत नई दिसता। मेरी फ़िक्र में यूँ

बरहम-क्रोध, उदासी?) § ताख़ीर-विलम्ब † धरकत-प्रयत्न (धड़कना, स्पन्दन)
तैशा-बसोला धरकत-भलाई
इज़्तराब-बेचैनी
तायब-तोबा करनेवाला चाड़ी-चुगली १ घटना घटने से पहले उसका
मबादा-बाद में § हमना-हमको † उपाय करना चाहिए।

दुरस्त नईं आता, मुझे नईं भाता। मेरे बोल बहुत तते, वले दानायाँ के दिल में रते। बाकी सब तुकड़े के कुत्ते। जो साहब कहे तो हुए साहब कते। ख़ुशामदी का एक बिद। ऐ अक़्ल पादशाह मेरी बात जान पछान के इश्क़ बादशाह आख़िर तुज सूँ लड़ेगा, तुज में होर इश्क़ ने कुछ क़िस्सा घड़ेगा, काम मुश्किल पड़ेगा। तूँ राजवट कर इश्क़ सूँ सुलाह किया है, इसने तुझे भाग-भरोसा दिया है। क़ौल व क़रार क्या है कर कता है, हमारे तुमारे म्याने म्याँ परवरदिगार है कर कता है। अपनी मुहब्बत, अपनी हिम्मत दिखलाया है, बहुत इखलास में आया है। बादशाहाँ में यू बी एक जिन्स का मक्र अछता है, इस शकर में ज़हर अछता है। खूब अगर यू क़ौल-क़रार है। इस क़ौल मे हौल नहीं तो वाह वाह। उसते क्या खूब, उसते क्या बहतर। वो अगर उसमें कुछ होर फिक्र है तो 'नौजो बिल्लाह' ख़ुदा पना देवे। आदमी समझ्या के किधर-किधर? ख़ुदा करे यू क़ौल व क़रार अछो, उसका यू च प्यार अछो, यूँ च दोस्त अछो, दायम दोस्तदार अछो। ग़ज़ नामुराद क्या मँगता है? मुराद। अड्या क्या मँगता है? इमदाद। जिस पर मुश्किल है, उसे क्या होना? आसानी। बक़ौल अहलहिन्द "प्यासा क्या मगता? पानी!" दाना की तदबीर बहुत दूर जाती है, मुझे यहाँ बहुत फिक्र आती है। मक़सूद यूँ महनत लाने किया है, ख़ुदा जाने क्या है? डोगी दानिश का ऊथल बुद कू कहाँ जा दिसता है! अभूँ मक़सूद माबैन खौफ़ व रिजा दिसता है। दाना एता दूर देखता के हर किसी की अक़्ल की नज़र वहाँ काम नईं करती। एकी च बात मे हज़ार मंज़िल है, फ़ाम नईं करती। कहे हैं अहल फ़हम, के दिल मे बादशाहाँ का बहुत अछना सहम। बोले हैं अहल-सलूक के 'लौवफ़ा उलमुलूक', ज्यूँ शराब का असर त्यूँ पादशाह का प्यार, ऐसे प्यार कूँ क्या ऐतबार। तिल मे उतरे, तिल में चढ़े, ऐसी जागा हुश्यार। अभूँ कई हैं पड़े, ऐसे प्यार कूँ ना पतयाना; ऐसे पर मग़रूर होना जाना। चढ़ते वक्त वो ख़ुशी, होर उतरते वक्त यू जफ़ा, 'नौज़ो बिल्लाह' आदमी का तिल मे सीना हुए खफ़ा। आदमी का दिल सो कितना, सूसे ज़फ़ा इतना? आदमी होर एक दम, उस पर भी हजार हजार ग़म। बादशाहाँ कूँ किसके ग़म का क्या खबर, बल्के आलम का क्या खबर? ज्यूँ हाफ़िज़ कहता है।

बैत—

ख़ुफ्ता वर मंजाबे शाही नाज़नीने राचे ग़म
गर ज़ ख़ारे ख़ारा साज़द बिस्तर बालीने ग़रीब

इखलास-खलूस, नम्र व्यवहार तते-गरम (नाते) डोगी-गहरा
माबैन-दरम्यान राजवट-राजाओं का मार्ग, ऊथल-उथला, छिछला
रिजा-आशा राजनीति, शासन सूसे-मीगे, सहन करे

१ बादशाहों में प्रेम नहीं होता।

जो कुछ पादशाहाँ के दिल पर आता वो किसते रख्या नईं जाता। जो आग पर बारा चलता तो सूका होर गीला मिल जलता। शराब के असर नतीज़ा आखिर खुमारी है, हलाकी होर खारी है। उस मस्ती का वक्त तो भी मयस्सर नईं आता, पीछे खुमारी के खींचा खींची ते जीव जाता। जो कोई नेक है उसे समजना वाजिब है दुनिया का बिद। जो फ़ारसी में कह्या है के---'[1]ई मद्दनत बाँ राहत नमी अर्ज़द' ऐसी मस्ती सूँ ज़रूर डरना लगता है, बहुत हज़र करना लगता है। आसूदगी सूँ जीना होर थोड़ा खाना। अगर कोई समजेगा बात का माना; बहुत ग़नीमत है। बहुत खाकर यू दुख बिसाना, अव्वली च ते थोड़ा खाना। तूँ भोत खा कर बहुत मरता मरूता है, वले भोत खाना किसे जरूता है। मस्त हाती, पादशाह होर बाग; यू तीनो बी एक जिन्स की आग। इस आग में पड़े सो थोड़े कोई सलामत भार आये। भोत जल राख हुए। इस आगी च में समाये। आग की जिन्स दुक ग़ाफ़िल हुए तो जालेचगी, राक कर कर उल्हालेगी च। जोगावर का प्यार, घड़ी में फिराते नईं बार। बादशाहाँ इस दुनिया खातिर अपने बाप होर भाई ते नईं गुजरते। अताल दुसर्यो का उनो कूँ क्या मुलाहिज़ा है? दुसर्यो सूँ क़ौल व क़रार क्यूँ करते? दानिशमन्दा अन्देशा अंदेशते बहुत दूर। होर हदीस यूँ है के---'अँद्दुनिया किज्ब ला यहसलो ईल्ला बिज़्ज़ोर'। यानी दुनिया झूट है होर झूट बग़ैर हाथ नईं आती। यू हदीस तो फिक्र कूँ कई का कई ले जाती। इस टार आक़िल की अक्ल कूँ क़रार नईं है। यू ऐमन रहने की टार नईं है। खुदा यू काम रास्त ल्यावे, किस किसी के फ़ाँदे मे ना भावे। जेती दोस्ती, जेती यारी अछे तो भी, जेती मुहब्बत, जेती मुरब्बत, जेती दिलदारी अछे तो भी अपे अपनी जागा भोत सावचत रहना, जो कोई अपनी दोस्ती दिखलावे तो अपे भी दोस्ती च करना। जूँ हाफ़िज कना सुयड़-चतर सुजान-ग़ैब की बात बोलनहार---'[3]बा दोस्ताँ तलत्तुफ़ बादश्मनाँ मुदारा।' मे पर भोती च दोस्ती धरना, मूँ पर उसते भी मुहब्बत कियो चार बातों ज्यास्ती च करना। उसके उधर ते खूब आता तो हमारे इधर ते बी खूब आता, नईं तो चार बातों करते हमारा क्या जाता?

हज़र-परहेज
जरूता-हजम होता
ऐमन-शान्त स्थान
बारा-हवा
सूका-सूखा
अव्वली च ते-पहले ही

† जालेचगी-जलाएगी ही
राक-राख
सावचत-सावधान

१ यह महनत उस राहत के लिए नहीं बेची जा सकती।
२ दुनिया झूट के बिना नहीं मिलती।
३ दोस्तों के साथ महरबानी और प्यार से रहना और दुश्मनो के साथ रियायत भी करना।
आसायश दोगेती तफ़्सीर ई दो हर्फ़रत बा दोस्ताँ तलत्तुब बा दुश्मनाँ मुदारा।

फ़र्द

दिलै रा बदिल रहे अस्त दरीं गुम्बद सिपहर
अज़ सू ए कीना कीना व राज़ सू ए महर महर

मक़सूद जाँ अछूताँ, वले मैं हाँ कूँ हाँ। ग़र्ज़ अपै अपनी समझ सूँ अछे तो कुछ बुरा नही है। अपना काम तमाम समझ सूं अछे तो कुछ बुरा नहीं है। हुश्यारी मर्दी कूँ भोत प्यारी, जूँ दखन मे चल्या है के म्याँ मते, दुनिया में रहते, हा क हाँ की नई करते ? उस गर्दिश फ़लक में क्या जाने क्या होता ? एक पलक में क्या जाने क्या होता ? यू बी बात सुनी अछेगी शायद। 'शैबे हामिला अस्त, फ़र्दा चे ज़ायद।' नफर क्या मँगता, साहब का जफर, स हब का फ़तह होवे तो मुराद कूँ अँपड़े नफ़र। जेती फिक्र साहब कूँ है, उसते ज्यास्त फिक्र नफ़र कूँ अछना, ऐसा नफ़र घर की निगाहदाश्ती करने कूँ अछना। घर की ग्यातिर साहब कूँ ग़म क्या माना ? घर के धंदे बदिल साहब पर ग़म क्या माना ? साहब कूँ फ़िक्र कुछ भार के बड़े काम कूँ अछना है। साहब कूँ बड़ी फिक्र कुछ ज्यास्ती माल-मुल्क, नंग व नाम कूँ अछना है। साहब के जो घर के धंदे की जिक्र, पीछे नग नाम की कोन करता फ़िक्र ? साहब अँपे आसूदा अछने नफ़र कूँ मिलाता, साहबी च धंदे मे पड़या तो नफ़र क्या काम आता ? फुकट खाता। नई सो तग़ादे लाता। अय्यारी नफ़र, ऐसे नफर बग़ैर सरेगा, ऐसे नफ़र नई अछ्या तो बुला के कोई क्या करेगा ? ऐसे नफ़र कूँ चूल्हे में भाग, ऐसे नफर कूँ आग ला जलाव। नफर मे कुछ फ़र अछना, नफ़र कूँ हरेक काम में जफर अछना। नफर ते साहब नेकनाम, नफ़र ते साहब बदनाम। जो नफ़र नफ़राई नई समज्या उस नफर ते क्या होवे काम ? साहब कूँ साहबी सुहाना बहुत मुश्किल है। नफ़र कूँ नफराई आना बहुत मुश्किल है। साहब वही च जिसे साहबी करना आई, नफ़र वही च जो कर जानता है नफराई। राम जैसा साहब आये तो हनूमन्त जैसा नफ़र पैदा होय। दरिया होकर बैठे कोई तो वहाँ अँपे गोहर पैदा होय। साहब ने साहबी की झड़ती देना, नफ़र कने बी नफराई की झड़ती लेना। जो साहब है वो यूँ चलना, जो अपनी साहबी पर कोई बोल न धरे। साहब जो साहबी करनी ना जाने तो नफर क्या करे ? साहब ने नफ़र का दिल हात लेना है, ज्यूँ ज्यूँ नफ़राई दिसे, त्यूँ त्यूँ देना है। ता नफ़र कुछ उमग पकड़े, हरेक काम का हवस पकड़े। नफ़र ते कुछ काम हो आवे, साहब का बी नाम हो आवे। जो इतने

नग-लज्जा
फ़र-ठाटबाट, दबदबा
ज़फ़र-सफलता
म्याँ-मियाँ †
† तो नई करे-क्यों नहीं करेगा
सरेगा-पूरा पड़ेगा
१ इस आकाश के नीचे दिल नहीं कल क्या जने।
का दिल से सम्बन्ध है। दुश्मन के साथ दुश्मनी और दोस्तों के साथ दोस्ती।
२ रात की गर्भवती है, पता

पर भी नफ़र नफ़राई पर ना करे क़रार, तो ऐसे नफ़र कूँ जाँ पानी ना मिले वाँ गर्दन मार।

अलक़िस्सा, इश्क़ पादशाह सूँ सुलह किए हैं कर भी ग़ाम ना अछना, हरचन्द भाग-भरोसा किए हैं कर बेग़ाम ना अछना, अपै अपनी जागा कम ना अछना। बहुत हुश्यार अछना, दरहम ना अछना। तेरे पास बी सब्र व शिकेब, ताक़त, क़रार, इशरत, आराम, राहत, निशात, आसूदगी, फ़राग़त, आसाइश, खुशदिली, खुशी, खुर्रमी, ऐश, इशरत, बहुजन, शादमानी, बेग़मी बहुत वज़ीराँ हैं। साहब-हिम्मत, साहब-दानिश, साहब-राय, साहब-शमशेर, साहब-तदबीरां हैं। इनो का दिल हात लेः इनो की मूँ की बात ले। इनो से क़ौल-क़रार कर अछ; इनो कूँ यक वक्त यार कर अछ। जो तेरे दिल में है उस पर अपस कूँ अख्तियार कर अछ। इश्क़ बादशाह बहुत है बरज़ोर, तेरा आलम है कुछ होर। होता है तक़दीर का करना, वले मर्द तदबीर ना बिसरना। जेते दुनिया मे आए; उनो में दो जन्याँ हैफ़ी खाए। जिने जान कर नईं ग़फ़लत मे पड्या, कुछ नईं किया। जिने अछ कर नईं खाया, किसे नईं दिया। यू दुनिया है सो ऐन लेना है। लोकाँ कते ऐन देते हैं, देने में लेते हैं। दुनिया दो दीस की, कुछ देना, कुछ लेना, दिया-लिया च काम आवेगा; किसी कूँ कुछ दिया च काम आवेगा। हदीस बी यूँ आई है के "अस्सख़ी हबीबअल्लाह व लबकाना फ़ासिक़न व बख़ील अदू अल्लाह व लबकाना ज़ाहिदा।" याने सख़ी अगर फ़ासिक़ है तो बी खुदा का प्यार है, होर बख़ील अगर आबिद है तो भी खुदा उसते बेज़ार है। झाड़ कूँ फल होना और फूल कूँ बास। जिस झाड़ कूँ फूल ना फल, उस झाड़ किसे क्या आस? वो झाड़ अपै च निरास, कौन आवेगा उस झाड़ पास? वो झाड़ किसे नईं भाता। सूक्या तो जलाने काम आता, आग लाने काम आता। जिस हात में सख़ावत नईं सो पात है, न वो हात है। जिस दिल में हिम्मत नहीं सो गिल (मिट्टी) है, न वो दिल है। जिस नज़र में असर नहीं सो पत्थर है, न वो नज़र है। फ़लाने की फ़लाने पर नज़र हुई कते वो नज़र कॉ है? हर किसे उस नज़र की ख़बर कॉ है? दिल कूँ दरिया कते, और क़तरा जोश नहीं खाता। हात कूँ बादल कते होर बुंद भार नहीं आता, बात कूँ मोती कते होर कौड़ी का काम नहीं करती। वही च बात मोती जो मोती का क़ीमत धरती। किसे कुछ देना कते, सो अव्वल बातीं च देना है, उस बातीं च में मानिक मोती लेना है।

शिकेब-सन्तोष
निशात-खुशी
बरज़ोर-शक्तिशाली
सख़ी-उदार
फ़ासिक़-शरा से हट कर काम करनेवाला
बख़ील-कंजूस
गिल-मिट्टी
सूक्या-सूखा

१ उदार व्यक्ति दुश्चरित्र होते हुए भी ईश्वर का प्रिय है और परहेज़गार तथा भक्त व्यक्ति यदि कंजूस है तो वह ईश्वर का दुश्मन है।

जिस बाती च में दरिया है, उसमें सब भर्या है। [1]सामरी ने मूसा का दीन फिराया, मुसलमान हुए थे, सो लोकाँ कूँ कुफ्र में ल्याया तो उस वक्त मूसा ने सामरी कूँ बद्दुआ किया, खुदा कूँ खुश नही लग्या। खुदा ने मूसा कूँ मना किया के वो सखी है, उसे बद्दुआँ नको कर। उस बद्दुआ करने अगर चे उन खता किया तो उसे खता नको कर; दर गुज़र। यहाँ ते मालूम होता है के सखी पर किसी की बद्दुआ चलसी ना, सखी दुश्मन के हिलाये हिलसी ना। सखी सखावत के दरिया में है, किसी की आग सूँ जलसी ना। सब में बड़ी इबादत सो सखावत है। जिसमें सखावत है उसी च में शुजाअत है। सखावत ना अछ्ल कर अगर कोई शुजाअत की बात करे तो ग़ल्त जानना है, शुजाअत सखावत सूं पछानना है। शूम कूँ सखावत का लज्ज़त मालूम नही अछता। शुजा हर्गिज़ शूम नहीं अछता। शुजा जीव पर नईं नज़र करता, सो ज़र पर क्या नज़र करेगा? शुजा अपने नावँ का आशिक़ है। वो सीम व ज़र क्या करेगा? दुनिया महमान है। क्या कुमाश सीम होर ज़र। यू सीम होर ज़र सदक़ा है एक तिल की खुशी पर। अपै गये पीछे पैका जाएगा वले नावँ जासी ना। नावँ काम आवेगा, पैका काम आसी ना। सखावत बड़ी, बहुत बड़ी वस्त है कर जान। सखावत हर दो जहान का पुश्तीवान। सखावत में दीन, सखावत में दुनिया। सखावत में ईमान। इस दुनिया मे दो दीस खातिर एता सौगत धरता, कुछ आखिरत की फिक्र नईं करता। वो 'अँबद उल आबाद' की ठार है, यहाँ ते वहाँ जाना क्या बार है? यू बाट है, ज्यूँ लोकाँ आते हैं त्यूँ चल जाते हैं। जैसा यहाँ करते हैं, वैसा वहाँ पाते हैं। यहाँ अछ्ल कर ई च अपना घर वाँ बेधना है। एक दीम तहक़ीक यहा ते वाँ जाना है। हमें यहाँ आये हैं वहाँ के कुछ काम करने खातिर, वाँ अछ्ल कर वहा के काम फ़ाम करने खातिर। जिने यू फ़ाम किया उने कुछ काम किया। आक़िल पर एता समझ कर कुछ ना करते थे बहुत कुछ लाजिम आता है। या जाहल है, या शैतान। बादमार्या है, या दीवाना है, या हजरत पर ईमान नहीं ल्याया है, नहीं तो क्या माना धरता है? इतना अक्ल धरे, समझे होर न करे! एन जागा पर दशा खाय, जेता अक्ल अछे तो भी उसे आक़िल न कह्या जाय। अगर तुझ मे कुछ पछान है तो तेरा नफ़्स ई च तेरा शैतान है। सीने मे शैतान क्यूँ आवे याद रहमान, अगर इन्सान है तो अपस कूँ होर अपने शैतान कूँ पछान, यू दुश्मन उसे दोस्त करना जाने।

अनकिस्सा जोरावर सूं लग्या है काम। अतालीच यहाँ मोत होना अक्ल, मोत होना फाम। जोरावर कूँ ज़ोर सूँ ना हुंकारना, जोरावर कूं हुनर सूँ मारना। अतालीच

शुजाअत-बहादुरी
शुजा-बहादुर
सीम-चाँदी
ज़र-सोना §

§ पुश्तीवान-सहायक, रक्षक
सौरात-स्वार्थ
पैका-पैसा (धन)

१ सामरी यहूदियों को बहकाता है, सोने के बछड़े को पुजवाता है।
२ शाश्वत।

ते कुछ समज कर अपना लश्कर सज कर, क्या हुआ जो पाँच लाक जोड़े ? काम के लोकाँ बहुत थोड़े । काम के लोकाँ क्या बाट में पड़े हैं ? काम के लोकाँ क्या बाज़ार में खड़े हैं ? काम के लोक हज़ार में ढूँडे तो एक मिलता । असील एक बीड़े पानी च पर पलता, वले इज्ज़त भोत मँगता, हुरमत भोत मँगता । जो अहल है उस के अंग यू खाना पीना सहल है । भले लोकाँ की यू है गत । फ़ारसी में कते—'अव्वल इज्ज़त, दुव्यम नेमत ।' असील महर व मुहब्बत का भूका, असील शफक्कत हो मुरव्वत का भूका । जो बादशाह असीलाँ कूँ मँगता उसे कुछ जफ़ा नईं के बोले है अस्ल ते कुछ खता नईं । कम ज़ात ते वफ़ा नहीं । काम पड़े बग़ैर किसका ज़ात दिस नहीं आता । भला हो बुरा, असील हो कम ज़ात दिस नहीं आता । सबी च बड़ियाँ बाताँ करते, एक बात कूँ सौ हिकायताँ करते । जिस आदमी में बहुत अछेगा ध्यान, उसी च में कुच है भले-बुरे की पछान । आदमी बहुत बड़ा गोहर, उस गोहर कूँ परखना हर किसी का काम नईं । हर किसी में यू दूरबीनी, यू नाजुक फ़ाम नईं । यू खुदा का देना है, याँ क्या ज़ोरा सू लेना है ? असील की भला दूर, असील ते साहब शर्म हुज़ूर । असील लोक पादशाहाँ कूँ भोत है ज़रूर । असील पैका पर नज़र नईं करता, असील अपनी शर्म कूँ मरता । अपने नेम-धरम कूँ मरता । जो कुछ होता खुदा का भाता, बुरा वक्त क्या पूछ कर आता ? तूँ अक्ल पादशाह, तूँ साहब सिपाह, तुजे वाज़िब है जो चुन चुन कर खब लोक मिलाना । एक जागा नईं, दिल फब्या तो एक जागा धंदा उचाना । दुश्मन ते मुख ना मोड़ना, लहवा हात का ना छोड़ना । लहवे ते च बादशाही आई, अंगे बी लहवा च करे रहनुमाई । लहवे कूँ दे सट, पीछ क्यूँ निपरती झट । दिल घट अछना, मर्द कूँ लहवे का चट अछना । शायदे वक्त खुदा ना करे अगर राजवट अड़े, पीछे तो लहवे सूँ च काम अपड़े । लहवे कूँ ज़ोर अछेगा तो राजवट चलेगी, नहीं तो राजवट खड़ी ना रहसी । आखिर टलेगी । अगर राजवटी च बादशाही आती तो सब कोइ करता, कोई ना गुज़रता । लहवे के सर सेहरा, लहवे ते इज्ज़त तेरा । जे कुछ दिलाये सो दिला, दिलावर लोक मिला । बादशाहाँ कूँ न्हाटने का नईं फबता दिल । छोड़ता कौन, किधर जाएगे निकल ? यहाँ वाजिब है कुछ करना अक्ल । पादशाहाँ का काम दिल जोड़ना है । दिल सूँ परदिल तोड़ना है । यू दो दीस की दुनिया कोई देख्या, कोई सुन्या. याँ कुछ करना है; अगर हज़ार बरस जीये तो बी आखिर मरना है । दुनिया में आना है, नावँ छोड़ जाना है । अग के लोकाँ आनहारे नावाँ च पूछते आते । मर्द के नावे ते च मर्द कूँ पाते । बड़ा कर जानते, ऐतक़ाद ल्याते । मर्द अपने नावँ पर भोत गर्म अछना न सर्द । फ़ारसी में बी कते है के—'नाम मर्द

शफ़क्कत-महरबानी पानी च पर-पानी पर १ पहले इज्ज़त फिर नियामत ।
असील-शीलवान, कुलीन २ पुरुष का नाम पुरुष में बड़
लाख-लाख न्हाटना-भागना कर है ।

वे अज़ मर्द' । ऐसे ज़िन्दा दिलाँ कूँ मुए नहीं कते हैं । खराब हुए नहीं कते हैं । यू दायम जिए सो लोकाँ, यू कामाँ किए सो लोकाँ उनो कूँ खुदा जानता । खल्क क्या जानता, नहीं तो चुप किसे कोई कूँ मानता ? लेते देते उनो कूँ खूब नही कहते; यहाँ दिये । लिए बग़ैर बन्दे हो रहते । मशक्कत हौर हिम्मत से होता नाम, यू नाम बहुत बड़ा कुछ है काम । अव्वल नाम आखिर नाम सब कूँ नाम सूँ च है काम । खुदा भी नामी च धरता है, आलम भी उस नामी च सूँ काम करता है । जिने जो कुछ पाया सो हिम्मत हौर तदबीर सूँ पाया । दौलत कोई माँ के पेट में ते नही ल्याया । बड़ा होने मगता है तो बड़े लोकाँ कूँ पैदा कर । बुरे लोकाँ ते क्या होवेगा, खरे लोकाँ कू पैदा कर । बड़-बड़ लोकाँ की बड़ी फिक्र बड़ी धावँ, बड़े लोकाँ की अक्ल इस हद लगन दौड़ती जा लग खुदा का नावँ । नहने लोकाँ के हात ते क्यूँ होवेगा बड़ा काम ? तूँ अक्ल पादशाह यू तुझे बेहतर है फ़ाम, तुजे रोशन है तमाम । यू बोला लोकाँ रखे है चुन-चुन, सिखलाई बुद देहली च तलक । गिरगट की दौड़ बाड़ा लगन । बगूला हज़ार पर धरेगा तो क्या बहरी का काम करेगा ? जेता तेज़ हो वो सुई क्या शमशेर के बराबर हुई । बिल्ली कूँ बाग का कम आएगा, लाँडगा चीते की झाँट भायेगा, खुलगा हली के काम सारेगा, स्याहगोश शरजे के उल्हाली मारेगा । बड़े आदमी कूँ बड़े काम फ़रमाना, नहने आदमी का काम घर मे आना-जाना । बखरे लाना ले जाना । नहने आदमी ते कुछ मुख्तसर काम लेना, नहने आदमी के हात बड़ा काम ना देना । आदमी की ज़ात के ज्यूँ-त्यूँ काम चलाता है, वले काम के वक्त जो काम पड़ता है वहाँ दग़ा खाता है । घाबरा होता है । गवाता जाता । तक्या करार नई अल्ता । हिम्मत निकल जाती, दिल एक ठार नई अल्ता । जात मे देखा-देखी तक़लीदी काम सरंजाम कूँ अँपड़ना मुश्किल । नग नाम कूँ अँपड़ना मुश्किल । काम नातमाम, अदन्तरी सीख्या सो काम । आदमी ही बात करता है, हरेक काम कूँ सोगात करता है । पात्र हौर काच दोनो हरे है, वले दानिशमन्दा यहा फ़र्क करे हैं । काच में क्या पात्र का झलक झलकेगा । कनके में क्या मोती का हलक हलकेगा ? अगर चे हम रग हैं कनका हौर मोती, वले मोती की जोत कनके मे नई होती । पाती सब एकी च जिन्सा है सब जागा बहता वागा, पिये तो मालूम होता है कद मीठा कई खारा ।

अलक़िस्सा अगर तुज मे कुछ जोर अवेगा तो इश्क तुज सूँ सुलह पर होवेगा

स्याहगोश-बनबिलाव § पात्र-हीरा † बाघ-बाघ, शेर
शरजा-सिंह बरू-शक्ति
बखरा-हिस्सा धाय लालसा, माँग लाँडगा-भेड़िया
तक़लीद-अनुसरण बोलाँ-बोल का ब. व. खुलगा-भैंसा
अदन्तरी-अधूरा धाई खेना सारेगा-पूरा करेगा
सौगात-स्वार्थ § लगन-लौ, † उल्हाली-उछाल मारना

राज़ी । बगर ज़ोर तुज में ना अछ्सी तो इश्क़ अलबत्ता तुझ पर करेगा दस्त-दराज़ी । हुश्यारी हो तो कुछ का कुछ होवेगा । अताली च ते कर कुछ अपनी कारसाज़ी । जाँ ते दुश्मन ने मुतलक़ ज़बूँ पाया, पीछे दुखदाया । दुसरा अगर कोई दुश्मन हुआ तो सहल है, बले अपना दुश्मन अपै होना जहल है । लोकाँ थोड़े हुए तो हुए बले खूब अछ्ना, बहुत काम के दिलावर अपरूप अछ्ना । जो एक हज़ाराँ पर उठे, ऐसे लोकाँ मिले तो दुश्मन का मूँ टूटे । दुश्मन का लश्कर फटे । भोताँ में थोड़े बुरे चल जाते, थोड्याँ मे बहुत बुरे काम नही आते, बहुत बुरा बक्त ल्याते । पीछे थोड्याँ में बहुती च थोड़े होते: काम मुश्किल होता, बाट के रोड़े होते । जो कोई हिम्मत के मैदान मे रहे खड़ा, उसके आग खुदा च बड़ा । खुदा भी हमना कूँ हमारी हिम्मत आज़माता है । खुदा कू भी हिम्मत का बहुत काम भाता है, हरेक काम अपै सँभालना आता है । नहीं तो क्या हमना ते सँभाल्या जाता है । अगर वो च है सभालनहारा तो मर्दा कूँ हिम्मत बगैर क्या चारा ? अगर हमें दुश्मन पर हिम्मत कर नहीं धसे तो हमना पर पड्या है ना के खुदा हात से । वो बैठ्या है आज़माने होर हमना एते बहाने । हमें बी अजब मर्द है, बहुत कोई बड़े फ़र्द हैं । किसी की बात कूँ यहाँ टावें ना धरना, अपनी तारीफ अपै च करना । राजवट भी दरअसल आजिज़ी की निशानी है । कुव्वत कुछ और है, कुव्वत की आलीशानी कुछ और है राजवटाँ ज़रूरत की हिकायतां है । आखिर लहवा च काम आयगा, बाक़ी बातां है । जिधर चलता, उधर अव्वल पावें उठता । आखिर लहू च पर ताल टुटता । लोकाँ खूब, जोहरदार लोकाँ कौन बसरते । पथरे होर कँकरे सो जमा करते । जिनो मे ऐसे कामाँ हुए दखल, उनो मे क्या माटी अछ्ेगी अकल । जोहरदार लोकाँ हात ते जाते हैं, तो वक्त पर क्या ककर-पथर काम आते हैं ? खूब लोकाँ जाएँगे, पीछे क्या बुरे काम आएँगे ? खूब लोका ते मिलता है मुल्क होर माल, खूब लोकाँ रखते हैं मुल्क कूँ सभाल । जिसे तूं कुछ मुहब्बत स दिया उसे तूं अपना किया । मशहूर है के जिधर हंडी डुई, उधर सब कोई । जिसे तूँ अपना मुहब्बत सूँ दिया, किया वो च तेरा, हर किसी कूँ नको जान के य वक्त पर है मेरा । आक़िल अंग ते च जानता, नादान पीछे ते पछानता । अपन्याँ कू अपने करना, अपन्याँ ते माल दरेग़ ना धरना । अपने सो अपने: पराये सो पराये. परायाँ कूँ अपन्या मे क्यूँ ल्याया जाए । अपन्या मे बहुत तवाज़ो, बहुत ताज़ीम, नवे सो नवे, क़दीम सो क़दीम । कहते हैं के अव्वल ख़ीश, बाद अज़ दरवेश । अताल सब खूब दिमते । बले सुन रे जीवा, घर कूँ दीवा तो मस्जिद कूँ दीवा । यू वो क़िस्सा के—

ज़बूँ-सरूत, अवांछनाय हमना ते-हम से
ख़ीश-कुटुम्बी लहू-खून
दरवेश फ़क़ीर नवा-नया

चार बुलाई चौदा आई सुनो घर की रीत
भार के आकर खा गये घर के गाएँ गीत !

आशना कूँ जानता, बेगाने कूं क्या पछानता ? दुनिया में अपनायत खूब है, अपनायत ग़ायत खूब है। माल मिलाने मँगता तो माल मिलाल्यों कूं मग। दिलेर लोक माते हतियाँ कूँ मँग, खुदा होर रसूल के भाल्यां कूँ मेग, रीझते होर रिझल्याँ कूँ मँग। कुछ मुश्किल पड़े बग़ैर खूब लोकाँ पछाने नईं जाते, वक्त पर सब कोई काम नहीं आते। पादशाह ने हरेक मुल्क तदबीर मे पड कर लेना। तदबीर ना फहे तो लड़ कर लेना। झगड़ कर लेना। साल में एक गज़ ज़मीन तो भी फ़िक्र करना, जो हात आवे कुछ भी लेना ता साल खाली ना जावे। जिने चार नहन्यों कूं समेटा वो बड़ा हुआ। चार बख्यों में अपै भी खड़ा हुआ। बेड़े हुए हैं सो सई करते करते हुए हैं। हिम्मत धरते-धरते हुए हैं। गर कोट लेना, मुल्क लेना, एकस का मुल्क एक कूं देना यू बादशाहा का च काम है, इस खुशी की लज्ज़त दुसर्यों पर हराम है। कौन इन्सान इस खुशी पर है; किसे यू खुशी मयस्सर है ? खूब आरत, खूब खाना, खूब लहवा, खूब घोड़ा यू सब किसे मयस्सर है थोड़ा थोड़ा ? पादशाहा मे अपनी खुशी ना बिसरना। अपनी खुशी की कुछ फिक्र करना, तू बादशाह, तू आलमपनाह, तू ज़िल्लिल्लाह, तू साहब सिपाह, सबते भातबर, तेरी खुशी होर दुसर्यों की खुशी क्यों होती बराबर ? पादशाहा तीर, तर्कश, कमान, लहवा, सिपर अपना सघात लेकर, मुस्तैद होकर सब कूं दिलासे देकर, महाबत सू, सलाबत सू ज्यू तरकशबन्दी का कायदा है, जिस बात मे तरकशबन्दों कूं फ़ायदा है, खूब नुमाइश सू, खूब आगाइश सूं भार आना। भार आये तो ग़ाफ़िल ना होना। हुश्यार आना, अपनी मर्दी का सिंघार अपै देखना। अपने लश्कर कूं दिखलाना। ता दुसर्यां कूँ देख कर उमस आवे। तरकशबन्दी का होश आवे। तरकशबंद तरकशबंदी करे, निर्जोत अछे वो बी जोत धरे। तो तरकशबन्दी का ओम, बोले च हैं के "अन्नास अला दीने मलूक हिम'। बादशाहाँ बड़े तरकशबन्दाँ, तरकशबन्दाँ कूं इनो बाट दिखलाना; इनो तरकशबन्दी पर ल्याना। इनो देना पन्दाँ तो तरकशबन्द का दिल कुव्वत पकड़ता है; तो तरकशबन्द लड़ता है। हिम्मत यारी देती है आग में पड़ता है। जो बादशाहा च यू रविश छोड़े, तो यू किधर ते तरकशबन्दी करेंगे निगोड़े ? जो काम पादशाहाँ कूं भाता है, आलम सब उसी च काम प आता है। जो कोई जो काम करता है सो पादशाहाँ कूं रिझाने खातिर करता

ग़ायत-हद
सई-प्रयत्न
महाबत-शान
सलाबत-दृढता
मातें-मस्त
हतियां-हाथी का ब. व.
भाल्यां-प्रिय (ब व.)
फहना-फबना
सिंघार-शृंगार §
§ निर्जोत-ज्योतिरहित
१ जो बादशाह का धर्म होता है, प्रजा का धर्म भी वही होना है।

है। बादशाहाँ कूँ खुश करने खातिर करता है, अपनी मुराद पाने खातिर करता है। बादशाहाँ मज़हर-आज़म हैं, खुदा सब कुछ दिया है, क्या कम है ? जिस काम पर क़स्द धरता है, वो काम करता है के याँ जिसे खुदा दिया उसे कोई नईं लिया इजारा। अरब में कहे हैं के—'अल आक़िल तकफया अल इशारा' इस बात में कही वही महारत तो दक्खनी में बी बोले हैं के—"टट्टू कूँ टूमनी, तेज़ी कूँ इशारत।" जिनने खूब फ़िक्र कर्या, उसका काम हुआ खूब। कहावत है—"तालिब का मतलूब।' यूँ कुछ हुए तो पादशाही का सबाद है, अपना हुक्म अपनी दुराही का सबादी। जिन ने यूँ किया उसका नाम हुआ, जाँ इश्क़ तमाम लग्या वहाँ काम हुआ। जीव इस काम पर धरे, फ़ुरसत है लगन कुछ कर ले। इश्क़ पादशाह बहुत मस्त, बहुत जबर्दस्त। मरत कूँ पतया कर अछना अक़्ल का काम नहीं। भरोसा उस पर भा कर अछना अक़्ल का काम नहीं। किर्या तो उसे मना करने हारा कौन है ? बड़े कूँ नटना करनहारा कौन है ? दुनिया है; डरना, कुछ फ़िक्र करना। हर कोई न्हाट कर पादशाहाँ पास आता, पादशाह न्हास कर किधर जाता ? एक बक्त टूट्या तो जोड़ता कौन ? पादशाह न्हास्या तो जोड़ता कौन ? ग़नीम लगन क्या काम जाते ? अपने च लोकाँ तो दुश्मन हो आते। लूटते, मगाते; हजारों हजार बलायाँ ल्याते। अव्वल अपने लोकाँ च ते डरना; पीछे दुश्मन की फ़िक्र करना। कौन पादशाह माल-धन सूं न्हाट कर सलामत गया। ज्यूँ निकल्या था त्यूँ अमानत किया। अलबत्ता नंगाये हैं, या मुफ़लिस होकर गया, या पकड़ ल्याये हैं। पादशाहाँ कूँ जेती खुशी उतना च दुख भी है। जेता नेक उतना च बद बी है, पादशाह तो लग च जो लश्कर घोड़े-हत्ती है, सब न्हाटे पछे क्या पादशाहा की इज्ज़त रहती है। माली जेता जपता है, वले झाड़ पेड़ ते उखड़े पछें क्या पनपता है ? शीशा फूटे पछें जुड़ता नहीं। पर कट हुए पीछे जनावर उड़ता नहीं, यू बात दानिश का मुअम्मा। इस बात कूँ फ़ामता कौन ? आसमान टूट पड़्या पीछे उसे थामता कौन ? हौज़ की पाल टूटे तो यकायक बाँधी जाती है। बिलायत गये पछे भी हात आती है ज्यूँ कमान का तीर, जो बोली सो बात: यू दोनों गये तो मुश्किल है फिर आना हात। अक़्ल दिया है खुदा ने आदमी कूँ बड़ा नग; पादशाहाँ कूँ तदबीर करना वाजिब है, बिलायत हात में है लग। इश्क़ की लगन अक़्ल कूँ केता गुमान। वही च क़िस्सा के हत्ती कूँ कलचुड़ी ज़मान। इश्क़ कूँ कौन

मज़हर आज़म-
क़स्द-इच्छा
तेज़ी-घोड़ा (ताज़ी)
दुराही-प्रभुत्व, दुहाई
ग़नीम-शत्रु
मुअम्मा-पहेली †

† ज़मान-ज़ामिन
दुराही-बड़प्पन
न्हासना-भागना
जपना-सेवा करना
लग-तक §

§ कलचुड़ी-कलचिड़ी, एक मधुरभाषी चिड़िया

१ अक़्लमन्द के लिए इशारा काफ़ी है।
२ जहाँ चाह वहाँ राह।

पतयाया है ? बहूताँ कूँ लूट्या । बहूताँ कूँ नंगाया है । दुनिया तमाशे की ठार है । वही भला जो अपने ठार हुश्यार है । लोका अताल बहुत फुसला खाने मिले हैं । अवा-सवा वले वक्त कूँ काम आनहारा है सो अपना खुदा, अपनी अक़्ल, अपनी हिम्मत, अपना लहवा । यू मुसहफ़ की आयत है, मुन-समज होर दिल में रख जतन । 'कैम मन फ़ीयती क़लीलतन ग़लेबत फ़ेता कसीरत ।' याने कोई मर्द है, जीव कूँ इज़्ज़त पर वारे हैं, थोड्यों ने भोत्यों कूँ मारे हैं । क्या करूँ बोल्या दिल होर दाग़ के कई हैं । 'वैमा अलल रसूल इलल बलाग़' याने हाजिब का यू काम है जो बोले रासकरास पैलाड़, उस पर अमल करना है सुनहारे पास । अताली च ते अपस कूँ सँभाल रख, खूब लोकाँ मिलाने पर खयाल रख । खूब लोकाँ क्या एकी च बार मिलेंग ? चुनते-चुनते केतक दीसों के दो चार हज़ार मिलेंग । अगर फ़तह है तो भी दुश्मन कू मूँ पर ते टालने कूँ कोई होना च, वो अगर खुदा न करे शिकिस्त हुई तो बी सँभालने कूँ कोई होना च । अगर एक जागा तोड़ मारता तो दुसरी जागा जाकर लहवा मारता । अगर दुश्मन की फ़तह होर शिकिस्त ते दिल दरहम नहीं तो क्या अपने घर का बी ग़म नहीं ? अपस कूँ होर अपने मुल्क कू सँभालने तो रहना; यू आग घर की बला कूँ जालने तो अछना । ज्यूँ-त्यूँ दिलावरी कूँ जमा करना ज़रूर है, बहादुरा कू जमा करना जरूर है । पादशाह वो खूब जो लश्करी कूँ खूब कर जाने, खूब लश्करी कू महबूब कर जाने । मानिक मोती उनो पर ते वारे । यू ग़ाज़ी मर्दा जीव देनहारे, अगर कोई मँगता किसी का जीव लेवे, जीव कूँ जीव नहीं तो जीव के बदल पैका भी तो देवे । पैका हात ते नहीं दिया जाता, जीव किसी का क्यूँ लिया जाता ? जीव लेने का बहुत दिल, होर पैका देना एता मुश्किल ! अगर तूँ मँगता है के खल्क़ तुजे मँग तो तूँ पैका कूँ नको मँग, तू तो पैका कूँ मँगता तो तुज में हर्गिज़ ना रहसी रग; सब काम होवेगा भंग । पादशाहाँ कूँ लश्करी च बड़ा माल । जिस पादशाह के खज़ाने मे यू माल वो पादशाह दायम खुशहाल । उस पादशाह कूँ दायम फ़तह जाकी तरवार, खातिर क़रार ज्यान्नी काम तुज कर, लश्कर अपना समझ कर लश्कर के दिल सूँ दिल सादना, पथर्यो का कोट क्या काम आता ? खूब दिलों का कोट बोदना । जिस बादशाह कूँ खूब दिलों का कोट नहीं, उस बादशाह कूँ ओट नही । पथर्यो का कोट घड़ी में उड़ जाता । उसके आसरे कौन आता ? भार कोई छुड़ानहारा अल्ले तो दो दीस कोट मे जाना, नहीं चुप कोट में जाना क्या माना ? अबस दिल फ़िक्र ऐसी ना ल्याना । लश्कर में सौ कोट, जानो हात में बाँद कर दिये मोट । जो सर्या पानी होर दाना तोवहीं च हुआ बन्दीखाना । पीछे काम होता सख़्त, क़ौल मँगने का आता वक्त । किसी का नहीं सुन्या कहा, किधर निक जाने ते बी रह्या, दुश्मन के लोकाँ

हाजिब-पर्दा करने वाला — सौंदना-मिलाना, जोड़ना प्रदान की है ।
लश्करी-सैनिक — १ हमने थोड़े से लोगों को २ पहुँचाने के सिवाय मेरा कोई
अबस-बेकार — बहुत से लोगों पर सफलता दूसरा कर्तव्य नहीं है ।

आते, बँद-पकड़ कर ले जाते । वो आजिज़ी वो शर्मसारी, तोबा इलाही । यू बुरी ख़ारी । इस वाक़े सूँ जो कोई जीने की हवस करता है उस जीवने पर मरना हज़ार जागा शर्फ़ धरता है । लोकाँ लड़ कर मर्या बोलेंगे; मर्द था, शाबाश खूब कर्या बोलेंगे । अगर दिल में है मर्दी का हवस, तो मर्द कूँ दुनिया में नावँ च बस । पादशाही का क्या सवाद । आजिज़ हो यकस के बंद में जाना जाँ पादशाही का रुच है वाँ यू क्या माना ? ख़ुदा ऐसा वक्त किसी पर ना ल्यावे । मर्द कूँ आर पर नज़र करना ज़रूर है । जो काम इज्ज़त पर ना आवे मर्दी कूँ यू जाय महक है, इस में क्या शक है ? व सब हुआ अताल यू कहना । यू फ़िक्र किया सो क़ायम क्यूँ कर रहना ? तूँ तो जूँ, ज्यूँ पकड़ रह्या है तन । यू भी माटी का कोट है, को लग करेगा जतन ? इश्क़ ने भोताँ के ऐसे कोट लिया है । लिया सो अभूँ किसे फेरा नहीं दिया है । तूँ अक्ल पादशाह होर इस कोट पर भरोसा किया है ? क्या मस्त है ! अपै कियाँ का शराब पिया है ? कोट सो दिलाँ का चलता कोट, जिस कोट पर दुश्मन न करसी चोट । जिस कोट कूँ कोट कह्या जाए सो यू कोट है । जिस कोट में रह्या जाए सो यू कोट है । यू कोट हुए तो वो कोट सुहावे । यू कोट नहीं तो वो कोट क्या काम आवे ? कोट कूँ होर मुल्क यूँ लहवा सँभालता है । जैसी बला आती वैसी बला कूँ लहवा टालता है । लहवे ते लोकाँ डरते हैं तो यकस की ताअत करते हैं । लहवा ग़ाज़ी; जिनने लहवा हात पकड़्या उसकी दायम पेशबाज़ी । ख़ुदा का रसूल, ख़ुदा का मक़बूल । इसे यूँ भाया है, उनने भी यँ फ़रमाया है; यू हदीस आया है । इसमें कुछ नहीं शक़ है के 'रिज़्की' तहत ज़िल्ले रमई' याने मेरा रिज़्क़ मेरे नेज़े की छ्रावँ तल है, जो कोई मर्दी है, उनो कूँ यू बल है । मर्द ते रोटी लहवे के ज़ोर सूँ रवाना, चार मर्दी में अपस कूँ मर्द कहवाना, अपने नावँ का इल्म उचाना । जो आलम में यू बात हुई फ़ाश, जो कोई सुने सो कहे शाबाश, शाबाश । जूँ हज़रत कते एक दीस यकस के घर गये थे महमान, वहाँ लहवा नहीं देखे तो नई उसके घर में हर्गिज खाये खान । के तेरे दिल में ग़िज़ा का नीयत नहीं, ख़ुदा की रज़ा का नीयत नही । मुर्त्तज़ा कूँ ज़ुल्फ़क़ार आये तो मुर्त्तज़ा उस जागा कूँ अपडे तो सब उनों के ज़ेर हुए तो सब उनो के हात तले सँपडे । लहवे का मरातिब भोत बड़ा है, लहवा अर्श पर खड़ा है । पैग़म्बर के ख़ुदा के रसूल थे । उनो अपै लड़े, उनो के असहाब बड़े । उनका दाँत मुबारक शहीद हुआ तो दीन का दौलत मज़ीद हुआ । कुफर का इस्लाम किये । ख़ुदा

आर-शर्म
महक-कसौटी
ताअत-उपासना (इताअत)
ज़ुल्फ़क़ार-अली की तलवार का नाम †
† मज़ीद-ज़्यादा
को लग-कब तक
कियाँका- किस चीज का
? भोजन मेरे भाले की नोक के नीचे है ।

फ़रमाया था सो काम किया। यू महनत, यू जफ़ा किसे भाती ? बैठे बैठे विलायत आती तो उनो कूँ आती। वो तमामी होर खुदा जैसा हामी। एता अछ कर एते दुख में पड़े, लहवा लेकर मैदान में खड़े। काफ़िराँ के खून हुए तो काफ़िराँ ज़बूँ हुए। खिराज दिये, दीन क़बूल किये। यू फ़तह तो होती थी जो माल पर नज़र न थी। दिलावर लोकाँ पर नज़र थी। उनो बड़ थे। उनो कूँ अव्वल-आखिर की सब खबर थी। अव्वल यारों थे थोड़े, रहते रहते भोत जोड़े। तो तदबीर होर तरक़ीब के साहब थे, शमशेर होर तीर के साहब थे। क़ौल व क़रार था, वादा उस्तवार था। बात में खता न था। एक बात ते दुसरी कोई कता न था। अताल भी अगर किसी में पाक नियत होर हिम्मत है उनों च के फ़रज़न्दाँ, उनो च की उम्मत है। अताल क्या खुदा जुदा है, अताल बी वही च खुदा है। अताल भी बहुताँ ने थोड्याँ ते बहुत कुछ मिलाये हैं, हिम्मत किये हैं। मैदान में आये हैं। महनत किये हैं। अपनी मुराद पाये हैं। गंज क्या बेरंज मिलता है ? रंज देखते हैं तो गंज मिलता है। खुदा पर तवक्कुल करना, दिल पर खुशी धरना। हिम्मत कूँ ना बिसरना, को लग सुधा उठ चारों तरफ़ का ग़म खाना। दुनिया दो दीस, यहाँ ग़म खाना, क्या माना ? मर्द यू बात याद रखता है, नहीं बिसरता है। मर्द का यकीन पूरा हुआ तो खुदा भी मदद करता है। हर रोज़ खुशी कर होर अपना लश्कर सज, समझ बाजू टोंक होर बादल होकर गरज। मर्द कूँ रज हो रज, यू बात नको बिसर; जितना सकेगा उतना अपना लश्कर दुरुस्त कर। जिस लहवे ते बड़ाई पाये उस लहवे कूँ बिसर्यो क्यूँ जाए ? लहवे ते यू मुल्क, यू राज आया; लहवे ते यू तख़्त, यू ताज आया। लहवे ते साया खुदा खलीफ़ा-खुदा कहवाये, लहवे ते इस मरातिब कूँ आये। पादशाहों कूँ लहवे बग़ैर राजी च नईं। आखिर भी लहवे बग़ैर इलाजी च नईं। जेती फ़िक्र, जेती अक्ल आये, हात ते लहवा न सरया जाए। आदमी जिस पर ध्यान रखता है तो कुछ बी होता है। खाली नहीं जाता। खुदा की दरगाह नाउम्मेदी कुफर है, नाउम्मेद होना खुदा कूँ नहीं आता। अगर कोई पादशाह अपना मुल्क छोड़ ज़रूर कूँ होर एक पादशाह के मुल्क में जावेगा तो क्या अपने मुल्क की जैसी खुशी पावेगा ? जीव ना भावेगा। पादशाही छोड्या सो तिल तिल आवेगी याद। उसमें क्या है सवाद ? कुछ नहीं, रुचा नहीं। जो कोई पादशाह है उसे ज़रूर है जो अपनी आक़िबत की फ़िक्र करे; फ़ुर्सत का वक्त ग़नीमत जान कर तदबीर पर मन धरे। पादशाहों की यकेली नहीं ज़ात, आलम आलम अछता पादशाहाँ के सघात। पादशाहाँ कूँ बहुत उचाट खूब नहीं,

---

तमामी-पूर्ण
जबूँ-तबाह, अपमानित
खिराज-भेंट
उस्तवार-दृढ़
बेरंज-बिना दुख
रजं-जोश, ऐशपरस्ती
तवक्कुल-विश्वास
आक़िबत-भविष्य, परलोक
राजी च-राज ही

पादशाहाँ कूँ बिसराट खूब नहीं। मसला है दखन में अगर कोई समजे मन में 'लूत में लूत काकलूत, लत में लत ग़फ़लत।' जीवना तो लगे च है, जो लग है नेम धरम सत। तूँ अक्ल पादशाह है, आलमपनाह है, साहब-सिपाह है, फ़ुर्सत धरता है, जो कुछ करने मँगता है सो करता है। तेरा फ़हम, तेरी दानिश, तेरी दानाई मशहूर है। मैं तेरा दौलतख्वा हूँ, क्या करूँ? मुजे यू बोलना ज़रूर है, इस जागा चुप रहना नमकहलाली ते दूर है।

बैत—

हेरामश बुअद दौलत पादशाह
के हंगाम फ़ुर्सत नदारद निगाह

वक्त पर दुश्मन चुप रहता, दोस्त जो कुछ जानता सो कता। जिसका दिल साहब-खातिर जलेगा सो बोलेगा। जिसका दिल साहब खातिर तलमलेगा सो बोलेगा। अबी तो एक बार बोलना म्याने, पीछे साहब का काम साहब जाने। जान कर चुप अछना नमकबरहरामी है, यू तमाम खामी है। तुजे छोड़ मैं चड़ना किस घाट? जो कुछ तुजे बाट सो मुजे बाट। जो कोई साहब सूँ यू अख़्तियार अछे उसका दिल साहब-खातिर क्यूँ न पकड़ उचाट? अज़्ल पादशाह, आलमपनाह, साहब सिपाह ने यू सब सुन वहम कूँ गले लाया, वहम का अँदेशा बहुत भाया। कहा शाबास वहम, तेरा बहुत खूब फ़हम। अगर फ़िक्र मेरी खातिर आई। तुझे हम वज़ीरी देना हम पेशवाई। अगर अफ़लातून अछता तो तेरे फ़हम का दाद देता बल्के खिदमत करता। कुछ फ़ैज लेता। जानता के खुदा के आलम में ऐसे भी ख़िरदमन्द कामिल हैं। साहब-हिम्मत, साहब-दानिश, साहब-दिल हैं। ज्यूँ फ़ारसी में कता है—

फ़र्द—

हेरीफ़ाँ बादहा ख़रदन्द व रफ्तन्द
तिहि खुम ख़ानाहा करदन्दो रफ्तन्द

खुदा की खुदाई अताल भी वो च है ज्यूँ अव्वल ते आई। वही खुम है, वही शराब, वही च मस्तों हैं, वैसे च दाना, वैसी च अक्ल, वैसी च ज़बर्दस्तों हैं। जाँ खुदाई की बात आये वों नई कूँ ना कह्या जाए। फ़ारसी में कता है—

ख़िरदमन्द-बुद्धिमान
खुम-सुराही
बिसराट-विस्मृति †

† तो लगेच-तब तक ही नहीं करता उसके लिए बाद-

शाह की दौलत हराम है।

१ जो आदमी समयानुकूल काम

२ शारबी शराब पीकर चले गये। सुराही खाली की और चले गये।

बैत—

[1]दीदारा बुकशा बबीं दिल रा बे फ़िगन दर गुमाँ
मर्देस्त दर हर पैरहन मग़ज़ेस्त दर हर उस्तख़्वाँ

अरे वहम, तुझ पर मुझे बहुत आता है रहम। दिल ने तुजे नईं जान्या, तेरी क़द्र नईं पछान्या। तूँ बहुत दूरन्देश। हम बादशाह मगे हम दरवेश क्या यू बात क्या है? तमाम करामात क्या है? दानिशबन्दों ने ताक़-बलन्द पर बात रखी, लोकाँ ने उसका नावँ करामात रखी। दानाया मे यू चली है बात—'अ़ैल अक्ल निस्फ़ुल करामात'। वहम कहा सो बातों बहुत खूब है। बहुत माकूल हैं, कर कर दिल में ल्याया फ़िलहाल लश्कर भेज कर दिल कूँ होर नज़र कूँ बन्द करने फ़रमाया कहा के यू वहम सच कता है। खयाल हमारे शहर में आया क्या मता है? जो कुछ वहम कता सो खूब कता है। वहम की बातों का असर चड़्या, जो कुछ वहम कहा था सो उस कामाँ के खयाल में पड़्या। दायम इस काम मे जीता च अछे तो काम रह्या। यक तिल बिसर्या तो काम गया। जो काम पकड़े घट पकड़ना। खूब पट पकड़ना। मर्द दानाई का हट पकड़ना। नही तो उनने आया कुछ बोल्या, उने आया कुछ बोल्या, उने आया कुछ बोल्या, दिल मे गाट बाद्या था सो खोल्या। अपनी फ़िक्र हुई दाना दान, लोकों की फ़िक्र आई ग्यानें ग्यान। बादशाहाँ रोशन-दिल हैं। खुदा के खलीफ़े, खुदा सूँ मिल है। मालूम होता आखिर ते अव्वल। ये लोकों उनो के पड़ते उनो की अक्ल। हरेक बात सर चड़ती, पीछे आदत वही पड़ती। अक्ल का सवाद किया, अपनी अक्ल का इमदाद किया। अपनी अक्ल हुई हवाई, जानो लोकाँ च करते पादशाही। इसकी कुछ नहीं तदबीर, ये जानो एक तमाशागीर। लोकों की अक्ल ते अगर खूब हुआ तो भी सहल इमदाद है, अपनी अक्ल ते जो कुछ खूब हुआ उसमें सवाद है। दानों की अक्ल दग़ा नहीं खाती, दाना की अक्ल भोत काम आती। दिल ताजा अछा, अपने कने अपना अन्दाज़ा अछता। अपना मुद्आ अपै पा सकता। यकादे वकत खुदा न करे काम तो ल्या सकता। इस दुनिया की देख घात। किया हूँ एक बात। जूँ तूँ आक़िल अपना काम कर लेता, आक़िल अपना काम जान कूँ देता? अपनी अक्ल सूँ अगर दुसरे की अक्ल मिले तो वाह वाह! इसने भी क्या खूब, आक़िल लोकों बहुत हैं मतलूब।

बलन्द अक्ल दिल का उजाला, भोती च—खूब भोती च आला। यू बात समजाया, यही क़िस्सा कते थे सो आया के वो याकूत की अंगुश्तरी जो दिल ने

घट-मजबूत हर वेश मे एक इन्सान है और हड्डी पर मांस चिपटा हुआ।

१ अंत्र खोल, ध्यान पूर्वक देख २ बुद्धि आवी करामात है।

हुस्न धन मनमोहन ते आशिक़ हो के लिया था वो अंगुश्तरी कुछ मसलिहत देकर नज़र कूँ दिया था। वले सुनाराँ उस अंगुश्तरी कूँ ऐसे वक्त घड़े के जो कोई वो अंगूटी मूँ में रग्वे तो किसी की नज़र ना पड़े। होर दुसरी ख़ासियत इसमें यू थी के जो कोई वो अँगूटी रखे अपने संधात, उसकी नज़राँ तिल में दिसे चश्मा-आब-हयात। नज़र वो अंगूठी मूँ में लेकर, सब की नज़राँ कूँ दग़ा देकर हँसता-खेलता उस अक्ल पादशाह के बंद में ते भार आया। ख़याल का वहाँ च ख़याल आया। भई हज़ार शौक़ सूँ, हज़ार ज़ौक़ सूँ देखने उस हुस्न नार कूँ, दीद्याँ के सिंघार कूँ, दिल के अधार कूँ, शहर-दीदार कूँ जाने अख्तियार हुआ। पावँसार हुआ। नज़र था तालिब, तलब ते ग़ालिब। बेगी च शहर-दीदार में, रुख़्सार के गुलज़ार में आया, सैर करते करते धन का चश्मा शहद होर लबन का चश्मा जिसे अबलोच-नबात कहते हैं, जिसे आब-हयात कहते हैं, सो उस रुखसार के गुलज़ार में पाया। नज़र लालची, लालच भर्या, ख़ाम तमा कर्या; ग़लत क़िस्सा धर्या। उस शीरीं चश्मे में ते आब-हयात का सवाद देखे, एक घुट पीवे होर अपै भी दुनिया में जीवे। जेता कोई ढूँढे, जेता कोई धावे, बख़्ताँ में लिख्या सो पावे। बारे, ज्यूँ आब-हयात पीने कूँ मूँ पसर्या, अपना सत, अपना पत सब हार्या। चोरी किया, तनाखोरी किया। क़ज़ा उस वक्त यू घड़ी के वो अँगूटी मूँ में ते निकल उस आब-हयात के चश्मे में पड़ी।

फ़र्द

अमानत में ख़यानत क्या है दरकार
जो कोई यूँ होवे उसे क्यूँ होवे भली बार

दग़ा खा कर, भोत पछता कर हैफ़ी खाने लग्या। दिल पर कुछ कुछ ल्याने लग्या। ले तरसाने तप्या, आब-हयात का चश्मा नज़र तले ते छुप्या। नज़र हैरान, डावाँडोल, किसे कहे खोल, मूँ में ते भार नईं निकलता बोल!

फ़र्द—

गँवा लिया च तू अब क्या गमाते पछतावे
यू बस्त वो नहीं जो गई सो हात फिर आवे

नज़र निढाल, नज़र का यू हाल। जो यकायक रक़ीब कईं देख्या सो नज़र के लग्या दुम्बाल। पकड्या, जकड्या, आज़ार दिया, मार दिया। दन्दसार्या, जाल्या,

पावँसार-चलना
लबन-दूध
आबलोच-मिश्री
नबात-मिश्री
ख़ाम-कच्चा
तमा-हिर्स
बार-फल
निढाल-सुस्त

अपने घर जाकर बन्दी खाने में घाल्या। केतक दीस यूँ च टाल्या। नज़र वहाँ नीयत बदल्या। यहाँ उसका अजर पाया। इस हात का उस हात, वहाँ का वहाँ च खुदा ने दिखलाया। बहुत देख्या खारी, बदनीयती की तासीर मारी। खुदा कूँ डरता, यकस के माल पर क्यूँ नज़र करता! परेशान दरहम, जिधर देखता उधर अंदेशा होर ग़म। कोई दस्तगीर नहीं, कुछ तदबीर नहीं। यकायक यक रात जुल्फ़ ने जो उस दीस अपने बालाँ दिये थे उसके हात वक्त पर याद अल्ली सो उस वक्त वो वक्त याद आया। फ़िलहाल एक-दो बालाँ लेकर बेग-बेग आग पर जलाया। तो च देखता है, जो जुल्फ़ हाज़िर हो आई, पूछी के क्या हाल है रे भाई? क्या-क्या पूछेंगी मेरा हाल, मैं क्या बोलूँ अताल? जुल्फ़ कही ग़म नको कर, हिम्मत कम नको कर। हरेक बला है सो मर्दों च पर है, साहब-दर्दों च पर है।

फ़र्द—

हिम्मत देना मर्द ने आजिज़ होकर अड़े कूँ
रखना नज़र वक़्त पर हरेक वक़्त पड़े कूँ

मर्दों च पर है क़िनाअत होर फ़ाक़ा। मर्दों च पर गुज़रता है एकादे वक्त वाक़ा। जिसे दुनिया में ग़म नईं, वो नादिर है। खुशी-ग़म सब मर्दों च के सर है। चलता सो च उड़ता है, चढ़ता सो च पड़ता है। लहवार का खेल जो आग सूँ है तो यकादे वक्त जलता बी है। तैरालू जो दायमी पानी में गोता मारता कधीं दम कोंच्या जा तलामिलता भी है। पादशाहाँ जो पादशाही करते हैं, हुकूमत का दावा धरते हैं, उनों भी कधीं ग़मगीन, कधीं खुशहाल ऐसा का भी यू हाल। दुख सहा सो मर्द। ग़म के वक्त खुशहाल रह्या सो मर्द। गंगा बी धूपकाले में नहनी, बर्शकाले में बडी। जंगल का झाड़ उसे कधीं फूल-फल, कभी पतझड़ी। अगर दायम अल्ले एक वज़ा, तो अबस है यू क़द्र क़ज़ा। यू उसका च जात है जो दायम एक धात है। मर्द वो जो अपने वक्त करे कुलवक्त। अबुलवक्त अल्ले न इब्नुलवक्त। ऐसी जाग नको च खल्ला कधीं जो नहना होवे, कधीं बड़ा। वासिल उसे कते हैं, साहब-हासिल उसे कते हैं। घर-घर नको फिरा आस, अपै होर अपनी भूक-प्यास। जिने भूक-प्यास में बोंद्या घर, वो निडर, उसे क्या डर? दौलत बेज़वाल सो यू च है, मर्दों का धन-माल सो यू च है।

अजर-बदला
तासीर-असर, परिणाम
क़िनाअत-सन्तोष
वाक़ा-घटना §
§ नादिर-अमूल्य
बेज़वाल-नित्य
लहवार-लोहार †
† तैरालू-तैराक
१ समय का पिता।
२ समय का पुत्र।

बैत—

[1]दौलते रा के बाशद ग़म अज़ आसे बेज़वाल
बेतकल्लुफ़ बिरनो दौलते दरवेशाँ अस्त

अव्वल भूक-प्यास पर खड़े रहना, पीछे मर्दों में बुज़ुर्गी की बात कहना। बाव के झाड़ ते कोई फल लिया है ? भुई छोड़ कर कोई सादना किया है ? बं ले च है के भूक होर प्यास, नब्रियाँ होर वलियाँ की मीरास। खाना भूक के निवाले, होर पीना प्यास की घूँट। अगर मर्द है तो यूँ चल, बाक़ी सब बात झूट। जो बड़ाई पैक्याँ सूँ आती, पैके गये ते बड़ाई बी जाती। नको कर तूँ ऐसी खाम तमा, यू बड़ाई किस बड़ाई में जमा ? शर्म नहीं आती ऐसी बड़ाई करते, इस बड़ाई पर भी ऐंट ऐंट मरते। दो दीस होते जाँ वज़ीर, भई आख़िर फ़क़ीर के फ़क़ीर। वो बड़ाई सो फ़क्र फ़ाक़ा की बड़ाई, जो बडाई ख़ुदा होर रसूल कूँ भाई। हदीस नब्वी सल्लम "[2]अल फ़क्र फ़क्री वल फ़क्र मिन्नी" दुनिया की बड़ाई किये तो करना, वले अपना फ़क्र व फ़ाक़ा ना बिसरना। ऐसी बड़ाई पर चल मग़रूर हो जाते जो दुसरे किसी कूँ ख़ातिर नही ल्या ते। अव्वल क्या थे, अताल क्या हुए; अपस कूँ पछानना, अपने दर्द जैसा दुसरे का दर्द जानना। दुनिया की बड़ाई पादशाहाँ च कूँ सुहाती। बाज़े जो हद ते बड़ाई ज़्यास्त करते सो उनो की अक्ल जावे। मद-मस्ती चड़ती, बेख़बरागी आती। उनो बड़ाई कर ख़ुशियाँ सूँ मारते तालियाँ, लोकाँ पम ग़ैबत खड़े खड़े देते गालियाँ। यू बेईमानाँ लोकाँ का हक़ उड़ाते, शरा पर हुक्म गालियाँ खाते। दुनिया का हिर्स दुनिया की बला में घालता, बल्के आखिरत कूँ भी दोज़ख़ मैं जालता। दुनिया की बंदगी दीन सूँ करना, ख़ल्क़ कूँ समजना, ख़ुदा ते डरना। आलम कूँ सब दुनिया का शग़ल लग्या, आख़िर इस दुनिया ते किसका दिल नहीं भग्या। जिसे सब पकड़े है, उसे तूँ छोड़, तूँ ख़ुदा च कूँ पकड़ के तुजे कही च नई छोड़। जहाँ इस्तक़ामत, वहाँ इमामत। दुनिया का धन्दा अगर करेगा तो कर, वले अपनी भूक-प्यास नको बिसर। जिसे नेट नई उसे भेट नई। मुहब्बत सूँ दिल कूँ मामूर कर, जितना सकेगा उतना अहतयाज होर आजिज़ी दूर कर। सुभान अल्लाह। जो कुछ है इस्तग़नाई, वले यू इस्तग़नाई हर किसे नहीं आई। यहाँ जफ़ा कौन मारता है, यहाँ ख़ुशहाली कौन सिंधारता है ? यू भोत मुश्किल है ठार, जो पारा आग पर रह्या वो क़ायमुन्नार। दुनिया की बड़ाई को लगन चलेगी ? यू घोंम की झोंपड़ी बग़ैर आग धुएँ च सूँ

इमामत-पेशवाई, अगुवापन
नेट-दृढता
अहतमाज-ज़रूरत
इस्तग़नाई-निश्चितता
सादना-साधना
ऐंट-ऐंट-ऐठ-ऐठ
पछानना-पहचानना
केवल फ़क़ीरो की दौलत ही अवनात के दुःख से निसन्देह वञ्चित है।
२ फ़क़ीरी मेरे लिए गौरव का

१ मेरी बात ध्यान पूर्वक सुन कारण है।

जलेगी ! यू सोने की ठार नहीं जाग, कचे सूत पर को लग लगेगा लाग । हयात बाव का हिलना चलना । इस हयात पर एता क्या अछना । कुछ न था सो कुछ हुआ है । कुछ समज के ही च हुआ है । दुनिया ज्यूँ दोपहर की छाँव । इस दुनिया कूँ सर है न पाँव। दुनिया दो दीस की महमान, यू तहक़ीक़ है कर जान । यू जीवना सब एक दम; अगर खुशी वगर ग़म । दुनिया का काम ज्यूँ त्यूँ गुज़रता है, वले वही भला जो फ़ुर्सत है लगन कुछ करता है । जितनी राहत मँग उतनी महनत पर खड़, तो नबी, तो वली बडे । उनोने हवा-हिर्स ते नही पाई बड़ाई, उनो कूँ भूक-प्यास ने याँ लगन अँपड़ाई । अगर तूँ समजेगा यू आलीशानी, तो अरबी में कहे हैं के—'तेजऊ तरानी' यानी कुछ देखने मँगता है तो भूका अछ; यू चिकनाई सट, टुक खरवा अछ । जो कुछ है सो अपना नेम-धरम होर सत में है, जो कुछ है सो ग़रीबी होर गुरबत में है । ग़रीब फ़क़ीराँ का खाना सो फ़क़-फ़ाक़ा, तमाम हासिल का माना सो फ़क़ होर फ़ाक़ा; खुदा कुछ नहीं खाता; जो कोई खुदा का आशिक़ हो उसे खाना क्यूँ भाता । आशिक़ वो जिसमें माशूक़ की सिफ़त आवे, नाके माशूक़ कुछ भाता, आशिक़ कूँ कुछ होर भावे । जूँ खुसरो दहलवी यू बात कह्या बहुत नवी—

हैर के जोयद मुराद अज़ माशूक़
गोये ऊ आशिक़ मुराद खुद अस्त

माशूक़ कने माशूक़ी च कूँ मँग, आशिक़ कूँ इस बात का भोत है नंग । यू पुख्ते लोकाँ में खामी है, यू इश्क़ में ना तमामी है । एक ठार नज़र होर सौ ठार दिल, ऐसी आशिक़ी ते क्या हासिल ? याँ दिल कूँ सँभालना है, या जीव ते अपस कूँ जालना है ।

अल्मास ते होना सख़्त, जो अपनी मुराद का अछे वक़्त । ग़म ते अपै आजिज़ न होना । ग़म आया तो ग़म कूँ ही खाना ।

दोहरा

जो लंघन तो सहस बल जो भोजन तो माम
ये सीना खंक्या क्यूँ कहे सत-सत तिनका घास

मर्द कहीं फूल ते नाज़ुक, कहीं फ़ौलाद ते सख़्त अछना । हरेक जागा हिम्मत

हवा-हिर्स=इच्छा
खामी-त्रुटि
अल्मास-एक रत्न
सुना-सोना
सीव-सीमा

१ भूखा देखता है ।

२ जो माशूक़ से अपनी आकांक्षा कहना चाहता है तो उससे कह कि आकांक्षा वह स्वयं है ।

सूँ रहने मर्द कूँ बख़्त अछना, जिसमें कुछ नेम है, जिसमें कुछ धरम, ज्यूँ सुना जैस, अछ, सख़्त वैसा च नरम।

दोहरा

सींव सत ना छाड़िये सत छोड़े पत जाय
लछमी सत की दास है पग लागी घर आय

इब्राहीम की नीयत साबित थी तो काफ़िराँ आग में सटे। अंगारे फूल हो पावँ तले आये। युसुफ़ का कुए में तक्वा क़रार था तो भार निकले, पैग़म्बरी होर पादशाही पाये। मर्द कूँ क़रार अगर कुछ है, हरेक काम पर अख़्तियार अजब कुछ है। एक तिल में सौ जिन्स सूँ फिरता यू आलम, न दायम ख़ुशी अछती किसे न दायम ग़म। सर पर चर्ख़ फिरता है, आदमी कधीं उटता, कधीं गिरता है। आदमी न अपने भाते आया है, न अपने भाते जाएगा। होर यकस का भाता होता है अपना भाता कहाँ ते ल्याएगा। ज्यूँ मुर्त्तज़ा फ़रमाते हैं, जिनो की बात दायम क़ायम —'अरफ़त रब्बी बफ़िस्ख़तल अजायम' याने ज्यूँ मैं मँगता था त्यूँ नहीं हुआ तो वहाँ ख़ुदा कूँ पछान्या। मेरे हात में नहीं है काम, होर एक के हात में है, कर तहक़ीक़ जान्या। आरिफ़ाँ बात-बात में देखते जाते, एक बात में हज़ार बात पाते। ज़ेर-ज़ेर कूँ तहक़ीक़ करते, एक तिल उसकी मारिफ़त कूँ नहीं बिसरते। आरिफ़ वही च है जो कोई ख़ुदा की मारिफ़त समझे। हक़ शनास उसे कते हैं जो कोई तरीक़त में आ कुछ हक़ीक़त ममजे। ख़ुद शनासी, ख़ुदा शनासी आरिफ़ाँ का काम है। जो कोई आरिफ़ तमाम अमरार है उसी कूँ फ़ाम है। कधीं कोई हँसता है, कधीं कोई रोता है, यू दुनिया है, यू होता है। दुनिया का काम बहुत है सख़्त, अपने नहीं सातों वक्त। आदमी कूं परेशानगी है बाले बाल, ख़ुदा च है जो वो रहता है यक हाल।

अलक़िस्मा, बारे, ज़ुल्फ़ ने धरम करी, बहुत करम करी। इस बन्दीखाने ते, उस बला-आशियाने में ते कुछ फ़न कर भार काड़े। उस रक़ीब कूं, उस बदबख़्त बदनसीब कूं पछतावे में पाड़ी। नज़र कूँ गले लाई, रुख़्सार के गुलज़ार होर शहर-दीदार की बाट दिखलाई। कही अताल जा, अपना मुद्आ पा।

बैत—

मुरव्वत भोत की लट चोटी की जाई
बला ते भार काड़ी बाट दिखलाई

नज़र ज़ुल्फ़ सूँ विदा होकर चल्या, सो दीदार के शहर में, रुख़्सार के गुलज़ार

चर्ख़-आसमान जाई-बेटी, उत्पन्न की हुई पूर्ण करने में असफल हुआ तब
शनासी-गुण ग्राहकता १ जब मैं अपनी इच्छाओं को मैंने भगवान को पहचाना।

में आया। हुस्न धन का, मनमोहन का, जगजीवन का मुलाक़ात पाया।

बैत—

दिल का हुस्न के दिल में बहुत इन्तज़ार था
दीदार देखने कूँ दिल उम्मीदवार था।

गहरी एक आह भर्या, गहरी उसास। गुज़र्या था सो क़िस्स कह्या। हुस्न छुन्द-भरी औतर इस्तरी पास। हुस्न नार कूँ खूबी की गुलज़ार कूँ, महबूबी की नौ बहार कूँ हैरानगी लगी। परेशानगी लगी। कही के मै जानती थी के दिल ज्यूँ त्यूँ आवेगा; बारे, दीदार दिखलावेगा। मेरा दिल दिल ते आराम पावेगा। यू नहीं जानी थी यू क़िस्सा यूँ घड़ेगा; भई, वक्त ऐसा पड़ेगा। हर कोई अपनी समज पर गुमान धरता। बन्दा कुछ समझता, खुदा कुछ करता। ग़लेबा किया इश्तियाक़, भई क़ुव्वत पकड़्या फ़िराक़। दिल में कुछ ल्याई, अपने ग़म्ज़े कूँ नज़दीक बुलाई। अपने इश्क़ की जो बात थी सो उसे समझाई।

फ़र्द—

करने आसान अपनी मुश्किल का
राज़ ग़म्ज़े सूँ बोली सब दिल का

कही अताल इसका इलाज यू है के तूँ होर नज़र दोनो मिल कर एक दिल कर तन के शहर कूँ जाव। होर दिल कूँ कुछ तदबीर कर, तस्क़ीर कर, कुछ फ़न कर, सहर-टोना टामन कर ज्यू-त्यूँ मुज लग ल्याव।

फ़र्द—

बार ना लगसी दिल कूँ आने कूँ
ग़म्ज़े कूँ भेजी हे बुलाने कूँ

हुस्न धन, मनमोहन, जग-जीवन के फ़रमाये पर ग़म्ज़ा होर नज़र लोकाँ चुने-चुने, जले-जले, भुने-भुने अपने सघात लेकर शहर-दीदार ते तन के शहर के उधर रुख धरे, यूँ चले, सौ मंज़िल की एक मंज़िल करे। दोनों चुस्त, दोनों चालाक। दोनो रोशन ज़मीर, दोनो दिल के पाक। दोनो चड़ फिरे, अपने काम में भोत खरे, अमा, रिवायात यूँ आई है के नज़र जिस वक्त अक्ल के बन्द में भार आया, अक्ल त्यूँ च भेद पाया था के नज़र यहाँ ते जो जावेगा, अलबत्ता कुछ फ़ितना उचावेगा। काम कुबल होवेगा, काम कुछ खलल होवेगा। बला कुछ ल्यावेगा।

ग़लेबा-ग़ालिब हुआ फ़िराक़-वियोग तस्क़ीर-आधीन करना

फ़र्द—

आशिक़ की बात तोड़ नको उसमें टूट नहीं
आशिक़ के दिल ऊपर जो गुज़रता सो झूट नहीं

दिल में रीझ कर, अव्वली च ते समज कर, लिख्या था अपने सरहद के मर्दों कूँ, के चारों तरफ़ के मुस्तैद रखो बहादुरों कूँ। इस नज़र कूँ, इस निडर कूँ। इस मुल्क में ते भार जान नको देव। हुश्यार अछो, ख़लल उछान नको देव।

बैत—

अमर होता सँभाल कर एता
जात जाने कूँ कोई जतन रखे केता

ज़ोहद व रिया का कोह कर कर एक मुक़ाम; होर उसका एक बेटा था—तोबा उसका नाम। उसे बी फ़रमाया था यू च काम के नज़र कूँ सँभाल के सरहद ते भार न जावे, मबादा क़ही की बला बिसावे। ज्यूँ अक्ल फ़रमाया था वों च सब अपनी जागा थे हुश्यार। बारे क़ज़ा यूँ होता है, जो ग़म्ज़ा होर नज़र दोनो बेख़बर रात की ख़ुमारी सूँ भोत बारी सूँ मिल कर उस डूगर तले आये। इस डूँगर तले एक फूलबाड़ी थी। उस फूलबाड़ी में खड़े आसाइश पाये। जागा भोत भाई; रात के जागे थे, टुक नींद आई।

बैत—

ग़म में आलम अछे तो बी ग़म नईं
नींद कहते सो मीत ते कम नईं

हदीस है, अरबस्तान में बी यू बात चली है भोत के—"अन्नौम अख़ुल मौत"। याने हदीस यूँ आई है—नींद का मौत भाई है। बारे, यू आलम ज़ाहरी के जागे तो इस आलम का तमाशा देख्या जाता है; आदम इस आलम में पैदा हुआ है, आदम कूँ यू बात भोत भाता है। दुसरा आलम रबाब का। वो बी ऐसा च है, इस आलम का जैसा च है। वहाँ बी यें च हँसना, खेलना, खाना, पीना है। जूँ यहाँ जीते हैं, वहाँ भी यूँ च मरना जीना है। जो यॉ करते सो वॉ बी करते। जू यॉ मरते-जीते त्यूँ वॉ बी मरते-जीते। वहा बी दोस्त हैं, दुश्मन हैं, शादी है, ग़म है। ज्यूँ

ज़ोहद-ईश्वर की भक्ति, वैराग्य
रिया-आडंबर
कोह-पहाड़
असाइश-आनन्द, आराम
कोह कर कर-काह नामक
तल-नीचे
डूँगर-पर्वत
१ नींद मृत्यु का भाई है।
कसीफ़-अशुद्ध

यू आलम है, त्यूँ वो भी एक आलम है। निहायत फ़र्क़ इतना है के यू कसीफ़ है, वो लतीफ़ है। यू जिस्मानी है, वो रूहानी है। तिल में ज़मीन ते आसमान पर जाया जाय, आसमान ते ज़मीन पर आया जाय। अर्श व कुर्सी लोह व क़लम का सैर करना मयस्सर हो आता। ज्यूँ मँगता त्यूँ होता। जाँ मँगता वहाँ जाता। मुहाल है सो हाल होता है। अजब-अजब तमाशे दिसते हैं। तमाशे-तमाशे का खयाल होता है इन्सान कूँ के अक़्ल होर नज़र है। उस आलम की बी खबर है। इस आलम ते उस आलम में जाना, उस आलम ते इस आलम में आना यू सब अपस मने च है तो अपस में दिसना भारी नही। तूँ जानता अछेगा दुसरी ठार नईं। भार अछता तो तुजे क्यूँ दिसता? तूँ तो तन में ते निकल कर भार नहीं जाता। अगर यू तुझ मने च नही तो तूँ खबरॉ कहाँ ते ल्याता के मैं खाब में फ़लाने कूँ देख्या आज रात, उसने मुज सूँ यूँ करी बात। मै यूँ किया उसके सेंघात। वहा ऐसा बाग़, ऐसा महल था कता, वहाँ एसा हौज़, उसमें एसा कमल था कता। ऐसे तमाशे, जैसी नार वहाँ देखता यहाँ इस नार की तारीफ़ करता। उसके रूप की, उसके रग की, उसके सिघार की तारीफ़ करता। उस आलम मे उसे देख कर, इस आलम मे उसकी खातिर तपता। जाग्या तो फिर फिर सोता। फिर उसे देखने जीता। उसका नैन, उसका अधर याद आता। उसका जोबन, उसकी कमर होर उसका ज़र कमर याद आता। दिल में उसास आती, सीने में ते आह नही जाती। बाज वक्त जो वहाँ देखते हैं वो च यहा होता है। ज्यूँ यहाँ जागता-सोता, त्यू वहाँ भी जागता सोता है। बाज़े शाअरॉ उस आलम मे शेर बोले हैं, होर इस आलम मे लिखे हैं। कुछ-कुछ इस आलम में किये है, उस आलम में सके हैं। बख्त जागे होर वहाँ बशारत मूँ दिखलाई है तो पादशाहाँ कू यहाँ पादशाही आई है। यूसुफ ने खाब में देख्या के आफ़ताब सजदा किया, उसका नतीजा खुदा ने यहाँ पैग़म्बरी होर पादशाही दिया। बाज़े पैग़म्बरॉ कूँ भी खाबी च में गैब की खबर दिये हैं। उनो वहाँ ते खबर पाये सो यां आकर खबर किये हैं। इशारत वहाँ ते च होती है। बशारत वहाँ ते च होती है। खाब बहुत बड़ा आलम है, इस आलम मे होना महरम-महरम है। सबी च फूल भेजे तो काँटे कौन भेजता? सबी च अगर चन्दन होर मुश्क भेजे तो इधर-उधर के फाँटे कौन भेजता? यू बी बड़ा आलम, बड़ा घात है, यू आरिफ़ाँ की समज की बात है। मूए पीछे बी ऐसा च कुछ आलम है, जिने समज्या उसे मरने का क्या ग़म है? एता क्या खातिर-दिल कूँ तपाना है, तरसाना है, एक आलम में ते एक आलम में जान है। यहाँ के लोका की दिल बस्तगी तोड़ कर जाना टुक मुश्किल लगता है, फ़ल नेक है जान। उसे क्या यहाँ क्या वहाँ? वहाँ भी खूबाँ हैं, महबूबाँ हैं, यारॉ हैं, मुसाहिबाँ हैं, मतलूबाँ हैं। वहां भी सब रुच हैं, सब कुछ है। वहाँ बी

कसीफ़-अशुद्ध † बशारत-शुभ समाचार रुच-रुचि
बख्त-भाग्य † मुश्क-कस्तूरी

यू च लोक, यू च वज़ा, यू च क़द्र, यू च क़ज़ा, यू च हुक्म, यू च रज़ा। निहायत सही इतना करना के कुछ फ़ेल-नेक हात आवे। ख़ुदा होर रसूल कूँ भावे। मुराद अपनी पावे। उसका दिल साफ़ी पकड़े। उसके दिल ते कुदूरत जावे। बाक़ी सब ग्वैर है, फ़ेल ग़ैर ग़ैर है। माँ के पेट ते निकलते वक्त जितने अज़ाब सूँ निकलता है; उतने अज़ाब सूँ इस तन ते निकल जाना है। वले ज्यूँ वहाँ ते कुछ ल्याया त्यूँ यहाँ ते भी कुछ ले जाना है। खोले हैं इस बात की गिरा। कहे हैं—"अद्दुनिया मज़रतुल आख़िरा।" याने दुनिया आख़िरत की ज़िराअत है। इस ज़िराअत कूँ बहुत मशक़्क़त है। जैसे झाड़ाँ लावेंगे, वैसे फल वहाँ पावेंगे। जो कोई आक़िल है, वासिल है, उसे इस दुनिया में रहने का यू बड़ा हासिल है। दुनिया इस काम कूँ बहुत ख़ूब है, इस मुक़ाम कूँ भोत ख़ूब है। ख़ाब में जो कुछ देखता है बोलता है सो ख़ाब में की बेदारी है। जो वो देखना-बोलना रह्या तो वो ख़ाब हुआ। बेख़बरी, बेहोशी, बेकारी है। वहाँ न शादी, न ग़म; न इशरत न आलम, न बेताबी, न आराम, न काम न धाम। विसाल तमाम वाँ होता है। दानिश का ख़याल तमाम वाँ होता है। वहाँ ख़ुदा च अछता, अपै नहीं च अछता। अपै ख़ुदा में वो यकी च अछता। वहाँ कुछ नही। ज़ुल्मात अधारा है। इस कुछ नई च में ते च सब कुछ आनहारा है। हक़ ताला फ़रमाता के—'[2]यूँ में नून बिलग़ैब' यू ग़ैब का आलम है। उस आलम में जाने आलम, सब दरहम है। याने मुसलमान वो जो ग़ैब पर ईमान ल्यावे। ख़ुदा '[3]बेचूँ' बेचुगूँ' है कर अपस कूँ समजावे। अपने दिल कूँ समजावे। उस कूँ नूर कूँ काला नूर कते हैं; बहुत आला नूर कते हैं। उस नूर की ख़बर किसे मालूम नई। मफ़हूम नई। जो कोई मोमीन मुसलमान है, इस बात ते उसका दिल शाद है। यू दानायाँ कूँ इरशाद है। इन्सान कूँ सूरत है तीन। तहक़ीक़ जानना एक अपै रब्बुल आलमीन यू ज़ाहर की सूरत, दूसरी ख़ाब में की सूरत, हर किसे दिस आती है। तिसरी सूरत उस ख़ाब की सूरत है, वो सूरत किसते देखी नहीं जाती है। आरिफ़ाँ इनो जूँ कते हैं इस ठार, वले उस सूरत का नही देख सके दीदार। जेते लाफ़ मारे, उस जागा पर आ कर हारे। यू बेअख़्तियार, कुछ हुए तो हुए। यहाँ महज़ ख़ुदा का प्यार, कुछ हुए तो हुए। जो कोई इस सूरत कूँ देख्या, सो तहक़ीक़ ख़ुदा कूँ देख्या कते हैं। जो कोई उस मूरत कूँ देख्या सो तहक़ीक़ ख़ुदा कूँ देख्या कते हैं। ख़ुदा कूँ देखने की यू च ठावे है। मेराज इसी च का नावे है। यू मेराज आशिक़ाँ ने यहाँ ते पाये हैं, ताज यहाँ ते पाये हैं। हक़ीक़त का रस इनो यहाँ च पाये हैं। आ कर बोले हैं, राज का पर्दा खोले हैं के "बाँदअज़

साफ़ी-पवित्र
कुदूरत-छल, कपट
गिरा-गाँठ
ज़िराअत-खेती
अलम-पीड़ा
मफ़हूम-गम्य, विचार
आनहारा-अनेवाली

१ दुनिया परलोक की खेती है।
२ अदृश्य पर विश्वास लाते हैं।
३ असंदिग्ध, अगम्य
४ जीवन एक साँस पर है।

उम्रे व हम एक नफ़स;" समजने कूँ एक नुक्ता बस। इस पादशाही कूँ वो च जाने जिसके सर ताज है। हर मंजिल की कमालियत कूँ एक मेराज ही मिली है। होर यहाँ की दिखलायी होर जहाँ की जीव जीव सूं मिल कर जीव-जीव होना इतनी देखूँ बी नसीब होना। यू विसाल होने की जागा है, यू मुहाल होने की जागा है। यू वासिलां हैरान होने की ठार है। यू जाहिलाँ सरगर्दा होने की ठार है। नादान इस बात कूँ क्या मानेगा ? नादान इस बात की क़द्र क्या जानेगा ? दानायाँ ने जनम गँवाये हैं, तो इस नुक्ते कू पाये हैं। नादान मँगता है, अताली च समजे, अताली च जाने, खातिर ल्याने। हरेक हुनर मशक्कत किये बग़ैर नहीं आता। यूं मँगता यकायक पावे। यकायक क्यूँ पाता ? यकायक क्यूं आवे, यूँ भी क्या हलवा है, जो कोई ले कर मुँ में भावे ? उसे बी मूँ कूँ टुक हिलना-जुलना लगता है, टुक चाबना-निगलना लगता है। नादान उसका कोई क्या लेवे, नादान की मुहब्बत ते खुदा पनाह देवे।

अलक़िस्सा केतक वक्त कूं सूरज ने सर काड्या, आसमान का पर्दा का फाड्या। उजाला संचर्या ठारे ठार, रोशन हुआ सब संसार। अभूँ दीस चड्या नहीं पाव घड़ी जो सुबाह पड़ी। उस क़िले के दीदबान ने देख्या उस बला, उस तूफ़ान ने देख्या के नज़र निड़र, बेजिगर सँघात लश्कर लेकर यहा उतर्या है। हैरान हुआ। कधी नहीं सो क्या है ?

जासूस का है काम यही जो ख़बर कहे
देखा है वो च एक-बयक सर बसर कहे

बेग-बेग तोबा कने आकर, समजा कर नज़र कूं ज्यूँ लश्कर कूँ डूँगर तले देख्या था, त्यूँ कह्या। तोबा कूँ उस वक्त भोत गुस्सा आया। चुप नहीं रह्या। अक्ल पादशाह, ज़िल्लिल्लाह, आलमपनाह के फ़रमाये पर, ख़ूबी खातिर ल्याये पर, अपने लश्कर सूं शान होर फ़र सूँ, नज़र होर ग़म्ज़े पर जाकर पड्या। नज़र होर ग़म्ज़ा दोनों अपने लोकाँ सूँ यकायक नींद में ते हरबड़ते उठे; हक्काबक्का हुए। लिड़ते-पड़ते उठे, अपना लहू अपै घुटे। झगड़ा उनो पर आकर खड्या। नज़र होर ग़म्ज़ा दोनों मस्त, दोनों बी दिलावर, दोनों अपस ते तोबा कूँ खार किये, मार कर इस्तग़फ़ार किय। घड़ी में झगड़ा हुआ फ़तह।

बैत--

ग़म्ज़ा है अपनी बात सुने तो च छोड़ेगा
ग़म्ज़ा हज़ार तोबा कूँ इक तिल में तोड़ेगा

दीदबान-रक्षक हरबड़ते-हड़बड़ाते
फ़र-दबदबा
इस्तग़फ़ार-शरण चाही

तोबा का लश्कर न्हाट्या, तोबा का सीना फाट्या। तोबा कूँ पकड्या उचाट, अताल सब न्हाटा-न्हाट, तोबा बारा बाट—

बैत—

कता ग़म्ज़े की खावे मार तोबा
बिचारा क्या करे इस ठार तोबा

तोबा का कोट लूटे, तोबा कूं नंगाये; तोबा के सर पर हज़ार हज़ार बलायाँ ल्याये। तोबा कूँ मुश्किल पड्या सख़्त, तोबा कूँ तोबा करने का आया वक़्त। तोबा पायमाल हुआ, तोबा का यू हाल हुआ। पीछे रिज्क़ का जो वहाँ सोमआ था उसे बी तोड़े, झगड़ा जीते वो जागा बी छोड़े। वहाँ ते आफ़ियत के शहर के जाने अंगे रखे क़दम। ग़म्ज़ा होर नज़र अपना लिबास फिरा कर कलन्दरी पकड़े रस्म। बाट सर्या। मन में उम्मीद भर्या। आफ़ियत के शहर मे आकर बात किये, नामूस बादशाह सूँ मुलाक़ात किये। नामूस पादशाह, आशिक़ सिफ़त था, साहब-हिम्मत था। गल्या था, तलमल्या था, जल्या था। यू दोनों चोर पायक, यू दोनों दोने वायक। ये दोनों हुस्न के मदनायक। नामूस पादशाह उनों कूँ देख्वते च माल-मुल्क सब छोड्या, कुछ ना तोड्या। क़लन्दर हुआ, समन्दर हुआ, फ़क़ीर हुआ, बेतदबीर हुआ; असीर हुआ। ग़म्ज़ के हात में सँपड्या। नामूस ने इश्क़ में गँवाया, लिख्या था सो अपड्या।

फ़र्द

जिस ठार पर साया सटे मिज़्गाँ वहाँ निश्तर उठे
ग़म्ज़ा है ख़ंजर बरहना जाँ बैठे वाँ कुछ कर उठे

नामूस का यू हाल हुआ, नामूस इश्क़ में पायमाल हुआ। बाद अज़ाँ नज़र होर ग़म्ज़ा शहर बदन के उधर चले, मक़सूद हासिल हुए। दोनों फूले-फले। वले जो शहर बदन के नज़दीक अपड़े; भई अपना लिबास फिराये, बदलाये, फिर कर पैने कपड़े। ग़म्ज़ा शराब पिया अधा कैफ़ी, अपने लश्कर पर पढ़ फूँक्या दुआए सैफ़ी[1]। उस दुआ में था बहुत असर, हरनाँ की सूरत पकड़्या सब लश्कर।

फ़र्द

देख्या ज कोई ग़म्ज़े कूँ वह मुब्तिला हुआ
ग़म्ज़े ने जो शराब पिया तो बला हुआ

पायमाल-रौंदना § निश्तर-एक तरह की छुरी उचाट-बेचैनी
सोमआ-प्रार्थनागृह बरहना-नंगा लिबास फिराकर-वेश बदल कर
असीर-बन्दी कैफ़ी-नशे में मस्त हरनाँ-हरिन का ब. व.
मिज़्गाँ-पलकें § १ एक प्रकार की प्रार्थना।

अलक़िस्सा के जिस वक्त तोबा ग़म्ज़े के लश्कर ते शिकस्त खाया, सो बदन के शहर के उधर रवाना हुआ। अक्ल कने आया, तस्लीम किया। ख़िदमत बजा ल्याया। ग़म्ज़े ते जो कुछ बेदादी हुई थी सो सब बयान किया, अक्ल कूँ परेशान किया, हैरान किया। अक्ल जैसा पादशाह, आलम पनाह, साहब-सिपाह ग़म्ज़े की यू बेदादी सुन कर बहुत वेग दिल कूँ तलब कर्या, जितना सई करना था उतना सब कर्या। दिल के हात पावाँ के बन्दाँ बँद दिया था सो खोल्या। ग़म्ज़े की बेदादी का क़िस्सा बोल्या।

फ़र्द

मूँ मूँच कर सब चुप रहे फ़रयाद नईं करता है कोइ
ग़म्ज़ा बहुत बेदाद है यहाँ दाद नईं करता है कोइ

हुस्न का लश्कर है बहुत बेदाद; उसकी बात कूँ वफ़ा नहीं, उसका काम तमाम है बे एतमाद, यहाँ दाद न फ़रयाद। अगर ऐस्याँ के हील्याँ पर तूँ मग़रूर होवेगा तो अपने तख़्त, अपनी शाही ते दूर होएगा।

फ़र्द

ज कोई आक़िल अछेगा अपनी बिज़्ज़ात
बुर्यां की क्या सुनेगा बो बुरी बात ?

जिनोंने ऐसी दग़ा की बातों पर भोत भरोसा ल्याये, उनो आख़िर अपनी पादशाही, अपना मुल्क गँवाये। यू ग़म्माज़ाँ हैं, यूँ दग़ाबाज़ा हैं, उन सूँ जीव ला नको। उनो कूँ पतया नको। पछतावेगा, दग़ा खावेगा। अगर इतने पर भी तेरे दिल पर आता च है के शहर दीदार कूँ जाना च होर हुस्न धन का विसाल पाना च, उसे गले लाना, तेरी अँखियाँ तले उसकी महबूबी दिसती। जितनी बुराई उसकी, तुजे खूबी दिसती। ज्यूँ-त्यूँ भी जानी च मगता है, मक़सूद अपनी पानी च मंगता है। तो एक बात मेरी सुन, इस बात में है बहुत गुन। हमारा लड़ता सो लश्कर झगड़ता सो लश्कर, दुश्मन पर पड्या सो लश्कर, तन के मुल्क में ते अपने सघात ले होर शहर दीदार के उधर डेरा दे।

बेदादी-अत्याचार
सई-प्रयत्न
दाद-न्याय
ग़म्माज़-चुगलखोर
बन्दाँ-बन्धन ब. व.
मूँच कर-बन्द कर के
हील्याँ-हीला हवाला ब. व.

फ़र्द—

बुरा की सो बुरा च है उसते डरना च
अक़्ल में खूब दिसता है सो करना च

यकेले जाना भोत ज़ियाँ है। अक्ल में भोत नुक्सान हैं। हुस्न धन, मनमोहन, जग-जीवन पास लश्कर भोत है। औरत की ज़ात में हीला मकर अक्सर भोत है—

फ़र्द—

मकर सूँ कोह कूँ तोड़े कमर ते
दग़ा आक़िल भी खाता है मक़र ते

इस इश्क़ के बहाने क्या होता? कोई क्या जाने क्या होता? अगर तेरे पास लश्कर अछे तो खूब है। तूँ भी वरज़ोर होकर निड' अछे तो खूब है। अगर यकाधे वक्त, मामला हुए सख़्त तो तूँ भी कुछ काम करे। बारे, अपना नाम करे। डाँवा-डोल न हुए, घागराघोल न हुए। दिल की यू बात बहुत खुश आई, बहुत भाई बाप कूँ क्या अताल में अख़्तियार अपना तेरे हात दिया, जो कुछ तूँ किया सो मैं किया। आशिक़ जों बाज़ी हूँ, जूँ तूँ कता है वो च राज़ी हूँ। जूँ तूँ फ़रमाया है त्यूँ च जाता हूँ, खुदा करता है सो हुस्न सूँ मिल कर हुस्न कूँ भी फाँदे में भाता हूँ। आशिक़ वो जो माशूक़ कूँ भावे, आशिक़ वो जो माशूक़ कूँ रिझावे, जूँ अपै तलमलता त्यूँ उसे भी तलमलवावे। जूँ अपै तरसता त्यूँ उसे बी तरसावे। आशिक़ माशूक़ कूँ जपै तो खूब। माशूक़ बी आशिक़ खातिर तपै तो खूब। दोनों कधन ते मुहब्बत अछे.तो मुहब्बत की खुशहाली; दोनो हात मिलते हैं तो बजती हैं ताली। "ग़ैज़ल गुफ्तन दिल दर फ़िराक़ हुस्न अज़ इश्क़।"

ग़ज़ल

ऐ माह शाम हुई है सहर तुज फ़िराक़ ते
कौं वस्ल देखूँ जाऊँ किधर तुझ फ़िराक़ ते
हँसती है तूँ सखियाँ सूँ सखी फूल होय कर
रोता हूँ मैं सो खूने जिगर तुझ फ़िराक़ ते
तेरे अधर कूँ याद कर ऐ नार मनमोहन,
लड़ लड़ लाता हूँ अपने अधर तुझ फ़िराक़ ते

जियाँ-हानि | घाँगरा घोल-बेचैन, किंकर्त्तव्य- विमूढ़ | लता हूँ-लेता हूँ
माह-चाँद | कधन ते-कहीं से | १ प्रेम के कारण हुस्न के वियोग में दिल का ग़ज़ल पढ़ना।

ताक़त नहीं है मुझ में तेरी दूरी की अताल
मैं मार कर ल्यूँगा खंजर तुज फ़िराक़ ते
लोकाँ ये क्या कते हैं सो मालूम नईं मुजे
मुज बेख़बर कूँ काँ हैं ख़बर तुझ फ़िराक़ ते
तूँ क्यूँ मिलेगी मुझ कूँ यू मुश्किल बहुत हुआ
बिसला लिया हूँ मैं तो कमर तुझ फ़िराक़ ते
बर आयँगी उम्मीद कधीं तो भी वस्ल की
गर जीव यू ना जासी सुन्दर तुझ फ़िराक़ ते

बैत—

लग्या चौसार दिल पर बहुत ल्याने
के दिल मँगता हुस्न का दिल बहलाने

हिम्मत की तरंग पर चड्या, आशिक़ था अपने काम की शमा पर परवाना होकर पड्या। हौर अक्ल का सिपहसालार, जिसके हवाले अक्ल का सब घर-दार। सब्र उसका नाम। शुजात उसका काम। लश्कर आरास्ता करने में बहुत उसे फ़ाम। दिलावर, हटीला, रन का रन-खाम।

बैत—

सबूरी ते खूब राज़ी सबूरी पर ख़ुदा भुलता
सबूरी कीली है जिसते कुल्फ़ मक़सूद का खुलता

सबूरी ते दुनिया, सबूरी ते दीन, के मुसहफ़ की आयत है—'इनअल्लाह मा आसाबरीन' हौर हदीस भी यू आई है समझ—"अस्सब्र मिफताह उल फ़रा" हौर गवालियर के सुभान; यूँ बोलते हैं जान—

दोहरा—

धरती म्याने रीज धर बीज बिखर कर बोय
माली सींचे सौ घड़ा रित आये फल होय

बारे दिल सब्र कूँ बुला कर लश्कर हाज़िर करने का उसे हुक्म दिया। लश्कर अपना सब देख्या। लश्कर की गिनती दिया; हिम्मत कर्या; सीने में उसास भर्या।

वस्ल-मिलन
फ़िराक़-वियोग
शुजात-वीरता
बिसलाना-बैठना
खाम-खंभा, स्तंभ
रीज-रीझ

१ ईश्वर सन्तोषी के साथ है।
२ सन्तोष प्रसन्नता की कुंजी है।

शहर-दीदार के बाट में पावँ की जागा सर धर्या। अकल देख्या के दिल तो खाना हुआ, मेरी बात उसे बहाना हुआ, बहुत महर-मुहब्बत सूँ, अपने अरकान दौलत सूँ, कुछ फ़िक्र कर, ज़िक्र कर। तीन मँज़िल अँपड़ाता आया। दिल कूँ अकल दिया, समजाया। ऐसे में संघात के लोकाँ कई-सुद पाये, खबर लेकर आये के इस शहराँ में हरनाँ भोत हैं ठारे ठार, बारीकियाँ, मोटियाँ हुइयाँ है आशकार।

बैत—

बला ते यू बुला पैदा हुई है याँ तू टुक डर ना
जहाँ ग़म्ज़ा करे ग़म्ज़े वहाँ आशिक़ ने क्या करना ?
सुलगे हैं वले सुलगे ऐसे दिस नहीं आती
नज़राँ तले दिसती नहीं यू झाला जाती

बैत—

लागे लागाँ यू बाव पर लेने
अक़्ल-दिल दोनों कूँ दगा देने

बारी सूँ जुड़ते, पौन पर उड़ते। यूँ हरन मनहरन। कौन सके इनों कूँ राम करन ? फाँदे में पाड़ेंगे वले फाँदे में पड़सी ना। दुसर्यों कूँ सँपड़ावेंगे, वले अपै सपड़सी ना। हरन तो हैं बहुती च आले, वले हरना में हैं आदमी के चाले। जंगल में रहते उतनाँ च है जो बात नहीं कते। अजब है यू हैवान, सो आदमी का धरते ग्यान। या जिनाँ ने हरनाँ का लिये लिबास; इस बात कूँ खूबी करना क़यास। हरना में एती तुन्दी एती चालाकी कहाँ है ? हरनाँ में एती लताफ़त, एती पाकी कहाँ है ? दिल बादशाह आलमपनाह बात इस धात सुन बहुत पकड्या उमस; इस ठार शिकार खेलने की आई हवस।

बैत—

दिल इश्क़ में हलाक हुए आह भरन सूँ
मँगल शिकार खेल टोन्या के हिरन सूँ

अपै नवी तूती का जाना तेज़ी पर सवार हो हाताँ में ले तार होर कमान, हिरनों के पीछें घोड़े कूँ दिया ताव, या बाव पीछें जानो दौड़ी बाव। इनो कूँ हिरनाँ कतै, वो हिरनाँ न थे। था ग़म्ज़े का हशम। उनो कूँ पकड़ने कूँ कौन कर सकता

राम-मुग्ध
तुन्दी-तेजी
हशम-सेना
झाला-ज्वाला
टोन्या-जादू

हम। उनो कूँ ऐसे शिकार का क्या ग़म ?

बैत—

हिरनाँ ने अपना मुक दिखा ल्याये हैं दिल कूँ किश्त में
सैयाद हुआ है सैद यहाँ क्या सहर है इस दश्त में

दिल नज़दीक आये लगन हरगिज़ दूर नहीं जाते थे। अक्ल होर दिल कूँ, होर उनो के लश्कर कूँ बाटे बाट यूँ च खींचते ल्याते थे। दूर ते खड़े रह कर अपस कूँ दिखलाते, बहुत नज़दीक आये तो निकल जाते। ग़म्ज़े के लश्कर कूँ भी, ग़म्ज़े की आदत पड़ी। हर हिरन एक नाज़ की फुलझड़ी। एक हिरन सदफ़नी, इस नाज़ाँ कूँ ग़म्ज़े ने जनी। एक ग़म्ज़े पर आशिक़ एता खुशहाल, जाँ ग़म्ज़ाँ का लश्कर अछे वहाँ आशिक़ का क्या हाल ?

काँ काँ सँभाले जीव कूँ आशिक़ बिचारा क्या करे
रों रों कूँ दीदे ला लेना ग़म्ज़ाँ के हँकाँते भरे

या इश्क़ का है घाट, दिल एक बाट, अक्ल एक बाट, बारे, अक्ल ने देख्या के दिल कूँ, हुस्न की मुहब्बत का असर चड़या। उस मन-हर की दुम्बाल लग यू तो बियाबान में पड़या।

बैत—

दिल के दिल म्याने शौक़ बल पकड़या
दिल दीवाना हुआ जंगल पकड़या

अक्ल बादशाह, आलमपनाह रह्या थक्या, अक्ल पादशाह, साहब सिपाह कूँ भोत बुरा लग्या। होश आया, खून जोश आया। फ़र्ज़न्द जिगर गोशा, हर दो जहाँ का तोशा। सीना फोड़या क्यूँ जाता है ? फ़र्ज़न्द कूँ छोड़या क्यूँ जाता है ? फ़र्ज़न्द कूँ अगला दिल जानते। फ़र्ज़न्द अगला दिल ईमान ते। महर सूँ मा बाप की; बाक़ी महर पुन-पाप का। दुनिया में सब मिलेंगे यू तहकीक़ जान, ना मिलसी सो मा-बाप होर सगे भाई होर भान। उनो की महर है सो तिलस्म है।

अलक़िस्सा अक्ल पादशाह अपना लश्कर जोड़या। यू भी हिरना के पीछे लग्या। शहर-बदन कूँ छोड्या। काम हुआ किधर का किधर ते ? अक्ल भी फाँदे में

हम-हिम्मत
किश्त-खेत
सैयाद-शिकारी
सैद-शिकार §
§ दश्त-जगल
सदफनी-सौ फनवाली, मक्कार
जिगर का गोशा-दिल का टुकड़ा
तोशा-पाथेय
रों रों-रोम रोम
मनहूम्बा की- ?
पुनपाप-पुण्य पाप
भान-बहन

संपड्या दिल के अधर ते। दिल होर अक्ल दोनों हुए बियाबानी, दोनों कूँ लगी हैरानी। बारे, नज़र होर ग़म्ज़ा, जो दिल बादशाह, आलमपनाह कूँ बुलाने जाते थे, ल्याने जाते थे; सो दिल कूँ च उधर आता देखे। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन खातिर तलमलता देखे। कहे -- अलहम्दुलिल्ला। काम पाया सरंजाम, एताल फ़तह हुआ काम। जिसकी खातिर हमें जाते थे सो वो च अंगे आया। खातिर हमारा तसल्ली पाया। अपस में अपै फ़िक्र किये। यकस कूँ एक अक्ल दिये के हमें तोबा कूँ शिक़स्त देकर नामूस कूँ नंगाये होर अक्ल कूँ भी यूँ डराये जो दिल कूँ अपै च बुला कर दिलासा दिया। ज्यूँ दिल का मुद्आ था वों च तदबीर किया। अक्ल पादशाह दिल कूँ आन देता न था सो अपै अपने लश्कर सूँ आता है। अक्ल बी बड़ा पादशाह है। क्या जाने क्या फ़तवा उचाता है ?

फ़र्द—

नज़र ग़म्ज़ा दो ठग दोनों ध्यारे
अपस में आप नईं कुछ कुछ बिचारे

अताल फ़िक्र यू है जो हमें दिल के कने न जाना। अक्ल होर दिल हमना ना देखे; त्यूँ च इन दोनों कूँ शहर-दीदार के नज़दीक ल्याना। क्या वास्ता के लश्कर होर हशम आता है, देखना खुशी आती है या ग़म आता है। काम क़ज़ा का है, या मलायक वज़ा का है। एक पादशाह एक बादशाह के मुल्क में जाता, क्या जाने किसके जीव में क्या है आता ? बादशाह के मकर ते हज़र करना; भोत डरना। उनो माल-मुल्क पर नज़र धरते। दोस्ती सूँ आते, दुश्मनी करते। मुसहफ़ाँ कियाँ सो अन खाते होर ईमान बदलाते। रिज्क़ पर हात मारते होर अपना दंद सारते। कोई आग सूँ जालता है उनो पानी सूँ जालता है। दग़ा देते हैं, बला में घालते है।

बैत—

बुरियाँ ते भोत मुश्किल खूब आना
बुरा कर खूब किये भी ना पतियाना

अक्ल होर दिल कूँ कते, इन दोनों ने यू मता मते। टोने के शरशोर सूँ, सेहर होर मकर के ज़ोर सूँ। अक्ल होर दिल कूँ कई का कई ल्या फ़ाड़े। इन दोनों नाज़नीनाँ ने उन दोनों आक़िलाँ कू ताड़े।

हशम-सेना † वजा-पुकार सो अन-वह अन्न
क़ज़ा-आदेश हज़र-परहेज़
मलायक-फरिश्ते † दंद-शत्रुता

बैत—

नज़र होर ग़म्ज़े के चाले बला ल्याये
के दिल होर अक़्ल दोनो मिल दग़ा खाये

यूँ च चटक लाते-लाते, काँदे में भाते-भाते, फुसलाते-फुसलाते दीदार के शहर लगन ल्याये, अपना काम फ़तह हुआ कर बहुत ख़ुशहाली पाये। हज़ार-हज़ार अनन्द सूँ हुस्न धन, जग-जीवन, मनमोहन कने गये। सलाम किये। गुज़र्या सो क़िस्सा बोले तमाम किये, सुर्खरू हो आये। वहुत शाबाश पाये। हुस्न धन, मनमोहन, नज़र होर ग़म्ज़े कूँ गले ला ली। ले कुछ बख़्शी, ले कुछ दिये; होर फ़िक्र अपस में किये के अक़्ल बी बहुत बड़ा पादशाह है। बहुताँ का पनाह है। अपने लश्कर सूँ नज़दीक आया है। किसी कूँ पतयाया है, कौन हँसता। कौन रोता, ख़ुदा जाने क्या होता?

बैत—

जो कुछ है सो कना नज़दीक आना
बड़याँ ते बात हरगिज़ ना छुपाना

इस मसलिहत का काम, इस वक़्त का काम यू देख्ये के क़िस्सा यूँ है के बाप कूँ ख़बरदार करना, हुश्यार करना के इस लश्कर कूँ दूर करने का कुछ इलाज करे; कुछ काम हुए, अपना रिवाज करे।

बैत—

आशिक़ जो कोई हुआ उसे आराम नईं च है
अपने सजन के काम बग़ैर काम नईं च है

मकतूब, मक़बूत; माकूल ख़ूब, जो महबूब लिख कर भेजे। बाप कने मज़मून यूँ था उस मकतूब मने के नक़्क़ारा ख़ूब बेबदल सब नक़्क़ाशा में अव्वल। मेरा था एक ग़ुलाम, मानी ते ज्यास्त उसके काम। ख़ुशतबा बहुती च फ़ाम। जिसके काम कूँ देखते दिल कूँ होवे आराम, ख़याल उसका नाम। आज मुद्दत एक है के मेरे पास ते गया है, अक़्ल बादशाह के बन में सँपड रह्या है। अक़्ल बादशाह, ना उसे नानी ना उसे खान देता, ना इधर आन देता। इसे वाँ भोत ख़फ़ा हुआ है, इस पर भोत जफ़ा हुआ है। हमें उसे बुला भेजे बहुत ग़ुस्सा कर, अपने लश्कर होर हशम सूँ आकर। बहुत ग़ोग़ा करता है, फ़ितना बरपा करता है।

सुर्खरू-सफल ख़ुशतबा-सुस्वभाव ग़ोग़ा-शोर
मकतूब-पत्र नानी-रोटी (नान)

फ़र्द

जेता हक़ बोले तो हरगिज़ किसे तासीर नहीं होता
दुनिया का काम मुश्किल है यू भी तदबीर नहीं होता

मँगता है जो शहर-दीदार कूँ, इस गुल भरे गुलज़ार कूँ लेवे, याँ के सब मुतवत्तनाँ कूँ आज़ार देवे। औरत की ज़ात कुछ झूट कूँ सच मिला कर बोली बात के इसकी तदबीर कुछ करना, यू बात ना बिसरना। काम गया हात ते, पीछे क्या फ़ायदा किस बात ते? नुक्ताचीनी बहुत कुछ खूब है, पेशबीनी बहुत कुछ खूब है। तूँ इश्क़ है तुज सूँ अक्ल क्या करना? वले अक्ल मकरी है, उसके मकर ते बहुत डरना। तूँ मस्त व हुश्यार; दग़ा देते केती बार? जेता कोई कुव्वत धरेगा, दग़े कूँ क्या करेगा? जाँ ज़ोर सूँ काम हात नही आता, दुश्मन वहाँ दोस्ती लाता। खुदा ते नहीं डरता, दुश्मन दोस्ती सूँ अपना काम करता। सन्मुख हो जाए आ कर सन्मुख हुंकारे, दग़ा सूँ चिमटी हती कूँ मारे। दग़े सूँ बकरी ग़ालिब बाग पर होवे। दग़े सूँ शर्ज़े पर रूबा वर होवे। यू बात सब खातिर ल्याना, हुश्यार अछना। दग़ा ना खाना। इस बात कूँ हदीस है सुन ऐ अज़ीज़ा—"बेक़तललमूज़ी क़ब्लल ईज़ा" याने क्या हाजत है दन्दी आ कर दन्द सारना, बुराई नईं करे लगी च बुरे कूँ मारना। बुरे ते खुदा कह्या डरो, बुरे के अंग ते च फ़िक्र करो। इश्क़ बादशाह, ज़िल्लिल्लाह, यू वाक़या सुन्या; गुस्से ते सर धुन्या।

बैत—

गुस्सा चढ्या है इश्क़ कूँ अब अक़्ल पर आई बला
क्या हाल आख़िर होवेगा क्यूँ सूसेगा यू ज़ँलज़ला

कह्या अक्ल कूँ वजूद क्या है जो ऐसा काम करे? अपस कूँ रुस्वा हमना बदनाम करे। अगर अक्ल कूँ अपस पर गुमान इतना है तो मैं बी इश्क़ हूँ। खुदा है, यू काम कितना है?

जलालत में यू इश्क़ आया ना होसी कम क़हर हर्गिज़
अक़्ल के गाड़ड़ी ते यू उतरसी ना ज़हर हर्गिज़

मुत्तवत्तन-निवासी
पेशबीनी-दूरदर्शिता
रूबा-लोमडी
वर-श्रेष्ठ
दन्दी-शत्रु (द्वन्दी)

दन्द-झगड़ा (द्वन्द)
रुस्वा-बदनाम
जलालत-शान शौक़त (जलाल-जलालत)

बाग-बाघ शेर
१ कष्टदायक प्राणी कष्ट देने से पहले समाप्त कर देना चाहिए।

अक्ल दीवाना है जो इश्क़ सूँ कलाता, अक्ल कूँ अक्ल अछती तो इश्क़ का माया पाता। अक्ल कूँ एती काँ है ज्यादा सरी, जो इश्क़ सू करे बराबरी। इश्क़ सूँ कुव्वत करनी अक्ल हुई दीवानी: हतियाँ अम्भारिया सू डुबती, बकरी, कुत्ती, मछी केता पानी ? अक्ल इश्क़ सूँ लड़ने आया है, सो अक्ल गुम किया है, क़तरे ने दरिया सूँ हम किया है। ज़रा आफ़ताब सू क्या करेगा ? आतिश आब सूँ क्या करेगा ? चिमटी का सुलेमान सू क्या चलेगा ? ज़मीन का आसमान सूँ क्या चलेगा ?

फ़र्द—

दौड्या है दिल पर अक़्ल के बादल हो लश्कर इश्क़ का
किस-किस कूँ जा कर मारता क्या जाने ख़ंजर इश्क़ का

बारे, महर नाम, खुश फ़ाम। शीरीं कलाम, शुज़ाअत में तमाम। निडर, बेजिगर। हमेशा मुस्तैद अपने काम पर। इश्क़ का एक मिपहसालार था, अपने ठार बहुत हुश्यार था। सब लश्कर ते खबरदार था। उसे फ़र्माया के जफ़ा, मशक्क़त, दर्द, महनत, ग़म, अलम, क़ल्लासी, ज़ारी, बेनवाई, बदनामी, रुस्वाई, फ़िराक़, इश्तियाक़, ज़ारी, ख़ूँखारी, दुश्वारी, फ़ुग़ाँ, आह, आरज़ू, नाला, मुज्तिलाई, हसरत, सोज़िश, तपिश, शैदाई, इम्तग़नाई, बेदारी, बेक़रारी, बेताबी, इज़्तराब, बला, रंज, इताब, आज़ार, अज़ाब, हैरानगी, परेशानगी, सरगर्दानगी, दीवानगी यू वज़ीर, बड़े-बड़े सब हाज़िर खड़े। उनो के जी की बात ले, उनो का दिल हात ले, उनो कूँ अपने संघात ले जाँ ऐसे अछे वज़ीरों, वहाँ किस कियाँ क्या चलेगियाँ तदबीरा। जो कोई उनो का नावँ सुनता सो डरता। उनो सूँ कौन लड़ने, कौन दावा करता। यू नाम के वज़ीर, बहुत बड़े कामाँ के वज़ीर। होर मशरिक के उधर का जेता लश्कर है बाक़ी वज़ीर सरदार जेता नर है, कारगर है। यू सब एक बार शहर-दीदार के उधर लेजा; बारे अक्ल होर दिल के लश्कर सूँ टुक झगड़ा बजा उस लश्कर कूँ बेजान कर, बखाक यकसाँ कर दाना दान कर, परेशान-सरगर्दान कर के दुसरा ऐसे ते डरे। दुसरी बार भी कोई ऐसी चाल न करे·

इश्क़ लश्कर दवाँ किया सत का
वक़्त आया है अब क़यामत का

क़हर-संकट
क़ल्लासी-अकिंचनता
बेनवाई-दरिद्रता
फ़ुगाँ-शोर †
† इज़्तराब-उद्विग्नता
मशरिक़-पश्चिम
इताब-क्रुद्ध

मर्द बेहिम्मत ना अछना, हिम्मत धरना। दुश्मन कूँ अपस पर दिलेर न करना। जाँ अदब, वाँ सब। जितना क़ायदा, उतना फ़ायदा। बेअदब-बेतमीज़, अदबदार सब कूँ अजीज़। मेहर सिपाहसालार ने, मर्द कारज़ार ने जूँ इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह, साहब-सिपाह ने फ़रमाया था, जूँ इश्क़ की ख़ातिर में आया त्यूँ सब लश्कर जमा किया। सब नर जमा किया। एक ते एक खूबतर जमा किया। चारों तरफ़ सब बाँद, ज्यूँ फ़ौलाद की काँद। बिस्मिल्ला कर, हिम्मत धर, अक्ल होर दिल के लश्कर पर चल्या, जो क़ोह-क़ाफ़ का डूँगर हिल्या।

दिलाने किया है काम यू इस अक़्ल पर क्या बोल है
दिल के उधर ते अक़्ल बी हैरान डाँवाडोल है

अक्ल यू फ़ौज़ाँ, यू क़हर के दरिया की मौजाँ देख अपनी जागा ते हिल्या, तलमल्या; हैबत ते अपस में अपै गल्या।

फ़र्द

यू वाक़ा अक़्ल कूँ आया सो इस दिल की उलाल्याँ ते
बला मा-बाप पर आती है फ़र्ज़न्दाँ की चाल्याँ ते

ना जान कर, गुमान कर ऐसे कामाँ में पड़्या, अपै अपनी अक्ल सूँ, अपै इस दाम में पड़्या। इश्क़ का माया नही पाया, ऐसी अक्ल ते यहाँ दग़ा पाया। फ़ितना जाग्या, झगड़ा लाग्या। अव्वल, एक दीस ग़म्ज़ा आकर अक्ल के मूँ पर चड़्या, खूब दो-दो हात लड़्या। अक्ल कूँ सँभालते मुश्किल पड़्या। दुसरे दीस क़ामत ने इस्तक़ामत किया। अक्ल के लश्कर में क़यामत किया। तिसरे दीस के रात कूँ ज़ुल्फ़ जा कर शब खून पड़ी। कोती थी सो हुई बड़ी। बहुताँ कूँ टीची ठार-ठार, धुवाँ होकर घेरी। नाग होकर चारों तरफ़ लड़ी, बहुत क़ायम घड़ी।

फ़र्द

जो ग़म्ज़ा आये लड़ने कूँ अक्ल उस ठार क्या करना ?
उठेगा हात क्यूँ इस ठार यहाँ तरवार क्या करना ?

वैसे में खुशबोई की बास के दिल कूँ जलानहारी थी। दिल कूँ भोती प्यारी थी। दिल में होर उसमें भोती यारी थी। ग़मख़ारी थी। वो हुई दिल के उधर,

---

दवाँ-जारी करना † दाम-जाला उताला-जोश
कारजार-योद्धा † कोती-गिट्ठी, छोटी भोती-बहुत ही

दिल कूँ कही नको डर। यू बाव काँ लगते उसे किसके ज़कम, ज़ख़्म का उसे क्या ग़म? अगर बारह हज़ार जने मारेंगे तो बी मारामारी च हारेंगे। यू बाव बारा-इस सूँ किसका क्या चारा? आड़े वक्त दिल कूँ मदद आई, बारे सँभाली, यारी कूँ क़रार रखी। दिल अपना एक ठार रखी। मुहब्बत कूँ पाली अपने आशना ते। बोली काम हुआ है मुश्किल, एताल हिम्मत छोड़ने में क्या हासिल? मारना या मरना अपना नाँव करना। न्हाटे तो क्या आवेगा? न्हाटे कूँ क्या बाँचने पावेगा? बख़्ताँ में लिखा सो क्या जावेगा? ना न्हाटे तो ख़ुदा कूँ बी भावेगा। जीव कूँ केता डरना। यू मर्दी का वक्त है। कुछ तो बी करना। जीव गया तो क्या वले शर्म ना जाना, न के जीव होर शर्म दोनो गँवाना। यूँ हुआ तो मर्दों में मर्द क्यूँ कहवाना। होर लोकाँ में भी क्या मूँ दिखलाना? यूँ हज़रत की हदीस है सुन—'क़ैद क़तल इन्दा इज्ज़त फ़हो शहीद' याने जो कोई अपनी इज्ज़त खातिर मार्या गया सो शहीद है। जो कोई अपनी इज्ज़त खातिर उतार्या गया सो शहीद है। दिल कह्या खूब कही—ऐ सुबास, रासकरास, इस वक्त मुझे तेरी च है आस। मै भी दिल हूँ। बड़ा हूँ, क़ायम होकर खड़ा हूँ। क्या करूँ? इश्क़ होर हुस्न का लश्कर क़वी है। यू इश्क़ का गहवारा नई। बागाँ की गवी है। यहाँ बागाँ ही फाड़ेंगे, हड्डा में ते गुद झाडेंगे। यहाँ जीव ते उटना, अपना लहू अपै घुटना। यहाँ मर्द कूँ मरन का क़िस्सा है, यहाँ बाग होर हिरन का क़िस्सा है। यहाँ चिमटी अंगे हतियाँ हारे। इस जगल के कोल्याँ ने शर्ज्यां कूँ मारे। नबी होर वली जो वैसे थे मस्त, वैस्याँ का लश्कर याँ खाया शिकस्त। मैं बी यहां हात जीव ते झाड़्या हूँ। हिम्मत किया हूँ, तन-खाम गाड़्या हूँ। कुए में पड़ कर रसरी काटना नहीं च फबता, आशिक़ कूँ न्हाटना नहीं च फबता। दिल तो हिम्मत धरता, देखे अताल खुदा क्या करता? "आमन्त बिल्लाह तवक्कल तो अलल्लाह" जू फ़ारसी में कता है उस्ताद के "[2]ज़देम बर सफ़ेन्दाँ च बादा बाद," बारे, वो सुबास जो दिल कने आई थी, दिल सूँ दिल ल्याई थी। उनने खूब दो-चार हमले करी, बहुत ते हिम्मत भरी, हिम्मत धरी। हिम्मत बड़ाई, फ़ौजाँ उचाई। इश्क़ के लश्कर कूँ हैरान करी, परेशान करी। सरगर्दां करी।

क़वी-शक्तिशाली
गहवारा-झूला, पालना
बाँचना-बचना
बख़्ताँ-(बख़्त) भाग्य, ब.व.
रासकरास-ठीक ठीक
बागाँ-(बाग) शेर ब. व. §
§ गवी-गुफा
हड्डा-हड्डी
गुद-गूदा
कोल्याँ-(कोला) सियार ब.व.
जीव ते हाथ झाड्या हूँ-जीव से हाथ धोये हैं

१ मैंने ईश्वर पर भरोसा किया और ईमान लाया।
२ हमने अपने को शराबियों में शामिल कर लिया है, अब जो कुछ होना हो, हो।

फ़र्द

लहवे नाज़ाँ के हाताँ में है दिल ना मिल झगडता क्यूँ ?
के अक़्ल होर इश्क़ का झगड़ा यकायक यूँ निबड़ता क्यूँ ?

चौथे दीस ये झगड़ा आफ़ती निबड्या नहीं च था। यू ग़ोग़े यूँ च था। अपस में अपै लड़ते थे, झगड़ते थे। ना यू न्हाटते, ना वो न्हाटते। एक कूँ एक डराते। एक कूँ एक डाटते। अटाअट था, काटाकाट था। डाँवाडोल सब शहर था, यू कुछ खुदा का क़हर था। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन लश्कर ते ऐसी ख़बर पाई, बहुत हैफ़ी खाई। दिल पर शिकस्त ल्याई के आख़िर खुशी है या ग़म ? इस झगड़े का क्या है आलम ? यू झगड़ा क्यूँ आख़िर निबडता है ? किस पर क्या वक्त पड़ता है ? क़ज़ा ए आसमानी, बला-ए नागहानी। फ़तह-शिकस्त खुदा के हात, यहाँ न की जाए बड़ी बात। हैरान हुए, अँदेशवान हुए। आख़िर वो बिन पर की परी, अपस में अपै कुछ फ़िक्र करी, हिम्मत पर दिल धरी।

बैत—

हरेक काम अव्वल अख़्तियार कर करना
जो काम करते उसे टुक बिचार कर करना

अपने ख़ाल कूँ, आलम के काल कूँ, जग के जंजाल कूँ, उस नेकख़ाह, नमक बरहलाल कूँ बुलाई। उस सूँ मशवरत ल्याई।

फ़र्द—

वो मनहर दिलरुबा औतार सूरत
सो उस काली बला सूँ की मशवरत

उन ख़ाल ने बोल्या, आलम के काल ने बोल्या, जग के जंजाल ने बोल्या, हुस्न के नमक हलाल ने बोल्या के ऐ हुस्न धन, जगजीवन, के तुझे कोह-क़ाफ़ की परियाँ में एक हमज़ाद है, तुज ते उसका दिलशाद है। आलम उसे देखन कूँ आरज़ू-मन्द है। सरमस्त आज़ाद है। बहुत दिलावर, बहुत ज़ोरावर। किसी ते न डरे, जाँ जावे वहाँ फ़तह करे। जेता कोई शुज़ाअत में पनवाया, उसके मूँ पर कोई नईं आया। जो कोई मैदान में मर्द होकर निकलता, उसके आने च ते गलता। जैसे मर्द में मर्दाने अन्दाज़ नईं, उसके अंगे हात उचाने। तक्या कर खड़े रहने किसे ताब ? सामने आकर कौन दे सकता जवाब ? हटीली हट भरी; ज कुछ कही सो करी। खुश शक्ल, क़बूल

गोया-शोर
ख़ाल-मस्सा
नेकख़ाह-शुभाकांक्षी
हमज़ाद-सहजात

सूरत, मनहर मूरत। रूप बहुती च आला, जाँ बैठे वाँ पड़े उजाला। हंस तो फूल झड़े बोले तो नबात हीर मोती पड़े। जो कोई देखे सो बेताब होवे, जागना उसे खाब होवे।

बैत—

बराए ख़ीश ते देख्या न जावे
अज़ीज़ होवे सो वक़्त पर काम आवे

वो यहाँ आये तो बहुत भला है, वो आदमी नहीं एक बला है। वो धन टुक भार निकले तो बस। खुदा दिया है उसे हुस्न। बले ऐसी जागा पर करी है घर के हर्गिज़ नहीं पड़ता किसी के नज़र। वहाँ जाँ कोई किसे दिसे ना, उसका निशान कोई किसे दिसे ना। उसका नाँव बी हुस्नी च है। उसे बी हुस्नी च कते हैं, जेते उश्शाक़ दुनिया में रहते हैं।

फ़र्द—

खोल कर क्या कहूँ के कैसी है
हुस्न की भान हुस्न जैसी है

वो भी ली नाज़ा, लई झड़ाँ, लई ग़म्ज़े, लई इशवा कुल्ल धरती है, आशिक़ाँ पर जुल्म करती है। तेरे यहाँ इतना जो कुब्बत धरे तो क्या अजब? आशिक़ाँ पर यूँ जुल्म करे तो क्या अजब? तुज में क्या इश्वा थोड़ा है? वो भी तेरा च जोड़ा है। एक कूँ छुपाना, एक कूँ दिखाना, नादिर है तुमें दुनिया में दोनों भाना। तुमें दो फूल, दो तारे, दो दीवे, दोनों मानिक झमकावे। दो परियाँ, दो हूर, दो चाँद, दो सूर, दो हुस्न कियाँ बहरियाँ, दो हुस्न के बाज़। दोनो साहब सूरत, दोनो साहब-नाज़। दो गुलज़ार, दो बादशाह ख़ूंखार। दोनो साहब सिपाह। दोनो कूं खूबी बख़्श्या है इला। दो सरो, दो शमशाद। जिनो का क़द क़ामत देख खुदा आवे याद। दो सखियाँ, दोनो भी दो आलम की आँखियाँ। दोनों दो बहिश्त। दोनो दो आलम की आस की किश्त। यू दो महबूब, दो नादिर नारियाँ, आशिक़ाँ के दिल का मुराद बख़्शनहारी। जीव कियाँ प्यारियाँ। सब गुन में सारियाँ। जो कोई उनो सूँ जीव ल्यावे, वो हर्गिज़ न मरे। दोनों दो आब-हयात के झिरे, जाँ ऐसी

बराये-लिए, वास्ते
उश्शाक़-प्रेमी (आशिक़ का ब. व.)
इला-अल्ला
सरो-एक पेड़ (इस पेड़ की क़द के लिए उपमा दी जाती है)
शमशाद-एक पेड़ (सीधेपन के कारण प्रेमिका का उपपद)
धन-स्त्री
भान-बहन
लइ-बहुत
बहरियाँ-बहरी का ब. व.
झिरे-झरने

मनमोहन हुई यार, वहाँ खिज़र होना केती बार ? तुमें दोनों बी दो आफ़ताब, इस शराब कूँ बी होर एक होना किताब । अगर तूँ होर वो दोनो मिल कर आते हैं तो अलबत्ता इस अक्ल पर ज़फ़र पाते हैं । दिल मूँ तो यारी है, दिल का झगड़ा सितारी है । बाप है कर दिल अक्ल के पास है, वले उसे भोत तेरी च आस है । दिल हुस्न के गुलाम का है गुलाम, उसे लड़ने झगड़ने सूँ क्या काम ? इधर बाई, उधर कुवा है । उस बिचारी कूँ भी भोत-भोत मुश्किल हुआ है । वो आशिक़ अहल है, उसका काम सहल है, हुस्न धन, मनमोहन, जग-जीवन ने बोली क्या-क्या फ़ायदा, वो गुल-गुल वचन ने बोली के क्या फ़ायदा ? झगड़े कूँ आ खड़े हैं हुस्न होर दिल, वो मदद आये लग बहुत मुश्किल । अताल हमें झगड़े की लाफ़ में, वो हमज़ाद हमारी कोह-काफ़ में, दर्द खुरासान में, दारू हिन्दुस्तान में । वो दारू को आता की उसका दर्द जाता ? अगर दारू करनहारे कूँ यू है फ़ाम, दारू आये लगन दर्दमन्द का काम तमाम । शाबाश, तुज सूँ मशवरत करे सारी रात, तूँ मुज सूँ बोल्या आखिर ऐसी बात । मैं तो तुजे आक़िल कर जानी थी, तुज में कुछ अक्ल है कर पछानी थी । ख़ाल ने कह्या, आलम के काल ने कह्या, जग जजाल ने कह्या, हुस्न के नमक हलाल ने कह्या ।

फ़र्द

नाज़ में अपने मस्त महबूबाँ
नाज़ पर नाज़ करते हैं खूबाँ

तूँ हुस्न है । तुझ में नाज़ कियाँ बाताँ बहुत हैं । तुज में ग़म्ज़े कियां हिकायताँ बहुत है । हरेक बोल तेरा नाज़ होर ग़म्ज़े सूँ आता है, नाज़ होर ग़म्ज़ा तुझे भोत भाता है, सुहाता है ।

फ़र्द

आक़िल जो कहता बात वो उस बात में माना है कुछ
ग़ाफ़िल न हो अंदेश देख इस ठार पै पाना है कुछ

कुछ समजना है, कुछ पाना है, दिल कूँ बेग़म करना है । क्या वास्ता के मेरे पास एक अम्बर का दाना है, बहुत पुराना है, जिस वक्त के मैं आग पर रखूँगा, उस अम्बर के दाने कूँ तो केती बार है तेरे हमज़ाद कूँ तुमरे पास ल्याने कूँ । घड़ी

खिज़र-एक पैगम्बर, पथ प्रदर्शक
बाई-बावडी
बाई-बावड़ी
अम्बर-एक सुगन्धित पदार्थ,
अहल-पात्र
यह समुद्र के किनारे प्राप्त
लाफ़-डींग, शेखी
होता है ।

में आयेगी पौनवारी, वो है परियाँ में रहनहारी। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन यू बात सुन निपट फ़ारिग़ बाल हुई उस इशारत ते, उस बशारत ते बहुत ख़ुशहाल हुई, जूँ फूल-फूले लाल-गुलाल हुई। ख़ाल फ़िलहाल उस अम्बर के दानें कूँ आग पर जलाया। उस हुस्न के हमज़ाद कूँ हाज़िर कर हुस्न के हुज़ूर ल्याया। हुस्न देख हुई हैरान। यकायक यू किधर ते पैदा हुई यहाँ। परिया में ते आई परी, यू बी बहुत तवाजो करी। बहुत ताज़ीम करी। वो नाज़ होर ग़म्ज़े की घड़ियाँ, एक कूँ एक देख दोनों हँस पड़ियाँ। बारे, बाद अज़ मुलाकात, हात में ली हात। दोनों सगी, चकल-चकल गले लगी।

बैत

दो बिछड़े दो अज़ीज़ाँ आ मिले हैं
दो गुंचे दोनों फूल होकर खिले हैं

माज़ी, मुस्तक़बिल, हाल; एक का एक पूछे अहवाल। एक गत में रात, अक़्ल होर दिल के लश्कर का क़िस्सा काड़ी, अपने राज़ का पर्दा फाड़ी। काटे का ज़ख़्म, घाव, दर्द कही। अपने हमदर्द पास दर्द कही के हमना होर दिल में आशिक़ी होर माशूक़ी की निस्बत दरम्यान है। दो तन हैं वले दो तन कूँ एक जान है।

दोहरा—

जे मैं कही सो उन कहा प्रीत है उस भात
दो मन का एक मन भया अब दो की एक ही बात

दिल बाप के मुलाहिज़े सूँ चुप झगड़े में आता है। नहीं तो यू झगड़ा उसे कधाँ भाता है। वो आशिक़, साहब-सुरत, साहब-मुहब्बत; उसे झगड़े सूँ क्या निस्बत। बात अजब है, उसके झगड़ने कूँ एक सबब है। यहां कुछ हम नहीं। उसका कुछ ग़म नहीं। वले झगड़ा अताल अक़्ल सूँ आ पड्या है, क़िस्सा मुश्किल घड्या है। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन की बात, हुस्न की हमज़ात सुन सब ख़ातिर ल्या बिचारी; कही—'ख़ुदा है उर नको।' अक़्ल क्या अठेगी बिचारी, मदर नाम जो इश्क़ का सर-लश्कर था, सब पर वर था। हुस्न के हमज़ात, हुस्न ने बी अपना नाज़, अपना ग़म्ज़ा, अपना शेवा, अपना चाला, अपना छन्द-बन्द सब उसकी

फ़ारियबाल-सन्तुष्ट, निश्चिन्त हाल-वर्तमान
बशारत-शुभसमाचार सरलश्कर-सेनापति
माज़ी-भूतकाल पौनवारी-हवावाली
मुस्तक़बिल-भविष्य काढ़ी-निकाली §
§ कधाँ-कब
छन्द-बन्द=छल कपट

मददगारी कूँ भेजी, उसकी यारी कूँ भेजी। मत दी, हिम्मत दी। मर्दाना अछ कही, तवाना अछ कही, दाना अछ कही, अपनी इज्ज़त की शमा पर परवाना अछ कही।

बैत

नाज़ ग़म्ज़े तमाम भार रुचे
दिल के तईं भार ठार-ठार रुचे

होर हुस्न कने एक हाजिब था आक़िलकारी, ख़ूब कसता था कमाँदारी। बेखता तीर मारे, एक तीर सूँ हदफ़ उतारे। उड़ता जनावर तो उसके आगे जाता कहाँ? चलता सो जनावर तो उसके आगे आता कहाँ? कमादारी का दीवा उसके घर जग्या है; खयाल सूं तीर मार्या, सो तीर लग्या है। वो तीर अगर डूगर कूँ मारे तो पैलाड़ जावे निकल, उसका तीर आशिक़ाँ का अजल। बाल सूँ बारीक उसका तीर, पौलाद कूँ सटेगा चीर। यहाँ हैरान, हम पादशाह, हम फ़क़ीर; सब आजिज़, किसकी नहीं चलती तदबीर। जो आशिक़ सामने आया, बेखता एकाधा तीर खाया। नावें उसका हलाक कमाँदार; धाक उसका ठारें-ठार। इस शहबाज़ कूँ भी, इस तीरंदाज़ कूँ भी, हुस्न उस महर सिपहसालार कने, उस हठीले सरदार कने, उस शूरवार कने मदद कूँ जा कही। वेग फ़तह कर आ कही, सुर्खरू होकर हमना मूँ दिखला कही।

बैत

खुदा इज़्ज़त रखे जिस वक़्त साहब काम फ़रमावे
नफ़र का नियत होवे साबत तो हिम्मत ग़ैब ते आवे

यू साहब-जमाल, यू साहब-इक़बाल, हलाक कमाँदार, ग़ज़बनाक क़हार, महर सिपह सालार सूँ, साहब-तलवार सूँ मिल कर, एक दिल कर बहुत क़रार किये। बहुत अख़्तियार किये। बात कर खातिर निशान किया। हात में तीर कमान लिया। इश्क़ का लश्कर, बहुत बर-ज़ोर हुआ। लश्कर मे सब शोर हुआ। लइ ग़म्ज़े, लइ इश्वे, लइ नाजाँ मिले। लई ओबाशाँ लइ दगेबाज़ा मिले। कुछ काम हुआ, लश्कर सब हेच हुआ। शुज़ाअत का शराब सर चड्या; हलाक कमाँदार बिस्मिल्लाह कर, अल्ला अल्ला कर अक्ल के लश्कर में जा पड्या। चारों तरफ़ ते उस पर मार पड़ी। मजलिस अजब खड़ी। हलाक आशिक़ाँ का काल, दिल घट किया; तक्वा निपट किया। हुआ ख़ुदा का लोड्या; वले अपनी हिम्मत नहीं छोड्या। मर्दाना था; दाना था, तवाना

तवाना-हृष्टपुष्ट
हाजिब-द्वारपाल, पर्दादार
हदफ़-शिकार
क़हार-कहर ढानेवाले
ओबाश-आवारा
मत-मति
दीवा-दीपक
लइ-बहुत

था, अक्ल कूँ जा कर हट किया, हंकार्या। बाप के झल ते, अपनी कुव्वत के बल ते, ना देक सक कर उस गुलग़ाल में, उस क़ील व क़ाल में यकायक दिल म्याने म्यान आया, सो ना जान कर उना च ते दिल कूँ तीर मार्या; दिल कूँ घोड़े पर ते उतार्या। झगड़ा वेग नहीं भग्या, किसे मारने गया सो किसे लग्या। जेता कोई ग्यान धरे, क़ज़ा कूँ क्या करे? क़ज़ा कूँ क्यूँ सबाले। क़ज़ा कूँ क्यूँ टाले? मुसहफ़ में यूँ दिये हैं ख़बर "इज़ा जाउल क़ज़ा अमा अल बसर" याने जो आता है क़ज़ा तो अँखियाँ कूँ अँधारी आ कर अँखियाँ होतियाँ एक बज़ा। अक्ल दिल कूँ घोड़े पर ते पड्या देख्या; काम मुश्किल घड्या देख्या। अक्ल घाबरा हुआ, अक्ल का सीना फाट्या। अक्ल का लश्कर सब न्हाट्या। क्या नहना क्या बड़ा; एक जना नहीं रह्या खड़ा।

बैत

इश्क़ सुलतान इश्क़ सरवर है
इश्क़ दायम अक़्ल ऊपर वर है

अक्ल गई जंगले जंगल, अक्ल कूँ वक्त आया कुयल। अक्ल डावांडोल, किसे यू क़िस्सा कहे खोल। क़ज़ा यूँ घड़्या; अक्ल पर आसमान टूट पड़्या। बादशाहाँ कूँ लश्कर खूब रखना कते सो इस खातिर। जवाना दिलावर खूब रखना कते सो इस खातिर के ऐसे वक्त पर काम आवे। पादशाहा की इज्ज़त रखे। पादशाहाँ के बचावे। अव्वल के पादशाहा जो खूब जवाना रखते थे, सो कुछ जान कर रखते थे। अपनी इज्जत, अपनी शर्म, अपना नेम-धरम पछान कर रखते थे। जो पादशाह अव्वल ते यू गत नई पाया उन आखिर यू च दग़ा खाया। अक्ल कूँ अताल अक्ल आई। पछताने लग्या। सर कूट लिया। मूँ में माटी भाने लग्या। अव्वल ते नहीं रख्या अपना क़ायदा, अताल पछतावे तो क्या फ़ायदा। सब छोड़ कर हुआ बहुत बेतदबीर, ये थी तक़दीर? बारे, यू अक्ल तायब हुआ, खुदा जाने किधर ग़ायब हुआ!

बैत

अक़्ल ने अक़्ल सूँ किया नहीं काम
लश्कर अपना किया ख़राब तमाम

कोई कता शहर-बदन कूँ गया फिर, कोई कता पानी च में पड़्या गिर। कोई

गुलगाल-शोर-पुकार
क़ील व क़ाल-बातचीत, बहस
तायब-तोबा करके जो पवित्र हो गया।
झल-ज्वाला, प्रताप
देक-देख
उनाचते-उनसे ही
फाट्या-फटा
१ जब मृत्यु आती है इन्द्रियाँ काम करना छोड़ देती हैं।

कता झगडे च में मारे गया; कोई कता बाट में किसके हात उतारे गया। कूँचे-कूँचे यू हिकायताँ यू हज़ार जने, हज़ार बाताँ। ताले अक्ल का कज हुआ। अक्ल का काम बेसज हुआ। दिल के बख़्ताँ में भी लिख्या था सो अँपड़्या, दिल बी हुस्न के हात में सँपड़्या। आखिर हुस्न फ़तह हुआ। ज्यूँ मगती थी कते हुए। फ़तह का बाजा बजने लग्या, हुस्न का दरबार गजगजाने लग्या। हुस्न धन, मनमोहन, जग जीवन परी, खुदा की दरगाह हज़ार हज़ार शुक्र करी। शुक्र कर ग़म कूँ दिल पर ते बिसराई, अपनी जुल्फ़ कूँ फ़रमाई के अक्ल पीछे दौड़-भग, ना संग देख ना रेग। अपने तारों सूँ, धुए की धारों सूँ, इसके सरदारों सूँ, इसके यारों सूँ, उसके ख़िद-मतगारों सूँ, उसे जकड़ लिया, पकड़ लिया, आपसी बहुत पनवाया, अताल क्यूँ गँवाया ? लाफ़ कर आते होर यूँ न्हाट जाते ? यू लाफ़ मार कर यू क्या किया लोक-हँसाई ? न्हास जाने लाज नहीं आई।

फ़र्द

अक़्ल ग़ाफ़िल हो भोत पछताया
वहम बोल्या सो सब अंगे आया

अक्ल जो सिसे के पाँवँ लगा कर जावे, तो बिचारी जुल्फ़ किधर ते खींच कर ल्यावे।

बैत—

जो नसीबाँ में था सो वो अँपडया
अक़्ल न्हाव्या फ़क़ीर दिल सँपडया

दिल आशिक़ कहवाता, हबसाँ सूँ ज़ख़्माँ खाता। माशूक़ ज़ख़्म, आशिक़ कूँ बेअज़ मरहम। आशिक़ी हैरान होने के खातिर करते है। आशिक़ी परेशान होने के खातिर करते हैं। तपने-तरसने खातिर करते हैं। आशिक़ी आँखियाँ में ते अंभुवाँ बरसने खातिर करते हैं। फ़ारसी में एक कूँ किने पूछे के इश्क़ क्या है कुछ मार दम; उसने कह्या—'सोख़्तम, सोख़्तम, सोख़्तम।' आशिक़ी हैरानगी कूँ म्याने म्याँ ल्याता। परेशानगी का लज़्ज़त पाता है। आशिक़ है तो आशक़ियत पछान; हज़ार जमीयत उस इश्क़ की एक परेशानी पर क़ुरबान। अगर इश्क़ की लज़्ज़त किसे याद है तो एक साअत के रोने में आलम-आलम का सवाद है। इस आराम में, इस बेताबी का राहत है, किस आसूदगी में इस महनत का फ़राग़त है। तपना-

---

ताले-भाग्य
कज-टेढ़ा
संग-पत्थर
रेग-रेत §
§ न्हास-मनहूस
सोख्तम-मैं जला
बेसज-बेढंगा
गजगजना-चहल पहल होना, शोर गुल होना
पनवाया-प्रण कराया (?)

तरसना लग्या सवाद, तो नाँवँ पकड्या मजनूँ तो ठावँ पकड्या फ़रहाद। यू आग दिल में रखे तो भाती। यू इस आग पर चलने हवस आती। यू महनत राहत भरी है; इस ग़म में ख़ुशी धरी है। यू ज़हर है, वले आब-हयात का काम करता है, यू तो कड़वा है, वले मिठाई पर लाफ़ धरता है। आशिक़ इश्क़ के ज़ोर सूँ जिया है तो यू महनत सूसना तो आशिक़ी क़बूल किया है। जिन आशिक़ इश्क़ की आग सूँ, इस बिचाक सूँ रोशन किया दिल के दीवे की बाती। इस दीवे पर बाव काम नहीं करती। इस दीवे की जोत कधीं नहीं जाती। ज्यू फ़ारसी में भी यूँ कता है—

बैत—

अगर गेती सरासर बाद गिरद
चिराग़े मुक़बिलाँ हरगिज़ न मिरद

बाव-बारे कूँ कुदरत कहाँ यहाँ आने, पानी में की आग बिजली क्या जाने? मर्ग नहीं है इश्क़ में जीवनहारे कूँ, कौन मार्या है पारे कूँ? पारा कईं मरता है; मुवा तो जीवने ते बहुत काम करता है। आशिक का वजूद कीमिया तासीर है, अक्सीर है। आशिक़ के वजूद में जिन्स-जिन्स की तासीर है। इश्क़ की आग में जल्या सो वजूद। यार खातिर तलमल्या सो वजूद। कामिल वजूद, वासिल वजूद, साहब-हाल वजूद, साहब-इक़बाल वजूद। जिस वजूद में खुदा सँपड गया, जिस वजूद में खुदा घिर गया, जिस वजूद कूँ काबा कह्या जावे, जिस वजूद में खुदा कूँ देखने खल्क़ आवे। जिस वजूद में खुदा किया है ज़हूर; जिस वजूद में सात आसमान, सात ज़मीन का नूर। बारे, कता हूँ तुज धर। जो बात कता था सो आई बात भी फिर। दिल कूँ हुस्न के झगड़े में लग्या तीर, दिल हुआ ज़ख़्मी असीर; फ़क़ीर, बेतदबीर। इधर दर्द करते ज़ख़्म, उधर बाप की परेशानगी का ग़म। बहुत हुआ दरहम, हैरान हुआ मुस्लिम। माशूक़ के झगड़े की चोट, आशिक़ लोट पोट। जे कुछ पड्या सो सहा। हुस्न खातिर जीव पकड़ कर रह्या। नहीं इस हाल सूँ जीना किस का मजाल था, मुहाल था। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन ने भी दिल कूँ इस हाल देख दिल का एक वज़ा सूँ खयाल देख पुकारी, आह मारी। अँखियाँ में ते अंभुआँ ढाली; मुहब्बत की आग सूँ सीना जाली। कहीं किन मुवे ने दिल कूँ तीर मार्या, किन मुवे ने उस गुल में यूँ दन्द सार्या। दिल के दिल में अला-बला ली। किनने मार्या कर बहुत डाह्याँ, बहुत गालियाँ दी। अक्ल कूँ छोड़े, दिल कूँ पकड़ ल्याये।

लाफ़-बड़ाई, शेखी
मर्ग-मृत्यु
कीमिया-रसायन विद्या
तासीर-स्वभाव, परिणाम
विचार-?
बाव-वायु
? हवा चलने से चाहे सारी दुनिया नष्ट हो जाए लेकिन भक्तों का दीपक प्रकाशमान रहेगा।

यू तो बला में पड्या च था भई के इस बला में भाये। मैं कधाँ कही थी के दिल कूँ यूँ हलाक बेआराम करो। मैं कधाँ कही थी के ऐसा काम करो? यू मुवे नफ़राँ नहीं डरते; कुछ फ़रमाये तो कुछ करते। उनो का क्या जाता। उनो तो कर जाते, हमना पर दुख आता। बारे, हुस्न परी, औतार इस्तरी आक़िल थी। अक्ल में क़ामिल थी। अपस में अपे अदेशी के यू झगड़े का काम है। इस शोहे में कौन किसे पछानता। क्या किसे फ़ाम है? न वहाँ साहब जान्या जाता है न नफ़र, जिसे खुदा देता उसे कुदरत सूँ कुछ होना जफ़र।

फ़र्द—

झगड़े में साहब होर नफ़र काँ है
किस की किसके ऊपर नज़र काँ है?

यू अपना होर पराया जानने की जागा नही है। यू आशना होर बेगाना पछनाने की जागा नही है। न दोस्त जान्या जाता न दुश्मन। मारामार होती चारों कधन। कोई किसे हिटकता न पुकारता। जो कोई जिसके हात तले आया वो उसे मारता। अक्ल उस वक्त आकर अकल नहीं करती। दीवानगी आकर अंग में भरती। तन सब होता सुन, हात चलता होर मारने च की रहती धुन। यू अपना-अपना वख़्त है। क़यामत का वक्त है। यू काम किसकी अक्ल में नहीं आता। खुदा जाने उस वक्त क्या हो जाता?

अलक़िस्सा हुस्न धन, मनमोहन कूँ एक दाई थी, दिल उसका इनने पाई थी। उसका नावँ नाज़। बहुत चतर, चौसार, वर साज़। हुस्न सूँ दायम हमराज़। हुस्न ने दिल के इश्क़ की कही बात। मशवरत करी उस दाई संगात के दिल मेरा दीवाना। मै दिल की दीवानी; दीवाने दोनो मिले तो च दोनों की ज़िन्दगानी। वो भी बेताब, मै भी बेताब; दोनो कूँ घड़्या है इज़्तराब। दोनों कूँ नहीं आती खाब। क्या जाने क्या लिख्या हमारे दोनो के बाब? वले ल्योगों का म्याने म्यों बहुत है हिजाब। मिलना तो लग्या है क़ज़ा सूँ, वले अताल बेगी च मिले तो खल्क़ मे दिसता एक वज़ा सूँ।

बैत—

जिसके ख़ातिर जेता तपेगा दिल
शर्म लोकों की होवेगी च हायल

बारे, इश्क़ पादशाह कने, साहब-सिपाह कने, महर सिपह-सालार कूँ भेजे। उस औबाश-रिन्द-अय्यार कूँ भेजें।

जफ़र-सफ़लता † औबाश रिन्द-आवारा अंदेशी-अनुमान लगाया
इज़्तराब-उद्विग्नता † अय्यार-मक्कार कधन-तरफ

बैत—

हुस्न कुछ अपने दिल मने कुन्द कर
इश्क़ कन भेजी यू फ़तह की ख़बर

के हमना में होर अक्ल में जूँ निवेर्या, झगड़ा क्यूँ निबड़ता। अक्ल नामर्दी की बाट न्हाट गया सो ख़बर अपडावे। होर इश्क़ क्या कता सो ख़बर ल्यावे। ता देखे के इश्क़ इस बाब क्या फ़रमाता? उसकी खातिर में क्या आता? बड्यों की बड़ी अक्ल। नहन्यौं अक्ल में हज़ार ख़लल। अगर जेता अक्ल धरे बच्चा; आख़िर भी कच्चा सो कच्चा। हदीस यूँ है आई के—"अस्मबी यू सबीयुन व लोकाना इब्नुलनबी" याने नहवाद सूँ नहवादी च अगर नबी का फ़र्ज़न्द है, यू बड्यौं की पन्द है। बड़े नेक होर बद ते वाक़िफ़ हो रहते है। बड्यों कूँ बड़े चुप नही कहते हैं। उनो भी कुछ देखे हैं। बहुत काम किये हैं। दुनिया का भला-बुरा सब फ़ाम किये हैं। नहने कामों में हरगिज़ न जासी, कोई दग़ा देने आया तो दग़ा न खासी। यू ना होकर अगर नहने से अछ कर अक्ल बड़ी अछी तो वो क्या नहना; उसे बी बड़ा च कहना। क्या वास्ता के बोले हैं के—"तंवगिरी बदिल अस्त न बमाल, बुजुर्गी ब अक्ल अस्त न बमाल" तंवगरी दिल सूँ है, न माल सूँ, बुजुर्गी अक्ल सूँ है, न साल सूँ। अमा पुख़्तकार आदमी टुक अछता है तज़र्बेकार, सब जागा अछता है खबरदार। नहना होर अक्ल उसकी अक्ल बी तो ऊंची चढ़ी है; वले बात म्याने म्यों तज़र्बे पर आ पड़ी है। हर कोई अपनी अक्ल मे ग़र्क़ है, वले तज़र्बे का टुक फ़र्क़ है। मुसहफ़ की आयत भी आई है यह "रहनमूँ कुल हज़ब बमाल देहम फ़रहून।" याने जो कुछ जिसके हात में आया, उनने उसी च मे हज पाया। एक का हाल एक कूँ कौन कह्या है, हर कोई अपनी जागा एक सवाद पकड़ रह्या है। फ़क़ीरों कूँ फ़क़ीरी, पादशाहों कूँ पादशाही दिया है। हरेक कूँ एक जिन्स सूँ महफ़ूज़ किया है। बक़ौल अहल-खुरासान, जिनों कूँ सब मुल्क में देते मान—

मिस्रा

कैस न गोयद के दोग़ो मन तुर्श अस्त

हर कोई कता अपना कैफ़ बहुत मस्त।

पानी नवा ई च में पड़ता गिरता, पेटी च के उधर नोडता। बड़्यों ते टुक डरना, हर एक काम किये तो बड़्यों कूँ ख़बर करना। आख़िर खूब अछेगा तो करो कहेंगे; बगर बुरा अछेगा तो जवाब ना देसी, चुप रहेंगे। इस

नहवाद-शिशु १ यदि नबी का बालक हो तो मे नहीं।
कैफ़-नशा भी वह बालक ही है। ३ कोई नहीं कहता मेरा दही
२ सम्पन्नता दिल से है, संपत्ति खट्टा है।

ठार भी इतनी समज धरना है; चुप रहना सो ऐन मना करना है। हमें तो चलेंगे अपने भाता। वले भई क्या जाने क्या तग़ादा आता? यू नाज़ दाई हुस्न धन मनमोहन, जगजीवन कूँ गलेलाई। कही बला ल्यूँगी तेरी खातिर सब सर पर अपने बुरा होर भला ल्यूँगी। बहुत खूब फ़रमाई, खूब तुझे यू अक्ल आई। यू बात वक्त पर सब किसे क्यूँ आये। यू बात तुझे फ़रिश्ते ग़ैब ते आकर सिकलाई। तूँ हुस्न यू खूबी तेरी ज़ाती है; भल्या कूँ वक्त पर भली च बात होर अक्ल आती है। असालत पर सदक़े जाना, ज़ोराँ सूँ असालत किधर ते ल्याना, यू खुदा की देनी खुदा ते पाना। आदमी हो नादानी, तक़लीदी असालत काम नहीं आती। ममझनहारा यहाँ दग़ा खाता, खूब समजना किसे आता? उसी च ते काम फ़रमानेहारा होता बदनाम, उसी च ते ज्यूँ मँगते त्यूँ नहीं होता काम। भाग उनो च के सीर, जिनों में अक्ल होर तदबीर।

बैत

दाई कों जग में नाज़ ऐसी है
महर दाई की माँ की जैसी है

तेरी अक्ल पर मैं वारी, कॉ है दुनिया में तुज जैसी चतर नारी। सर ते पाँवँ लग तूँ गुन भरी, बहुत दूर अंदेशे करी। हुस्न होर नाज नार, यू बात अपस में बिचार, महर सिपह-सालार कूँ बुलाये। वों च उसे फ़रमाये --

बैत—

महर साहब हुआ है म्याने मियान
मुश्किल होवेगा अताल सब आसान

इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, कने इस महर कूँ, इस सेहर कूँ कहे जा। इश्क़ कूँ समजा। वो झगड़ा ज्यूँ पड़या था नज़र, त्यू उस हुस्न के कहे पर महर आफ़ताब छुर। उसकी बात सुन इश्क़ लगन गया, सलाम किया, कलाम किया। अक्ल यूँ न्हाटी होर दिल यूँ सँपड़या कर कह्या। नसीबाँ में जो कुछ लिख्या था सो अँपड़या कर कह्या। इश्क़ बहुत हँस्या अक्ल पर। उसकी उस नक़ल पर के अक्ल अजब जाहल है। बड़ा नाक़ाबिल है के हात ते नही होता सो काम करने जाता। ऐसे कामाँ ते क्या हात में आता?

बैत

अक़्ल कूँ अक़्ल अछती तो ना होता यूँ ख़राब हर्गिज़
सबूरी कर कर कुछ करता न करता इज़्तराब हर्गिज़

तक़लीद-पैरवी, अनुसरण सीर-सिर चतर-चतुर लगन-तक

अक्ल अक्ल कते सो उसकी यू च अक्ल, उसे क्या ग़ज़ थ्या के इश्क़ के कामाँ में करता दखल । हुस्न सूँ दावा लाना, अपनी इज्ज़त अपै च गँवाना । हुस्न बी एक पादशाहज़ादी है । उसे बी क़ुदरत हरेक वादी है । साहब-लश्कर है, साहब-किशवर है, साहब-तेग़ व ख़ंजर है । पादशाहाँ उसकी मुहब्बत ते दीवाने हो होकर सटते हैं । रुस्तमाँ उसके अंगे कमर का लहवा खोल कर सिपर सटते हैं । जेते-जेते कर जाने, उतने सब याँ हार माने । नहना-बड़ा सब हुस्न के तले खड़ा । हुस्न आशिक़ाँ का आबहयात । ज़ाहदाँ का ज़हर, हुस्न खुदा का क़हर, उसका बोल कोई ठेल सक्या है ? उसे छोड़ कोई इश्क़ का खेल-खेल सक्या है ? मालूम होता है जो अक्ल गँवाया था अक्ल कूँ उस वक्त अक्ल नही आया था ।

बैत

अक़्ल पाकर अक़्ल न्हाळ्या सो फिर क्यूँ हात आता है ?
अक़्ल यहाँ भी चूक्या अक़्ल पर बात आता है ।

आख़िर इश्क़ ने फ़रमाया के ज़ुल्फ़ कूँ बोलो के दिल के गले में हल्क़ी का तौक़ भा । तारों की ज़ंजीराँ सूँ जकड़ कर अक्ल जान क्या अछेगा ? वहाँ ते पकड़ कर ल्या । नाज़, ग़म्ज़ा, शेवा, इशवा, छुन्द, चाला इनां कूँ कहो अक्ल होर दिल के निगहबान हो अछे । दीदबान हो अछे के अक्ल बहुत मुफ्तन है । मबादा भी कुछ हीला करे, हमारे च आदमियाँ में ते किसे वसीला करे । ज़ुल्फ़ जो आवे फाँदा भाने, अक्ल बिचारा कहाँ सकती है जाने ? अक्ल इश्क़ सूँ मिले तो भला, नहीं तो अक्ल पर आई बला । इश्क़ जेता कुछ कह्या था उसका मतलब दिल में रह्या था । सो इतना एक बेग आ कर दुआ कर हुस्न कूँ सुनाया । खातिर निशान किया, समजाया । हुस्न यू बात सुन अँदेशा करी । मसलिहत पर नज़र धरी के काम ऐसा करना जो कुछ काम होवे, आराम होवे, नहीं तो ऐसा न करना जो काम खाम होवे । अपै बदनाम होवे, अँदेशा सूँ जो काम होता है सो काम खूब । अदेशे सूँ जो काम होता है सो तमाम खूब । वही च नज़ आई, जिसकी अक्ल उसकी खातिर आई । उसे बुलाई, कही – 'इस काम का इलाज यू च है ।' अताल के इस जागा अपस कूँ भोत रखना सभाल । अपस कूँ बावल ना करना । उतावल ना करना । भोत धीर अछना । गंभीर अछना । मुराद का रिश्ता हात में आता सो, आता है । टुक सबूरी किये तो क्या जाता है ? "अत्ताजील मिनह शैतान व तानी मिनर्रहमान"

हरेकवादी-हर तरह की
किशवर-मुल्क
सिपर-ढाल
ज़ाहद-परहेज़गार †

† मुफ्तन-फ़ितना करनेवाला, उत्पाती
भा-ढाल

१ जल्दबाज़ी शैतान का काम और ध्यानपूर्वक धीरे धीरे काम करना ईश्वर का काम है ।

ताजील शैतान का आलासा, सबूरी रहमान का खासा। यू प्रीत का खेलना है पारद। जूँ हाफ़िज़ कता है—

मिस्रा

सब्र तलख़स्त ब लेकिन बरे शीरीं दारद

दिल कूँ दरहम नको कर। ग़म नको कर। ख़ुदा है क़ादिर। सबूरी अव्वल कड़वी लगती है, बले भोत मीठी होती है आख़िर। बीज ते झाड़, झाड़ ते डाली, डाली ते पात, पात ते फूल, फूल ते फल आता है हात। देखते-देखते, सुनते-सुनते खातिर ल्याते ल्याते; फ़िक्र करते-करते, रहते-रहते मालूम होती है काम की धात। अताली च काम होना नहीं तो रोना। म्याने म्यों आई है क़ज़ा, आदमी में यू क्या वज़ा। रोने ते कुछ काम नहीं होना। ख़ुदा का काम ख़ुदा बग़ैर किसे फ़ाम नहीं होता, यू बेताब होकर, चुपके तलमलता है। ख़ुदा से किस का कुछ चलता है? ख़ुदा कूँ यू दो बाताँ नहीं भातियाँ, यू दो बाताँ काम नही आतिया। एक बेगी, दुसरी ग़ारूरी; बन्दा वही च जिसमें कुछ ग़रीबी, जिसमें कुछ सबूरी, जिनने बेगी किया उनने गँवाया। जिसने सबूरी किया उनने कुछ पाया। बेगी में मक़सूद गवाया जाता है, सबूरी में हरेक काम निकल कर आता है। अगर आसमान ते आग बरसेगा अब्र, वहाँ भी काम करेगा शुक्र होर सब्र। शुक्र होर सब्र हरेक दर्द का दारू है, शुक्र होर सब्र महनत के दरिया का उतारू है। शुक्र होर सब्र ते हरेक मुश्किल आसान होता है। शुक्र होर सब्र करनहारे पर ख़ुदा महरबान होता है। जिस पर जो कुल बला आती है, शुक्र होर सब्र करने ते सब जाती है।

अलक़िस्सा अताल सुन दिल कूँ, उस आशिक़ कामिल कूँ चन्द रोज़ भोत मेहनत सूँ भोत मुरव्वत सूँ एक हिकमत सूँ एक जागा धर, पीछे आहिस्ता-आहिस्ता जो कुछ इश्क़ फ़रमायेगा तो उसकी भी एक फ़िक्र कर। यहाँ बेगी काम नही आती। बेगी बला ल्याती। दुनिया में रहते सो यूँ कते के बेगी घर लेगी, किसे कुछ देने कूँ देगी, बहुत खूब है; कुछ आता अछे तो कुछ लेने कूँ बेगी बहुत खूब है। महबूब नार सूँ मिलने बेगी करना फ़र्ज़ है। अपने यार सूँ मिलने बेगी करना फ़र्ज़ है, ना के हरेक ठार। बेगी हुश्यार हो ऐसी बेगी यकाधे वक्त दग़ा देगी। दुनिया का काम हीले मक्र सूँ करते सज। यॉ बेगी किये तो कुछ का कुछ होता समज। हरेक काम कूँ खूबी खातिर ल्याना, पीछे उस काम पर हात भाना। काम नहना अछो या बड़ा तूँ टुक तो बेगी अछ वहाँ खड़ा। जो काम अँदेश कर किया जाता है, उस काम में दग़ा नहीं खाता है। अगर चे ख़ुदा के हात है जीवना होर मरना, वले जो कुछ

ताजील-चलदबाजी उतारू-उतारने वाला, तैयार
अब-बादल अंदेशना-सोचना, समझना, विचारना

१ सन्तोष कड़वा है लेकिन उसके फल मीठे होते हैं।

अक्ल में दुरस्त आता है सो वो तो करना।

बैत—

बड़याँ के राज़ी से जो काम होवेगा
भोत उस काम में आराम होवेगा

तो लगन रुख़्सार के गुलजार में एक कुवा है। कुछी सुनने सूँ मुस्तैद हुआ है। उसके आसपास ज़ीनत सूँ किये हैं काम, चाह ज़क़न उसका नाम। उस चाह में इस माह कूँ मसलिहत बदल बन्द करना। आशिक़ी बहुत भी फ़ाश नहीं करना। कुछ छन्द करना।

बैत—

अजब चाले भरियाँ हैं औरताँ यू
न जाने काँ ते सिकियाँ है हिकमताँ यू

अगर चे इश्क़ छुपता नहीं, वले जितना छुपा सकते उतना छुपाना कुछ खुल्या, कुछ नहीं खुल्या इसी च मे कुछ लज्ज़त पाना। वदा ते लगी च लज्ज़त ज्याद, खोल सटे पीछे क्या सवाद? चोरी सूँ इश्क़ खेलना भी अजब सवाद है। जो कुछ कोई इश्क यूं खेलता अछेगा उसे कुछ याद है। जो कोई आशिक़ चतर रिन्द है, होर ओबाश उने हम चोरी सूँ इश्क़ खुलता हम फ़ाश। चोरी सूं शिकार खेलते त्यूँ जीव मंगः ज्यूँ रात कूँ बेसी कूँ मछली लगे। यू उसका माता वो उसकी माती, दोनो जीव पर उठे तो मुहब्बत दिस कर आती? राज गैशन काम नहीं जीव पर उठना इश्क़ कूँ हराम। माशूक़ की साहबी ज़ेर हुई, माशूक़ आजिज़ हुई। गम्भीर हुई। नाज़ की मस्ती गई, ग़म्ज़े की ज़बर्दस्ती गई। तपना-तरसना अड़्या, इश्क़ कम पड़्या। इश्क़ के उलाले थे सूर है, इश्क़ के चाले थे सूर है। जो पेट भरे तो बहिश्त में ते खाना आये भी कोई क्या करे? भूक अछे तो खाना भावे। भूक नहीं सो खाना क्या काम आवे? भूक अछे तो खाने की लज्ज़त पाया जाता। भूकी च नहीं सो खाने का लज्ज़त क्यूँ आता? बारे, हुस्न होर नाज़। दोनों मिल बिचारे दिल कूँ चाह-ज़क़न में उतारे। दिल आशिक़ ज कुछ माशूक़ के सो राज़ी। आशिक़ ही खेलता है इश्क़ की बाज़ी। ऐसा कुवा किस आशिक़ कूँ मयस्सर हुआ। इस कुवे कूँ कौन सके सरा, जिस कुवे में आब-हयात का झिरा।

ज़ीनत- रौनक़ § ज़क़न-ठोडी) माता-मस्त, मुग्ध
चाहज़क़न-ठोडी का गढ़ा रिन्द-नशेबाज, मजहब को न माती-मस्त स्त्री, मुग्धा
(चाह-बावड़ी § मानने वाला गंबीर-गंभीर

फ़र्द

जुल्लेख़ा हुई मगर यू हुस्न नारी
के दिल यूसुफ़ कूँ कुवे में उतारी

दिल भोत पकड़ कर आस, कुछ कम एक मास, इस चाह में इस नाले आस आह में गिरफ्तार था। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन कधीं याद करे कर उम्मीदवार था।

बैत

दिल कुवे म्याने पड़ कर हैरान है
बन्द म्याने सँपड़ के हैरान है

के मेरा इश्क़ तो है बहुत गर्म, कधीं तो भी उसका दिल होवेगा नर्म। मुझे दायम यू ना धरेगा। यू इश्क़ है, आख़िर कुछ तो करेगा? ऐसे में यूँ हुआ ख़ुदा का फ़रमान। हुस्न के तन में भोती च तलमलने लाग्या प्रान। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन भी आशिक़ थी, आशिक़ मुतलक़ थी। दिल के दीदार का ग़ालिब हुआ इश्तियाक़, सीने में उबल्या फ़िराक़। बेताबी पैदा हुई, इज़्तराबी पैदा हुई। बेआरामी, बेख़ाबी पैदा हुई। इश्क़ कूँ केता संभाल कर रखे? अपस कूँ केता बेहाल कर रखे? इश्क़ ते सीना हुआ रीश। बारे, कुछ अन्देश इश्क़ का सर-लश्कर जो था महर ख़ुर्शीद-क़हर उसके एक बेटी थी, पुर-सेहर वफ़ा उसका नाम। हुस्न सू उसे भोत उल्फ़त था, बहुत आराम।

बैत

वफ़ा आई विना सूँ राजवट की
सो दिल सूँ मिलने ख़ातिर काम घट की

हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन उसे ख़िल्वत में बुलाई, दिल का क़िस्सा दरम्याने लाई। विना ते कही, बहुत ख़ूब, ऐ महबूब, में जफ़ा नहीं हूँ, विना हूँ। दिल सूँ दिल कूँ बहुत सफ़ा हूँ। मैं ऐसी नहीं हूँ, तूँ बोले पीछे तदबीर ना कर सूँ। जीव सूँ राज़ी हूँ, फ़रमा तक़सीर ना करसूँ। वफ़ा करने के ख़ातिर उस वफ़ा कूँ कही सब खुल कर अपनी जफ़ा कूँ। हुस्न नार, दिल का सिंघार; जिसे ख़ूबी दिया वो परवरदिगार। कही मेरी अक्ल में एक तदबीर आई है, वो तदबीर मुजे बहुत भाई

ख़ुर्शीद-सूरज नाला-आर्त्तनाद § विनाते-उनसे
उल्फ़त-प्यार विनासूँ-उनसे ना करसूँ-नकरूँगागी
घट की-वृद्ध की §

है। के शहर दीदार में एक गुलज़ार है। उसकी तारीफ़ क्या करूँ बहुत खूब ठार है। वो गुलज़ार नहीं दीन-दुनिया का सिंगार है। जो कोई आशिक़ है, सो इस गुलज़ार का उम्मीदवार है। इसमें एक चश्मा है आब-हायत के पानी का। आशिक़ की ज़िन्दगानी का। होर उस बाग़ के म्याँने म्यान रोशन एक छजा है, ज्यूँ आसमान ज्यूँ चन्दर, ज्यूँ भान। दीस कूँ दिसते तारे, यहाँ आशिकाँ हैरान सारे। इस छजे पर ग़म्ज़े के बादल छाते, नाज़ के मोती बरसाते। इस छजे कूँ दो खिड़कयाँ हैं कालियाँ, बहुत बड़े मोल कियाँ, बहुत आया। सो वो खिड़कयाँ जो कोई खोले वो दाख़िल होवे। विसाल की बात बोले। इस खिडकयों में ते यार हुस्न का देखने मँगते दीदार, जो कोई इश्क़ कू अँपड्या कमाल, उसे अलबत्ता इस जागा हुआ है विसाल।

फ़र्द

लग्या था रात-दिन दिल का उसे ज़िक्र
छजे पर दिल कूँ ल्याने का करी फ़िक्र

तूँ छुपे चोरी सूँ दिल कूँ इस ठार ल्याने सकती है। इत ती कुदरत रखती है, विना बासफ़ा ने बोली मेरी अक्ल मेरे संग्यात है, अगर आदमी में अक्ल अछे तो यू बात क्या बड़ी बात है? अताल मुजे यू काम किये बग़ैर आराम न होसी, ता यू काम न होसी।

बैत

सकी हित कूँ उने चित दे के बोली
जो कुछ दिल म्याने बाँदी थी सो खोली

दिल काँ है? मुजे बेग दिल कूँ ल्या दिखला; मैं दिल का भेद पाऊँगी; जहाँ तूँ कहेगी वाँ दिल कू ल्याऊँगी। हुस्न नार ने, जग के आधार ने, आलम के मदार ने जुल्फ़ कूँ बुला कर बोली, पेचाँ उसके सब खोली के दिल कूँ चाह-ज़क़न में ते भार काढ़। होर यू गर्द उसके पावाँ पर की अपने बाला सूँ झाड़। दिलकुशाबाग़ में ल्या छोड़, पैलाड़ जो कुछ होवे ख़ुदा की लोड़। जुल्फ़ बहुत नाज़ सूँ, निपट अन्दाज़ सूँ ऐठती-मरोड़ती बाले-बाल जोड़ती दुहाई। अपनी आधी लट सट दिल कूँ चाह-ज़क़न में ते भार ल्याई, वैसे में एकाएक वहाँ वफ़ा भी आई। दिल सूँ अपना दिल मिलाई। दिल कूँ दिलासा दी। दिल कूँ समजाई।

मदार-आधार छजा-छज्जा सकी-सखी
संग्यात-साथ लोड़-इच्छा

बैत

महमान हुई वफ़ा यू यक तिल की
उज़रख़ाही बहुत करी दिल की

कही भाई, इश्क़ तमाम है। जफ़ा होर जफ़ा देखे बग़ैर नहीं होता नफ़ा। दुख के पीछे सुख, जाँ मशक्क़त वो राहत। रंज तो गंज, फ़िराक़ तो विसाल का साज़ीराक़। खारा है तो मीठे का पाया जाता है सवाद; खारा ना अछता तो मीठे का कौन देता दाद? धूप है तो छावँ की क़द्र जानी जाती; गर्मी है तो आदमी कूँ सर्दी भाती। जहाँ बन्द है वहाँ आज़ादी; हर ग़म के पीछे शादी। शादी के पीछे ग़म; बहुत बरसां ते यूँ ही च चलता यू आलम।

बैत

दाग़ पर दिल के आ रखी फाया
दिल के दिल में बेटोक जीव आया

हुस्न धन, मनमोहन, जगजीगन जो तुझे बन्द में रखी थी सो लाइलाज थी। ज़रूर कूं क्या करेगी? बाप का मुलाहिज़ा बहुत था उस हूर कूँ। तू तो दिल था, वले वो अगर यूँ न करती तो तुझे भोत मुश्किल था। तू जीव ते च मरता। इश्क़ क्या तुझ ते डरता? क्या जाने क्या करता? हज़ार तूं तलमलता, सो इश्क़ सूँ तेरा क्या चलता? हुस्न सखी, तुजे छुपा रखी। तुझे अपना यार करी, बहुत तुज पर प्यार करी, उपकार करी। इस प्यार की कद्र जानता है, मुरव्वत कूँ पछानता है। केतक मर्दां बहुत ग़दरी अछते हैं, नाक़दरी अछते हैं। क़द्र नहीं जानते; महनत नहीं पछानते। ज्यू खुसरो कता है---

पंखा होकर मैं डुली साती तेरा चाव
मुज जलती जनम गयी तेरे लेखन बाव

बाज़े मर्दां जो कोई औरत मँगती उसे ख़ार करते, जो कोई नहीं मँगती उसे प्यार करते। जो कोई मँगती उस सूँ नख़रे-नाज़; उस सूँ बात बोलने जीव नहीं होता, इससूँ बाज़। जो मँगती नहीं वो भोत भाती; उसकी गाली खाने हवस आती, उस के पाँवँ पड़ने जाती, उसकूँ अपस की आजिज़ी दिखलाती। उसकी ख़ातिर आह भरती। उसकी ख़ातिर उसास, रात-दीस फिरती उसके आस-पास। उसके ख़ातिर दीवानी होती; उसकी ख़ातिर सुद बुद खोती। यू बातां चली च है सब कई के---'भले की

उज़रख़ाई-सहानुभूति का प्रदर्शन, ढाढस बँधाना
साज़ीराक़-?
† साती-साथी
शादी-ख़ुशी †

दुनिया नहीं।' मँगे सो जले; नहीं मँगे सो भले। मर्दी, साहब-दर्दी। जो इतनी अक्ल धरते, सो कुछ का कुछ समजते कुछ का कुछ करते। मँगते सो मेहनत में हलाक बिचारे; नहीं मँगते वो भोत प्यारे। दुनिया में मुहब्बत किसी सूँ न लाना; इस ज़माने के मर्दों कूँ क्या पतयाना। एक जागा नज़र, हज़ार जागा दिल, कौन औरत ऐसे मर्द सूँ रहेगी मिल? बात, ख़ुराफ़ात। मर्दों की ज़ात सब बेवफ़ा। ऐसियाँ ख़ातिर करते रोये, हलाक हुए। अपस कूँ अज़ाबाँ में भाये तो क्या नफ़ा? ऐसियाँ सूँ जीव लाए तो कुछ हासिल नहीं बग़ैर जफ़ा। अपनी ग़र्ज़ कूँ फुसलाने आते, ग़र्ज़ सरी पीछे बात बदलाते। औरतों कूँ कते कम-अक्ल, कमज़ात। ऐयारी मर्दों की बात। औरत जो मर्द पर नज़र करे तो जीवन मारती। अपै एकस सूँ ना अछ दसों सूँ हँसते-खेलते। यहाँ अपने गिरेबाँ में कुछ नहीं बिचारते। भई औरताँ कूँ शाबाश कहना, जो अपनी शर्म सूँ अपस कूँ सभालतियाँ। एकस पर तप घालतियाँ; एकस ख़ातिर च अपना तन मन जालतिया, जानी-जोबन गालतियाँ। बाजी औरताँ मर्दों खातिर सतियाँ हुइयाँ हैं, आग में जलियाँ हैं। औरतों में भोत शर्म है, औरताँ में भोत नेम-धर्म है। औरतों बिचारियों भोत भलियाँ हैं। कौन मर्द औरत मुई तो औरत ख़ातिर अपै बी मुवा? एक मुई तो दुसरी किया। दुसरी औरत का मर्द हुआ। औरता च में सत है। मर्दों में कहाँ है धरम? सौ जनियाँ कूँ दिखलाते अपनी शरम? औरतों कूँ एक जागा अपनी शर्म दिखलाते। एती शर्म आती; मर्दों सौ जागा अपनी शर्म दिखलाते, उनों कूँ शर्म नहीं भाती। मर्दों कूँ सब जागा शर्म आती, वले औरतों की जागा शर्म नहीं आती। जो शर्म सूँ शर्म मिलती तो क्या जाने शर्म काँ जाती? मर्द कूँ मोम का दिल, औरतों कूँ फ़ौलाद का दिल। मोम फ़ौलाद सूँ क्या करना भोत मुश्किल! मर्दों की मुहब्बत की झूटी लाफ़; अताल दुनिया में क्या ग्या है इन्साफ़। बात कने कूँ बात कने, वले अपनी बात नही रहते। बारे, वफ़ा ने, दिल के दिल कू नर्म करी; मुहब्बत मे फिर गर्म करी। बातों च में परीत जोड़ी। दिल कू हात पकड़ कर उस बाग़ में लेकर आकर उस चश्मे पर छोड़ी।

बैत

इश्क़ में भोत गुलेला है कुछ
औरताँ का मक्र बला है कुछ

बारे, दिल उस कुवे में ते भार निकल्या। ता सीना किया था चिकल्या। बाग़ कूँ देखते च सीना खुल्या। वहाँ के फूलों पर बहुत भुल्या।

गिरेबाँ-दामन
लाफ़-बड़ाई, शेख़ी
गूलेला-शोर

सर्ग-पूरी हुइ
परीत-प्रीति

बैत

भार निकल्या है बन में ते दिल
वस्ल होएगा अताल क्या मुश्किल

बहुत दीसाँ की मादगी छाई, इस फूलाँ च पर टुक नींद आई। दिल नींद आते च वफ़ा ने खुश खबरी दी, हुस्न कूँ जाते च के हुआ अब तेरे मन का भाया। दिल कूँ तो खुदा ने बाग़ में ल्याया। बहुत दीसा का इलाक था, फूलाँ च पर नींद लगी। अँखूँ भी नींदी च में है, उसकी नींद नहीं भरी। हुस्न लगन यू बात आई; खुशियाँ ते अपस में नहीं समाई। पावँ ज़मीन कूँ नहीं लग्या। दिल कने बाव पर उड़ कर आई।

फ़र्द

वक़्त है सो अताल काँ है वक़्त
बढ न्हाट्या विसाल का है वक़्त

देखी के दिल अपने दिल का यार; अपने दिल का आराम-अपने दिल का आधार: जिसके इश्क़ मे अपना दिल गिरफ्तार, जिस दिल के खातिर दिल बेक़रार। साहब-सूरत, समाव-जमाल, साहब-हुनर, साहब-कमाल, सुद सुदरा उसका सूरत; बहुती च पाक मूरत। सिराने हात दिया है, फूलाँ पर आसाइश किया है। आह मारी पुकारी, बिचारी। बहुत की ज़ारी। तमाम झाड़ा कूँ ठार्या ठार, गोया नूर के शोले आये बार। जगमग रह्या है तमाम गुलशन, फूलाँ नहीं यू दीवे हुए है रोशन। बाग़ में पड्या सब उजाला, आफ़ताब हुआ है हर एक लाला। उसके रुखसार ते शाबाँ सट्या है, जानो चारो तरफ़ आफ़ताबाँ सट्या है।

बैत

दिल फूल ते नाज़ुक अहे इतनी जफ़ा सूस्या सो क्यूँ
यूँ मुब्तिला हो हुस्न पर ऐसी बला सूस्या सो क्यूँ

अँखियाँ में ते अँभुआँ का बुन्द पड़ता, फूल ते जानो शबनम झड़ता। दोनों हुए दो फिरे; पानी होर लहू भरे। अँभू ढलते हैं उजले होर लाल; खुदा कूँ मालूम इस बिचारे का हाल। दिल हुआ इश्क़ ते दाना दान। आँखी हुई याकूत होर अल्मास की खान। दीदे दीदार कूँ तरसते, बादल होकर मोती बरसते। दिल के

आसाइश-विश्राम
गुलशन-उद्यान
शाब-यौवन
माँदगी-बीमारी, थकान
अभू-आँसू

इश्क़ में अपस कूँ जलाली, दोनों पावँ पड़ी अला-बला ली; यू हुस्न नार मुहब्बत की मतवाली; दिल का सर गोद में उचाली, सीने सूँ सीना लाली। इश्क़ सर चड्या एकाएक दिल के मूँ पर उसकी अँखियाँ में ते अँभू का बुन्द पड्या। दिल नींद में ते जाग्या, हैरान होकर देखने लाग्या। ज्यूँ बाग़ में ते कलिया सब फूल कम, फूल हो करतियाँ रलियाँ ठारे ठार, चागे तरफ़ झलकते हैं झलकार। झाड़ो ने सब ताज़ा किये सिंगार, गले में फूलाँ के भाये हैं हार। बिन रुत आये हैं बार, जनावरां डाल्याँ पर मस्त मरग़ोलते हैं मस्त होर सरशार। पानी का लोयाँ में सब शराब हुआ मगर साया सट्या उसकी अँखियाँ का ख़ुमार। हुस्न ऐसी नार, चाद जैसी अचम्भा औतार; बेअख़्तियार, नारी रोती है ज़ार ज़ार।

बैत

जो आँखी हुस्न कूँ देखे वो आँखी सुद कूँ खोती च है
यता तारीफ़ जग करता अजूँ तारीफ़ होती च है

ख़ुश गुफ़्तार व ख़ुशरफ़्तार व दीदा का सिंघार, जीव का अधार, आलम का मदार। अजब हूर, ख़ूबी का सूर। महबूबी का नूर। लुत्फ़ भरी बाली, लताफ़त के फूल की डाली। नाज़ों में कारी, ग़म्ज्याँ कूँ उपजानहारी। बातों जाँगियाँ नबाता, फूल का फकड़्याँ जैसे हाती। किरना जैसे बाल, आफ़ताब जैसा जमाल। कमर देख शर्जा शर्म हुज़ूर, उसकी चाली ने काड़ी हंसी की चाल में क़सूर। दीदा शदा, शैदा मन बी, फ़र्श जानो फूल की बेबी। तन फूल ते नर्म, तबियत आग ते गर्म। इस बज़ा के महबूब भोती च ख़ूब। दिल की मुराद नहीं रही; बुध नहीं रही। मुहब्बत करी जोश, दिल में उठी ख़रोश, जागा पर नहीं रहे होश। आह मार उठ्या, पुकार उठ्या। इश्क़ का असर भोत चड़्या; काकलूत सूँ दोड़ कर दोनों पावँ पड़्या। कमर में हात भाया, चुकल कर गले ल्याया।

फ़र्द

अगर आशिक़ ऊपर माशूक़ का कुछ इल्तफ़ात होवे
मुहब्बत का लज़्ज़त है तो च मीठी तो च बात होवे

कह्या उसे हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन ख़ूबी के गुलशन माशूक़ आशिक़ पर एता बी प्यार करती है, येता बी उपकार करती है। तुझ ते सवाद पाये इश्क़-बाज़ी; तूँ तो आशिक़ कूँ नवाज़ी। ए परी, तूँ मुझे सरफ़राज़ करी। जीव के लहवे का घाव ज्यूँ-तूँ सूसेगा दिल, वले बिसाल के ख़ंजर का ज़ख़्म सूसना भोत मुश्किल।

बार-फल † बंदी-नाभि उचा ली-उठा ली
मरगोलना-कूकना, करलव करना † इल्तफ़ात-दया जैसियाँ जैसी का ब. व.

आशिक़ के इश्क़ सूँ मुब्तिला है, दिल में इश्क़ का ग़लबला है। उसे माशूक़ का प्यार भी एक बला है।

फ़र्द—

गले लग सोते होर बेताबी नहीं जाती है यू मुश्किल
बिरह में तलमल्या ज्यूँ त्यूँ हलाक़ है वस्ल में बी दिल

दूर की आग ज्यूँ-त्यूँ टाल्या जाए, नज़दीक की आग कूँ क्यूँ कर संभाल्या जाए ? आशिक़ कूं बहुत तलमलता है, आशिक़ जिन्स-जिन्स सूं जलता है। लोकाँ कते विसाल, वले विसाल में भी आशिक़ कूं पूछना है आशिक़ का हाल। माशूक़ गोद में सती हैं होर हलाक़ करता फ़िराक़; सीने सूं सीना लग्या है होर कम नहीं होता इश्तियाक़ दीदा में दीदार खड़ा है होर अंखी में अँभू ढलता; माशूक़ सेज़ पर आई है, होर आशिक़ अजूँ तलमलता। माशूक़ आकर बैठती पास, हनोज़ आते उसास पर उसास। ज्यूं हक़ीक़त में "मख़दूम सैयद मुहम्मद गेसू दराज़, हुसेनी शाहबाज़, महरम-राज़। जिनो कूं वली-अक़बर कते, जिनो कूं सौ वलियाँ में मौतबर कतें। जाँ ते ख़ुदा के विसाल में जाते, वहाँ ते यूँ फ़रमाते—

बैत—

अजबे नेस्त के सर गश्ता बूअद तालिबे दोस्त
अजब ईं अस्त के मन वासिलो सर गर्दानम्

याने हर कोई फ़िराक़ में परेशान होता। याँ मैं विसाल में परेशान हूँ। मैं वासिल होर सरगर्दान हूँ। यू वासिली होर सरगर्दानी, यू बहुत बड़ी हैरानी के याँ हज़रत ने फ़रमाये हैं, दुसर्यां कूँ क्या दुख। "मा अरफ़नाक हक़ मारिफ़ फ़तका।" याने ज्यूँ त्यूँ है, त्यूँ तुझे नहीं पछान्या; ज्यूँ त्यूँ है त्यूँ तुझे नहीं जान्या। अरफ़ी आशिक़ दिलसोख़्ता गर्म कलाम शाअरी में जिसका नाम वो कता है के—

---

१ गुलबर्गा में समाधिस्थ एक औलिया, दक्खिनी के लेखक।

२ यदि ईश्वर का भक्त दुःखी और परेशान हो तो आश्चर्य की बात नहीं। आश्चर्य इस में है कि मैं सिद्ध होते हुए भी परेशान हूँ।

३ जैसा हमें पहचानना चाहिए था, वैसा तुझे नहीं पहचाना।

हनोज़-अभी
मख़दूम-सेव्य (ख़िदमत-मख़दूम)
वली-अकबर-वलियों में महान
सती हे-सोती है

फ़र्द

कूँ कू जदाँ फ़ाख़्ता सर दर आग़ोश
दर जाम ए माशूक़ मरा गर्म तलब कर्द

अपै सब नज़र, अपै सब दिल; अपस्कूँ अपै देखा जाए, वले अपस्कूँ अपै समजना बहुत मुश्किल। किसी बुज़ुर्ग कूँ किने पूछ्या के—'ख़ुदा कूँ पाये ?' कहिये 'पाये'। याने ख़ुदा ऐसा कोई है, ज्यूँ समजना है त्यूँ समज्या न जाये। ख़ुदा कूँ नहीं निहायत, उसी च ते उसे कते हैं बेनिहायत। जो आशिक़ यहाँ आया वो मुताहयरी की पड़्या आयत; ख़ुदा कॉ है, कैसा है, घरें घर यू हिकायत। ज्यूँ वजही आशिक़, आरिफ़, वासिल, गोहर सुख़न, दरियादिल। आज़ाद उपसता है। कता है—

बैत

तमाम इश्क़म व दर दिल तमाम मुश्ताक़ी अस्त
तमाम दीदम व दीदन न दीदा शुद बाक़ी अस्त

जिधाँ ते देव, जिन-परी बिनजाया, जिधाँ ते दुनिया होर आदम हो आया; ढूँडते च उम्र खपी सब की वले तहक़ीक़ ज्यूँ है त्यूँ कोई नहीं पाया। बाक़ी रहे च कते यूँ न कह्या के इतना या यही च। यू अपार ग़ाक़ाब दरिया उसे नहीं पार। हरेक निहंग, इस दरिया में शिनावरी करता अपनी मिक़दार। आशिक़ माशूक़ के हुस्न की निहायत देखने जाता। माशूक़ के हुस्न कूँ निहाते च नहीं सो निहायत क्यूँ पाता ? इस ठार हैरानगी आती च है; सरगर्दानगी आती च है। जो कोई ख़ुदा के कारख़ाने में जाते, जो कोई ख़ुदा का कारख़ाना चलाते, जाने जाते आख़िर इस फ़िक्र पर आते। उनो कूँ यू च लग्या है ज़ौक़। अपना-अपना शौक़। उनके सर पर पड़ा पहाड़, जेता ढूँडे तेता पाये। भई, ढूंडते ठारे ठार, उनो कूँ होर ज़िक्र है, करामात होर ऐजाज़ की फ़िक्र है। ख़ल्क़ का मुद्दआ लेना है, ख़ल्क़ कूँ सवाल-जवाब देना है। ख़ुदा सूँ हज़ार गुफ़्तगूँ धरते हैं, वही च जानते जो कुछ वो करते हैं। रब ने उनो कूँ यू दिया मन्सब; आज़ाद आशिक़ यू छोड़ दिया सब।

मुताहयरी-आश्चर्य भरी
निहंग-मगर
शिनावरी-तैरना
ऐजाज़-चमत्कार
मन्सब-मर्तबा

उपसता है-उपासना करता है
निहाना-निहारना-देखना

१ फ़ाख़्ता अपनी बगल में मुँह डाल कर पुकार रहा है। माशूक़ के लिबास में वह अपने आपकी तलाश करा रहा है।

२ मुझ में पूरा भरा है फिर भी लालसा मुझे भरी है। मैंने सब-कुछ देख लिया फिर भी देखना बाक़ी है।

दखनी दोहरा

तेरे करतब करने ते मैं चुप हुई बदनाम
मैं म्याने उठ गई तूँ जाने तेरा काम

जो आशिक़ यूँ हुए हैं अख़्यार, ख़ुदा का भी उनो पर प्यार, रसूल का भी उनो पर प्यार। ख़ुदा हौर रसूल जिनो का लाड़ चलाते सो यू लोक ख़ुदा हौर रसूल कूँ भाते। सो यू लोक मैरफ़ुलक़लम आज़ाद, बेपरवाह, बेग़ाम। वहाँ ख़ुदा ज्यूँ था वही च, म्यानी म्या नही च। वारद यूँ हुई है हदीस बी "अलफ़क़ीरु लाएहताज इल्लिल्लाह व इल्ला नफ़्स हू"। याने फ़क़ीर न अपने नफ़्स का मुहताज न ख़ुदा का मुहताज, मुहताज क्यूँ होवे के उसमे रह्या च नही ख़ुदा बाज। अपै हुए तो अहतयाज कुछ किस सूँ धरे। जो अपै च नही वो अहतयाज आकर क्या करे? उसके कद में उसका नफ़्स आया; हवा हौर हिर्स कूँ दिल मे ते भार भाया। नफ़्स पाक कसाफ़त दूर हुआ। ख़ाक उसका बमानी नूर हुआ। फ़क़ीर तो हौर भी कुछ कते है जुदा; जिस शै कूँ आख़िर बहुत मँग्या वही च उसका ख़ुदा। ग़ैर पर उनो की नज़री च नही। ग़ैर उनो कूँ जानते च नही। ग़ैर की उनो कूँ ख़बरी च नही। यू बात नादान के सुनने की नही। यू दरिया कम हौसल्यों के मोती चुनने के नही। दानाथा यू बात नही करते नादानों सगात, छुपा-छुपा बात करते सो यू बात। हैफ़ नही के यू बात नादान के कान में पड़। फूल का चमन जाकर ख़ारिस्तान मे पड़। इस चमन की कली बास महकावेगी वले जो कोई ख़ाम है जिसे जुखाम है, उसे क्या बास आवेगी। बारे सूँ लहवा पिघलता नहीं, पानी सूँ पत्थर गलता नही। नादान हौर जाहल इस दरगाह के मरदूद; उनो कूँ यू बात समजनी क्या मक़सूद। जेता उनो कोशिश करने जाते वहाँ ते उनो कूँ मार-मार के भार भाते। नालायक़ों कूँ वहाँ नही आन देते, नाक़ाबिलाँ कूँ वहा नही जान देते। यू ख़ासाँ की ठार, यहाँ क्यूँ आता बी ऐतबार। यहाँ तमाम राज़, यहाँ तमाम असरार; हज़ार-हज़ार पर्दादार। यहाँ ना महरम कूँ चारों तरफ़ ते होती मारामार। इश्क़ का घात जुदा कुछ है, आशिक़ी की बात जुदा कुछ है। हरेक कोई किसी कूँ देख्या बेआराम हुआ तो क्या आशिक़ हुआ? चार लोकाँ में बदनाम हुआ तो क्या आशिक़ हुआ? चार आह मार्या, चार उसास भर्या तो क्या आशिकी कर्या। हरेक कोई आशिक़ कहवाता, हर किसे आशिक़ होना भाता? आशिक़ कूँ माशूक़ के गाल-बाल पर बहुत दिल अधर। आँग्व, ख़ाल, हात, पाँवँ, कमर, चाल पर बहुत दिल। कम्बत-साज़, ज़र-ज़रीना पर बहुत ख़ुश, नाज़, ग़म्ज़ा,

---

वारद-प्राप्त
अहतयाज-आवश्यकता
कसाफ़त-मल
ख़ारिस्तान-काँटो का देश
ख़ाम-कच्चा
मरदूद-निष्कासित, अपमानित
कम्बत-वेश

१ दीवाना,
२ फ़क़ीर अपने और ईश्वर के सिवाय किसी का मुहताज नहीं होता।

इश्वा, सीने पर बहुत खुश। एने च में हिलक जाता। जाँ देखता वाँ बिलक जाता। वले जो कोई इस खाक में नाज़-ग़म्ज़े करता उसकी खबर नहीं धरता। उसे आशिक़ी करना आया च नहीं; उने इश्क़ की माया पाया च नहीं। जो कोई इस खाक के भीतर है, इस सें जीव लावेगा तो आशिक़ होवेगा। आशिक़ी जागा पर आवेगा। खाक सें जीव लावेगा दो क्या खाक पावेगा? यू खाक जिस पें खूब दिस आती, उसे समज्या ई च नहीं। खाकी च पर आशिक़ हुआ, उसे खाकी च भाती। खुदा न करे, एरवादे वक्त कुछ भला बुरा होता तो तूँ डरता की? जिस खाक पर तू आशिक हुआ वही च है, उसे बिसरता की? अगर तुजे एता डर है इसका तो इस खाक सें इश्कबाजी, करता की? जिसकी खातिर एता जलता था, जिसकी खातिर एता तलमलता था: उस बेग घर में सें ले जाव कता, माटी में माटी मिलाव कता, उसे सामने नको लाव कता। नजदीक जाते दहशत आता, वो में देखना नहीं आता। बस यहाँ समज कर आज लगन तूँ आशिक़ होर किसका था? वो होर कोई था, तें आशिक़ जिसका था। हज़ार हैफ़, जेसका तूँ आशिक था उसे देख्या च नहीं। उसकी सूरत किस बजा है, उसकी सूरत केस बजा है देख्या च नहीं। ऐसी आशिक़ी कूँ क्या है कहे। माशूक़ कैसी है, गर जान्या च नहीं, आशिक़ होकर माशूक कूँ पछान्या च नहीं, उसके जर ज़रीना होर केसवर्ती च गिरफ्तार था, यू खाक वी उसका एक लिबास था। इस लिबासी च सूँ यार था, इस खाकी च पर तेरा प्यार था। चूकें सें जीव लाया: पैघट में दग़ा खाया। अल्ला अल्ला आशिक माशूक के देखने की हमे अरज़ना च आशिक़ देखे हैं उनो सें बात पूछना। उनोके कंत में अरज़ना। रात-दीस माशूक का जिक्र करना। इस खाक सें, इस लताफ़त सूँ बोलता। यू हलता-चलता सो कौन है कर फ़िक्र करना। जो आशिक़ इस ध्यानी च में किया घर, अजब क्या है जो देखना बी होय मयस्सर। खुदा करीम है, रहीम है। जिस लोका कूँ यू इश्क़ बाज़ी खेलना आती उनो कूँ विसाल में बेतावी क्यूँ जाती? उनो कूँ का का आराम? उनो का कुछ और है काम। उनो का खयाल खुदा च कूँ है फ़ाम। उनो पर खुल्य है फ़ोज़ का दरवाज़ा, उनो का इश्क़ दायम ताज़ा, परवरदिगार की निहायत क देखने लगे क़स्द कूँ तो रसूल अल्ला कहे—"अल्लाह हुमा ज़दनी तहयुरन" याने इलाही मेरी खास्त कर। ग़र्ज़ आज़ाद आशिक़ की होर बात है, आज़ाद आशिक़ की होर धात है। आज़ाद आशिक़ नाववाली, बेपरवाह, धाता माता, साहब कार सें मक़सूद कारखाना किसे यार आता? अपने खातिर किया निचन्त, उसे काहे कूँ पीलखाने की चिन्त। अपें उसकी फ़ाम। यू आज़ाद, इसे क्या खातिर ज्यास्ती काम? यू खुदा सू च महजूज़ मशगूल, दोनों आलम कूँ गया भूल। याँ खुदा च है खुदाई नहीं, यहां कुछ जुदाई नहीं। यू आशिक़

हिलकना-मुग्ध होना, बिलकना-बिलखना
तल्लीन होना, चिपकना धातामाता-मस्त

खुदा च कूँ मँगता, खुदा कने बाज-खुदा ते कुछ नहीं रह्या। इस मन यू खुदा बाज़ सब ते बेतमा, उसका खातिर हमेशा जमा। बेतलब जो कुछ आता सो लेता ? तलब में खुदा कूं बी तसदी नहीं देता। बाज़े आशिक़ाँ बेपरवा ऐसे हैं कते; हज़ार मिन्नत सूँ दिये भी कुछ नहीं लते। उनो ते अपस कूं दिये हैं होर खुदा च कूँ लिए है। खुदा च उनो कूं बस, उनो कूं भी होर का हैगा नहीं हवस। बाज्याँ कूँ ज़ोरा सूँ दिये तो ज़रूर कूं धन्दा क़बूल किये, नहीं तो माशूक़ कूँ छोड़ कर धन्दे में पड़ना दर्द-सर है। किस आशिक़ कूं यू तमा बिना कौन आशिक़ इस काम पर है। यहाँ क्या करे कोई बात ? "हुक्म हाकिम मर्गे मफ़ाजात।" कोई कुछ कह्या, कोई कुछ कह्या। वले यू आपस में अपै रह्या। न इन्तिदाकी खबर धरे, न इन्तिहा कूं याद करे। कते हैं के बाज़े, खुदा के दोस्तॉ, सरमस्त, खुदापरस्त ऐसे हैं के हज़रत भी उनो कूँ देखने का आरज़ करेंगे, मुलाक़ात का शौक़ धरेंगे। जूँ के कते हैं के एक दीस हज़रत कहे के इलाही मुझे अपने दोस्ताँ कूं दिखला। फ़रमान हुआ के फ़लानी जागा एक घट है, उस घट में जा। हज़रत तमाम इश्तयाक़ सूँ उस घर के नज़दीक गये, दस्तक मारे, उनो कहे कौन है ? मुहम्मद—मैं मुहम्मद हूँ कर कहे। उनो बोले इस ठार बात यू नहीं आती, मनामनी यहाँ नही समाती। वहाँ मुहम्मद कूं भी यू बोल्या खुदा के ऐ मुहम्मद, बोल के "सैयदुल क़ौम खादिमुल फ़ुक़रा" फिर कर उनो वॉ च किये सदा। पीछे उनो इस घर का दरवाजा खोले, मिले। जो कुछ बाताँ बोलने किया-कियॉ, अपस में अपै बोले। मुर्त्तजा जिनो के कहे में रसूल होर खुदा, उनो फ़रमाते हैं के मैं सबसे झगड्या। मेरा हात सब के ऊपर वर हुआ। जो फ़क्र से झगड़ने गया तो फ़क्र मुझ पर वर हुआ। मुहम्मद फ़रमाये हैं के "अलफ़क्र फ़क्री" फ़क़ीर कूँ इसते क्या बड़ाई अछेगी भई ? याने फ़क्र मेरी बड़ाई है, यू बड़ाई मुझे खुदा ते आई है, यू बड़ाई खुदा कूं भाई है। ग़र्ज़ किया मुहब्बत बातिन, किया मुहब्बत ज़ाहिर, ऐसे कामाँ में यकायक कौन हो सकता माहर ? विसाल हुआ तो भी क्या आशिक़ कूं क़रार अछता है ? आशिक़ आसूदा होकर क्या अपने ठार अछता है। उचाट हर्गिज़ नहीं जाता। तलमलाट हर्गिज़ नहीं जाता। विसाल की खुशी में अंझू का जिन्स जो आता है, यू ग़म दिल में ते अंखियाँ की बाट पानी हो निकल जाता है। ऐश आकर ग़म का सीना चिकल्या, ग़म अंखियां की बाट पानी होकर निकल्या। खुशी होर ग़म यू दोनो नक़ीज़ है बाहम। यूँ दोनों दावेदार, मिल कर क्यूँ रहेंगे यक ठार ? जिसके हात में जो सपड्या वो उसे जालता। एक जोर हुए तो दुसरे कूं दिल में ते भार चालता। जो खुशी आती, त्यूं ग़म बी आता। ग़म का सहल खुशी आई तो दिल कूँ भोत

तसदी-कष्ट बाहम परस्पर नागहानी मौत है।
सदा-आवाज़ २ फ़क़ीरों का सेवक क़ौम का
नक़ीज़-विपरीत १ बादशाह का आदेश एक सरदार होता है।

भाता। दिल का दुश्मन ग़म, दिल कूँ खुशी तो होवे, जो ग़म होवे कम। एक ग़म सौ सौ नीश होता है। ग़म ते सीना रीश होता है। ग़म ते अक्ल दरहम होती, दरहम क्या बल्क कम होती। ग़म लहू कूँ पानी करता है, ग़म दिल में ग़म भरता है। खुशी उजाला, ग़म अँधारा। क्या करे यहाँ आदमी बिचारा? ग़म ज़ुल्मात, खुशी आब-हयात। ग़म बन्दीखाना, खुशी नजात। ग़म भर्या है, जितना सके उतना लेवे, खुशी खुदा देवे। यू अपना-अपना हिस्सा, बारे, फिर कर आया वही च क़िस्सा। फ़िराक़ का जल्या विसाल सूँ आराम पावे, विसाल का जल्या बिचारा किधर जावे? जो कुछ हल्क़ में हिलग्या, उसका इलाज पानी सू बिचारे। जो पानी च हल्क़ में हिलग्या उसे कोई काहे सूँ उतारे। फ़िराक़ के जलने कूँ सब कोई जानता, विसाल में जलने कूँ कौन पछानता?

पानी में की जो आग कते सो विसाल है
इस आग म्याने जलने कूँ किसका मजाल है?

अपै च सब इश्क़ की सूरत होवे तो विसाल में जले, इस हाल में जले। इस हाल कूँ क्या जानते, फ़िराक़ के जले-बले। जो इश्क़ हुआ तमाम, तो अपस सूँ लग्या अपना काम! बारे, जो कोई माशूक़ चाँसार है, कुछ फ़ाम धरते, आशिक़ कूँ रिझाने ले कर महरी च सूँ हलाक करते।

अलक़िस्सा दिल कह्या, मैं आशिक़ हूँ। अगर रोता हूँ तो सुहाता है। तूँ माशूक़, तुजे क्यूँ रोना आता है? जफ़ा आशिक़ का वतन-मुक़ाम; तूँ माशूक़ तुजे ग़म सूँ क्या काम? माशूक़ शीरीं, आशिक सलोना, माशूक़ का काम हँसना, आशिक़ का काम रोना। माशूक़ का शेवा नाज, माशूक़ बेपरवा बेनियाज़। माशूक़ दर्द, आशिक़ दर्मनी। आशिक मुहताज, माशूक़ ग़नी। ज्यूँ आज़ाद होर असीर, ज़ूं पादशाह होर फ़क़ीर। ऐ गुलरु, ऐ खुशरवो, ऐ खुशबू, ऐ माहचहर; माशूक़ में नहीं देखता एता महर। हुस्न धन, मनमोहन बोली के सुन ऐ दिल, यू बात समजना है भोत मुश्किल। मैं जानती हूँ किस पानी सूँ खमीर हुई आशिक़ की खाक; के हम फ़िराक़ में, हम विसाल में दोनों जागे हैं हलाक। न यहाँ आराम न वहाँ आराम; जिस पर यू क़िस्सा गुज़र्या उसे च यू फ़ाम। [1]दो गुना रंज अज़ाबस्त जाने मजनूँ रा बलास्त। मोहब्बते लैला फ़ुरक़ते लैला। जल-भसम होकर बारे पर उड़े तो आशिक़ हुए। आशिक़ों की मजलिस में चढ़े। अपस कूँ खोना तो इश्क़ में कुछ

नीश-डंक
रीश-टुकड़ा
असीर-बन्दी
खुशखो-अच्छा स्वभाववाला
मुश्ताक़ी-शौक़
हिलगना-अटकना, चिपकना
महरी च मूँ-दया से ही
दर्स-दर्शन
दर्सनी-दर्शन करने वाला
दोनों जागे-दोनों जगह

१ मजनूँ को दोनों तरह से कष्ट है, लैला के मिलन में भी और वियोग में भी।

होना। जो लगन अपस में अपै बाक़ी है तो लगन उसमें उसकी मुश्ताक़ी है। इश्क़ के शहर में, प्रीत के नगर में माशूक़ वही च जो आशिक़ कू प्यार करे। आशिक़ पर उपकार करे। आशिक़ के दिल कूँ गुलज़ार करे, ना के बेज़ार करे, ख़ार करे। इन ते छुड़ावे; जीव पर ल्यावे; जलावे, तुलमलावे। ऐसी माशूक़ सहल है, ऐसियाँ सूँ इश्क़ करना जहल है। इनो कूँ कूड माशूक़ाँ कते हैं। इनो कूँ होड़ माशूक़ाँ कते हैं। संगदिलाँ बेख़बर, किसी का दर्द नहीं होता असर। बेदर्द, बेकटर, पत्थर। अगर आशिक़ मरता अछेगा बी हँसतिया खड़ियाँ रहेंगियाँ, टुक महर सूँ की मरता करता ना कहेंगियाँ। इतने पर बी की चुप रहतियाँ हैं? मुआ तो भला गई कहतियाँ। मुवा की आशिक़ हुआ बिचारा? आशिक़ भोला, कुछ दिल मे नहीं लाता। सती होकर आग मे पड़ चुप आप में जलाता। दिल लगाया सो तोड़ने नई जानता। भई, होर यकस सूँ जोड़ने नही जानता। तोड़ने जाता तो तुटता नही। छुड़ा लेता तो छुड़ता नहीं। दिल मे इश्क़ मुलग्या। आशिक़ बिचारा हिलग्या। माशूक़ाँ में लइ नाज़ा लइ छन्दा हैं। लइ बहाने; पीछे रहते रहते कोई माशूक़ आशिक़ पर महरबान होती तो ख़ुदा जाने। जो अपने इश्क़ की अछेगी एती गर्मी; वहाँ जैसी पै सख़्त हुई, आख़िर कुछ तो पैदा होवेगी नर्मी। इश्क़ का सवाद है इस ठार, जो दो तरफ़ ते उबलता प्यार।

अलक़िस्सा मै तेरे दीदार की बहुत मुश्ताक़ थी। तेरी बात-दीदार-गुफ्तार की बहुत मुश्ताक़ थी, सो मुराद बर आया; यहाँ ख़ुदा मिलाया। आशिक़ थी; तेरी ख़बर पाई थी। चोरी सू तुझे देखने आई थी। इश्क़ का सह्या दुःख नही गया। जेता रहूँगी कही तो बी रह्या नहीं गया। मैं इश्क़ तुज सूँ ल्याई हूँ, जीव पर उठ कर आई हूँ। एताल रज़ा दे जाती हूँ, विसाल की ख़ातिर जागा ल्याती हूँ। या तुजे बुला भेजती हूँ, या मैं अपै तुजे बुलाने आती हूँ। मै कही सो तहक़ीक़ जान, दिल में अपने बुरा नको मान। ख़ल्क़ के मूँ में आकर पड़ी बात, आसमान टूट्या पीछे कौन देता हात? समन्दूर कूँ क्यू बाँदना पाल, आफ़ताब कू क्यूँ रखना सन्दूक में घाल? दीवा घर में रोशन हुआ, पीछे जोत कूँ कहाँ ले जाना? बन में फूल खिला पीछे बास क्यूँ छुपाना? मूँ में ते बोल निकल्या पीछे सो क्या फिर कर आता है? तीर कमान ते छूट्या सो क्या सँभाल्या जाता है? थाल भूई पर पड्या आवाज़ कूँ क्यूँ पकड़ना। ख़ल्क़ ख़ुदा का, किसे मना करना? किसी सूँ झगड़ना, लोकाँ ते डरना, ज़रूर है क्या करना? इश्क़ में पुख़्ता अछना ख़ामी ख़ूब नई। समज सू काम करना बदनामी ख़ूब नई। यू इश्क़ का जतरब पेंदे मे नादना; हेड़ा खाये तो हड क्या गले में बाँदना? जो कोई इश्क़ में आया है, अपना कड़ छुरा खाया है। मिठाई छुपाने में है, ना बदनाम होकर पनवाने में है। दिल कह्या ऐ नार, ओतार, शीरीं गुफ्तार, हँसमुख, कुन्करफ्तार, ख़ुरशीददीदार, आशिकाँ की आँखियाँ का सिंघार, चतर चौसार तूं

जतरत-तरीक़ा, आदत कूड-कचरा बेकटर-कठोर

ऐसी है जो कोई तुझ से बुरा माने, तेरी बात कूं झूट कर जाने, जाँ दोनों का दिली च हुआ साफ़, पीछे वाँ क्या है ख़िलाफ़ ? कह्या बिस्मिल्लाह, ख़ुदा हमराह। जाना बेग फिर कर आना। हुस्न परी, ग़म्ज़ा भरी, औतार इस्तरी ख़याल होर नज़र होर तवस्सुम कूँ दिल कने रख कर विसाल के छज्जे पर चड़ी। सारा दीस वहाँ च थी ता नमाज़, शाम पड़ी---

फ़र्द

भुई पर के चन्दनी यू बिन पर की यू परी है
दिल सेती मिल के दिल सूँ क्या क्या अदा करी है

ज्यूँ सादी कता है के "ने सब्र दरदिले आशिक़ न आब दर ग़िरबाल।" आशिक़ बहुत बेताब, आशिक़ का अजब कुछ अछता है हाल। आशिक़ बेआराम, बेताक़त; आशिक़ कूं सबूरी सूं क्या निस्बत ? वो छन्द भरी, इस ठार एक अदा करी। वफ़ा होर नाज़ उस छज्जे पर एश की मजलिस सँवारी थी। दिल होर नज़र होर ख़याल होर तवस्सुम इस बाग़ मे, पानी के चश्मे पर सुहबत रखते थे बारी। हुस्न धन मनमोहन, जिस कूं बहुत मुश्किल लगी दूरी, दिल में कुछ नही उबरी सबूरी। क्या करू, हात चूरी, बेताक़त हुई बौरी। अपना दिल खोली, वफ़ा कूं बला कर बोली के अताल खयाल होर तवस्सुम कूँ बोल के दिल का दिल हात ल्या। सब मिल उसे दारू-ए-बेहोशी देव।

बैत

दिल बेख़बर हुआ है दिल ने ख़बर सत्या
आशिक़ होकर अपस कूँ किधर का किधर सत्या

होर जुल्फ़ कूं कही के दिल कूँ इस छज्जे पर यूँ लेकर के दिल कूँ ख़बर न होवे, दिल न जाने ना अपस कूं समझे ना दुसरां कूँ पछाने। ख़याल होर नज़र होर तवस्सुम होर वफ़ा दिल कूँ दारू-ए-बेहोशी दिये, बेख़बर-बेसुद किये। जुल्फ़ दिल कूं कुल्फ़ होकर इस छज्जे पर थे खींच लाई के दिल की अरवाह कूँ ख़बर नईं आई। दिल के दिल में के मैं बनी च में हूँ, उस गुल्शनी च में हूँ; हुस्न धन, जगजीवन, मनमोहन दिल पादशाह, आलमपनाह के गले लग जोबन सूं तलासी पग मुख चूमी। अपने सीने पर उसका हात धरी, आह मारी, उसास भरी। टुक हँसी-टुक रोई। अपस में आप कुछ बाताँ करी।

तवस्सुम-मुस्कराहट
अरवाह-आत्मा (रूह का ब.व)
बनी च में-वन ही में
१ प्रेमी के मन में धैर्य नहीं रहता और चलनी में पानी नहीं टिकता।

फ़र्द

तमाशा है अजब कुछ इस ठार
के आशिक़ मस्त होर माशूक़ हुश्यार

कही के ऐ दिल, मैं क्या जफ़ा देखी तेरे बदल ! तुज पर भी लइ लइ महनत गुज़री मेरे बदल । तेरी यारी पर मै वारी । तेरी अख़्तियारी पर मैं वारी । जिसे मर्द कते सो तू च है । आशिक़ साहब दिल कते सो तू च है । यू नवा मिलना, यकायक फूल होकर क्यूँ खिलना ? मूँ देखते शर्म आती. यकायक बात क्यूँ बोली जाती ? इसने दिल कूँ बी खबर करी के दिल सूँ कुछ हज पावे । हुश्यारी में आँख भर देखते मबादा लाज आवे । पार्की सूँ हमदम्त होती थी, पार्की सूँ दिल कू देख मस्त होती थी । वो चतर परी. ऐसी कुछ फ़िक्र करी, दिल बेख़बर मतवाला, हुस्न करती कुछ हातबाज़ी । कुछ ऊपर का चाला होर फ़ाम न था, ज्यास्ती कुछ काम न था । दिल में इश्क़ गलबला करता है । नज़र का सवाद बी बला करता है । हर कोई तन सूँ तन मिलाता । जाँ पाक इश्क़ है वाँ नज़र स बी कुछ किया जाता । जूँ भँवर फूल का रस लेता, बन में लताफ़त से दिल का हबस लेता । महबूब-मक़बूल, ज्यूँ नाजुक फूल । उसे रगड माल न करे तो बहुत खूब । बहुत पाक । इश्क़ में सवाद है । काम ख्याल न करे तो बहुत खूब । शौक़ ज्यास्त होता है तिल-तिल, दायम ताज़ा अछता है दिल; दिल बहकता नही एक जागा लग्या तो भी दुसरी जागा लगता नही । इश्क़ ज़ोर पकड़ता है, इश्क़ का काम रौनक़ कुछ पड़कता है । जिस शौक़ ते शौक़ पाना, उस शौक़ कूँ ना गेवाना । वो शौक़ क्या पीछे, वैसा शौक़ भी का ते ल्याना ? भई, इस शौक़ कूँ याद कर-कर क्या ख्वातिर पछताना ? ग़र्ज़ जितना सकना, उतना रखना । इस फ़िक्र में अछना; जो अपस कूँ इश्क़ की मस्ती भोत चढ़े, क़तरा वजूद में ते कब भार पड़े ? यू तुख्म इन्सान, इस तुख्म में लइ लइ तमाशे हैं । जान-पछान इस क़तरे कूँ ज़ोर सूँ खोलना है अँखियों की बाट, इस क़तरे सूँ जोर सूँ चढ़ना है घाट । यू क़तरा निरे वजूद का कूत है, इस क़तरे में महर-मुहब्बत-मुरव्वत इस क़तरे के ज़ोर सूँ तूँ ज़ोर पकड़ता है । अव्वल ना कुछ था एताल आलम कुछ और पकड़ता है । यू तन का विसाल पर अखंड रहना मज़ा किसका मजाल है ? यू दिल का विसाल है । दिल के विसाल पर आ खड़े रहना किसका मजाल है ? दिल सूँ दिल मिलाना । नज़र सूँ महबूब की नज़र में जाना यू ठार अपस कूँ देखने का है । इस ठार अपस कूँ अपै पाना, कई तो बी दिल बहलाना । काम यू है जो नज़र खुलना । "यै मन अरफ़ा नफ्स हू फ़क्त अरफ़ा रब्ब हू' का मुक़ाम है । यू क्या हर किसी का काम है ?" याने जो कोई अपस कूँ जान्या, अपने खुदा कूँ

रगड माल-रगड़ना, मसलना

' जिसने अपने को पहचाना उसने ईश्वर को पहचाना ।

पछान्या; मबादा कोई जाने के यू कुछ नवा आज हुआ है, इस ठार हज़रत कूँ मेराज हुआ है। ग़र्ज़ आशिक़ कूँ यू खयाल होना, खुदा दे तो यू विसाल होना यू बहुत नाजुक बाट है, यू बहुत मुश्किल घाट है। बाज़े कते हैं वली जाने किनके हज़रत कते हैं के "रायत रब्बी फ़ी सूरत अहसन अमरूद" याने मैं खुदा कूँ देख्या क़बूल-सूरत, आदम की सूरत मे; उस मनहर, उस मनमोहन मूरत में। देखना दिखाना है सो अँखियाँ में च है। यू कुछ ढूंडना-पाना है सो अँखियाँ में च है। जिसे अँखियाँ हैं सो अँखियाँ कूँ जानेगा। जिसे अँखियाँ है सो अँखियाँ में क्या है सो पछानेगा। फ़ारसी में कता है के—"दर दिले दीदा दोस्त, बादीदा खुद ओस्त" यू दिखलाना कौन दिखलाता? इस दीदे का भेद कौन पाता? जो कोई दीदे कूँ देख्या सो दीदा हुआ, हक़-रसीदा हुआ! काम उसका सीधा हुआ। अली वली जिनो की बात तहक़ीक़ खरी सिरा उनो कते हैं के—"लमअाबद रब्बा, हत्ता लम यरा।" याने अगर खुदा कूँ उने न देख्या तो उसकी इबादत न करना यू मशक्कत, यू रियाजत न करना। न कुछ शक़ दिल मे धरता हूँ, कते हैं खुदा कूँ देख कर खुदा की इबादत करता हूँ। कते हैं मुहम्मद हौर अली किया अखियाँ होवे तो खुदा कूँ देख्या जाय। वैसे पैग़म्बर, वैसे वली किया अँखियाँ हुई तो खुदा कूँ देख्या जाय। आशिक़ाँ वासिलाँ की अँखियाँ होवे तो खुदा कूँ देख्या जाय। इस बात कूँ यू भी एक हदीस है पछान के—"अलइन्सान मेरातुल इन्सान" याने इन्सान आरसी है इन्सान की, अपस कूँ अेप देखने के ग्यान की। अगर किसे कुछ खबर है तो यहाँ इसी इशारत अँखी पर है। अखिया मे की बाट खुलना तो कई आशिक़ होना, तो कई भलना। दीदाँ की बाट मूँ पावें लग सब जीव होकर माशूक़ के जीव में जाना, तो अपस कूँ देखना तो माशूक़ कूँ पाना। जीव होता तो जान कूँ देखना; दीन होता तो ईमान कूँ देखना। वली यू आलम एक आलम है। इस आलम में दो आलम दिस आता है। यू आलम पीर व मुर्शद बग़ैर कौन किसे दिखलाता है? ज़ाहर का इश्क़ अगर किस अछे तो यू अछना के बातिल में ते बी उसे वो ध्यान अछे, ता खुलना उस पर खुले। ता मुश्किल उस पर आसान अछे। इश्क़ हक़ीक़ी अछो या मजाज़ी, इश्क़बाजाँ ने यूँ च खेलने इश्क़बाजी। सई करना के अपै इस बात में माहिर होवे, यू छुपा है सो अपस पर ज़ाहिर होवे। आशिक़ाँ जो दुनिया में जिये हैं बहुत कर उनो यू च धन्दा किया है। यू अपस कूँ जानने की बात है। यू खुदा कूँ पछानने की बात है। हदीस कुदसी है, एन बुद-सी है जान—"कत कंज़न मख़्फ़िया फ़हबत अन अरफ़ा फ़कुल्तुल इन्सान" याने मुज पर मुजे प्यार आया तो मैं आदम कूँ पैदा किया के मुझे समजे, मुझे पछाने, मुझे पावे, मेरे इधर आवे, मेरी कुदरत कूँ देखे, मुजे जाने। इश्क़ मजाज़ी; अजब तमाशे का है बाज़ी। इश्क़ मजाज़ी जो

१ यदि तुम उसे नहीं देखते तो २ इन्सान इन्सान का आइना है।

कुदसी-पवित्र, कुरान और हदीस के बीच की चीज़

उसकी प्रार्थना मत करो।

सतें फ़ेल बद पर ल्याये। मना करना बी एक दुख हुआ है। आदमी बहुत बुरी बला है। आदमी ते हद हुआ है मगर ज़ना कूँ भाता म्याने म्यान, मँग मँग भेजता उनो खाये सो झूटे पान। उसकी ख़ोई लगी अंग की चोली, उनो खुशबोई लाई सो खुशबोई, उनने खाई सो गोली। बुढियाँ ल्यातियाँ इधर-उधर कियाँ हिकायताँ। बहुत सवाद कियाँ बातां होतियाँ। इश्क़ डाँटा सख़्त, काँदाँ देने का आता वक्त। इश्क़ अँपड़या इस ठार, अताल जीव जाने कूँ क्या बार? ऐसियाँ बातां सुन सुन घर-घर होती घुनपुन, चारों तरफ़ होता गुल, लोकाँ के उठते पेट में सिल। दुनिया है हरेक कोई यकस सूँ जीव लाता। यू लोकाँ चुपके पुकारते। इस लोकाँ का क्या जाता? यू ग़ोग़ा किये तो उनो के हात में क्या आता है? उनो के सीने फटते, उनो की शर्म यकस ले खाने उठते। नही सुने सो लोकाँ कूँ सुनाते। कूँचे-कूँचे धँडोरा फिराते। जानो अपै ऐसे कामाँ किये च नहीं। अपै किसे दिल दिये च नही। अपै फ़रिश्ता, बेगुनाह, पाक यू च बिचारा गुनहगार। उनो करते हलाक। लोकाँ पर नक्शाँ चले बग़ैर रहते नही; अपने दिल की बात तो ख़ुदा बहतर जानता व कते नहीं। बातां बहुत बड़ी। बहुत मुहर्ताशम। बाँदी मुट्ठी का बड़ा भरम। अपना दर्द जैसा है दुसरे का दर्द बी वैसा है। आदमी मुहब्बत कूँ समजना, अदमी के दिल मे इश्क़ का जोश अछना। आदमी खता बख़्शना, आदमी ऐबपोशी अछना। ख़ुदा 'सत्तारुल अयूब' है। ख़ुदा 'ग़फ़्फ़ारुल ज़नूब'। जिसे ख़ुदा देवे उसे च इस बात की सकत है, ऐबपोशी ख़ुदा की सिफ़त है। अपना ऐब छुपाते, दुसर्यों का ऐब भार भाते। उसके दिल में टूट्या इश्क का कोटा, उनो करते हँस हँस कर लोकाँ में ताँटा। फ़िराक़ कूँ यहाँ बहुत ज़ोर। ज्यूँ ज्यूँ बदनाम होता त्यूँ त्यूँ मुहब्बत होता। होर ग़म का बाज़ार गर्म। ख़ुशी का क्या भरम। काम जीव पर आया अताल। कों की शर्म, यूँ च करते करते जीव पर आता, यकादे वक्त जीव जाता। अताल इश्क़ मलामती, कलावन्ती, बाज़ारी। यहाँ तो बहुती च खारी। बहुती च दुश्वारी। दायम बदनामी, दायम रुसवाई। यू इश्क़बाज़ी किससे हो आई। दायम क़बाहत, दायम फ़ज़ीती। जेते कैकी तेती दायम रश्कों ते हलाक, दायम जहलते। एक जने सूँ जीव नहीं लाते, सौ जन्या कने जाते। एक घर में तो चार भार, यू भी अजब तमाशे का है ठार। तबियत बहुत नाज़ुक, बहुत नर्म। वो वेहयाई होर यू शर्म। जिस कने गये उसके च होकर दिखलाते, हज़ार जिन्स सूँ जीव लाते। नाज़ शर्म करते यूँ फ़ाश, असीलाँ बिचारियाँ क्या क़माश। जानो एक ते दुसरी की छाँव नहीं पड़ी। ऐसे करते शर्म ऐसी। शर्म की बड़ी घूगट में ते मूँ भार नहीं काड़ते, बाज़ार में खड़े पर्दे फ़ाड़ते। हटक

ख़ोई-पसीना
क़बाहत-हर्ज
क़माश-गिनती
काँदाँ-कंधे
घुनपुन-कानाफूसी
ताँटा-झगड़ा
भार-बाहर

१ पाप पर आवरण डालने-वाला।
२ पापो को क्षमा करनेवाला।

लोकाँ कूं बुलाते, एकस कूँ दिखला कर एकस कने जाते। उस जागा क्यूँ जीव लाना, यू किसे भाना ? यू नामाकूली देख्या क्यूँ जाना ? यहाँ इश्क की तो गर्मी, वले बहुती च है बेशर्मी। हज़ारों के, केते यारों के ऐसियों सूं क्या करना यारी। ऐसियाँ ते क्या डुंडना वफ़ादारी। यू बैठिया है पैके मिलाने, इनो मुहब्बत क्या जाने ? पैके हलाल; मुहब्बत हराम। मुहब्बत सूं इनो कूं क्या काम ? यू सवाद बाज़ारी, बालग़ा एक रात की यारी। खीसे कियाँ दुश्मन, घर के लोकाँ के हिस्से किया दुश्मन। ऐसियों कूं क्यूँ पतयाना। ऐसियों कूं क्यूँ देना मन ? एकस पास मन, एकस पास तन। एसियों की क्या आस ? जीव लाकर फुसलातियों, महज़ पैका च खातिर आतियों। जो लगन कुछ अछता तो लगन खातियों। एक घड़ी कुछ नहीं तो निकल जातियों। जानो कधी आये च न थे, जानो आशनाई च न थे। खाने में ते उड्या लोन, अताल तुमें कौन हमें कौन ! यहाँ मोत नको मरगोल, यहा जो आया सो हुआ डांवाडोल। ग़ज़ ऐसी छिनालों की बुरे चाले, ऐसी छिनालों ते खुदा सँभाले। यू बुरे जेता चट, यहाँ कोन कर सकता दिल घट। नेम-धरम होवेगा, अगर पत्थर अछेगा तो यहाँ नर्म होवेगा। जो कोई अछता है इश्क के संग, वही समजता है उस इश्क के रंग।

अलकिस्सा वो हूर जैसी हुस्न परी, वो दीस दिल कूं बेहोश कर उस विसाल के छुजे पर ल्या कर हज़ करी। दिल कूँ बेखबर कर, बेहोश कर, म्हाड़ी पर ल्यावे ले जावे, किसे ना दिखलावे। किसे ना सुनावे। चोरी का काम, किसे नहीं होने दे फ़ाम। वैसे में उस वक्त रक़ीब बेनसीब, गुमराह, रूसियाह की एक बेटी थी। उसका नाम ग़ैर, सब सूं उसका बैर। बहस्ब ज़ाहिरी राज़ी सूं रहती थी, हुस्न की यू दग़ाबाज़ी सूं रहती थी। जों जावे, दो मे झगड़े लगावे। मिलियों कूं बिछडावे। झूटियों बातों कती, केका मती लूतरी, चाड़ी, होर दिल मे कुछ होर, मूँ में कुछ होर। ज़बानदराज़; सब उस सूं वाज़। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन, मन हरन कने रहती थी। वले भेद अपना किसे नहीं कहती थी। हुस्न नार, दिल का अधार, चतर चौसार तूँ च समजी के यू नामाकूल, बेउसूल, मुदार, शर्म नहीं धरती। एक के अंग एकस की बात करती।

फ़र्द

जिसे हया नहीं कुछ उसते बहुत डरना है
फ़िकर अपस की हया की वी कुछ सो करना है

कला की कताँ लाती, फ़तवे उचाती। मूँ की बहुत हल्की, बुहुत शूख़, निडर।

बहस्ब ज़ाहिरी-प्रकट रूप से लोन-नमक लूतरी-निन्दा, एक के विरुद्ध दूसरे को भड़काना
म्हाडी-अटारी
खीसे कियाँ-जेब की, थैली की केका-(?)

अपनी च शर्म नहीं धरती सो किसकी शर्म की उसे क्या ख़बर ? बेहया बेईमान। बदकार, बदगुमान, बेऐत बार की ऐतबारी नहीं। बात किसकी दिल में छुपानहारी नहीं। उसे जानती थी, खूब पछानती थी। जो हुस्न धन, मनमोहन बाग़ में जावे उस नापाक कूँ संगात ना ल्यावे। जो कुछ दिल सूँ मिलने की फ़िक्र करे उस हराम-ख़ोर ते बहुत डरे। ग़ैर ते समजी के हुस्न धन मनमोहन अपस सूँ कपट पकड़ी है, कुछ हट पकड़ी है। यहाँ तो प्यार नहीं, अताल कुछ भली बार नही।

बैत

यू दग़ाबाज़ थी वो थी सादी
सादी थी उसते यू दग़ा आदी

जिधर गई भी यकेले जाती, मुंझे सगात नही ले जाती। मै उसे नहीं भाती। ग़ैर की ग़ैरत उठ खड़ी, ग़ैर हुस्न के दुम्बाल पड़ी के देखूँ यू मुजते अपस कूँ छुपाती है। यकेली किधर जाती है ? यूँ च करते करते एक रात उस बाग़ में हुस्न-धन, मनमोहन संगात दिल सूँ मिलने जाती थी यू नाबरख़ुरदार बी उसके संगात चोरी सूँ लग पीछें आती थी।

बैत

शैतान अगर किसे लगे तो कोई तबी छुड़ाए
आदमी किसी के पै में पड़े तो जीवी च जाए

शैतान कूँ मुठी खुल उतनी बती दिये तो जाता है। आदमी बुराई पर आता तो कलेजा खाता है। शैतान का, शैतान की सूरत सूँ फ़िक्र सहल है। शैतान का फ़िक्र क्या करना ? बुरा आदमी बुरा, बुरे आदमी ते डरना। शैतान शैतान की सूरत सूँ अपस कूँ दिखलाता, उसका इलाज कुछ किया जाता। बुरा आदमी बड़ा शैतान। फ़रिश्ते का लिबास ले आता। भला आदमी बिचारा क्या जानता ? दग़ा खाता, भला जानता के यू भला च है, दिसता च है। सच्ची-मुच्ची यू फ़रिश्ता च है। आदमी बिचारा केता पछाने ? ग़ैब की बात खुदा च जाने। ग़ैब का आलम किसे दिखाया रू। 'वैइन्दहू मफ़ातुल ग़ैब ला योलिमुहा इल्ला हू।' याने ग़ैब के कील्याँ ग़ैब के साहब पास, ग़ैब के साहब कूँ मालूम। ग़ैब के साहब ने जिसे मालूम किया उसे मालूम, हुए यू ग़ैब के उलूम। मुनज्जमाँ कूँ भी बोले हैं हज़रत-जिनो का दिल काबा याने ग़ैब के पर्दे इनो क्यूँ खोलते ? मुनज्जिम सब झूट बोलते। बाज़े बोलते

मुनज्जम-ज्योतिषी तबी-तभी १ उसके पास अदृश्य की कुंजी है
मायल-मुग्ध सादी-सरल
सच्चीमुच्ची-सचमुच ही

उनो का बोल पकड़या है मकान, सच होर झूट के म्याने म्यान। जेता बोलेंगे उनो च सच, उनो का बोल न झूठ न सच। आदमी आजिज़ होकर काकलूत ते पूछने जाता, उनो का बोल कधीं हो आता, कधीं नहीं हो आता। हात में रिसाले लिये हैं, ग़र्ज़ पेटभरने जागा किये हैं। बारे, हुस्न नार, चतर चौसार ज्यूं दायम जाती थी, वों च जाकर उस छजे पर चढ़ी। यू बी उस छजे पर जाकर एक कोने में मारी डरी। हुस्न होर दिल के चाले सब खातिर लाई, उनो दोनो का भेद पाई। होर कही हुस्न जो मुजते डरती थी होर एता करती थी सो यू था काम, मैं तो करी फ़ाम। ग़ैर कूँ बी उनो दोनो का चाला देख कर इश्क़ हायल हुआ; ग़ैर का भी दिल दिल पर मायल हुआ। ग़ैर कूं बी दिल का इश्क़ डाड पकड्या, बहुत उचाट पकड्या। दिल में बदनीयत धरी, अपस में अपै यूं फ़िक्र करी।

बैत

दिल कूँ यूँ देख दिल कूँ बदलाई
हुस्न के दिल में शक़ नहीं लाई

इन कमज़ात ने अपनी ज़ात दिखलाई। आख़िर अपनी ज़ात पर आई के हुस्न की चोरी सूं उस म्हाड़ी पर चढ़ना होर दिल के विसाल की लज्ज़त कूँ अपड़ना, मैं बी हुस्न ते हुस्न में खूब हूं, दिलरुबा हूं, महबूब हूँ। मै बी चुलबुलाने जानती हूँ; मैं बी दिल कू बहलाने जानती हू। क्या मुंज मे नाज़ होर ग़म्ज़ा नहीं? क्या मुंज में शेवा होर इश्वा नहीं? मेरा मु भी फूल का चमन। अग्खिया जू लाले हैं; मुज में भी बालेबाल छन्द होर चाले हैं। अगर खूबी का दावा धरूँगी तो हूर-परी सूँ बात करूँगी। मै बी आरसी में अपस कूं देखती हूँ। अपस कूँ जानती हूँ, अपस की खूबी कूँ पछानती हूँ। जिस जागा पर मेरा फ़ाम है, वहाँ दिल बहलाना केता काम है?

फ़र्द

दिल सूं बाँधी थी जीव की डोरी
आके खाली वक़्त करी चोरी

यू मसला मालूम हुआ आज—'खाली घर में कुतियाँ का राज।' बारे, एक रात हुस्न धन, मनमोहन, जग-जीवन शहर में च थी। हुस्न का नहीं हुआ आना; वक्त खाली देखी उस हरामख़ोर कू यूँ च हुआ बहाना। दिल सूं मिलने खातिर बहुत तड़फड़ी, उस बाग़ में इस विसाल के छजे पर चढ़ी। सेहर-टोना बहुत जानती

बालेबाल-रोम रोम। बिल्कुल मसल-मसला, कहावत

थी, वहाँ हुस्न की सूरत पकड़ कर खड़ी ? ख़याल होर नज़र होर तवस्सुम कूँ, होर वफ़ा कूँ ज्यूँ हुस्न फ़रमाती थी वों च अपै भी फ़रमाई, दारु-ए बेहोशी दिल कूँ दिलाई-पिलाई। होर ज़ुल्फ़ कूँ बी हुस्न के नमें च बोल कर ज्यूँ-त्यूँ दिल कूँ उस विसाल के छुजे पर ल्याई। गले ल्याई—समजाई।

फ़र्द

एक अेताँ कूँ आ दग़ा दी है
क्या मुफ़त्तन है क्या बला की है !

यू बदअस्ल, शैतान की नस्ल हुस्न के तख़्त पर दिल सूँ लटपट हुई। उसका बी दिल दिल सूँ लग्या। दिल पर आशिक़ निपट हुई। वैसे में ख़याल जो सोता था सो जाग्या। दिल दिसता नहीं, किधर गया है कर ढूँडने लाग्या।

दिल की ख़ातिर अजब रखे रखवाल
ग़ैर जो चोरी किये तो जाग्या ख़याल

ख़याल का मुश्किल हुआ हाल। ढूँडते-ढूँडते विसाल के छुजे पर जो आया तो मक़सूद अपनी पाया। देखता है जो ग़ैर दिल की गोद में मस्त पड़ी है। दिल बेख़बर, ग़ैर कूँ मस्ती चढ़ी है। यहाँ यू नामहरम महरम है, यहाँ तो कुछ का कुछ आलम है। ख़याल फिलहाल शहर-दीदार कूँ जाकर, उस गुलज़ार कूँ जाकर जो कुछ देख्या था सो हुस्न नार कूँ, दिल के सिधार कूँ, दीद्यों के अधार कूँ ख़बर बोल्या। मामला यूँ है कर बोल्या। हुस्न यू बात सुन, हैरान परेशान-सरगर्दान। न खाना न पानी, कड़वी हुई सब ज़िन्दगानी। आग की भड़की उठी तन में, आहा मारने लगी मन में। सौकन की झल, नौज़ो बिल्लाह-जीव जावे निकल। इस झल कूँ कौन सँभाले ? तन-मन-रंग व रूप सब जाले।

बैत

जाँ ते सौकन जो मर्द कन आती
झल तो बख़्ताँ की सूसे नहीं जाती

अगर मर्द आग में पड़ो कहे तो आग में भी पड़ना भाये, वले सौकन की की झल सूस्या न जाए। सौकन अकेले जिस ठार, उस मर्द ते बेदिल-बेज़ार। औरत चुप, शर्म कू चुप; मर्द कने आवेगी। जाँ सौकन म्याने आई वहाँ लज्ज़त क्या पावेगी ? जां सौकन होती वहाँ औरत ज़रूर कूँ बेज़ार होकर मर्द कने सोती। न मन का सवाद न तन का सवाद। सीना जलता दिल में तड़फड़ी, सेज़ पर आई है,

मुफ़त्तन-उत्पाती हुस्न के नमें च-हुस्न की तरह ही सौकन-सौत

जाकर दोज़ख़ में पड़ी। क्या जाने क्या गुना की थी अव्वल ज़माने; जो यू आकर पड़ा अज़ाब म्याने। सौकन ना सोवे ना सोने देवे; सौकन जीव पर उठे सौकन जीव लेवे। सौकन के मुहब्बत में फ़तवा उठे, सौकन ते जुड़्या दिल टूटे। सौकन आई दुख से सीना फटया। सौकन आई मुहब्बत का सवाद उठ्या। दायम झगड़तियाँ, जूँ बुलबुलाँ लड़तियाँ। इधर ते साले, उधर ते सालियाँ। चारों तरफ़ ते बरसतियाँ गालियाँ। कोई कुआ गिरती कोई बाई; घर में खेलतियाँ चाई माई। यू घर में सुख सूँ नहीं सोता; म्याने म्याँ लोकाँ का हँसना होता। जो देखे तो कलकल, औरत ते ज्यास्त सास की झल। साला दुश्मन, साली दुश्मन। बजर का इस बिचारे का मन। किसे-किसे समजावे ? किस-किस के बाताँ-तग़ादूयाँ ते भार आवे। बेटा-बेटी अपनियाँ मावाँ खातिर जुदा लड़ते, यू जुदा तलमलते। यू जुदा चरफड़ते। बेज़ार होते। बाप के इस्म सूँ यू बी दुश्मन हो बैठते। एक क़िस्म सूँ दिल सब होता भंग। सादी कता है के --

बैलाए सफ़र बेह के दरख़ाने जंग
तेही पाये रफ्तन बे अज़ क़फ्शे तंग

सौकन कूँ देखने का किसे ताब ? जिस घर में सौकन आई वो घर खराब। सौकन आदी की सेज़ की तक़सीमदार। यू झल कूं सूसे तोबा अस्तग़फ़ार। जिन आसूदगी कूं दुसरी औरत किया, उने बी तरी। अपस कूं अज़ाब में दिया। केती जागा अपस कूं बाट भावे। एक दिल दो जागा क्यूँ लावे। एक सू तोड़ना तो दुसरे सूँ छोड़ना। जहल ते दोनो सीना चाक, यू बिचारा म्याने म्यान हलाक। एक बोले दिल होर कहे एक यार, एक जीव कूं लगायेगा दो टार। इधर यू लड़ते, उधर वो झगड़ते। सुबा उठ कर घर में उचाट, आसूदगी बारा बाट। आसूदगी की उसे तो वक्त पड्या होर एक हुज़ूर, एकस के देखने का चोर जरूर। कौन एकस कने सोता, दिल दुसरी पर होता ! एकस कू किया प्यार तो जानों दुसरी कूं दिया ज़हार। एकस कूँ पान खिलाया तो दुसरी कूं जानो आग लाया। एकस कूं फूल पन्हाया, तो दुसरी कूँ जानो अंगार्या मे भाया ! एकस सूं बात किया तो जानो दुसरे का जीव पर घात किया। एक नज़दीक सोती तो दुसरी रोती। मरने पर राज़ी होती। कलकलाती, तलमलाती। कई का कई नई सो झगड़ा काढ़ती। दोनो की खुशी में खलाल

चाँईमाई खेलना-एक दूसरे का कान पकड़ कर घूमना, उठना, बैठना-खेलते समय बोलते हैं — चाँई-माई पकड़ मंगाई-चुपचिड़ी का ब्याह।

बजर-वज्र
मावाँ-माताएँ
आदी-आदी
सुबा-सुबह, प्रातः
जहार-जहर
पन्हाया-पहनाया

अंगार्यां-अगारे
कई-कहां

१ यात्रा का दुःख युद्ध से भी अधिक है। तंग जूता पहनने से नंगे पाँव चलना अच्छा है।

पाड़ती। याने अपै जल जल मरती, सौकन कूँ खुशी करती। सौकन न सोवे न सोने देवे; अपना दावा न छोड़े। अपना बैर लेवे। यू बिचारा न इधर का न उधर का। क्या जाने किधर का? यू एकस सूँ मुहब्बत धरता, दुसरी क्या कते अछेगी कर दिल में फ़िक्र करता। दुसरे की फ़िक्र दिल में जड़ी, अताल लज्ज़त काँ की लज्ज़त म्याने म्याँ ते अड़ी। यहाँ ग्याना ग्याता तो वहाँ पानी पीता, कधीं एक चित नही दायम हो जीता। इशरत ग़म हुआ, घर जहन्नुम हुआ। एकस कूँ पूछ्या-बिचार्या, तो दुसरी कूँ ज्यूँ मार्या। औरत एता जहल धरती, उस वक्त जीव नहीं देती, सूली करती। रात-दीस झगड़ा किसे भाता? घर में ते न्हाट जाने का वक्त आता।

अलक़िस्सा हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन उस ग़ैर के रश्क ते अंचल भिगाई, अंग्वियाँ के अश्क ते जलती तलमलती। कपड़े फाड़ लेती, सिंगार तन का काढ़ लेती। गालियाँ देती। रोती, हैरान होती। झल के झाल सूँ, इस हाल सूँ, हैफ़ी खाई, बिसाल के छुजे पर आई। ग़ैर कूँ देख्या। तख़्त पर मस्त, दिल पादशाह उस सूँ हमदस्त। मूँ सूँ मूँ मिलाये है, सीने सूँ सीना लाये हैं; सुद खो रही है, सो रही है। हुस्न नादर सुन्दरी बहुत नखरे भरी और इस्तरी पुकार उठी; आह भार उठी के आह क्या हुआ? वाह क्या हुआ? इन छिनाल ने मुझे ज्यूँ मारी, उन छिनाल ने अपना दन्द सारी। उन छिनाल ने मेरा घर घाली। उन छिनाल ने मेरे तईं दीस दीस अन्तर दी। उसे और जागा न था जो यहाँ छिनाल के खयाल करी कर्म; इतना तो बी मेरी आशनाई का नही रखी शर्म! कुछ उसे मुलाहिज़ा नहीं आया। यू काम उसे क्यूँ भाया? उसे ठार कहीं नहीं थी। क्या अपने जनम में किस सूँ यारी की न थी? भार बी खुदा का आलम है, क्या कम है? ऐसी च के मान पर आये तो पीछे क्या ग़म है? इसकी चोरी की जागा देखो, इसकी हरामख़ोरी की जागा देखो। दुनिया ते डरना, नज़दीक का आदमी यू क्या अताल किया करना? आस्तीन में की आग, घर में का दुश्मन· आदमी कूँ आदमी पतयाता क्या जाने कोई किसके लक्खन, कैद के ढंग, अवलक्खन? बदनीयत बुरे आदमी कूँ केता करना जतन? सुना कस देखे बग़ैर मालूम नही होता। आदमी बस देखे बग़ैर मालूम नहीं होता। हमीं च नहीं समझे किस का क्या करना गिला के पैग़म्बर कहे हैं के—"अलमुर्रा इन्दल मामला" याने काम पड़े बग़ैर आदमी जान्या नहीं जाता। कुछ मुश्किल घड़े बग़ैर पछान्या नही जाता। सुना हेार पीतल दोनो का एक रंग है। वले इसका और ढंग है, उसका और ढंग है। पीतल बी पीला दिस्या तो क्या हुआ? पीतल भी छबीला दिस्या तो क्या हुआ? वले जो बाज़ार में बेचने गये तो पीतल मोल में कम जाता, सोने के मोल पर नहीं आता। हज़ार

कैद-छल
दन्द सारना-दुश्मनी पूरी करना
सुना कस देखे-सोना कस कर देखने पर
१ साबिक़ा पड़ने पर आदमी का पता चलता है।

पीला हुआ तो क्या हुआ ? उस पीले में हज़ार खलल । आख़िर सुना सो सुना, पीतल सो पीतल । एते दीस खूबाँ की सुहबत रही, वले सुहबत उसे असर नहीं करी । बदज़ात, हरामखोर, चोर, मकर भरी । खूब अल्ले तो खूब की, इसमें खूब असर भरेगी । बुरों कूँ खूब की सुहबत क्या करेगी ? आफ़ताब सब पर परतो सटता, वले जिसमें जोहर है वो च जौहर होता । मेंहों के बुन्दले पड़ते हैं । वले जिसमें कुछ जोत है वो च गोहर होता । जूँ के हाफ़िज़ कता—

फ़र्द

[1]गोहरे पाक बबायद के शवद क़ाबिले फ़ैज़
वर्ना हर संग व गिले लू लू व मरजाँ न शवद

भला भलाई च जानता । भला बुराई क्या जाने ? बुरा बुराई च पछानता । बुरा भलाई क्या पछान्या ? जो कोई भलाई समजता च नहीं उस सूं भलाई करना न करना बराबर है; बुरे सूं भलाई करना दुश्मन सूँ सगाई करना नादानगी सरासर है । सादी कता है—"दूर अंदेश जहाँ गर्द, साहब तजर्बा साहबे दर्द ।

बैत

[3]निकोई बाबदाँ कर्दन चुना नस्त
के बद कर्दन बजाये नेकमर्दा

यू काम अबस है, समझनहारे कूँ यू बात बस है । अलक़िस्सा हुस्न कूँ लगी तगबगी । ग़ैर कूँ गालियाँ देने लगी ।

फ़र्द

दिल कूँ अपने उचाट खूब नहीं
घर में दायम कुचाट खूब नहीं

मूँ फाटी, झूँटी काटी । मेरा बस हुए तो इसे बहुत टोकूँ, मेरा बस हुए तो उसे छुरियाँ सूँ भोकूँ । दो नीमा करूँ । क़ीमा क़ीमा करूँ । बहुत सर चढ़ी है । धगड़

परतो-छायी
नीम-टुकड़ा
सुना सो सुना-सोना सोना है
मेहो-मेह, मेघ
बुन्दले-बूँदें
तियबगी-बेचैनी

क़ीमा-मांस को खूब बारीक किया रूप
धगड़-पार

१ अच्छा मोती वही है जिससे लोगों को लाभ पहुँचे । हर पत्थर मूँगा नहीं होता ।

२ जिसने संसार की यात्रा की है और जो दीर्घदर्शी है वह अनुभवी होता है और दूसरे का दुःख-दर्द भी जानता है ।

३ बुरे के साथ भलाई करने का फल यह है कि वह भले आदमी को कष्ट दे ।

कूँ ले पड़ी है। बहुत अपस कूँ मुरोती है, दिल उस सूँ होयगा—कुत्ते कूँ खीर जुगोती है। अर्भू बी जीव नहीं भग्या, धगड़ बहुत मीठा लग्या। यू छिनाल खुदा ते नहीं डरी, क्या बला करी। झगड़ा लानहारी, दन्दकारी। चील होकर हात में ते झोंटे मारी। अताल मैं बाई गिदों के कव्वा। कते थे सो हुआ। ग़ैर दिल में रखती थी बैर। जो हूस्न का सुनी आवाज़। समझी के यू हुस्नी च है। जो करी है इतना नाज़। यार कूँ प्यार दिखलाती है। अपना ऐतबार दिखलाती है। बार-बार बोलती, सत में पुकार पुकार बोलती। औरत की ज़ात कूँ इतना कल्ला "तोबा अस्तग़फ़ूर अल्ला" यू क्या बला? घड़ी यक आह मारती। घड़ी एक उसास भरती। ग़म्ज़े करने तक़्सीर नहीं करती। चाले बहुत नखर्यों भरी। येते ग़म्ज़े उसमें थे तो उन ने दिल कूँ यूँ हलाक करी। मर्द भँवर हज़ार फूल की लेवे बास। यू केता पुकारती फिरेगी आसपास? मर्द कूँ कोई रखवाल रख सक्या है? मर्द कूँ कोई सँभाल रख सक्या है? मर्द आप भावता, मर्द आप सता है। मर्द कई औरत की क़ैद में रहता है? मर्द हजार जागा जाएगा, उसे का का जहल आएगा? यू जहल खाते फिरे तो लोकाँ दीवाने कहेंगे, क्या लोका चुप रहेंगे? खूब माकूल जिन्स सूं आना था, अपने मर्द कूं ले जाना था। एता करना क्या हवस था? मुज में शर्म अछे तो इतना च बस था। जिन औरत ने इतनी जहल खाई उनने आखिर मर्द कूँ गवाई। एते चतर, एती चौसार, लड़-झगड़ कर कोई मँगती है प्यार। लड़ने-झगड़ने ते क्या प्यार आता है? बलक प्यार है सो बी जाता है। वो औरत अजब है गँवार जो मर्द कने लड़ कर मँगती है प्यार। बहुतेरी मर्द हट पकड़ना, दिल में कपट पकड़ना। ऐसी अक्ल धरती अछेगी जो नार, वो क्यूँ न होवेगी खार। मर्द उसते क्यूँ न होवेगा बेज़ार? अगर अपस में कुछ खूबी है, महबूबी है तो यू बेताबी क्या खातिर? मर्द अपे च नज़दीक आता है। अपे च मँगता है। शिताबी क्या खातिर? अपस कूँ जहल के हात न देना, अपस कू अपे खराब न कर लेना। जिस सूं रिस ते जीव पर आता, उस सूं रिस्या क्यूँ जाता? छोरी छारियाँ अर्भू कुछ तन पर पड़या नहीं, भला-बुरा कुछ सर पर घड़या नहीं। मर्द का दिल हात लेना क्या जानतियाँ! क्या फ़ायदा मर्द कूँ गँवा लेकर पीछे पछतानतियाँ। ऐसे ढंगाँ ते मर्दों होते बाज़। उनो के दिलाँ में के हमें करतियाँ है नाज़। औरत उसे कते हैं जो मर्द के दिल कूँ बहलावे। नामर्द का दिल औरत ते बाज़ हो जावे। प्यार आता है सो बी ना आवे। खुसाम्याँ का नाज़, तोबा "अस्तग़फ़ूर अल्लाह", ऐसे नाज़ाँ ते जीव बाज़। औरत ने मर्द का जीव पकड़े तो आसूदगी न देखना। अपने तन की खातिर रखना मर्द के मन की। औरत में महर व मुहब्बत प्यार अछना। औरत चतर-चौसार अछना।

कल्ला-शोर
जुरीती-जुकाती
झोंटे-झपट्टा
रिस्या-क्रोध किया
खुसाम्याँ-बूढ़े, नीरस (खूसट का ब. व.)

१ ईश्वर रक्षा करे।

औरत में बात गुफ्तार अछ्ना। सवाद समझनहारी औरत काँ है ? सब गुन में सारी औरत काँ है ? जो यू औरत दिल ते खुले तो मर्द क्यूँ न भले। औरती च दिल में रखे कपट, पीछे मर्द कूँ क्यूँ लगता चित। अदा, हरकत, चालियाँ ते औरत मर्द कूँ खुश लगती। अपै गले लगना, अपै गड़ देना ऐसी मुहब्बत की उलाल्याँ ते औरत मर्द कूँ खुश लगती। अपस कूँ घड़ी-घड़ी सँवार मर्द कूँ दिखलाना, अपने दिल में का कुछ प्यार मर्द कूँ दिखलाना, सेज पर संग्राम के वक्त काम की औरत ने मर्द की बहुत मिन्नत करना, पाँ पर हात सटना, अला बला लेना, सीने सूँ सीना कुचलना, हँसना, गड़ देना, खुशबोई में तमाम महक रहना, अपने दिल की बात खोल कहना, यू तन सूँ तन, दिल सूँ दिल मिलने की जागा है। अपस कूँ कली करना अछ्ना यू फूल होकर खिलने की जागा है। मर्द भँवर है, फूल का रस लेने आया है। औरत पर आशिक़ हुआ है। दिल की हवस लेने आया है। मर्द सूँ एक चित, एक दिल अछ्ना जूँ मर्द का दिल मगता त्यूँ मर्द सूँ मिल अछ्ना। नाज़ उसे कते हैं, चौसार उसे कते है, खूब औरत उसे कते हैं; महबूब औरत उसे कते हैं, ऐसियाँ औरताँ खातिर जीवाँ देते हैं मर्दा। ऐसियाँ औरताँ खातिर हज़ार हज़ार सूझते सरदर्दी। जिन औरत ने यू छन्द नही पाई क्या काम आती रूखी क़बूल सूरताई। क़बूल सूरती और उसमें यू छन्द बहुती च खूब, सुना हो सुगंद। औरत की सिफ़त क्या है नाज, ग़म्ज़ा, शेवा, चाला, नाजुकी, नर्मी, दिल हात पकड़ना। हँस बात बोलना। मिलना, मिला लेना और मुहब्बत की गर्मी। औरत में जितनी सिफ़त है उतनी सिफ़त मर्द कूँ दिखलाना। मर्द ते यू सिफ़ताँ न छुपाना। मर्द कूँ बहलाना औरत कूँ यू सिफ़त खुदा ने मर्द कूँ बहलाने खातिर दिया है; ना के मर्द ते छुपाने खातिर दिया है। औरत यू सिफ़त मर्द ते छुपा कर किसे दिखलाएगी ? छुपाएगी तो यू सिफ़त उसे क्या काम आएगी ? किसे बहलाएगी ? ऐसी औरत या दीवानी है या नादान, जो आक़िल अछेगी सो अपना काम अपे लेगी पछान। उसका दिल उसे गवाही देता है। मूँ पर नही बोले तो क्या हुआ ? दरूना खुलता है, मूँ नहीं खोले तो क्या हुआ ? जो कोई है चतर औरत की जात: उसे भाती च हैगी यू सवाद की बात। अगर मूँ पर चुप रहेगी, दिल में तो शाबाश कहेगी। औरत अगर मुघड़ अछे तो मर्द का दिल हात लेना केता काम है ? चले यू छन्द किए औरत कूँ फ़ाम है ? मर्द अव्वल ते भुल्या, सो भुले आदमी कूँ भुलाये तो वेग भुलता। अपना होता, दिल ते खुलता। अपना राम होता, काम होता। मर्द की बहुत जहल न खाना। मर्द कूँ बहुत वाज़ ना ल्याना। बहुत पाक हो चले तो मर्द प्यार करता, पावँ खाक हो चले तो मर्द प्यार करता। अगर घरदारी-धन्धा कुछ फ़ाम है, तो मर्द का दिल हात लेना बहुत बुरा काम है। खुदा ने कह्या है मर्द कूँ नीमे खुदा, उसकी बात ते क्यूँ होना जुदा ? उसकी बात ते जुदा हुए तो क्यूँ राज़ी अछेगा खुदा ? जो

दरूना-अन्तःकरण सुना हो सुगन्द-सोना और सुगन्धि

कोई औरत चौसार है और चतुर वो यूँ चलती है जो मर्द अपै उसका होता शर्म हुजूर। घर-दार अपना देता सब उसके हात। उसके सामने भी फिर के नहीं करता बात। उसे जानता है घर की इस्तरी। लखनवन्ती गुनभरी। उसके हात में देता है अख़्तियार। जो कुछ वो करी सो करी। मर्द अपना हुआ तो अपना च सब घर। दिल बहला लेना ही बहुत बड़ा है हुनर। मर्द अजायब कुछ मेवा, औरत वो जिसमें औरत का शेवा।

फ़र्द

औरताँ कूँ यही च पन्द देना
मर्द कूँ अपने रिझा लेना

औरत जेती क़बूल सूरत अछे बी अपनी क़बूल सूरती पर, अपने नाज़ पर न जाना। मर्द नीम ख़ुदा, उसकी खिदमत सूँ जीव लाना। उसका महर अछेगा सो नाज़ सुहावेगा। सब कूँ वो नाज भावेगा। नाज़ कूँ लक्खन चढेगा। रूप आवेगा। जिस औरत कूँ मँग्या घर का धनी, उसके दीवे कूँ क्यूँ न होसी रोशनी। क़बूल सूरती तो ख़ूब है, जो घर के धनी का प्यार अछे। क़बूल सूरती के ख़ूब है जो घर का धनी क़ुरबान, बलिहार अछे। उसके दीदयाँ का मतलब उसका दीदार अछे। उसकी नज़राँ में वो च ठारे ठार अछे। तिल न देखे तो क़रार न पकड़े। पावँ भुईं कूँ न लगे। ठार न पकड़े। औरत की सूरत बग़ैर किसी की सूरत न भावे; औरत की सूरत मर्द के दिल में लिखी जावे। ग़र्ज़ औरत वही च होर उसका च क़बूल पड़या जीना जिने रिझा ले को मर्द कूँ करे अपना। जो मर्द हुआ अपना तो वो सूरत, वो नाज़ ख़ूब दिसता। सब किसवत साज़ ख़ूब दिसता। दीन-दुनिया हासिल; जान क़रार, ईमान क़रार, एक जागा दिल।

बारे, अलक़िस्सा हुस्न ने इस तपाक सूँ एता कुछ कही। लाइलाज ग़ैर ने सब सही। अपने दिल में केतक वक़्त लग तकपग-तकपग। ऐसियाँ कुछ बाताँ कह कर अपस में अपै हैरान रह कर भई कही इताल यहाँ रहना ख़ूब नही। यू बात किसे पास कहना ख़ूब नहीं। साहर थी, जतेक बदियाँ में माहर थी, टोने-टामन का बहुत ज़ोर। भेस अपना फिराई, भई सूरत पकड़ी होर। हुस्न की नज़र तलें ते अपस कूँ छुपाई। विसाल के छज्जे पर ते उतर तले आई। अपने दिल कूँ जो कुछ भाया सो करी, भई शहर सुबुकसार के उधर क़दम धरी। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन कूँ दिल का यू रविश नहीं भाया, दिल पर बहुत गुस्सा आया। यू चाँद-सूरज की जाई, जिस पर ख़ता हुई ज़ेबाई। ख़याल होर नज़र होर तवस्सुम कूँ फ़रमाई के इस दिल कूँ, इस लायाकल कूँ, इस जाहल कूँ, इस काहल कूँ, इस

साहर-जादूगर ज़ेबाई-सुन्दरता टोने टामन-जादू टोना

कोई औरत चौसार है और चतुर वो यूँ चलती है जो मर्द अपै उसका होता शर्म हुजूर। घर-दार अपना देता सब उसके हात। उसके सामने भी फिर के नहीं करता बात। उसे जानता है घर की इस्तरी। लखनवन्ती गुनभरी। उसके हात में देता है अख़्तियार। जो कुछ वो करी सो करी। मर्द अपना हुआ तो अपना च सब घर। दिल बहला लेना ही बहुत बड़ा है हुनर। मर्द अजायब कुछ मेवा, औरत वो जिसमें औरत का शेवा।

फ़र्द

औरताँ कूँ यही च पन्द देना
मर्द कूँ अपने रिझा लेना

औरत जेती क़बूल सूरत अछे बी अपनी क़बूल सूरती पर, अपने नाज़ पर न जाना। मर्द नीम ख़ुदा, उसकी ख़िदमत सूँ जीव लाना। उसका महर अछेगा सो नाज़ सुहावेगा। सब कूँ वो नाज़ भावेगा। नाज़ कूँ लक्खन चढेगा। रूप आवेगा। जिस औरत कूँ मँग्या घर का धनी, उसके दीवे कूँ क्यूँ न होसी रोशनी। क़बूल सूरती तो ख़ूब है, जो घर के धनी का प्यार अछे। क़बूल सूरती के ख़ूब है जो घर का धनी क़ुरबान, बलिहार अछे। उसके दीदयाँ का मतलब उसका दीदार अछे। उसकी नज़राँ में वो च ठारे ठार अछे। तिल न देखे तो क़रार न पकड़े। पावँ भुई कूँ न लगे। ठार न पकड़े। औरत की सूरत बग़ैर किसी की सूरत न भावे; औरत की सूरत मर्द के दिल में लिखी जावे। ग़र्ज़ औरत वही च होर उसका च क़बूल पड़्या जीना जिने रिझा ले को मर्द कूँ करे अपना। जो मर्द हुआ अपना तो वो सूरत, वो नाज़ ख़ूब दिसता। सब किसवत साज़ ख़ूब दिसता। दीन-दुनिया हासिल; जान क़रार, ईमान क़रार, एक जागा दिल।

बारे, अलक़िस्सा हुस्न ने इस तपाक सूँ एता कुछ कही। लाइलाज ग़ैर ने सब सही। अपने दिल में केतक वक़्त लग तकपग-तकपग। ऐसियाँ कुछ बाताँ कह कर अपस में अपै हैरान रह कर भई कही इताल यहाँ रहना ख़ूब नही। यू बात किसे पास कहना ख़ूब नहीं। साहर थी, जतेक बदियाँ में माहर थी, टोने-टामन का बहुत ज़ोर। भेस अपना फिराई, भई सूरत पकड़ी होर। हुस्न की नज़र तलें ते अपस कूँ छुपाई। विसाल के छज्जे पर ते उतर तलें आई। अपने दिल कूँ जो कुछ भाया सो करी, भई शहर सुबुकसार के उधर क़दम धरी। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन कूँ दिल का यू रविश नहीं भाया, दिल पर बहुत गुस्सा आया। यू चाँद-सूरज की जाई, जिस पर ख़ता हुई ज़ेबाई। ख़याल होर नज़र होर तवस्सुम कूँ फ़रमाई के इस दिल कूँ, इस लायाक़ल कूँ, इस जाहल कूँ, इस काहल कूँ, इस

साहर-जादूगर ज़ेबाई-सुन्दरता टोने टामन-जादू टोना

नाकाबिल कूँ इस बाग़ में ते बाहर काड़ो। उसकी दोस्ती का वर्क़ फाड़ो। बेग उस बाग़ में ते उसे भार ले जाओ। च्यार आशिक़ां मिल हमारा-उसका करेंगे न्याव। यू अपनी मुहब्बत में खता खाया, यकस कूँ छोड़ दुसर्यां सू जीव ल्याया। इस पेशानी कूँ बदनामी का टीका लाव; सब आशिक़ाँ में फिराव; यू अपनी मुहब्बत में साबित नहीं इसे क्या खातिर एता चाव। यू गुल, यू गुलज़ार, इस नालायक़ कूँ बाग में ठार। आलम इस बाग़ के तमाशे का मुश्ताक़। मैं सो इस बाग़ में उसे दी बिसाक़। इश्क़ में महक्कम है कर जानती थी। आशिक़ साबित क़दम है कर जानती थी। यू अपनी हद छोड़ परहद चिकल्या; नालायक़ होकर निकल्या। कईं न्हाट जावेगा, संभालो। उसे हमारे गज़ब के बन्दीखाने घालो। इस बाग़ में भी नको देव आने; अगर कईं निकल जावेगा तो तुमें जाने। तुमें तीन जने च नज़रों चागे कधन रखो। हुश्यार अछो। इसी जतन रखो। अताल कों का इश्क़, कों की यारी; कों का दिल, कों की दिलदारी। कों का ग़म्ज़ों, कों का नाज़, मूँ देखने ते हुई बेज़ार वाज़।

फ़र्द

राहत हुई तमाम अब ख़्वारी
यारी थे सो हुई है बेज़ारी

बात कहना खुश नहीं भाता। मूँ देखना नहीं भाता। जहल आग, जहल बिजनाक। क़ौन संभाल सकता जहल की आग। यो तो औरत थी, कम्बख़्त थी, कमज़ात थी; अपना जीव दिखलाई। यू तो मर्द था, दिल था, दिल सभालना था। उसे यहाँ क्यूँ हिरस आई? क्यूँ उसकी मुहब्बत भाई? मुहब्बत में कुफर है ऐसा काम, मुहब्बत में यू काम है हराम। होर पर दिल धरना दुरस्त नहीं है। एक कूँ छोड़ दुसरे पर नज़र धरना दुरस्त नहीं है। वो कैसे आशिक़ के दुसरे कूँ ख़याल में नहीं गुज़रानते। दुसरी दुनिया में नहीं च कर जानते। एकस कूँ छोड़ दुसरे पर दिल धरना आशिक़ की ख़ामी है, इश्क़ के काम मे नातमामी है। किस आशिक़ ते यू काम हो आया? कौन आशिक़ यू जीव दिखलाया? कौन आशिक़ यकस कूँ छोड़ दुसरे सू जीव लाया? जुलेखा थी, फ़रहाद था, मजनूँ था। किसी मे यू बजा अजनूँ न था। इन दिल ने इश्क़ मे अपस कूँ यूँ पनवाया। होर एन जगा पर यूँ दग़ा खाया-गँवाया। मैं उसकी खातिर सारे आलम में बदनाम, यू बेवफ़ा सूँ ऐसा किया काम! डरती हू मैं परवरदिगार ते। नईं तो उसे मारती या अपस कूँ मारती, इस काम कूँ हर्गिज़ न हारती। दिल होर हुस्न में पड़ी। दुई, ऐसी बात हुई। वले कते हैं जिस वक्त ग़ैर ऐसी करी काड़ी, उनो दोनो में जुदाई पाड़ी। शहर दीदार ते जो शहर

बिसाक़-अनुमति
महक्कम-दृढ़
न्याव-न्याय
अजनूँ-अब तक

सुबुकसार कूँ गई, हुस्न होर दिल का क़िस्सा सब रक़ीब वेनसीब कूँ कई।

फ़र्द

बाल काँ लाग-क्या करे है यू
चार जीबाँ की इस्तरी है यू

इधर हुस्न और दिल कूँ दग़ा दी, उधर रक़ीब कूँ लादी। रक़ीब गुमराह, रूसियाह, बदकार, नाबर्खुर्दार के दिल में भड़का उठ्या, सीना फूट्या। बेटी ते बाप कूँ ज्यास्त उठी झल, अपस में अपै जल-जल हलाक होता, दरख़ाक होता। सीना ते चाक होता। शहर दीदार कूँ आया घरे घर मकर ज़नायाँ भाया। ढूँडते-ढूँडते हुस्न के गज़ब के बन्दीखाने दिल कूँ भाया। सेहर में नादिर था, टोने पर क़ादिर था, ख़याल होर तवस्सुम, होर नज़र पर कुछ मन्तर सब्या दाने, यू तीनों हुए दीवाने। अव्वल ते मस्त ये तीनों यार, इनों कूँ दीवाने होते केती बार? इन नापाक ने फ़ुर्सत पाया, हुस्न के गज़ब के बन्दीखाने में ते दिल भार ल्याया।

बैत

बाप जैसा है बेटी भी वैसी
यू क़हर यू अहे बला जैसी

जहल ते बहुत जल्या। दिल कूँ, शहर मुबुक सार कूँ ले चल्या। दूरी का बयान उसमें एक कोट था। उस कोट का नाँव हिजराँ। उस कोट मे दिल कूँ भाया, दिल बहुत जफ़ा पाया। अपने जीवन ते बेज़ार हो आया। यू आशिक़ी कर बहुत पछताया। बाप पन्द-नसीहत करता था सो वो पन्द-नसीहत दिल ते दिल पर ल्याया। दिल ने नही सुन्या बड्या की बात, उस कूँ कूँ होना नजात। बुरा किया जो बाप की बात पर अमल नहीं किया। यू फ़िक्र अव्वल नहीं किया। बुराई कूँ ख़ूबी कर पछानते, बड्याँ की बात नहनवाद क्या जानते? नहनवाद सो नहनवाद, बड़े सो बड़े हैं। उनो अपस कूँ आजमाये हैं। उनो पर यू क़िस्मे घड़े हैं। बड्याँ के पन्द हमें नहीं माने, फ़ायदे कूँ नुक़सान कर जाने। दिल कूँ वो दिल सख़्त मँगता था। अज़ाब दे दे मारे, इस बदबख्त कूँ ख़ुदा फ़ुर्सत नहीं दिया बारे! दिल बेदिल हुआ, दिल पर काम मुश्किल हुआ। उधर माशूक़ ते वो मशक़्क़त पड़ी। इधर रक़ीब ते सर पर यू महनत घड़ी। दिल कूँ उधर का भी अजाब, इधर का भी अजाब, दिल बिचारा ग़म ते बेहोश हुआ होर बेताब। मामला अजब घड़्या, दिल कूँ ख़ुदा सूँ पड़्या। कह्या इलाही, में हुस्न खातिर एता महनत सूस्या, एता दुख देख्या,

---

हिजराँ-वियोग — जनाया-जन (स्त्री) का ब व.
नहनवाद-बालक, छोटे — बड्याँ-बड़ा का ब. व.

एता मशक्कत सूत्या ।

बैत

कि गुस्सा यू रखे है चुप दिल पर
कड़वी के हुई है यू मीठी शकर

हुस्न क्या सबब मनीं च पर एता गुस्सा करी । क्या मेरा गुना देखी कि दीवानी हुई वो परी । क्या मुँज ते चूक आई ना गहानी । अला मुंज पर भाई ! मुँज ते तो कुछ खता नही हुआ । मैं तो उसी च के कहे में था । आपसता नहीं हुआ । हरेक बात तफ़हुस करना खातिर ल्याना, गुनाह एक के अग लाना, खुदा ते बी नहीं डरी; दिल मे आया सो करी । पूछना विचारना, एकस के कहे-सुने पर क्या नाहक़ एकस कूँ जीवो मारना । दुश्मन कोई कुछ बोलता तो क्या उसकी बात कूँ सनद है; दुश्मन अदावत कू बोलता है, उसकी बात रद है । जो कोई मुन्सफ़ी पर आता है, दाई मुद्दई की बात खातिर ल्याता है, वो साहब इन्साफ़ है । उसके पास बात का सब हद है । खातिर न ल ाकर हरेक पर गुनाह लाज़िम करना बहुत बद है । दुनिया दो दीम की-यहाँ किसने क्या लेना है; आखिर खुदा कूँ जवाब देना है । दुश्मन अपने मक़सूद कू यूं करता है तकरीर, जानो ज़रा नहीं है उसका तक़सीर । नापाकी में डूब्या बाले बाल, होर पाक दिसता यू जानो मो के पेट में ते निकलता एताल । चुगई बगल मे, खूबाई हात मे । क्या भली बात अछेगी एसे की बात में ऐसी जागा खब्त ना खाना । ऐसी जागा कुछ दिल दे ना ल्याना । ऐसे नापाक की बात कूँ ना पतियाना । "नौज़ बिल्लाह" किस ते न डरे, घड़ी में एकस कूँ खराब करे । काफ़िर खुदा ना तरस । इस बे ईमानी सूँ दुनिया मे जीवेगा कितने बरस ?

बैत

तक़सीर क्या है पकड़ी मुँजे किस निशान सूँ
गुस्सा एता करी सो बी नाहक़ गुमान सूँ

जाँ गुमान वहाँ कहाँ ईमान ? हुस्न की अजब तमाशे की धुन है । तमाशे का उसका मन है ? नही जानता हू के क्या-क्या फ़ामी ? जो एकाएक करे ऐसी खामी ? वो महर व प्यार क्या हुआ ? वो नाज़, वो ग़म्ज़ा, वो बात वो गुफ्तार क्या हुआ ? वो दिलदारी, वो दिलदारी क्या हुई ? वो आशती वो यारी क्या हुई ?

तफ़हुस-तफ़्तीश, खोज † मुद्दई-दावा करनेवाला खूबाई-अच्छाई
दाई-बुलानेवाला † आशती-समझौता फ़ामी-समझ

फ़र्द

हुई बेगानगी यू आशनाई
गया मिलना पड़ी आकर जुदाई

वो जीना क्या हुआ, वो तरसना, वो तपना क्या हुआ ? वो यारी होर यू बेज़ारी । जूँ वझी साहब दर्द, अपने ज़माने का फ़र्द कता है के—

हर के रा मन यार कर्दम ऊब मन अग़ापर गश्त
केस्त हम चूँ दोस्त कू आख़िर बमन दुश्मन न शुद

मुँजे बहुत लगता है इस ठार अजब-अजब-अजब, हज़ार अजब । औरत अजब है शकर, वले इस शकर में तमाम भरे हैं मकर । बोले हैं के 'शर-शैतान ते, मकर ज़नान ते ।' ख़ुदा अपनी पना में रखे । ये दोनों बलायाँ हैं । इस बलायाँ कूँ कौन जीत सके ? इनो कूँ समजाने किस आक़िल कूँ यहाँ बल, नादान ज़ात इनो कूँ तलवे में अक़्ल । समज कर नही करतियाँ काम, खोल बोले बी नही होता फ़ाम । यू क़ौम बहुत जाहल, कमअक्ली इनो कूँ हुई है हायल । इनो घर में अछ एती अक्ल धरना, अताल बिचारे मर्दों चार मर्दों में फिरते इनो क्या करना ? अपनी अक्ल में कई जातियाँ नही, मर्दों कूँ खातिर में ल्यातियाँ नही । यू क्या दुनिया में औरता हो कर आइयाँ हैं, यू औरताँ नही ख़ुदा कियाँ बलाइयाँ है । घर में अछ कर एता ग़ालबला करतियाँ; अगर यू बाहर निकलतियाँ तो क्या बला करतियाँ ? इसी च ते ख़ुदा इनो कूँ छुपाया । घर में ते भार नको निकलने देव कर फ़रमाया । अगर घर में ते इनो का पावँ भार पड़े, ख़ुदा जाने बिचारे मर्दों पर क्या-क्या वाक़आ घड़े । घर में इनो कूँ यूँ छुपाते, ज्यूँ शातानो कूँ शीशे मे भाते । उनो की अक्ल का देखो फेर, चार हाताँ सूँ लहवा माग्ता अछेगा जो मर्द वो बी इनो का ज़ेर । जानतियाँ अक्ल उधरी च है, अपै हैं जिधर । अपनी अक्ल के अगे दुसरे की अक्ल किधर ?

फ़र्द

किता नादान कूँ कोई बात समजाए
जिसे नईं फ़ाम क्यूँ वो फ़ाम ते पाए

दावा बड़ा, अक्ल नहनी, सिरश्ते च उनो की यूँ बनी । एताल क्या कोई अक्ल पावेगी ? है सो क्या तबियत काँ जावेगी ? क़िस्सा यूँ च है, उनो का वज़ा यूँ च है ।

सिरश्त-स्वभाव
ज़नान-ज़न (स्त्री) का ब. व.

१ मैंने जिसे अपना मित्र मेरा शत्रु नहीं बना ?
बनाया वह मेरा शत्र होगया ।
मेरा ऐसा कोई मित्र नहीं है, जो

फ़र्द

अँखियाँ कूँ मीच ले दिन रात करतियाँ
अक़्ल नईं होर अक़्ल की बात करतियाँ

वले जो औरताँ अक्ल पर क़ादिर हैं वो बहुत नादिर है। खूबी देख हज़ाराँ में एक नेक ज़नाँ, उनो कूँ च कते हैं गुनवन्त धनियाँ। उनो च कूँ कते हैं यही इस्तरियाँ हैं, जिनो दुनिया में नॉव करियाँ हैं। नहीं तो वैसियाँ औरताँ भरियाँ हैं। जो फ़ातिमा साम, जिनो पर ऐतकाद धरते वलियाँ तमाम। जिनो दायम खुदा सूँ मिल रहते, जिनो कूँ मेराज हुई कते। ज्यूँ खुदेजा, कुबरा होर ईसा की माँ मरियम, जिनों सूँ खुदा हमराज़, जिनो सूँ खुदा हमदम। वाजिब है खूबाँ की खूबी कना; दुनिया में नेक मर्दो कहे हैं या नेक ज़नां। ज्यूँ बीबी राबिया बसरी, कोई वली नहीं हुआ उनो के बराबर, उनो का हमअसरी। जिस वली कूँ खुदा के समज में पड़ा खलल, तौहीद का नुक्ता उनो पास आकर ना करना हल। बायजीद, शिब्ली, जुनेद, हम अधम; उनो के हज़ूर कोई नई अछते थे दम। सब वली होते थे हैरान, जो उनो करते तौहीद का बयान। जेते खुदा के दोस्त खुदा कूँ पछानते हैं, सब बीबी राबियाँ कूँ बड़ है कर मानते हैं। दुनिया में एसियाँ बीबियाँ बी हुयाँ हैं। उनो आज लों भी जीतियां हैं, नहीं मरियाँ हैं। ज्यूँ फ़ातिमा नबी सू हमदम, खुदा के राज़ म महरम। कौन मर्द उनो की मरातिब कूँ आया? कौन मर्द उनो का मरातिब पाया? सब हुए मात, अताल क्या है याँ बात? हक़ीक़त है दूर दराज़, भई म्याने म्याँ आया मजाज़।

बारे, अलक़िस्सा वो ग़ैर, मन में ते काढ़ी बैर। दिल की यू ख़ारी, यू ज़ारी, तलमलना, यू जलना देख क्या जाने क्या दिल में लाई, दिल पर बहुत महर आई, अपने काम ते अपै पछताई। हैफ़ी ख्वाई के दिल ते बिछुड़ाई दिल की महबूब, यू काम अपै कुछ नहीं करी खूब। इधर सूं दिल कलकलाता, उधर वो हुस्न कलकलाती। क्या जाने भई किधर की बला किधर आई? ग़ैर का उतर्या रस, केतक वक्त लगन बोली अफ़सोस, अफ़सोस। खातिर क़रार कर, अपस में कुछ बिचार कर; हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन कने एक रुक्का लिख भेजी। इस मज़मून सूँ—हज़ार हज़ार चरा, हज़ार हज़ार चूँ सूँ। अगर तूँ मुँज पर ग़ुस्सा करी है तो मेरा गुनाह है, गुस्से का ठार है, वले दिल बेगुनाह है। पाक है। दिल ते तूँ क्यूँ यूँ बेज़ार है?

खुदेजा-मुहम्मद की पहली पत्नी, फ़ातिमा की माँ। § हम असरी-समकालीन साम-समान मजाज़-अवास्तविक आज लों बी-आज तक भी कुबरा-बड़ी §

फ़र्द

ग़ैब ते ग़ैर कूँ महर आई
दिल कूँ देख तरस दिल ऊपर ल्याई

मैं तेरी सूरत होकर खड़ी तो दिल कूँ भुरकी पड़ी। तो दिल इस बेहोशी में हुआ राज़ी, दिल क्या जानता मेरी दग़ाबाजी। दिल बेहोश था, अपस ते अपै फ़रामोश था। मस्त पर गुनाह लाज़िम करना दुरस्त नहीं है, मस्त पर एता कपट धरना दुरस्त नहीं है। जाँ दिल साफ़ है वाँ मस्त होर सोते का गुनाह माफ़ है। दिल आशिक़ सादिक़ है, यू बदनाम हर्गिज़ ना होता, वो अगर हुश्यार अछता तो यू काम हर्गिज़ न होता। अपै अपस के पर्दे कूँ खोली, अपै अपना गुनाह सब आप बोली। मस्त जिनो सोता, मस्त क्या जाने क्या होता? दिल की ग़र्ज़ तुज सूँ च है। दिल के दिल में तूँ च है। उने पकड़्या था खामोशी, पिया था दारू-ए-बेहोशी। दिल था बिचारा बेखबर, यू सब था मेरा मकर। मैं तेरी बी गुनाहगार हूँ, दिल की भी गुनाहगार हूँ। बड़ा गुनाह करी हूँ। तुम दोनो की शर्मसार हूँ। मैं पाप भोत की। दोनो कूँ बी दग़ा दी। दोनो की मुहब्बत में ख़लल भाई, यकस ते यकस कूँ बिछड़ाई। अताल तेरा करम कर, तेरा दिल साफ़ रख। मैं गुनाह करी हूँ। मुझे बख़्श, मुझे माफ़ रख।

फ़र्द

गुनाह कूँ बख्शना क्या कुछ मना है
गुनाह बख्शो कहे तो बख्शना है

तूँ चतर, तूँ चौंसार; तुजे सब फ़ाम है, गुनाहगार कूँ गुनाह बख़्शना बहुत बड़ा काम है। तीन गुनाह खुदा बी बख़्शता है, तूँ तो आदम है। मेरा गुनाह मैं तो सब तेरे हुजूर किये। अताल तेरा करम है। हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन इस रुक्के में ते यू मज़मून सुन, ऐसी बात चुन। हात ते गये, बात ते गये। बेहोश हो पड़ी; सीना कूट-कूट लेने लगी घड़ी घड़ी। बहुत चरफरी। किसे कुछ कह ना सकी, हैरत ते दाताँ-तले अँगली रखी। अपने फ़ल ते अपै लाजी, भई फिर लगी मुहताजी। तक्सीर तो सगला हुआ, वले इश्क़ अताल अव्वल ते बी अगला हुआ।

बैत

दिल कूँ नाहक़ एती जफ़ा में भाई
नईं समज कर गुस्सा करी पछताई

सादिक़-पवित्र, ठीक भुरकी-अंधेरा, जादू अगला-आगे बढ़कर
तक्सीर-अपराधी सगला-पूरा

मेरे कामाँ ते च दिल मुँज ते पड़्या दूर, दिल कूँ अताल मैं क्या दिखलाऊँ ! मैं दिल की बहुत हूँ शर्म हुजूर । मैं दिल की खिदमतगार हूँ । दिल मुंजे बिछेगा तो मैं बेअख़्तियार हूँ । वो मेरा साहब, मुंजे उसकी आस । मैं बाँदी होकर अछूँगी उसके पास । जेता हुआ बी औरत चार काँदाँ में की रहनहारी, इस पर दग़े कूँ क्या करेगी बिचारी ? जहल ते जली मैं झल भरी । इतना चौकी जो बात तहक़ीक़ नहीं करी । ग़ुस्से कूँ मारना था, किसी सूँ बिचारना था । हरेक काम कूँ चार जनियाँ सूँ मशवरत करना । मशवरत में बहुत फ़ायदा है । आक़िल ने मशवरत ना बिसरना । अगर अपस ते यू बात मैं न पाती, इस चार जनिया में एकस कूँ तो बी अक्ल आती । कोई तो बी कुछ कता । अलबत्ता चुप न रहता । बात इस हद लगन ना अँपड़ती । यू शर्मिन्दगी सर पर न पड़ती । चार जने चार बात बोलते, बात का माना खोलते । अगर अपस कूँ च ख़ूब अक्ल आई तो बहुती च ख़ूब । यू तो बहुती च अपरूप । किसी की अक्ल मे ते बी कुछ काड़ कर देखना कुछ बुरा नहीं है । यू पर्दा भी फाड़ कर देखना कुछ बुरा नहीं है । यहाँ बी एकादे वक्त कुछ दिस आता है । यहाँ बी कुछ ढूँडे तो कुछ पाया जाता है । जेता अक्ल की कुव्वत अछे भी मशवरत दरकार है, मशवरत इमदाद हरकार है । अमा, बाज़े कतेक मसलहत ऐसी नाज़ुक है, वहाँ मशवरत काम नहीं आती । मशवरत वहाँ खलल भाती के जूँ फ़ारसी में कता है, तूँ आक़िल है तो यू बात सुन, मशवरत एक बला लाती ।

मिस्रा

ज़ै नामहरम चे ग़मदारी हज़र अज़ यार महरम कुन ।

बल्के इस हद लगन—

बैत

[२]राज़े दिल रा बदिले ख़ीरा के पिन्हा करदम
मनके आहिस्ता बख़ुद गुफ्तम व नुक़्साँ करदम

जाँ मशवरत न करना वाँ मशवरत करने गये तो कुछ का कुछ होता । रुच का काम सब बेरुच होता । केत्याँ बात्याँ है जो किसी पास कहनी च किया नहीं । अपने च दिल में रहतियाँ, दुसरे के पास रहने च कियाँ नहीं । मैं अपै च होर अपना ख़ुदा च जानता, दुसरे के खयाल कूँ वहाँ गुज़र नहीं । दुसरा यू बात नहीं पछानता ।

वारे अलक़िस्सा, हुस्न धन, मनमोहन कही के जधाँ ते जो कोई दुनिया में

१ जो अनजान हैं उनसे दुःख क्यों मानता है, जो जो मेरे परिचित हैं उनसे बच
२ मैंने अपने रहस्य को अपने हृदय से चुपके से कहा, और यही मेरे लिए इतनी, हानिकारक है ।

आया अछेगा, अजब है जो कोई ऐसा दग़ा खाया अछेगा। दरअस्ल अपै औरत की ज़ात, मर्दी दग़ा खाते हैं औरत दग़ा खाये तो क्या बुरी बात ?

फ़र्द

छन्द भरी यू अजब है मन भाती
दिल दिखा कर भी दिल कूँ फुसलाती

हुस्न नार ने, दिल के सिंगार ने, दीदयां के अधार ने भी दिल कने हज़ार हज़ार इश्तियाक़, हज़ार हज़ार फ़िराक़ सूँ किताबत लिखी। अपने अहवाल की हिकायत लिखी।

फ़र्द

दोनो ने दोनो का देखे माया
भई सवाद खाने का वक़्त आया

इस किताबत का मज़मून यू था के ख़ुदा की ख़ुदाई की सौं, तेरी जुदाई की सौं, तेरे फ़िराक़ की सौं, तेरी मुरव्वत की सौं, मेरी मुहब्बत की सौं, तेरे जलने की सौं, तेरे तलमलने की सौं, तेरे विसाल की उम्मीदवारी की सौं, तेरी यारी की सौं, तेरे आफ़ताब जैसे मूँ की सौं, तेरे किरनाँ जैसे रूँ की सौं, तेरे बादल जैसे बालाँ की सौं, तेरे चाँद जैसे गालाँ की सौं, तारे वैसे नयनाँ की सौं, तेरी शकर वैसी बतियाँ की सौं, तेरी अधर की सौं, तेरी कमर की सौं, दहन की सौं, तेरे बदन की सौं, तेरे नाँवँ की सौं, तेरी छाँवँ की सौं, के तू तहक़ीक़ जान, ऐ यार, मेरा गुनाह कुछ नहन। इस ठार के यू बला ग़ैर ने बिसाई। यू आग ग़ैर ने सुलगाई। मैं आशिक़ थी। क्या करूँ कह्या गया, मुँज ते नहीं रह्या गया। मुजे भी जहल आई, यू बला मुहब्बत में अपस पर अपै ल्याई। तूँ भी आशिक़ है, जानता है इश्क़ की अवकल। जाँ मुहब्बत है वाँ क्या बला करती है जहल। ख़ुदा न झलकावे जहल का झलकार। अपस कूँ मार लेते नहीं आती आर। अताल दुसरे कूँ मारती केती बार ? इश्क़ की बड़ी अवकल, जितनी मुहब्बत उतनी झल। जिस मुहब्बत कूँ झल नहीं, उस मुहब्बत कूँ बल नहीं, झल ते माशूक़ बहुत आती याद, झल सूँ बाँदे है इश्क़ की बुनियाद। मुहब्बत झाड़, जहल फूल; फूल बग़ैर झाड़ क्या दिसेगा मक़बूल ? जाँ मुहब्बत है, वाँ झल आती, जाँ मुहब्बत नहीं वहाँ झल काँ जाती ?

फ़र्द

याद आतियाँ मिले सो वो राताँ
दिल कूँ समजाने कियाँ करी बाताँ

दहन-मुँह रूँ-रोम अवकल-बेचैनी

ऐसे नक़श व निगार सूँ, बहुत प्यार सूँ किताबत उने ख़याल के हात भेजी, राते रात भेजी। ख़याल जिसकी बाव ते अगली चाल फ़िलहाल, इस हिजराँ के कोट में जाकर, इस मुहब्बत के मैदान के कोट में आकर दिल कूँ, आशिक़ कामिल कूँ यू किताबत अँपड़ाया। ज़बान से भी बोल्या जो कुछ ज़बान में आया। अताल दिल दिल न सँभाल हुस्न की किताबत देख अहाँ सूँ सीना जाल्या, अँखियाँ में ते लहू के अँभू ढाल्या।

बैत

पड़न रुक़्क़ा दिया दिल जीव के हात
किताबत कूँ कते आधा मुलाक़ात

अरबी में यूँ आई है बात के—"अल मकतूब, निस्फ़ुल मुलाक़ात।" अपस में अपै फ़िक्र कर्या, भई, इसमें क्या मकर है कर डर्या। दिल दूचीता, दूद का जल्या छाच फूक पीता। कह्या वो गुस्सा क्या था यू प्यार क्या है? ऐसे प्यार कूँ ऐतबार क्या है? ऐसे प्यार कूँ कौन पतयावे? ऐसे प्यार ते एकादे वक्त जीव जावे। रुक़्क़ा खोल पड़्या। अपना हात अपै लड़्या। कहा ग़ैर पर हज़ार हज़ार लानत यू दग़ा-बाज़ी करने का कौन वक्त? ये तो एक बला हो आई थी। नापाक ने जीव पर ल्याई थी।

बैत

किधर ते आ कहाँ जा मुद्दतला थी
न थी यू ग़ैर ग़ैरत क्या बला थी?

यहाँ ना ग़ैर का वक्त था, बारे, ख़ैर का वक्त था। मेरे दिल में होर शक़; हुस्न के दिल में होर गुमान; यहाँ क़िस्सा कुछ का कुछ हुआ म्याने म्यान।

बैत

जेती हिम्मत जेनी फ़िक्र अब धरेगा
ख़ुदा के खेल याँ कोई क्या करेगा?

दिल ने बी समजा के गुनाह हुस्न का नहीं, माशूक़ जो इतना मँगते सो बेसब्र, बेज़ार होते हैं कहीं? गुनाह उस हरामज़ादी बदबख़्त का है; गुनाह उस पापन, बेरहम, दिलसख़्त का है। वले पुख्ता छिनाल; बहुत नाज़ुक चली चाल। मगर बाले बाल काम ख़ाम नहीं होने दी। जिस सूँ काम करी उसे बी फ़ाम नहीं होने दी।

दुचिता-दुविधा में पड़ा हुआ १ आशी मुलाक़ात है।

हुस्न कूँ टाली, रखवालाँ कूँ बी उछाली। झगड़े का झगड़ा ल्याई, झगड़ा लाकर बी दोनो कूँ मिलाई।

फ़र्द

यू बला है बड़ी क़हर की जाई
मगर अपना कमाल कूँ अँपढ़ाई

अजब हिकायत की धात है, यू तवारीख़ में लिखने की बात है। यू उसका कुछ का कुछ है ख़याल। ऐसे सूँ कोई क्यूँ रखे अपसे सँभाल। चोरी येलाड़ है, यू काम चोर ते भी पैलाड़ है।

फ़र्द

ऐसे चलन्ताँ में कोई अगर आवे
गर फ़रिश्ता अछे दग़ा खावे

जूँ तोड़े त्यूँ साँदे, ज्यूँ खोले त्यूँ बाँदे, दिल साफ़ करना है। ऐसी छिनाल कूँ गुनाह माफ़ करना है। दिल ने, आक़िल ने, वासिल ने हुस्न धन, मनमोहन, जगजीवन कूँ लिख्या के तेरी खूबी की सौं, तेरी महबूबी की सौं, तेरी मतलूबी की सौं, तेरे मुख मक़बूल की सौं, तेरे सीस-फूल की सौ, तेरी नत की सौं, तेरे सत की सौं, तेरी मतवाली आँख की सौं, क़बूल सूरत नाक की सौं, तेरे इस नाज़ुक, नर्म, लाल होटाँ की सौं, तेरे हातों की महँदी लगाई सो इस रंगीले बूटाँ की सौं, तेरे नबाताँ वैसे दाँताँ की सौं, तेरी अबलोच वैसी बाताँ की सौ, तेरे फूलाँ वैसे हाताँ की सौं, तेरी ज़ुल्फ़ा की ताराँ की सौं, तेरे गले के हाराँ की सौं, तेरे चाँद वैसे जोबन की सौं, तेरे चँदनी सारके झलकते तन की सौं, तेरी शर्ज़ी वैसी कमर की सौं, तेरी अज़दहा वैसी ज़र कमर की सौं, तेरी रानाँ की सौं, तेरी साक़ की सौं, तेरे शौक़ होर इश्तियाक़ की सौं, तेरे पाँवँ की सौं, तूँ चलती है सो इस तेरे पाँवँ तले के ठाँवँ की सौं।

फ़र्द

इश्क़ अब मर्त्तबा ऊपर आया
किस लताफ़त सूँ दिल ने सौं खाया

तेरे कंठ की सौं, तेरे माल की सौं, तेरी ठुड्डी की सौं, तेरे गाल की सौं, तेरी नाज़ाँ भरी चाल की सौं। तेरे घूँगरवाले बाल की सौं। तेरी क़बूल सूरती की सौं।

अबलोच-मिश्री येलाड़-इधर † सारके-समान
साक़-पिंडली नत-तथ † अज़दहा-अजगर

तेरी मदन-मूरती की सौं, तेरी वफ़ा की सौं, तेरी जफ़ा की सौं के जो मैं यू रुक्का पड़या तो सौ हिस्सा अगला मुँजे मुहब्बत का असर चड़या। के यहाँ न गुन तेरा है, न कुछ तक़सीर मेरा है।

बैत

दो जनियाँ में जो कोई जुदाई भाए
उस ऊपर भी जुदाई क्यूँ न आए

इतना करी सो यू ग़ैर, अताल जाने दी यू बैर। जूँ हमें अपनी मुहब्बत में अड़ी थी, त्यूँ वो अड़ी। हमारी जुदाई का यू कलकलाट उस पर पड़ो। अताल खुदा जानता है के मेरा दिल तेरे बाब बहुत है साफ़, मेरे दिल में तेरे बाब नहीं कुछ खिलाफ़। अगर सच पूछेगी तो ए मनमोहन परी; इतना सब तू च करी। अगर तूँ ख़याल होर नज़र, वफ़ा होर तवस्सुम कूँ कह कर मुँजे दारू-ए-बेहोशी न पिलाती तो मुँज पर होर तुज पर एती बला की आती ? तूँ करने गई छन्द, ग़ैर ने वहाँ अपस कूँ करी बन्द। इसी च ते कते हैं के औरत नाक़िस अक्ल है। यू क़दीम नक़ल है-जेता अक्लमन्द हुई तो भी औरत की ज़ात; क्या ऐतबार है औरत की बात। औरत अपने घर दार कूँ खूब है। औरत साग-सब्ज़ी बिसवार कूँ खूब है। घर का धंदा उसका काम है, बाज़ धंदे का उसे क्या फ़ाम है ? चार बाताँ करने ते दूरदेशी होती है; इधर-उधर कहानी, हिकायंता करने ते दूरंदेशी होती है। पेशबीनी औरताँ यूँ कतियाँ के—"जीना बहुत मुश्किल के जू जीते, जिनो कूँ आक़िल कते।" वैसे आक़िलाँ इस दरिया में ग़ोते ग्याये हैं, कोई माती पाये हैं, कोई खाली हात आये हैं। औरत की ज़ात हज़ार अपस कूँ पनवाये तो क्या हुआ ? भूले-चूके एकाधी बात आये तो क्या हुआ ? घर की रहन हारी, घर का खबर उसे मालूम, भार के कामाँ क्या जानती बिचारी ? महबूब की बात, फूल का पात, कुमलाते बार नहीं, बास निकल जाते बार नहीं। बाव-बारा, इस बाव-बारे पर क्यूँ करना पतयारा ? दानिशमन्द जो कुछ अपै जानता सो जानता। यू बी महबूब है। महबूब की बी एक बात सुनता तो गुज़रानता, औरत खूब, औरताँ में जिसकी रकूम वो तो 'अन्नादर कलमादूम' जिसकूँ खुदा दिया मान, जिस कूँ खुदा का ध्यान, जिस कूँ खुदा कूँ पछान, जिसका रोशन ईमान, जिसका बड़ा ग्यान, चतर, सुघर, सुभान। बारे, दिल कह्या; क़िस्सा अजब घड़या। चोर पर मोर पड़या। तूँ अगर इस विसाल के छज्जे पर आकर सोती तो उस ग़ैर कूँ फ़ुर्सत कहाँ ने होती ? हुश्यारी सूँ बुलाती तो उस ग़ैर के हात ते की दग़ा खाती ?

नाक़िस-कच्चा, त्रुटिपूर्ण बिसवार-बिसाना १ जो वस्तु अलभ्य है, वह न
पेशबीनी-दूरदर्शी देने के बराबर है।

फ़र्द

किसे क्या बोलना किसे क्या फ़ाम
अपनी बुद सूँ किये सो तूँ यू काम

अमा, जेते इस मामले में रहते हैं, इस क़िस्से में यू कते हैं के अक्ल पादशाह, जो शिकस्त खाया, फिर कर शहर-बदन में आया। खुदा जाना किधर जा मूँ छुपाया ! दिल तीर खा उड़या। झगड़े में घोड़े पर ते पड़या। होर सब्र के अक्ल का सर लश्कर था, बहुत दिलावर था। जो इश्क़ के लश्कर ते मोड़ खाया। शहर-हिदायत कूँ आया। हिम्मत बोल्या के दिल तो ज़ख़्मी होकर पड़या, हुस्न के हात चड़या। अक्ल शिकस्त खा कर तायब हुआ। खुदा जाने किधर ग़ायब हुआ ? जो कुछ क़ज़ा थी सो हुई। खुदा की रज़ा भई सो हुई। हिम्मत ने, पर मार्फ़त में सर धुन कर कह्या के अक्ल का मुंज पर हक़ बहुत है, मुतलक़ बहुत है। शर्त्त यारी यूँ हैं, रविश दोस्तदारी यूँ है, के इस वक्त अक्ल होर दिल की ख़बर लेना, उनो कूँ तक्वा देना --

बैत

जिस पो जो कोई प्यार रखता है
हक़ यारी वो यार रखता है

क्या जाने उनो का क्या हाल है ? अभूँ कौन कौन उनके दुम्बाल है ? बारे, इस वक्त कुछ यारी करे, मददगारी करें, कुछ नेक व बद हुआ अछेगा तो, काम ज़द हुआ अछेगा तो, मामला रद हुआ अछेगा तो, इश्क़ के लश्कर सूँ भी फिर कर झगड़ा करे, रगड़ा करे। एक नॉवँ करें, मारें या मरें। हिम्मत यू बात कर, लहवा हात कर, अपना लश्कर मुस्तैद किया, हुजूर ने एक-एक की गिनती लिया। चारों तरफ़ ते उठियाँ फ़ौजाँ। जानो क़हर के दरियाँ की मौजाँ। शहर-दीदार की तरफ़ चल्या, अजायब गुलज़ार तरफ़ चल्या। जानो डूँगर हिल्या। ठारे ठार ख़ल्क़ खलबल्या, केतेक दीसाँ कूँ क़ामत के बोस्तान में आया। भाई कूँ, अक्ल होर दिल का अहवाल पूछ्या, गले लाया।

फ़र्द

बाज़े मारूँ ते जीव है बेज़ार
वक़्त पर आ खड़ा रह्या सो यार

क़ामत बोल्या के ऐ हिम्मत, तूँ खूब यू पूछ्या, तुज पर हज़ार रहमत। आदमी की ज़ात में इतनी अछ्ना असालत। नईं तो असील होर कमज़ात में क्या फ़र्क़।

भले होर बुरे की बात में क्या फ़र्क़ ? बेवफ़ा होर वफ़ादार कूँ क्यूँ कर जानना ? यार होर अग़यार कूँ क्यूँ कर जानना । ईमान का आदमी होर, बेईमान का आदमी याँ च दिसता है । निशान का आदमी होर बेनिशान का आदमी यहाँ च दिसता है । अक्ल पादशाह ने, एतियाँ कूँ लिया, दिया, खिलाया, मिलाया । वले उस वक्त उसे पूछने तुझ बग़ैर यहाँ कौन आया ? ज्यूँ इसकी ख़ातिर तेरा दिल जल्या, त्यूँ दुसरे का दिल नहीं जल्या । ज्यूँ इसकी ख़ातिर तूँ तलमल्या त्यूँ दुसरा नहीं तलमल्या । एताल क्या पूछना उसका हाल । आज एक साल है के दिल हिजराँ के कोट में बहुत बदहाल है । होर अक्ल बी शहर-बदन कूँ गया है । अपने क़दीम वतन कूँ गया है । इश्क़ का बहुत लश्कर है । इश्क़ बहुत जोरावर है । इश्क़ सूँ जेता कोई लड़ेगा, पूरा ना पड़ेगा । इश्क़ सूँ मिल चले तो च नफ़ा है, नहीं तो बहुत जफ़ा है । इश्क़ ते लड़ कर क्या किया ? झगड़ कर क्या किया ? अपस कूँ ख़राब किया । अपना लश्कर ख़राब किया । अपना घर ख़राब किया । लड़ कर क्या पाया ? अपना भरम गँवाया । शर्म कूँ बोल लाया । ख़ुदा की ख़ल्क़ कूँ दिखाया । बहुत आख़िर पछताया । ज़रूर कूँ लड़ना कहीं कहे हैं, ज़रूर कूँ झगड़ना कहीं कहे हैं ।

बैत

अक़्ल सूँ लड़ अव्वल अक़्ल सूँ बिचार
अक़्ल जाँ ना चले वहाँ तरवार

आक़िलाँ ने बी यू कहे के 'आख़िरुद्दवा अलकै' याने जो दर्द दारू ते ख़ूब नहीं होता उसे दाग़ देना । यू बात इसते कहे के इस बात ते कोई कुछ पन्द लेना एक बात है, मेरी फ़ाम कर, जितना सकेगा उतना दोस्ती सूँ काम कर । इश्क़ बहुत बड़ा पादशाह है ज़ोरावर । समज सूँ लड़, अक्ल ते नको पड़ । टुक मुलाहिज़ा कर । फ़ारसी में कता है—

हर आँ केहतर के बा मेहतर सितेज़द
चुनाँ उफ्तद के हरगिज़ बर नख़ेज़द

ज़रूर कूँ जीव पर आये तो कोई लहवे पर हात भाना, चुपी च लहवे पर हात भाना नई सो बला जीव पर ल्याना । यू काम फ़ाम है, यू क्या काम है ? तूँ लड़ेगा हिम्मत है, वले इस काम में बहुत ज़हमत है । इस फ़ाम में नको पड़, नको लड़, नको झगड़ । सुलह सूँ काम न होवे तो लड़ना, तदबीर न चले तो झगड़ना । ख़ुदा ने अक्ल दिया है फ़ाम । जो कुछ अक्ल में दुरस्त आता वो ख़ूब है काम ।

अगयार-ग़ैर का ब. व. शत्रु दाग़ देना है । नहीं करता वह कभी
१ दर्द की आख़िरी औषधि १ जो छोटा अपने बड़ों का मान उन्नत नहीं करता ।

यू अक्ल था, उसे क्यूँ भाया ? ग़ैर मुस्तैदी सूँ इश्क़ पर चल कर आया। एता आक़िल था। वले खूब लोकाँ मिलाने तें ग़ाफ़िल था। अगर खूब लोकाँ मिलाता तो कुछ तो भी आसूदगी होती। एता जफ़ा न पाता। तूँ बी लड़ने मँगता है। हिम्मत है लड़ेगा। दिलावर है, नर है। वले इस लड़ने तें ना लड़े तो बहतर है, यकायक झगड़ने की नको कर फ़ाम, शायद झगड़ने तें सुलह सूँ बहतर होवेगा काम। लड़ने कूँ नको कर बहुत इज्तराब, बहुताँ का होवेगा घर ख़राब। तूँ एक जीव तेरा तो सहल है। एता आलम पर बला भाना जहल है, इश्क़ का लश्कर बहुत, बेनिहायत; जिधर देखेंगे उधर उसकी विलायत।

फ़र्द

अक़्ल करती है सब इता यू बिचार
लड़के मरने कूँ क्या है केती बार ?

इतने इतने कूँ लड़ने की चट खूब नहीं। बहुती च आप ख़ुदी, बहुती च हट खूब नहीं। बड़े डूँगर पर नहना डूँगर पड़ेगा, पत्थर ते पत्थर जुदा हुए; नहना डूँगर बालू होकर सब झरे। मेरी बात तूँ फ़ाम कर; तूँ तो हिम्मत है वले हुनर सूँ कुछ काम कर। लाइलाजी पर क्या नहना, क्या बड़ा ? वाँ ख़ुदा सब जागा हाज़िर खड़ा। वक्त पर ख़ुदा थोड़ियाँ के उधर होता है। एतक़ाद जोड़ियाँ के उधर होता है, वो बात जुदा है; पीछे ख़ुदा है, सत में पेट रगड़ कर सूल उठाना; आक़िल होर यू काम क्या माना ? अक्ल होर हिम्मत दोनो मिल कर कुछ काम करना है, जाँ अकेले हिम्मती च है, अक्ल नहीं वाँ मरना है। हाफ़िज़ कता है—

हुस्नत बहत्तिफ़ाक़ मलाहत जहाँ गिरफ्त
आरे बहत्तिफ़ाक़ जहाँ मी तवाँ गिरफ्त

एताल तदबीर उसकी यू है के इश्क़ी च सूँ इश्क़ लाना, इश्क़ी च कूँ समझाना, इश्क़ी च कूँ अपना करना, इश्क़ी च कूँ मनाना, इश्क़ी च कूँ अपस सूँ राज़ी कर लेना, अपनी पेशबाज़ी कर लेना, अगर इश्क़ कने यूँ इल्तिजा ल्याएगा; इश्क़ बहुत बड़ा पादशाह तेरी मुराद कूँ तुझे अपड़ाएगा। तूँ अपनी मुराद पायेगा, इश्क़ कूँ बहुत भायेगा। बहुत ख़ुश आयेगा। दोस्ती सूँ पेश आना कुछ ऐब नहीं है। जूँ ख़ीशाँ सूँ ख़ीश आना कुछ ऐब नहीं है। दुनिया में आशनाई होर मुरव्वत बी अछ्ती है; महर होर मुहब्बत भी अछ्ती है। अगर कोई बड़े की अदब रख्या तो

इज्तराब-उद्विग्नता
इल्तिजा-प्रार्थना, इच्छा

१ तूने अपने सौन्दर्य और शोभा से सारे संसार को मुग्ध कर लिया। यह बात सत्य है कि मेल-मिलाप से दुनिया को बस में किया जा सकता है।

नहना नहीं होता। नई रख्या तो कोई किसी के काम में मना नहीं होता। बड़ियाँ की अदब रखना अपनी बड़ाई है; यू बड़ाई बड़ियाँ ने आई है। यू बड़ाई नहना कूँ, बड़ियाँ कूँ सब कूँ भाई है।

बैत

इश्क़ सूँ कुछ इलाज चलता नहीं
इश्क़ सूँ सुलह बाज चलता नहीं

इश्क़ जागता, हर्गिज़ नईं सोता; इश्क़ साहब कुदरत इश्क़ ते सब कुछ होता। हिम्मत कह्या, जो कुछ मर्द है, वो लड़नहार अछे है। दुश्मन पर जाकर पड़नहार अछे है। लड़ने च पर आया तो क्या पीछे जाता है? वले क़ामत का अँदेशा मुझे बहुत भाता है। क़ामत बहुत अक्लमन्द है, क़ामत कने बहुत अक़ल का बन्द है। जो कुछ क़ामत कह्या सो वो पन्द है। क़ामत हिम्मत का भाई: क़ामत की नसीहत हिम्मत की खातिर आई। हिम्मत लश्कर सब अपना क़ामत किने ल्होड्या। क़ामत के कहे पर इश्क़ सूँ जोड़्या। हिम्मत दानिश में आकर दुनिया का आलम खातिर ल्याकर इश्क़ सूँ मिल्या जाकर। दिल का कपट दूर किया, हट दूर किया। इश्क़ कूँ बड़ा है कर जान्या, इश्क़ की बड़ाई मान्या। इश्क़ पर ऐतक़ाद ल्याया, इश्क़ कूँ बहुत भाया। इश्क़ ने हिम्मत कूँ गले लाया। इश्क़ कूँ हिम्मत पर बहुत महर आई, सच्ची बात सब किसे भाई? रहने कू अजायब नादिर एक जागा दिया। बहुत तवाज़ा, बहुत ताज़ीम किया। बाट की माँदगी चड़ी थी सो उसका उतार हुआ। हिम्मत का दिल जमा खातिर क़रार हुआ।

फ़र्द

इश्क़ व हिम्मत यू दो मिले जिस ठार
काम करता तमाम वाँ करतार

पीछे इश्क़ ने उस एक गत खिलवत में बुलाया। हिम्मत ने लड बातां इधर-उधर कियाँ जिधर-तिधर कियाँ सुनाया। उस बातां में अक्ल हौर दिल की बी बात ल्याया। हौर इस वज़ा सूँ खातिर नशान किया हौर यूँ समजाया के इश्क़ बहुत खुश होकर राज़ी हुआ। इश्क़ कूँ भोत खुश आया। आखिर क़रार यूँ हुआ, मदार यूँ हुआ के इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह, साहब-सिपाह के घर की अक्ल कूँ वज़ीरी देना, सब पर अमीरी देना, इश्क़ जैसे पादशाह कूँ अक्ल जैसा वज़ीर होना; इस आफ़ताब कूँ ऐसा बदर-मुनीर होना, ऐसा साहब-ज़मीर होना, ऐसा साहब-तदबीर होना दिलावर लोकाँ की मुहबत नहीं आई। पादशाही जाकर

बाज-बिना बदर मुनीर-पूर्णिमा का चाँद बाट की-रास्ते की माँदगी-थकान

वज़ीरी आई। वहम ने हाकाँ मार मार दिखलाया राह। अक्ल नहीं चल्या, वहम का क्या गुनाह ? जाँ बादशाही है वाँ दिलावर लोकाँ बहुत दरकार है। दिलावर लोक एक वक्त के चार हैं। यारी सूँ आखिर ज्यूँ त्यूँ हिम्मत ने काम किया। अक्ल की क़ुदरत, अक्ल की अक्ल फ़ाम किया। क़हर सूँ गुज़रान्या, अपना-अपना नाम किया। अगर ये दावा न जाता तो क्या जाने अक्ल पर क्या दुख आता ? जीवने पाता या ना पाता---

फ़र्द

काम कर नईं सीक्या अक़्ल का फेर
इश्क़ आख़िर किया अक़्ल कूँ ज़ेर

इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह, साहब-सिपाह ने अपने महर, खुर-शीद-चहर, सर लश्कर कूँ, दिलावर नर कूँ फ़रमाया के शहर-बदन कूँ बेग जा। होर अक्ल कूँ बहुत दिलसा दे कर, बहुत दिल हात ले कर इज्ज़त सूँ, हुरमत सूँ, महर सूँ, मुहब्बत सूँ, मुरव्वत सूँ समजा कर मुंज लग लेकर आ। होर कह के दिल आजुर्दा नको कर, वक्त पर नज़र धर। ये दुनिया कधीं ज़ेर, कधीं ज़बर। कधीं तले, कधीं उपर, कधीं पेश, कधीं पस। कधीं रस, कधीं बकस। एताल हमना पतयाना, गई बात का दग़दग़ा दिल पर ना ल्याना। तूँ हमें भाई है। हमना-तुमना में क्या जुदाई है ? हमारी वज़ीरी तेरी पादशाही ते कुछ काम नहीं। दिल खुश रख, कुछ ग़म नहीं। इस वज़ीरी में बी आलम आलम है। दुनिया का जीना एक दम है। मेरा एक हुक्म है म्याने, बाक़ी दौलत तूँ जाने। उज्र हर्गिज़ न करना, बेग उधर रुख धरना तो च धरना। महर यू बात सुन, इश्क़ कूँ सजूद तस्लीम कर शहर-बदन कूँ रवाना हुआ। बहुत बेग-बेग चल्या। बहुत बेगी च जाना हुआ। अक्ल सूँ मुलाक़ात किया। जो इश्क़ कह्या था सो बात किया। अक्ल ने दिल का पूछ्या अहवाल, महर ने किया दिल बी है खुशहाल, तेरा बी बुलन्द हुआ इक़बाल। कुछ ग़म नको कर, अलम नको कर; कर अब आनन्द बढाई; तेरी मक़सूद हासिल हुई, मुराद बर आई। अक्ल अंदेश देख्या के लश्कर टूट्या, बादशाही का बन्द छूट्या। फिर लड़ने का सकत नहीं, तदबीर कूँ बी गत नहीं। खल्क़ परेशान, बेदिल। यकस सूँ एक नहीं रहती मिल। काम मोती च हुआ है मुश्किल। मुल्क सब फूट्या, लश्कर का इत्तिफ़ाक़ टूट्या। मुल्क हुआ परागंदा, साहब होकर बैठ्या हरेक बन्दा। घर-घर अमीर, घर घर राजवत। घर घर तदबीर, हर कोई सरख़ोद। कोई नहीं सुनता किसी की बुद। जिसे देखता है वो दिल में बदनीयत धरता। ज़ोराँ सूँ

आजुर्दा-दुःखी § बकस-रसहीन दागदग़ा-पछतावा
पेश-आगे सजूद-अभिवादन
पस-पीछे § सरख़ोद-बड़ा व्यक्ति

पकड़ देने की फ़िक्र करता, इश्क़ पादशाह सूँ बहुत डरता। लोकाँ ने ईमान बदलाये, दिल पर बेईमानी लाये। हरामख़ोरी पर आये। नमक आज लगन हराम खाये। किस मुसलमान में मुसलमानीपना नहीं रह्या। जब बेईमान हुए, ईमानीपना नई रह्या। जीव देने कते थे जो काम पडे, वो दोस्त सब दुश्मन होकर खड़े। सितारे ने इमदाद छोड़या; फलक ने यारी तोड़या। अताल फिर पड़े बख़्त, अताल काँ की पादशाही, काँ का तख़्त? इश्क़ सूँ मिलने में च नफ़ा है। नहीं तो एक अपै क्या सारे आलम पर जफ़ा है। इश्क कूँ छोड़े तो कई ठार नहीं। इश्क़ कूँ छोड़े तो आखिर भली बार नही। कह्या बहुत खूब। ऐ वल्लाह, बिस्मिल्लाह। हमें दोनो मिल जावे। क्या करें ज़रूर है, इश्क़ क्या फ़रमाता सो खातिर ल्यावें। इश्क़ सूँ मुलाक़ात करें, अपने जीव के बारे बात करें। पैलाड़ जू अछेगी क़ज़ा त्यूँ खुदा की रज़ा। महर सरलश्कर के सँगात। अक्ल बी बेअख़्तियार होकर राते रात इश्क़ के हुजूर आया, दीदे दीदार सूँ लाया। दुआ दिया, दस्त बोसी किया। इश्क़ कूँ बी बहुत भाया, इश्क़ ने बी अक्ल कूँ गले लाया। दिलासा दिया। बहुत बहुत समजाया। कहा अताल में पादशाह तू वज़ीर, तेरे हात में दिया अपना मुल्क, अपनी सब तदबीर। तुझे भाय सो कर। तेरी अक्ल में आये सो कर। मैं मस्त हूँ, लावबाली हूँ, मेरी निगाहबानी में अछ। मैं बी बेफ़िरवाह खयाली हू, मेरी फ़िक्र ज़िन्दगानी में अछ। मैं होर शराब, राग होर महबूब; मैं इश्क़ हूँ, मुजे यू च खूब। बाक़ी का दर्द-सिर तू जाने, यू दर्द-सिर मुज लग नको दे आने। मगता हूँ इस दुनिया में दो दीस बेग़म हो अछूँ। ज्यूँ पादशाह आलमपनाह हूँ त्यूँ पादशाह-आलम हो अछूँ। को लग इस दुनिया में गिरफ्तार ही अछना अपने दिल की खुशी ते बेज़ार हो अछना। सुबा उठ कर यू लोका का कुचाट; दिल बाज़ आया है; बहुत पकड़या है उचाट। किस किस सूँ जंग। किस किस सूँ आश्ती करूँ, केताँ कूँ समजाऊँ। केताँ की दिलदाश्ती करूँ? जनम यूँ च किया बरबाद, न दिल की खुशी न खुदा की याद। येती आरज़ सूँ दुनिया में आना होर तख़्त पर बैठ इधर-उधर का ग़म खाना। जो खुशी जावे होर ग़म आवे याद, तो तख़्त पर बैठे का क्या सवाद? इधर की हाँक, उधर का पुकार, मुल्क में ग़ाग़ा ठारे ठार। यू मग़ज़ खाली करना है, यू लोकाँ की हम्माली करना है। तख़्त पर बैठे तो क्या पादशाही आई? ऐश व इशरत की नाँव है पादशाही। जिन्स-जिन्स की खबराँ ल्यावते हैं, तख़्त पर बैठे हैं होर आलम-आलम ग़म खाते हैं। ग़म खाकर पेट भरे, एताल खुशी कौन करे? दो दीस की दुनिया। पादशाहाँ के घर में दायम धिंगाना अछना। दायम अछना हँसना, खेलना, लेना-देना, पीना-खाना अछना; गाना-बजना अछना। घर

आश्ती-सुलह
धिंगाना-चहल पहल (विवाहित वर-वधू के द्वारा रोकने की रस्म)
काँकी-कहाँ की
हम्माली-माल देने वाला, हमाली-कुलीगिरी

एक जाना। एक हाट हो रहना। रात-दीस टिमटिमाट हो रहना। एक बात है फ़ाम, अव्वल ख़ुशी बाद अज़ हरेक काम। बादशाह का घर, बादशाह के जैसा दिसना। शम्स का परतो क़मर जैसा दिसना। बादशाह के घर में कोई आये तो यूँ अछ्ना जानो मेज़बानी कूँ आया हैं; ग़म कूँ बिसर जावे जानो शादमानी कूँ आया है। दुनिया की बहिश्त है पादशाह का घर; ना के पादशाह के घर में आये बी दर्द-सर। दिल मुकद्दर, नेम होर धरम की नाँवँ पादशाही है। बख़्शीश होर करम की नाँवँ बादशाही है। बादशाही आती वले बादशाही कर जानना बहुत मुश्किल है। बादशाह होकर अपस पछानना बहुत मुश्किल है। यू जूँ लश्करी लश्करीपने की झड़ती देता त्यूँ पादशाह बी बादशाही की झड़ती देना है; याने अदल होर इन्साफ़ करना है। खल्क कूं आसूदा रखना है। ख़ल्क कूँ मुराद कूँ अँपड़ाना हैं। ख़ल्क़ की दुआ लेना है। ख़ल्क़ ते ख़ुदा नही है जुदा। कही च है के –"ख़ुदा बाख़ल्क़, ख़ल्क़ बा ख़ुदा।" बादशाह एता ढूँडा-ढूँडा कर अपना हक़ ख़ल्क़ पास ते लेकर माल जोड़ेगा; अगर कईं चूक्या तो खल्क़ बी बुरा बोलेगा। ख़ल्क़ क्या छोड़ेगा? उस ते कहे हैं के अद्ल-इन्साफ़ कुछ ख़ूब है, हरेक काम साफ़ कुछ ख़ूब है। हक़ पर जो कुछ किये वो सवाद है, वो ज़ुल्म नहीं ऐन दाद है। ख़लीफ़ा याने ख़ुदा की जागा का बैठनहार; हरेक बात कूँ हक़ सूँ करना पूछ-बिचार। जॉ ते नहने होर बड़े का मुलाहिज़ा म्याने म्यान आया, पीछे उसे क्यूँ कहना ख़ुदा का साया। जॉ ते बादशाह ने ख़ुदा कूँ छोड़ दुसरे कूँ ड्या, बादशाही का सवाद बी गँवाया। अपना काम भी जाया कर्या। बादशाह होर दुसरे का डर, नज़दीक के लोकॉ कूँ जीव का ज़रर, पादशाह जो अपनी बात पर क़ायम अछे नज़दीक के लोकॉ कूँ बी इज़्ज़त दायम अछे। गर कोई किस पर तोहमत रचे, कोई किसी पर सटे बहाना; उस वक्त ख़ुदा कूँ म्याने म्यान लाना। अलबत्ता दिल महरबान होवेगा। ख़ल्क़ पर काम आसान होएगा। यू ख़ुदा का ख़लीफ़ा-सा दिस आयेगा। उसका चलन्त भी ख़ुदा कूँ भाएगा। बादशाहॉ जो एक ओहदा किसी कूँ देते हैं, तो हज़ार-हज़ार जिन्स सूँ उसकी ख़बर लेते हैं। ख़ुदा जो पादशाहाँ कूँ पादशाही देता है, खल्क़ क्यूँ पालते कर ख़बर नईं लेता है। जो पादशाहाँ कूँ यहॉ अपने औहदेदारॉ पास ते हिसाब लेना है त्यूँ वहाँ भी उनो पर पूछ-बिचार है। एक-एक जवाब देना है। यहाँ हक़ चलना, हक़ पर दिल धरना है। पादशाही करना ख़ुदाई करना है। पादशाही बहुत बड़ा अमल है। सब अमलॉ में अव्वल है। पाक-नीयत पादशाहाँ का क़ाबा। अदल-इन्साफ़ पादशहाँ का रोज़ा-नमाज़। सख़ावत पादशाहाँ के हज़ समझ दुआ-ए

शम्स-सूरज
परतो-छाया
क़मर-चाँद
जाया-व्यर्थ §
§ ज़रर-हानि
झड़ती-तलाशी
नहना-छोटा
१ ईश्वर संसार के साथ है और संसार ईश्वर के साथ

ख़ल्क़, पादशाहाँ का उम्र-दराज़। पाक-नीयत, अदल-इन्साफ़ होर सख़ावत यू पादशाहाँ की इबादत। वज़ू कर कर चार सजदे करने हर कोई सकता है; वले अदल होर इन्साफ़ होर सख़ावत की क़ुदरत कौन रखता है। पादशाहाँ अपनी इबादत ना कर दुसर्यां की इबादत करते। अपनी इबादत जो अर्श पर सजदा क़बूल पड़ता है सो बिसरते। पादशाहाँ कूँ अगर अदल होर इन्साफ़ होर सख़ावत पर ना अछे दिल तो हात-मूँ धोकर चार सिजदे करने ते क्या हासिल ? यू इबादत मिस्कीनाँ, ग़रीबाँ, फ़क़ीराँ करना। आजिज़ाँ, नामुरादाँ, बेकसाँ, हक़ीराँ करना, ना के पादशाहाँ। इतने च पर अपनी इबादत निबाड़ना, बाक़ी कामाँ ते हात झाड़ना। अपनी ख़ुशी कूँ सजदे करेंगे तो करो, वले इबादत करते हैं कर दिल पर ख़याल नको धरो। जो अव्वल मज़कूर हुआ के बादशाहाँ की इबादत, याने अदल-इन्साफ़ होर सखावत। बादशाहाँ मज़हर आज़म है, दुनिया में बहुत मुकर्रम है। उनो की इबादत, उनो की ऐसी अछना, नाके बाज़ी ख़ल्क़ जैसी अछना। यहाँ बोल किस पर क्या धरना है ? अपना इन्साफ़ अपै च करना हे। यू इबादत चार सजदे कर ख़ल्क़ कूँ दिखलाना है, ख़ुदा होर रसूल कूँ फुसलाना है। वले उनो फुसलाये क्यूँ जाते हैं ? ज़र्रे ज़र्रे के हिसाब पर आते हैं। जो कोई येना देवेगा, सो हिसाब लिख ना लेवेगा। यू पादशाही भी ख़ुदा का एक औहदा अमल है। यू औहदा-अमल क्या आसान है ? बड़ा खलल है। जिनो कोइ कुछ नहीं दिये हैं, अपनी मशक्कत कर एक तुकड़ा खाते हैं, उन बिचार्यां पर भी हज़ार हज़ार जफ़ायाँ, हज़ार-हज़ार तग़ादे ल्याते हैं, यू ख़ुदा का कारखाना है। पीछे किसे नवाज़ने पर आये तो वहाँ एक बहाना है। अपना जीव ख़ुश तो ज़मीन-आसमान ख़ुश। अपना जीव ख़ुश तो सब जहान ख़ुश। दुनिया में अपै होर अपना नाम है, अपना जीव ख़ुश रखना बड़ा काम है। जिसे पादशाही कते सो वो पादशाही जुदा है। एताल मुजे तुझ जैसा वज़ीर मिल्या है। ख़ुदा है, मदद रब हुआ है। बारे, एताल कुछ सबब हुआ है। ख़ुदा सबब साज़, ख़ुदाबन्दे कूँ ख़ुश करता नवाज़।

अलक़िस्सा बारे, आख़िर जिस वक़त के इश्क़ पादशाह आलमपनाह, ज़िल्लिल्लाह, साहब-सिपाह की अक्ल पर वज़ीरी मुक़र्रर हुई, अमीरी मुक़र्रर हुई, इश्क़ पादशाह, आलमपनाह हिम्मत कूँ फ़रमाया के दिल कूँ हिजराँ के कोट में रक़ीब ने दन्द सूँ बन्द किया है, बहुत ख़ार कर, आज़ार दिया है। तूँ जा कर, ख़ातिर ल्याकर, दिल कूँ आशिक़ कामिल कूँ इस वासिल-कामिल कूँ वहाँ ते मेरे हुज़ूर ल्या; होर उसके पाँव में का बन्द काड़ कर उस रक़ीब बेनसीब के पाँवे में भा होर ग़ैर को, उसकी दुख़्तर है-बदअख़्तर है, साहर है, टोने में बहुत माहर है उसे भी ख़ूब

वज़ू-नमाज पढ़ने से पहले हाथ मुँह धोने की विशेष क्रिया
सजदा-प्रणाम
† मिस्कीन-अकिंचन
मजहर-आजम ईश्वर
मुकर्रम-प्रतिष्ठित (करम-इ)
§ मुकर्रम)
तुकड़ा-टुकड़ा

क़ल्ब जागे में क़ैद कर कर आ। जो वहाँ ते कई निकल न जावे वो कई झाँकने की फ़ुर्सत न पावे। वो बहुत बुरी है, शकर की छुरी है। जाँ जाएगी वाँ बला बिसाएगी। हिम्मत ने इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, साहब-सिपाह कू सलाम किया। मुद्आ सब फ़ाम किया। हिजराँ के कोट कूँ चल्या। ज्यूँ पारा नवाँ में ढल्या। वहाँ जाकर, लड़ कर, झगड़ कर, कोट लिया, झगड़ा फ़तह किया। दिल कूँ उस कोट में ते भार ल्याया, दिल के पाँव में का बन्द काड़ कर उस रक़ीब-बेनसीब के पाँव में भाया। होर ग़ैर कूँ बी पुराने घर में शैतानाँ के गुज़र में छोड़या। चारों तरफ़ तो काँदा चीन्या। दरवाज़े के पाटाँ जोड़ा जोड़या के दुसरी बार ऐसी शैतानगी न करे। दो दीस अदब पावे, टुक डरे। ग़ैर ख़ातिर बी जीव तलमलता। वले क्या करना? दुनिया का काम है। अदब किये बाज नहीं चलता। क्या नहनी अक्ल आई। ग़ैर ने जैसा करी वैसी पाई। पीछें हिम्मत ने दिल कूँ, आशिक़-कामिल कूँ, वासिल कूँ, बहुत यारी सूँ, बहुत दोस्तदारी सूँ; इश्क़ पादशाह, आलमपनाह, साहब-सिपाह के हुजूर ल्याया। दिल कूँ, होर अक्ल कूँ होर इश्क़ कूँ एक जागा मिलाया। यू सब, जूँ संग, एकस के एक गले लग। क्या अदावत होर हट दूर हुआ सब कूड़। कपट दूर होर फ़तवा टूट्या। हरकत भागी। दुश्मनी सुती, दोस्ती जागी। आख़िर अक्ल होर इश्क़ होर हिम्मत मिल अँदेशे के दिल का हुस्न सूँ अक्द करना। इस काम पर जिद धरना, के दिल ने हुस्न ख़ातिर बहुत जफ़ा देख्या, बहुत सूस्या है। सब मिले, सब हुए ख़ुशहाल; कहे एताल दिल कूँ ना बिसरना, यू काम अँदेशे है सो करना। इस काम कूँ सब क़रार दिये; ब्याह का काज मॉडे-डेरे; ठारे ठार दिये। घर सँवारे, जागा जागा नक्श-निगारे। सद्र बिछाये पाचे रंबा-उर्बसी मेनका पातराँ आकर नाचे। ठारे ठार आगइश किये। दिल सूरज का, हुस्न चाँद सूँ जल्वा दिये। नाज़, ग़म्ज़ा, इश्वा, लताफ़त, महर, छन्द यू चंदन्याँ सारियाँ; इस सूरज पर, उस चाँद पर तारे वारियाँ। आलम सब हुआ शहमात; दीस ते रोशन हुई रात। मुश्तरी तमाशा देखने आई, ज़ोहराँ ने जिल्वा गाई। हुस्न होर दिल का अक्द किये, सब मिल मुबारकबादी दिये। अताल ग़म बिसरने ख़ातिर, इशरत की किल्वत करने ख़ातिर, फूला सूँ सेज़ सँवारे। छपर पलंग का पर्दा उतारे। दोनो दिल खोल लिये। गुज़र्या क़िस्सा बोल लिये। एकस कूँ एक गले लाते, एकस पर एक क़ुर्बान जाते। एकस की ख़ातिर एक तरफरते। एकस के एक पाँव पड़ते। एकस कूँ एक शर्मो करते। आह मारते, उसास भरते। एकस कूँ एक देखते, नींद उड़ गई; नहीं सोते।

क़ल्ब-हृदय
नवाँ-ढलना
अक्द-पाणिग्रहण, गाँठ
सद्र-फ़र्श
काँदा-दीवार
चीन्या-चुना
पटाँ-पाट का ब. व.
जूँ-ज्यों
सुती-सोती §
§ रंबा-रंभा
पातराँ-नर्त्तकियां

अताल के ख़ुशी याद आई तो हँसते। अव्वल का दुख याद आया तो रोते। अपस में अपै ज्यूँ जाने त्यूँ बहुत सवाद सूँ सब रात गुज़राने। पाँवँ में पाँवँ, सीने सूँ सीना, अधर पर अधर, हात में हात दोनों मिल यूँ सोते जानो एक वजूद, एक ज़ात। नाज़ाँ ने घूँगट खोले, ग़म्ज्याँ ने बाताँ बोले। नखर्यां का हुजूम चड़्या, इश्वाँ ते सुद उड़्या। छुन्दाँ ने छड़ ल्याए, चाल्याँ ते तमाशे दिखलाये। लताफ़त ज़ौक़ में आई। दीदयाँ कूँ भोत रिझाई। ख़ुशनुमाई, मुरव्वत चुलबुलने लगी, मुहब्बत अँखियाँ में घुलने लगी। बँगडियाँ शोर कियाँ, घुँगरू गुल उचाये। कमर ते ज़र-कमर खुलियाँ। हारां सीने पर दुँदलाये। फूला खोय में भिंगेगा तो ई च कुमलाये। ख़ुशबोई की डोरी छुटी चौंधर। बास की महकार उठी। दो-चार प्याले शराब के पिये, दुनिया में जो कुछ करते सो किये। ग़म्ज़े करे, बला करे। बहुत ग़लबला करे। गुंचा खुल्या। फूल हुआ सब तन, सेज हुई गुलाँ का चमन। अल्मास सूँ खोदे याकूत का खन, भार निकल आये लाल रतन। याकूत के रेज़ियाँ की तलबी फटी। धन हांक मारी, चिला चिला कर उठी। दिल बादशाह चतर जौहरी, बहुत शाना, बीन्ध्या अनबींधा मोती का दाना। हुस्न नाज़ करी रोने के बहाने, दिल लग्या गले ला ला समझाने। रोती थी सो यकायक हँस पड़ी। भई, अपस में वों च गले लगने लगी। घड़ी-घड़ी भी वही मुहब्बत, वही प्यार। एकस पर एक सदक़े, एकस पर एक बलिहार। अलहम्दुलिल्लाह, दोनो कूं हुआ विसाल। अपना दिल ख़ुश तो सब आलम ख़ुशहाल। दिल कूं मिल्या जीव का जानी। यू विसाल मुबारक, यू ख़ुशी अरज़ानी। एती जफ़ा दिल पड़ी तो मयस्सर हुई यू विसाल की घड़ी। मर्दों ने मशक़्क़त सूँ उम्मीद के दरवाज़े खोले हैं—"मन तलब शयन वजद प वजदा" कर बोले हैं। याने जो कोई जिस काम जिद धर्या उनने वो काम कर्या। बन्दा एक दिल सूँ जो उम्मीद किया ख़ुदा उसे अलबत्ता वो उम्मीद दिया। बारे, आख़िर दिल की महनत सब फ़रागत हुई। मशक़्क़त राहत हुई। जफ़ा वफ़ा हो आया। ग़म निशात का बार ल्याया। रोना हँसी का पैना लिबास। दिलगीरी, ख़ुशहाली हो रही पास। दुश्मनी दोस्ती हो आई, खटाई में मिटाई भाई। परेशानी जमीयत का की काम। नामुरादी मुराद हुई तमाम। हुस्न हौर दिल इनो दोनो का भ्याव हुआ। इनो दोनों के इश्क़ का न्याव हुआ। पीछें एक दीस दिल हौर हिम्मत हौर नज़र तीनो शराब पिये, तीनो मस्त बेखबर तमाशा देखते-देखते

अरज़ानी-प्रदान कर
निशात-प्रसन्नता
बँगडियाँ-बँगडी (चूड़ी) का ब. व.
दुँदलाये-मलिन हुए §

§ रवन-रवान धन-औरत चिला चिला-चिल्ला चिल्ला। शाना-हुशियार पैना-पहना भ्याव-विवाह

१ जिसने चाहा, चाह पर दृढ रहा उसने पाया, जहाँ चाह वहाँ राह।

कश्मीर के गुल्ज़ार में आये। धन आब-हयात का चश्मा पाये। वहाँ देखते हैं एक पीर। सब्ज़पोश, कुलाहज़र, ना बिना गोश, (?) साहब-होश। उस चश्मे पर खड़ा डुलता है। जो कोई उसे देख्या वो भुलता है। वो पीर सो मुकड़े का पाच। बहुत खूब वा च वा च। बहुत आला, चारों तरफ़ हड़े नूर का उजाला। देखते जीव जाता भी आता, यू देखना आशिक़ कूँ भोत भाता। अगर यू आब-हयात यूँ जीवता करेगा तो एक बाट किया के आशिक़ हर रोज़ हज़ार हज़ार बार मरेगा। आब-हयात का मदद हरदम। अताल आशिक़ कूँ मरने का क्या ग़म? हौसाँ सूँ मरने आता, हज़ार-हज़ार कुछ फ़िक्रा करने आता? हिम्मत बोल्या दिल कूँ के ए दिल यहाँ कुछ चित धर, इस पीर सूँ, रोशन ज़मीर सूँ क़दमबोसी कर के यू पीर ख़िज़र पैग़म्बर है। आब-हयात के चश्मे पर है। दिल ने जूँ हिम्मत बोल्या था त्यूँ च दौड़ कर उस पीर की क़दमबोसी किया। अदब सूँ नज़दीक बैठ्या, उस पीर की दुआ लिया। जो दिल के दिल में राज़ का ख़याल आया। ख़िज़र ने भी अँखियाँ सूं वों च इशारत दिखलाया। दिल होर अँखियाँ सूं बात हुई, वले वो बात दोनो के साथ हुई। ख़िज़र तें फ़ैज़ दिल कूँ अँपड़्या। अपनी मुराद की मंज़िल कूँ अपड़्या। दिल ने ख़ातिर क़रार किया। घर-दार किया। रोज़गार किया। दिल कूँ फ़र्ज़न्दाँ हुए, फ़र्ज़न्दाँ ख़िर्दमन्दाँ हुए। उस फ़र्ज़न्दाँ में का बड़ा फ़र्ज़न्द सो यू किताब, लायक़, क़ाबिल मुस्तैद हर बाब, अपने वक्त का लुक़मान, अफ़लातून। अपने वक्त का ख़ुसरो, फ़रहाद, मजनू, अपने वक्त का ख़ाक़ानी, अनवरी, सादी; अपने वक्त का ज़हीर, कमाल, सुलेमान। अपने वक्त का हरेक बात का हादी। कलाम का साहब। फ़ाम का साहब। इलहाम का साहब। हरेक काम का साहब। रोशन ज़मीर साहब-तदबीर। हर फ़न में माहर। छुप्या सब उसके अंगे ज़ाहर। ख़ुदा का वासिल, साहब-दिल। आशिक़ाँ का रहनुमा। साहब-हाल, साहब-हासिल। हातिफ़-ग़ैब का आवाज़; महरम असरार, महरम-राज़। राज़दारों का अधार; आशिक़ों के जीवा का यार। मजलिस का सिंगार। दिल के बाग़ का बहार। सर तें पाँवे तक गुलज़ार। पादशाहाँ की मजलिस में फिरे, मोतियाँ के दरिया में तिरे। आशिक़ों के दिल बहलाता। माशूक़ाँ कूँ तपाता। सब के दिल कूँ भाता, बहुत ख़ुश शक्ल। बहुत ख़ुशरू। पादशाहाँ कूँ उसके देखने की आरज़ू। हज़ार क़िस्से, हज़ार शेर। हज़ार लतीफ़े याद, जिसके नज़दीक बैठे उसका दिल होवे शाद। सब के दिलाँ का आराम। सब कूँ उससे काम। बहुत उसमें अक्ल, बहुत उसमें फ़ाम। सब काम में तमाम। जाँ यू अछे वाँ दिलगिरी ना आवे। मुहब्बत इसकी सब कूँ भावे। बात उसकी ज्यूँ शकर, जूँ नाबात, जो लगन दुनिया तो लगन उसे हयात। बारे, जिस वक्त था एक हज़ार व चहल व पंज उस वक्त ज़हूर पकड़्या यू गंज। जो कोई साहब-सुख़न अछेगा, जो

पाच-हीरा हातिफ़-फ़रिश्ता $ पंज-पाँच
हादी-उपदेशक चहल-चालीस $

कोई साहब-फ़न अलेगा उसे यू सुखन असर करेगा। मस्त, बेखबर करेगा। अपना करेगा। अपनी अधर करेगा। वो पछानेगा। वो इस बात की कद्र जानेगा। हमना याद करेगा। अपना दिल शाद करेगा। दिल पर ने जाएगा फ़िक्र। उसे हमारी लगेगी ज़िक्र। हमारी बात की लताफ़त के प्याले का असर चढ़ेगा। हज़ार ऐतक़ाद सूं बदिल व जान हमारी सलामती की फ़ातिहा पढ़ेगा, अजब मर्द था कहेगा। अजब साहब-दर्द था कहेगा, अजब कामिल था कहेगा। अजब वस्ल था कहेगा। हादी है कहेगा। मुनादी है कहेगा, हज़ार शुक्र के, बारे अलहम्दुलिल्लाह। किताब तमाम हुआ। मक़सूद हासिल हुई। सब काम हुआ। ज़ोर सूं नहीं आता फ़ाम। समज सूं आ लगता काम। अताल ज्यूं हुस्न होर दिल अपनी मुराद कूं अँपड़े, अपने कमाल-ऐतक़ाद कूं अँपड़े त्यू पादशाह होर पादशाह के दोस्तां, पादशाह के अज़ीज़ाँ, पादशाह के ख़ीसां, क़राबतां, पादशाह की प्यारियां, प्यारे: मागते मगनहारे: पादशाह के ख़िदमतगारां, दौलतखाहाँ, दुआगोयाँ, उम्मीदवारां, सब अपनी मुराद कूं अँपड़ो। उनो कूं ग़ैब नेमत सँपड़ो। रिज़्क फ़राख अल्लो, हमेशा ऐश इशरत अल्लो। उम्र दराज़ अल्लो। दायम दौलत अल्लो, आकिबत बखैर अल्लो, ईमान सलामत अल्लो। आमीन या रब्बुल आलमीन।

मुनादी-निदा करनेवाला, बोलने वाला † क़राबतां-(क़राबतदार) सम्ब † हे विश्वम्भर तू इसे स्वीकार कर फ़राख-प्रचार

शब्दार्थ

अरबी तथा फ़ारसी

(अ)

अक्द-पाणिग्रहण
अग़ायार-शत्रु, पराये लोग
अज़-से
अज़दहा-अजगर
अज़मत-श्रेष्ठत्व
अजर-बदला
अज़ाब-कष्ट
अजायब-विचित्र
अज़ीमउश्शान-जिसकी बड़ी शान हो, महत्तम
अदम-न होना, अभाव
अदावत-शत्रुता
अनवार-प्रकाश
अना-मैं
अफ़सुर्दा-उदास
अबस-बेकार
अबलाह-मूर्ख
अब्र-बादल
अब्रेशम-रेशम
अमर-आदेश
अमरद-कुमार
अम्बर-एक सुगन्धित पदार्थ
अमा-लेकिन, सम्बोधनवाचक शब्द
अमीन-रक्षक
अयाँ-प्रकट
अय्यार-मक्कार
अरकान-सदस्य
अरज़ानी गई प्रदान की गई, आसानी से प्राप्त की गई
अरवाह-आत्मा
अर्श-सातवें आसमान पर ईश्वर का सिंहासन
अलम-पीड़ा
अल्मास-एक रत्न
अलामत-चिह्न
असरार-भेद
अस्तग़फ़ार-शरण चाहना
असीर-क़ैदी
असील-कुलीन
अशकाल-शकलें
अहद-एक अलिफ़ से)
अहमक-मूर्ख
अहल-पात्र
अहले-हिन्द-हिन्दुस्तानी लोग
अहवाल-हाल, विवरण

(आ)

आक़िल-बुद्धिमान (एन)
आक़बत-परलोक
आख़िरत-प्रलय दिवस
आजुर्दा-दुःखी
आतिश आग
आफ़ताब-सूर्य
आफ़रिन्दा-पैदा करनेवाला
आफ़ियत-कुशलता

आबहयात-अमृत
आबिद-उपासक
आमाल-आचरण
आमिल-आचरण करनेवाला
आर-लज्जा
आरायश-सजावट
आरिफ़-ज्ञाता
आलमपनाह-ससार का आश्रय
आला-श्रेष्ठ
आलायश-मैल कुचैल
आलिम-विद्वान
आसाइश-आराम
आसूदगी-प्रसन्नता
आसूदा निश्चिन्त, प्रसन्न
आशकार-प्रकट
आश्ती-समझौता
आशना-प्रिय, परिचित
आशनाई-मित्रता, प्यार
आशियाँ-घोसला

(इ)

इकराह-घृणा
इख़लास-नम्र व्यवहार
इज़तेराब-उद्विग्नता
इज़राइल-मृत्यु का अधिष्ठाता
इज़हार-प्रकट
इताब-क्रोध
इत्तिहाद संगठन
इमामत-पेशवाई
इरफ़ान-ज्ञान, ईश्वर का बोध
इल्तिजा-प्रार्थना
इला-अल्ला, ईश्वर
इल्लत-दोष
इलाही-ईश्वरीय
इस्तक़ामत-दृढ़ता
इस्तग़नाई-लापरवाही, सम्पन्नता
इस्म-नाम
इशरत-प्रसन्नता, विलास
इश्तियाक़-शौक़
इश्वा-नाज़, नखरा

(उ)

उज्रख़ाही-क्षमा याचना
उम्मत-जमात, समुदाय
उल्फ़त-प्यार
उश्शाक़-प्रेमी

(ए)

एजाज़-चमत्कार
एहतराम-प्रतिष्ठा
एहतियाज-आवश्यकता
एहतिशाम-ऐश्वर्य

(ऐ)

ऐमन-शान्त स्थान

(औ)

औक़ात-समय
औबाश-कमीना, आवारा

(क)

कज-टेढ़ा

क़जफ़हमी-दुर्बुद्धि
क़ज़ा-आदेश, सयोग, मौत
क़ज़ारा-सयोगवश
क़तरा-बूँद
कब्क-चकोर
क़बाहत-बाधा
कबीरा-बड़ा
कमाल-कुशलता
क़यामत-प्रलय
करम-दया
क़र्न-दस, बारह, बीस, अस्सी, या एक सौ बीस वर्ष
करीम-दयालू, दाता
कलीम-वक्ता
क़वी-शक्तिशाली
क़स्र-महल
क़स्द-विचार, इच्छा
क़स्साब-कसाई
कसाफ़त-मैलकुचैल
कसीफ़-अशुद्ध
कहकशाँ-आकाश गगा
क़हर-प्रलय, सकट
क़हार-क़हर ढानेवाला
क़ादरियत-प्रभुत्व
क़ादिर-निर्माता, समर्थ
क़ामत-क़द
कामिल-पूर्ण
क़ायदा-विधान, नियम
कायनात-विश्व
कारज़ार-युद्ध
क़ाल-कथन
क़िनाअत-सन्तोष
क़िमाश-आदत, अटाला
किसवत-वेश
किशवर-देश
किश्त-खेत
कीमिया-रसायन
कीसा-थैली
कुदसी-पवित्र
कुमरी-एक पक्षी
कुमाश-विशेषता
कुर्ब-सामीप्य
कुर्सी आसन
कुहना-पुराना
कूँचा-गली
कैफ़ महात्मा मूसा की उपाधि, नशा
कोरबातिन-अन्धा अन्त करण
कोशाँ-प्रयत्नशील
कोह-पहाड़
क़ौल-कथन

(ख)

खतर-खतरा, भय
खुरोश-जोश
खलास-छुटकारा
खलासी-छुटकारा पाना
खाक-मिट्टी
खाना-घर
खाम-कच्चा
खार-अपमान, क्रोध
खारिज-बाहर
खारिस्तान-काँटों का देश
खारी-अपमान
खाल-तिल
खास्त-इच्छा, लालसा
खासा-आदत, विशेषता
खाहीनखाही-चाहे अनचाहे

ख़िज़्र-एक पैग़म्बर
ख़िरदमन्द बुद्धिमान
ख़िराज-भेंट
ख़िलवत-एकान्त
ख़ीश-कुटुम्ब
ख़ुम-शराब का शीशा, शराब की सुराही
ख़ुरशीद-सूर्य
ख़ुशख़ूँ-सुन्दभावी
ख़ुशतबा-सुस्वभावी
ख़ुशरंग-सुन्दर
ख़ुशसरूद-मधुरकंठ
ख़ूब-अच्छा, श्रेष्ठ
ख़ूबाई-अच्छाई
ख़ोय-पसीना, आदत

(ग)

गंज-ख़ज़ाना
गदा-भिक्षुक
ग़नी-ऐश्वर्यशाली
ग़नीम-शत्रु
ग़फ़्फ़ार-क्षमाशील
ग़म्ज़ा-नखरा
ग़म्माज़-चुगलखोर
ग़र्क़ाब-डूबा हुआ
ग़लग़ला-शोर
ग़लबा-ग़ालिब हुआ
ग़व्वास गोताखोर
ग़ाहवारा-भूलना, पालना, निवास-स्थान
ग़ाज़ी-विजेता
ग़ायत-उद्देश्य
गिरह-गाँठ
गिरेबाँ-दामन
गिल-कीचड़
गुंचा-कली
गुदाज़-नर्म, घोल
गुफ़्तार-वचन
गुलज़ार-चमन, वाटिका
गुलरू-प्रेमिका, पुष्पमुखी
गुलरेज़ी-पुष्पवर्षा
गुलशन-बाग़
ग़ैब-अदृश्य
गोर-क़ब्र
ग़ोग़ा शोर
गौहर-मोती

(च)

चन्दाँ-कुछ
चर्ख़-आकाश
चश्मा-झरना
चहल-चालीस
चाहज़ख़न-ठोड़ी का गढ़ा

(ज)

जंजबार-एक देश
ज़ख़ीरा-पूँजी, ढेर
जफ़र-सफलता
जफ़ा-जुल्म, कष्ट
ज़बर-ऊपर आना, उभरना
ज़बाँवर-बोलनेवाला
जबूँ-सख़्त, बुरा
ज़र-सोना
ज़रर-हानि
ज़रीना स्वर्णिम, शोभादायक
जर्फ़-पात्रता, हौसला
ज़वाल-पतन

ज़लज़ला-भूकम्प
जलजलाल-प्रभावशाली
जल्वा-प्रकाश, शोभा
ज़लालत-शान शौकत
जहत-सीमा, दिशा
जा-जगह
जाँबाज़ी-प्राण देने की आदत
ज़ाकिर-चर्चा करनेवाला
ज़ाया-व्यर्थ
ज़ार-वाटिका
ज़ाहिद-परहेज़गार
जिगर का गोशा-जिगर का टुकड़ा
जिन-भूत, प्रेत
जिन्स जिन्स-विविध
जिब्रइल-एक फ़रिश्ता
ज़ियाँ-हानि
ज़ियाफ़त-दावत, समारोह
जिल्लिल्लाह-ईश्वर की छाया, ईश्वर का प्रतिबिम्ब
जिश्ती-बुराई
ज़ीनत-शोभा, रौनक़
जुनून-उन्माद, पागलपन
ज़ुल्फ़क़ार-अली की तलवार
ज़ुल्मात अँधेरा
ज़ेबाई-सुन्दरता
ज़ेर-नीचे, पराजय
ज़ेरज़बर-नीचे ऊपर
ज़ैदो उमर-अमुक अमुक
ज़ोहद-ईश्वर की भक्ति
जौहर-जवाहर, योग्यता

(त)

तक़लीद-अनुसरण
तक्वा-धैर्य, धर्मविश्वास
तख़्त-सिंहासन
तजल्ली-प्रकाश
तन्हाई-एकान्त
तफ़हुस खोज
तमसील-उपमा
तमा-लालसा
तमामी-पूर्ण
तरब-खुशी (तरब 'तोय' से)
तवक्कुल-ईश्वर विश्वास
तवाना-बलिष्ठ, मोटा
तलखाब-शराब
तसलीम-अभिवादन
तस्खीर-अपने अधीन करना
तश्बीह उपमा
तहतेग़-तलवार के अधीन
ता-इसलिए
ताअत-उपासना
ताकीद चेतावनी, रोकथाम
ताखीर-देर
ताजील-जल्दबाज़ी, जल्दी
ताबे-अधिकृत
ताबेजात-अधिकृत
तायब तोबा करनेवाला
ताला प्रतिष्ठित, श्रेष्ठतम
तालिब इच्छुक
ताले भाग्य
तावील अन्यथा
तासीर-असर, परिणाम
तिलस्म-जादू, आश्चर्यजनक
तीशा पत्थर फोड़ने का औज़ार
तुन्द तलख़
तुरफ़ा-विचित्र
तुहुर-पवित्र
तूती-तोती

तूबा-स्वर्ग का एक वृक्ष
तेज़ाबा-शराब
तेज़ी-घोड़ा, शीघ्रता
तोशा-पाथेय

(द)

दबीर-लिपिक
दरबर-बगल में
दरवेश-फ़क़ीर
दरहम-व्यग्र, उलट-पलट
दरूना-अन्तःकरण
दस्तगीर-भक्तवत्सल
दहन-मुँह
दाई-बुलानेवाला
दाद-साधुवाद
दाना-चतुर
दाम-जाल
दायम-शाश्वत
दिलआज़ार-दिल को पीड़ा देनेवाला
दिलकुशा-दिल खोलनेवाला
दिलगीर-चिन्तित, दुःखी
दिलबर-प्रेमिका
दिलरुबा-मनमोहक
दिलाराम-प्रेमिका, मनोरंजक
दीदबान-रक्षक, प्राचीर का गवाक्ष
दीदार-दर्शन
दुम्बाल-पीछे
दुरूनी-अन्दरूनी
देव-राक्षस
दोज़ख़ी-नारकीय

(न)

नंग-शर्म
नऊज़ो बिल्लाह-ईश्वर शरण में रखे
नक़ल-कहावत, कहानी
नर्काज़-विपरीत
नज़्म-कविता
नदीम-सामन्त, परिचारक
नफ़र-नौकर
नफ्स-लालसा, प्रेम
नफ्सानगी-स्वार्थ
नबात-मिश्री
नबी-ईश्वर का सन्देशवाहक
नसर-गद्य
नाअहल-फूहड़, अयोग्य
नाक़िस-कच्चा, दोषपूर्ण
नाज़िश-नाज़ करनेवाला
नाज़िर-दर्शक, ईक्षक
नाजुक फ़ाम-कोमल
नात-पैग़म्बर मुहम्मद की प्रशंसा
नातिक़-बोलनेवाला
नादिर-अनुपम
नाबरखुरदार अयोग्य
नाबूद-नाश
नामूस-प्रतिष्ठा
नाला-रुदन
निशात-प्रसन्नता
नीम-आधा
नीश-डंक
नुक्ता-बिन्दु, भेद
नुक़्ात-सूक्ष्म
नुसरत-विजय
नूर-प्रकाश
नेक किरदार-शुद्धाचारी
नेकख़ाह-शुभाकांक्षी
नोश करना-पीना

(प)

पंज-पाँच
पज़मुर्दा होना-मुर्झाना, कुमलाना
परतो-छाया
परवाज़-उड़ान
परस्तिश-पूजा
पस्त-नीचा, अवनत, उदास
पायमाल करना-रौंधना
पिन्हा-गुप्त
पिन्हानी-गोपनीयता
पुश्तीवान-सहायक, रक्षक
पेश-आगे
पेशबीनी-दूरदर्शिता
पेशवा-नेता, अगुवा

(फ)

फ़ना-नाश
फ़र-ठाट बाट, दबदबा
फ़रह-प्रसन्न
फ़र्ज़न्द-पुत्र
फ़िराक़दस्ती-मुक्तहस्तता
फ़लक-आकाश
फ़साहत-सरलता
फ़सीह-परिमार्जित, सरल
फ़हीम-बुद्धिमान
फ़ाज़िल-योग्य
फ़ातिहा-मृतकों के लिए प्रार्थना
फ़ाम-(फ़हम) समझ, बुद्धि, वर्ण
फ़ायक़-श्रेष्ठ
फ़ारिग़ बाल-सन्तुष्ट
फ़ासिक़-इस्लामी धर्मशास्त्र से हट कर आचरण करनेवाला
फ़िदा-मुग्ध
फ़िराक़-वियोग
फ़िरासत बुद्धिमत्ता
फ़ुगाँ-रोना, चिल्लाना
फ़ैरोज़ी-सफलता
फ़ैल-काम

(ब)

बख़रा-हिस्सा
बख़्त-भाग्य
बख़ाक-भस्मसात
बख़ील-कंजूस
बदरे मुनीर-पूनम का चाँद
बज़्म-सभा
बदबख़्त-अभागा
बर-पहला, बगल
बरदर-दरवाजे पर
बरहक़-यथार्थ
बरहम-क्रोध
बरहना-नंगा
बराये-लिए
बर्क़-बिजली
बलन्द-ऊंचा
बसीर-देखनेवाला
बसेहत बसलामत सकुशल
बशरियत व्यक्तित्व
बशारत-शुभ समाचार, इलहाम
बहरी-बाज़ जैसा पक्षी
बहरुल माना अर्थ का समुद्र
बहस्बे ज़ाहिर-प्रकट रूप से, सामाजिक दृष्टि से
बहार-वसन्त
बहिश्त-स्वर्ग

बहिश्ती-स्वर्गगामी
बाज-बिना
बाज़-एक पक्षी, श्येन
बाज़-कोई
बातिन-गुप्त
बादज़-पीछे
बाद अज़ाँ-इसके बाद
बाब-अध्याय
बार-फल
बार लाना-फल देना, सफल करना
बाला-ऊंचा
बाहम-परस्पर
बिज्ज़ात-ज़ात से, अस्तित्व से
बिला-बिना
बुतख़ाना-देवालय
बूद-होना, अस्तित्व
बेगाना-पराया
बेचूँ बेचुगूँ-असन्दिग्ध
बेज़वाल-नित्य
बेतमा-निस्वार्थ
बेदादी-अत्याचार
बेनवाई-दरिद्रता
बेबहा-अमूल्य
बेरंज-दुःखरहित
बेहयात-निर्जीव
बैतुलमाल-राजस्व जमा करने का भवन
बोस्ताँ-उद्यान, वाटिका

(म)

मक़बूल-प्रिय
मक़बूलसूरत-सुन्दर
मकर-छल
मख़दूम-सेव्य
मख़फी-गुप्त, रहस्य
मग़रिब-पश्चिम
मज़कूर-जिसका जिक्र हो
मजजूब-लीन (जज्ब-मजजूब)
मजहर आज़म-ईश्वर
मजहूल-दुर्बल
मजाज-नाशमान, अवास्तविक
मजाज़ी-अवास्तविक
मजीद ज्यादा
मतलूब-अपेक्षित (तलब-मतलूब)
मनक़बत-अली तथा बारह इमाम की स्तुति
मनम-अहंकार
मफ़हूम-आशय, विचार
ममात-मृत्यु
मरदूद-निकाला हुआ, अपमानित
मर्ग-मृत्यु
मरातिब-प्रतिष्ठा (मर्त्तब-मरातिब)
मलायक-फ़रिश्ते
मशरिक़-पूर्व
महक-सुगन्धि
महक्कम-दृढ
महबूब-प्रिय
महरम-ज्ञाता
महरमियत-रहस्यज्ञता
महाफ़िज़त सुरक्षा
महाल-कठिन
माज़ी-भूत काल
मादन-खान
माना-अर्थ
माबूद-खुदा
मायल होना-आकर्षित होना
मायल-मुग्ध
मारफ़त-ज्ञान

मार्का-संघर्ष
माबैन-दरमियान
माहज़ादा-चाँद का बेटा
माहियत-यथार्थता
मिकदार-प्रतिष्ठा
मिज़्गाँ-पलकें
मिस्कीन-करुण आकृतिवाला
मिश्क-कस्तूरी
मुअम्मा-पहेली
मुख़लसी-दोस्ती
मुतरिब-गानेवाला
मुतलक़-बिल्कुल, सर्वथा
मुतवत्तन-निवासी
मुताहयरी-आश्चर्यभरी
मुती-आज्ञापालक
मुद्दई-दावा करनेवाला
मुनज्जम-ज्योतिषी
मुनज्ज़ा-पवित्र
मुफ़लिस-अकिञ्चन
मुफ्तिन-फितना करनेवाला
मुफ़ारक़त-वियोग
मुमताज़-प्रतिष्ठित
मुमल्लिकत-राज्य
मुरक्कब-मिश्रित
मुर्त्तेजा-अली की उपाधि
मुराद-वाञ्छा
मुसफ्फ़ा-पवित्र
मुसहिफ़-कुरान
मुस्तक़बिल-भविष्य
मुस्तक़ीम-सीधा
मुस्तग़नी-धनी, निरपेक्ष
मुसाहब-दरबारी
मुश्ताक़-शौक़ीन
मुश्ताक़ी-शौक़ीनी

मुशाता-नाइन, औरत का बनाव सिंगार करनेवाली
मुहाल-कठिन
मैख़ाना-मधुशाला, शराब बेचने की जगह
मै परस्त-शराबी
मोमीन-भक्त
मौज-लहर
मौजिज़-ऐश्वर्यशाली

(र)

रक़ीब-एक स्त्री के दो प्रेमी, एक दूसरे के लिए रक़ीब कहलाते हैं, शत्रु, प्रतिस्पर्धी
रग़बत-इच्छा
रज़्ज़-जोश, युद्ध का जोशीला गाना
रम्ज़-भेद
रमूज़-भेद
रविश-चाल चलन
रश्क-ईर्ष्या
रहज़न-लुटेरा, चोर
रहमत-कृपा
रहम-गर्भाशय
रहमानी-ईश्वरीय
राज़-रहस्य
राना-सुन्दर, एक फूल का नाम
राम-मुग्ध
राहरो-पथिक
रिजा-आशा
रिन्द-नशेबाज़
रिया-आडम्बर
रियाज़त-मेहनत
रुख़सार-गाल

रुस्वाई-बदनामी
रुस्वा-बदनाम
रूबा-लोमड़ी
रूसियाह-अभागा, कलमुँहा
रेग रेत
रेश-घाव
रेशा-टुकड़ा

(ल)

लताफ़त परिमार्जन, कोमलता, आनन्द
लश्करी-सैनिक
लहोलाभ खेल कूद
लाफ़-बड़ाई, शेखी
लाला लाल रंग का एक फूल
लालाज़ार-लाल फूल का बगीचा
लावबाली-वीतराग
लावा-एक पक्षी

(व)

वज़ा-प्रकार
वजूद अस्तित्व
वली-सिद्ध
वली अकबर वलियो में महान
वले लेकिन
वहदानियत-एकत्व
वाज़-तंग
वादी-घाटी
वारिद होना-पहुँचना
वाला-पागल, मुग्ध
वाहद-एक
विसाल-मिलन
विलायत-वली का पद, सिद्धत्व

(स)

संग-पत्थर
स आदती-अच्छाई, सौभाग्य
सई-प्रयत्न
सख़ावत-उदारता
सख़ी-उदार
सजूद-अभिवादन
सदफ़नी-मक्कार स्त्री
सदा-आवाज़
सदर-वेदी, आसन
सब्ज़ा-हरियाली
सबा-प्रातःकाल
समद-पवित्र
समी-सुननेवाला
सरखोद-बड़ा व्यक्ति
सरमस्त-बेसुध
सरलश्कर-सेनापति
सरशोर-शोरगुल
सरात-स्वर्ग से पहले आनेवाला एक पुल
सरो-एक पेड़, प्रेमिका के क़द का उपमान
सलावत-दृढ़ता
सलूसित सरलता
सहरकार-जादूगर
स्याहगोश-बनबिलाव
साअत-घड़ी, समय
साक़-पिंडली
सादिक़-सच्चा, ठीक
सौंदी-दीवाना
सानी-समान
साफ़ी-शुद्ध
साया-छाया

साहबदिल-ईश्वरभक्त
साहिर-जादूगर
साहल-किनारा
सिन-आयु
सिपर-ढाल
सिफ्लगी-कमीनापन
सिफ़ात-गुण, विशेषता
सिपाहपेशानी-काला माथा
सिल्क-हार, लड़ी
सीम-चाँदी
सीरत-स्वभाव
सुख़न-वाणी
सुबुकसार-हल्का, नाज़ुक
सुमान-प्रशंसित
सुर्ख़रन-सफल
सुल्क-लिंगेंद्रिय
सूरतनवीसी-चित्रकारी
सेराब-तृप्त
सेहर-जादू
सैद-शिकार
सैयाद-शिकारी
सोख़्तम्-मैं जला
सोमआ-प्रर्थना गृह
सोयम-तीसरा
सौलत-दबदबा

(श)

शकरख़ोर-एक चिड़िया
शगल-ध्यान, व्यस्तता
शनास-ज्ञाता, पारखी
शनासी-परखने की शक्ति
शफ़क़क़त-महरबानी
शमशाद-एक वृक्ष, प्रेमिका के क़द का उपमान
शम्स-सूरज
शर-बुराई
शरअ-इस्लाम की धार्मिक विधि
शरजा-सिंह
शर्फ़-सौभाग्य
शर्मसार-लज्जालू
शहमात पराजय
शहरग-कंठ के मूल की रग, महाधमनी
शाद-प्रसन्न
शादमानी-प्रसन्नता
शाब-यौवन
शाबाँ-जवानी (शाब-शाबाँ)
शाहिद-साक्षी
शाहविलायत-अली की उपाधि
शिकेब-सन्तोष
शीरीं गुफ्तार-मधुरभाषी
शुजा बहादुर
शुजाअत बहादुरी
शैदा-मुग्ध
शोला-अंगार, पतंगा

(ह)

हक़ ईश्वर
हक़ीक़त वास्तविकता
हज़-स्वाद
हज़र परहेज़
हज़रत पूज्य, बुज़ुर्ग
हदफ़-शिकार, निशाना, लक्ष्य
हनोज़ अभी
हश्त-एक देश
हबीब-प्रिय
हम-साथ
हमज़ाद-सहजात

हमअसरी-समकालीन
हमाऊस्त-सब कुछ वही है
हमागोशी-आलिंगन
हराम-त्याज्य
हलाक़-मृत्यु
हलाल-ग्राह्य, करणीय
हवाहिर्स-इच्छा
हशम-लावलश्कर, परिचारक
हाजत-इच्छा, आवश्यकता
हाजिब-द्वारपाल
हातिफ़-एक फ़रिश्ता
हादी-उपदेशक
हायल-बाधक
हाल-वर्त्तमान
हिजराँ-वियोग
हिजाब-लिहाज़, पर्दा
हिर्स-ईर्ष्या
हुज्जत-तर्क
हुजूर-सम्मुख
हुवैदत ईश्वर का अस्तित्व
हैफ़-अफ़सोस
हैवॉ-हैवान, पशु

(अ)

अँखीसूँ=आँख से
अँगार्यां=अगारे
अगे=आगे
अंभू=आँसू
अगला=प्रथम, बड़ा, अग्रिम
अछो=रहो
अजूँ=आजभी
अँभवाँ=आँसू (अंभू का ब. व.)
अभूँ=अब तक, आज भी
अतालीच ते=अभी से
अथा=था
अँदेल्यां=अंधे
अँदेशा=अनुमान लगाया, सोचा
अँधारा=अँधेरा
अधरम=अधर्म
अपडना=प्राप्त करना
अपडान हारे=प्राप्त करानेवाले
अपछरी=अप्सरा
अपै=स्वयं
अवकल=बेचैनी
असबन्द=सम्बन्ध
असील=शीलवान

(आ)

आज तलक=आज तक
आज लौं बी=आज तक भी
आजूँ=आज भी
आनहार=आनेवाला
आदम्यां=आदमी का ब. व.
आदी=आधी
आने च=आने में ही
आसी=आएगा

(इ)

इतना च=इतना ही
इनो कूँ=इनको
इल्तफ़ात=दया
इसते च=इससे ही
इसी च=इस ही
इस्तरी=स्त्री
इश्व्यां=इश्वा (नखरा का ब. व

(उ)

उचाट=बेचैनी
उचाता=ऊँचा करता
उचाया=उठाया
उचा ली=उठा ली
उचावे=उठावे
उतराई=अऋण होने का भाव
उतारू=उतारनेवाला, तैयार
उताला=बेचैन
उत्ते=उतने
उनो च का=उन्हीं का
उनो च ते=उनसे ही
उनो की=उनकी
उपसता=उपासना करता है
उमस=उत्साह
उलाली=उत्साह
उल्हाली=उचक कर कूदना

उसकियाँ=उसकी का ब. व.
उन्ही च का=उसी का

(ए)

एकस कूँ=एक को
एकस के=एक के
एक सूँ=एक से
एकी च=एक ही
एता=इतना
एतियाँ का=इतनों का
एती=इतनी

(ऐ)

ऐट ऐंट=ऐठ ऐंठ

(औ)

औतार=अवतार, दिव्य

(क)

कँवल=कमल
कई=कहीं
ककर=कंकर
कता=कहता
कता है=कहता है
कते=कहते
कते कते=कहते कहते
कते हैं=कहते हैं
कधनते=कहीं से
कधाँ=कब
कधी=कभी

कना=कहना
कने=पास
कने कूं=कहने को
करनहारे=करनेवाले
कर कर=करके
कलचुड़ी=काली चिड़िया
कला=कहला
कस=शक्ति
कसता=परीक्षा लेता
कस्साबी=च कूं-कसाई को ही
कही च=कहीं भी
कहे लग=कहने तक
काकलूतः=माया, ममता
कॉ=कहाँ,
काँ का=कहाँ का
काड़ना=निकालना
काड्या=काढ़ा, निकाला
काड़ी=निकाली, तिनका
काड़े=निकाले,
काढ़ना=निकालना
काँदॉ=कन्धे,
कादा=दीवार
कामिल=पूर्ण,
काँ लग=कहाँ तक
किननें=किसने
किनें=कोई
कियॉ='का' विभक्ति का विशेषण वाची ब. व.
कियॉ का=किस का
किस कने=किसके पास
की=क्यों, क्या
की नईं कते=क्यों नहीं कहते
कुंच=कुछ
कुच=कुछ
कुचाट=झगड़ा, बेचैनी

कुछ ई च=कुछ भी
कुबल=कठिन
कूँ=को
क्यूँ कर=कैसे
कूड=कचरा, कूर
केतक=कितने
केता=कितना
कैना=कहना
कोट=क़िला
कोल्याँ=कोला (सियार)
कोह कर कर=कोह नामक

(ख)

खन=खान
खरियाँ=खरी (ब. व.)
खाकी च में=मिट्टी में ही
खाम=स्तंभ
खीसे कियाँ=जेब की, थैली की
खुलगा=भैंसा

(ग)

गजगजना=चहल पहल होना
गंद=गंदगी
गटे=चलने के कारण पाँव में पड़नेवाले
गंबीर=गंभीर
गँवाना=खोना
गवीलगुफा
गाँडा=गन्ना, ईख
गुंगे=गूँगे
गुणकार=गुणज्ञ
गुम्या=घूमा
गुमते=घूमते
गुम होना=खोना
गुराँ=गुरु
गुला कर=घुला कर
गूद=गूदा

(घ)

घट=दृढ़
घट की=दृढ़ की
घटेगी=घटित होगी
घड्या=घड़ा, घटित हुआ
घाँगरा घोल=परेशान
घाबरा=घबराया हुआ
घीव=घी
घुट=घूँट
घुट्या=घुटा
घुन पुन=कानाफूसी

(च)

चड़ाने=चढ़ाने
चढ़गी=चढ़ेगी
चड्या=चढ़ा
चतर=चतुर
चरा न चूँ=ननु न च, सन्देह
गटेचलने मर कूँ=चलने जैसा, चलने के लिए
चाँईमाई=एक खेल
चाड=रुचि, शौक
चाड़ी=चुगली
चातराई=चतुराई
चाला=नखरा
चितरना=चित्रित करना
चिन्त्या=सोचा
चिमटी=चींटी

चिला चिला=चिल्ला चिल्ला
चीन्या=चुना
चुकल्या=कुचला
चौंधर=चारों तरफ
चौसार=मुलक्षण

(छ)

छजा=छज्जा
छतर=छत्र
छन्द=गुण, छल
छन्द बन्द=छल कपट
छुले=छाले
छुपियाँ=छुपी का ब. व.

(ज)

जगम=लिंगायत सम्प्रदाय का गुरु
जकुछ=जो छकु
जकोई=जो कोई
जगाना=जीवित करना, चैतन्य रखना
जनायाँ=जन (स्त्री) ब. व.
जपना=सेवा करना
जहलाँ=जहल (क्रोध) ब. व.
जूँ त्यूँ=ज्यों त्यों
ज़हार=ज़हर
जाँ=जहाँ
जाँ ताँ=जहा तहाँ
जाई=बेटी
जागा=जगह
जाती च=जात ही
ज़ाती च कर=ज़ात ही समझ कर
जान हारा=जानेवाला
जान हारी=जानेवाली
जासी=जाएगा
जाहिलाँ=मूर्ख (ब. व.)
जीतियाँ=जीती
जीब=जीभ
जीवता है लगन=जीने तक
जुन्द=जून, योनि
जुगोती=जुड़ाती
जू=ज्यों
जेत=जितना
जेता कू=जितनो को, जिनको
जैसियाँ=जैसी का वि. ब. व.
जैसे सूँ=जैसे से
जोति=ज्योति
जो लग=जब तक
जो लगन=जब तक

(झ)

झड़ती=तलाशी
झल=ज्वाला
झाँक्या=झाँका
झाला=ज्वाला
झिरे=झरने
झोंटे=झपट्टा

(ट)

टाँक्याँ=टाँका (ब. व.)
टुक=ज़रा
टोना=जादू
टोने टामन=जादू टोना

(ठ)

ठारे ठार=जगह-जगह
ठार्या=ठहरा

ठावें ठाँव=जगह जगह

(ड)

डूँगर=पहाड़

(ढ)

ढीग=ढेर

(त)

तपा कर=सता कर
तबी=तभी
तमीजाँ=तमीज ब. व.)
तर पड़ता=नीचे पड़ता
तरफना=तड़पना
तल=नीचे
तलार=नीचे
तलव्याँ=तलवा (ब व.
तॉटा=झगड़ा
तिगवनी=बेचैनी
तिल=क्षण
तुकड़ा=टुकड़ा
तुझ सु च=तुझ से ही
तुटे=टूटे
तू च=तू ही
ते=से
तेरालू=तैराक
तो च=तब तक, तभी
तों लगन=तब तक
तो लगे च=तब तक ही

(द)

दंद सारना=दुश्मनी पूरी करना
दंदी=शत्रु
दग़दग़ा=पछतावा
दर्स=दर्शन
दर्सनी=दर्शन करने वाला
दामाँ=जाल (ब. व.)
दारवाँ=दारू (दवा का ब. व.
दिलीच=दिल ही
दारवाँ=दारू (दवा) ब. व.
दिली च=दिल ही
दिसता=दिखाई देता
दिस्त=दृष्टि
दीदयाँ=दीद (आंख) ब. व.
दीवा=दीपक
दीस=दिन
दीस्यां=दीस (दिन) ब. व
दुदलाये=मलिन हुए
दुई=द्वैत
दुचिता=दुविधा में पड़ा हुआ
दुम्बाल=पीछे
दम्बाला=पीछा
दुराई=प्रभुत्व, दुहाई
दुराना=छिपाना
दुसयाँ कू=दूसरों को
दूदी च=दूध ही
देक=देख
देखसी=देखेगा
दोनो जागे=दोनों जगह

(ध)

धगड़=यार
धत्यारे=हत्यारे
धन=स्त्री
धरकत=धड़कना, स्पन्दन
धात=तरह, भाँति
धाता मांता=मस्त
धाना=दौड़ना
धाया=दौड़ा

धावँ=लालसा, माँग
धिंगाना=चहल पहल, विवाहित वर-वधू के द्वार रोकने की रस्म

(न)

नईं=नहीं
नईंच=नहीं ही
नको=नहीं
नखर्यो=नखरा
नड़री=नल्डा, टेंटवा
नत=नथ
नवा=नया
नवी=नई
नवी बाट=नया रास्ता
नहनपन=बाल्यावस्था
नहना=छोटा
नहीं पाया कर=प्राप्त नहीं करने से
न्हाटना=भागना, पीछा करना
न्हासना=भागना
नांदना=प्यार से लालित होना, आनन्द से जीवन बिताना
नाँदी=लाँघी
नापाकाँ=नापाक, (अपवित्र) ब. व.
निकामी=बेकार रहनेवाली
निढाल=सुस्त
निपट=बिल्कुल, सर्वथा
निबत्तर=निकृष्टतर
निर्जोत=ज्योतिरहित
निर्वाल=अलग अलग
निहाना=निहारना, देखना
नेकियाँ सूँ=नेकियों से
नेम=नियम

(प)

पकड़ को=पकड़ कर
पछाननना=पहचानना
पछाने=पहचाने
पटाँ=पाट (ब. व.)
पड़ेगा=पढ़ेगा
पतयासी=भरोसा करेगा
पनवाया=प्रण कराया
पन्द=उपदेश
परमीस=परमेश्वर
पन्हाया=पहनाया
परसन=प्रसन्न
परान=प्राण
पलिष्ट=अपवित्र
पाड्या=डाला (पाड़ना-डालना, उखाड़ना)
पातराँ=नक्तकिया
पाते पात=पत्ता पत्ता
पान च पर=पान ही पर
पिरत=प्रीति, प्रेम
पुन पाप=पुण्य पाप
पूच=पूछ
पूछ पछार=पूछताछ
पेखना=देखना, प्रेक्षण करना
पै=में, पर, ऊपर
पैका=पैसा
पैना=पहना
पैरेगी=पहनेगी
पैलाड़=परे, दूसरी तरफ़, दूर
पौनवारी=हवावाली

(फ)

फंकड़ियाँ=पंखडियाँ
फहना=फबना
फाट्या=फटा
फ़ेल ई च=फ़ेल (कार्य) ही
फैरना=पहरना, प्रवेश करना

फोडे च=फोड़ते ही

(ब)

बँगडियाँ=चूड़ियाँ (ब. व.)
बंटाँ=बन्धन (ब. व.)
बंटी=क़ैदी
बंबी=नाभि
बजर=वज्र
बड़ना=घुसना
बड्याँ=बड़ा (ब. व.
बनी च मे=बन में ही
बर ल्यावे=पूर्ण करे, सफल करे
बस्त=वस्तु
बहरियाँ=बहरी (ब. व.)
बहब ज़ाहिरी=प्रकट रूप से
बहा फुसला=बहला फुसला कर
बहुती च=बहुत ही
बाई=बावड़ी
बाग=बाघ, शेर
बाँचना=बचना
बाज्याँ कूँ=बाजो को, कुछ को
बाट=रास्ता
बाटाँ=रास्ते
बाताँ सूँ च=बातों से ही
बालेबाल=बिल्कुल, रोम रोम
बाव=हवा
बावबारा=हवा पानी
बारा=बादल
बाँद=बाँध
बाँद कर=बाँध कर
बिचित्तर=विचित्र
बिलकना=बिलखना
बिसता=बैठता, प्रवेश करता
बिसना=बैठना
बिसराट=विस्मृति
बिसलाई=बैठाई
बिसलाना=बैठाना
बी=भी
बुन्दले=बूंदें
बुरे कर=बुरा समझ कर
बूड़ा=डूबा
बूद=बुद्धि
बेकटर=निर्दय, कठोर
बेकिया=बिना किया हुआ
बेखबरी च=बेखबरी ही
बेगी च=जल्दी ही
बेरुज=बेढगा
बैन=वाणी
बैसना=बैठना
बोलाँ=बोल (ब व.)

(भ)

भाँडा=बरतन
भाँडा न को फोड़=भेद मत फोड़, भेद मत खोल
भा कर=डाल कर,
भाय्याँ=प्रिय
भाय्याँ थ्याँ=भाती थीं
भान=बहन
भाना=अच्छा लगना, डालना, बहाना, निकालना
भाने=बहाने
भार=बाहर
भावना=अच्छा लगना
भासी=आएँगे, अच्छे लगेंगे
भ्याव=विवाह

भुलासी=भुलाएगा

(म)

मत=बुद्धि
मरगोलना=कूकना
मर्या=मरे
मस्का=मक्खन
मस्करियाँ=मस्करी (मज़ाक) ब. व.
माँदगी=बीमारी
माता=मस्त
माता=मस्ती (स्त्री)
माबूदी च=ईश्वर ही
महरी च सूँ=दया से ही
माला=छत, ऊपर की मंजिल
म्याँ=मियाँ
मावाँ=माताएँ
म्याँने=बीच में
म्याँने म्याँ=मन ही मनऽअन्दर ही अन्दर
म्हाड़ी=अटारी
मिल्याँ=मिला हुआ
मीरा=मैला
मुआ=मरा, मुर्दा
मुद्दआ=ध्येय
मुहाल=असंभव
मूँ=मुँह
मूँच कर=बन्द करके
मूँ पो=मुँह पर
मेहो=मेह, मेघ

(य)

यकस के=एक के
यकी च=एक ही
यगानगी=एकत्व
यूँ ई च=यों ही, ऐसा ही
यू बी=यह भी
यूँ च=यों ही
यों च=यों ही

(र)

रंबा=रंभा
रगडमाल=रगड़ना मसलना
रज=सम्पत्ति, मिट्टी
रहने की वजा=रहने का तरीक़ा
राज=राज्य
राजी च=राज ही
रास करना=अपनाना, परिचित होना
रासकरास=ठीक ठीक, बिल्कुल मिलता हुआ
रिस्या=क्रोध किया
रीज=रीझ
रुच=रुचि
रूँ=रोम
रैता=रहता
रोलना=खोज करना, छान बीन करना
रौं रौं=रोम रोम

(ल)

लइ=बहुत
लकना=देखना
लग=तक, निकट
लग्या=लगा
लगन=तक
लडाँ=लड़ (ब. व.)
लताहूं=लेना हूँ
लहना=प्राप्त करना, शुभ होना

लहवा=तलवार, लोहे का शस्त्र
लहव्या=लहवा, तलवार, शस्त्र
लहू=खून
लाँडगा=भेड़िया
लाक=लाख
ल्या=ला
ल्याएँ=लावें
लिबास फिरा कर=वेश बदल कर
लूतरी=निन्दा
लेके=लिए
लोक=लोग
लोड़=इच्छा
लोन=नमक

(व)

वर=श्रेष्ठ
वस्वास=ख़तरा
वाँ=वहाँ
विना सूँ=उन से
वैसा च=वैसा ही
वाँ बी=वहाँ भी
वे रकता=वैसा रखता, उस तरह रखता
वो च=वही

(स)

संग्यात=साथ
सघात=साथ
सँपड़ना=प्राप्त होना, फँसना
सकत=सामर्थ्य
सकी=सखी
सगला=पूरा
सची मुची=सचमुच ही
सटे-डाले (सटना=डालना, पटकना, रखना)
सत=शक्ति
सती है=सोती है
सद=शुद्ध
सबी च=सब ही
सबूर=सन्तोष
सर ते च=सिर से ही
सरना=पूरा पड़ना
सरी च=भेद ही
सांदना=मिलाना, जोड़ना
सादना=साधना
सादी=सरल
साम=समान
सार के=समान
सारेगा=पूरा करेगा
सिघार=शृंगार
सिरश्त=स्वभाव
सीका=सीखा
सीने पो=छाती पर
सींव=सीमा
सीर=सिर
सीस=सिर
सुंगते=सूँघते
सुक=सुख
सुर्ती=मोती
सुद बुध=सुध बुद
सुधी=विद्वान
सुनते च=सुनते ही
सुना=सोना (स्वर्ण)
सुना कस देखे=सोना कस कर देखे
सुना सो सुना=सोना सोना है
सुना हो सुगंद=सोना और सुगंध
सुबा=सुबह
सुक्या=सूखा

सूर=शूकर
सेती=से
सैना=सहना
सो अन=वह अन्न
सो च=वही
सोसना=सहना, कष्ट सहना
सौं=सौगन्ध
सौकत=सौत
सौ भात=सौ प्रकार

(श)

शाना=हुशियार

(ह)

हटकती=तिरस्कार करती
हत=सात
हतियाँ=हाथी (ब. व.)
हमना=हम को
हमना ते=हम से
हरनाँ=हरिण (ब. व.)
हरबर ते=हड़बड़ाते
हम्माल=माल ढोने वाला
हम्माली=माल ढोने का काम, माल ढोने की मदूजरी
हवस=इच्छा
हस्त=हाथ
हाक=दहाड़, पुकार
हात=हाथ
हाती=हाथी
हाती च में=हाथ में ही
हार्या=हारा हुआ
हासिला=हासिल
हिलकाना=मुग्ध होना, तल्लीन होना
हिलगना=अटकना
हिलासी=हलाएगा
हील्याँ=हीला (ब. व.)
हुच होना=बेवकूफ़ बनना, गंवार बनना
हुस्न के नमें च=हुस्न की तरह ही
हेच=नीच
हेड़ा=हड्डी
है लगन=होने तक
हो कने में=हो कहने पर
होड़=शर्त्त
होर=और
होसी=होगा